ज्योतिषरत्नचन्द्रिका

-लक्ष्मण खतिवडा

विषयसूची

प्रारम्भकाध्याय

- मङ्गलाचरण ---------- १
- ज्योतिषशास्त्रको परिचय र उपयोगिता ---------- २
- कालखण्ड ज्ञान ---------- २
- ज्योतिषका मुख्य शाखा ---------- ५
- ज्योतिषमा गणितको आवश्यकता ---------- ५
- लग्न साधना गर्दा विचार पुऱ्याउनुपर्ने कुराहरू ---------- ६
- ग्रहस्पष्ट गर्दा विचारणीय श्लोकहरू ---------- ८
- नामकरण विधि ---------- ९
- भयात र भभोग ल्याउन रीति ---------- १०
- चन्द्र स्पष्ट गर्ने तरिका ---------- ११
- ग्रहको उदय अस्त स्थिति ---------- १२
- ग्रहहरूको बाल्यवृद्धादि अवस्था ज्ञान ---------- १३
- ग्रहावस्थाको फल ---------- १३
- नवांशसाधनरीति ---------- १३

कुण्डली प्रकाराध्याय

- षड्वर्ग विचार ---------- १५

१) लग्न कुण्डली ---------- १५

२) राशि ---------- १५

३) होरा ---------- १५

(क) होराचक्र ---------- १६

(ख) होरा कुण्डली ---------- १६

४) द्रेष्काण ---------- १७

क) द्रेष्काण तालिका ---------- १७

ख) द्रेष्काण कुण्डली ---------- १७

५) नवांश कुण्डली ---------- १७
क) नवांश बोधक तालिका ---------- १८
ख) नवांश कुण्डली ---------- १८
६) त्रिंशांश ---------- १८
क) विषम राशि त्रिंशांश बोधक तालिका ---------- १९
ख) समराशि त्रिशांश बोधक तालिका ---------- २०
ग) त्रिंशांश चक्र ---------- २०
७) षड्वर्गफल ---------- २०

दशाध्याय

- दशा ---------- २२
१) योगिनी दशा गणना गर्ने विधि ---------- २३
२) विंशोत्तरीय र त्रिभागीय दशा गणना गर्ने विधि ---------- २३
३) विंशोत्तरीय दशावर्ष संख्या निर्धारण विधि ---------- २४
४) त्रिभागीय दशावर्षसंख्यानिर्धारण विधि ---------- २४
५) विंशोत्तरी त्रिभागी दशागणना चक्र ---------- २४
६) योगिनी दशागणना चक्र ---------- २५
७) विंशोत्तरीय महादशान्तर्दशा बोधक चक्र ---------- २५
८) त्रिभागीय महादशा अन्तरदशा चक्र ---------- २६
९) रूद्रयामलोक्त योगिनी दशान्तर्दशा चक्र ---------- २७
१०) योगिनीदशा विचार ---------- २७
११) मङ्गलादि योगिनीहरूका स्वामी ग्रहहरू ---------- २८
- विंशोत्तरीयदशावर्षयोग चक्र ---------- २८
- त्रिभागीयदशावर्षमासयोग चक्र ---------- २८
- योगिनीमूलदशावर्षयोग चक्र ---------- २९
- भुक्तभोग्य दशावर्ष साधना गर्ने विधि ---------- २९

फलाध्याय

- मङ्गला मूलदशा फल ---------- ३१
- पिङ्गलामूलदशा फल ---------- ३१
- धान्यकामूलदशा फल ---------- ३२
- भ्रामरी मूलदशाफल ---------- ३२
- भद्रिका मूलदशा फल ---------- ३२
- उल्कामूलदशा फल ---------- ३३
- सिद्धा मूलदशाफल ---------- ३३
- संकटामूलदशाफल ---------- ३४
- विंशोत्तरी अष्टोत्तरी तथा त्रिभागी सूर्यादि महादशा फल ---------- ३४
- सूर्यमहादशाफल ---------- ३४
- चन्द्रमाको महादशाफल ---------- ३५
- मङ्गलको महादशा फल ---------- ३५
- राहुको महादशाफल ---------- ३६
- गुरुको महादशा फल ---------- ३७
- शनिको महादशा फल ---------- ३७
- बुधको महादशा फल ---------- ३८
- केतुको महादशा फल ---------- ३८
- शुक्रको महादशा फल ---------- ३९
- दशाफल विशेष विचार ---------- ४०

भावाध्याय

- भाव ---------- ४२
- द्वादशभाव ---------- ४२
- भाव बलाबलज्ञान ---------- ४३
- राशिहरूको पाददृष्टि र कीटादि संज्ञा ---------- ४३
- भावको केन्द्रादि संज्ञा ---------- ४३
- भावको शीर्षादि संज्ञा ज्ञान ---------- ४४
- त्रिकोण परिचय ---------- ४४

राशि ज्ञानाध्याय

- राशि ---------- ४५
- राशिका स्वामीहरू ---------- ४५
- मेषादि राशिको पुंस्त्री तथा चरादि संज्ञा ---------- ४५
- मेषादि राशिको शीर्षोदय संज्ञा ---------- ४६
- मेषादि राशिहरू दिवा रात्र्यादि बलज्ञान ---------- ४७
- राशिहरूको वर्णज्ञान ---------- ४७
- कुन कुन राशिमा कुन कुन ग्रह उच्च या नीच हुन्छन् ? ---------- ४७
- परम उच्चा परम नीचाग्रहज्ञान ---------- ४८
- ग्रहहरूको स्वकीय मूल त्रिकोण ---------- ४८
- ग्रहहरूको दृष्टि ---------- ४९
- ग्रहहरूको विशेष दृष्टिस्थान ---------- ४९

जातकाध्याय

- जातकशास्त्र परिचय ---------- ५०

अरिष्टाध्याय

- सद्योमृत्यु अरिष्ट ---------- ५१
- चन्द्रबाट सद्योमृत्यु अरिष्ट ---------- ५१
- अन्य ग्रहयोगबाट हुने अरिष्ट ---------- ५२

अरिष्ट भङ्गाध्याय

- लग्नेश तथा शुभग्रह र शुभयोगद्वारा अरिष्ट भङ्ग ---------- ५५

कर्मजीवाध्याय

- कर्मेशको अवस्था स्वभाव अनुसारको कार्यजीविका ---------- ५७
- सूर्यनवांशबाट रोजगार विचार ---------- ५९
- चन्द्रमनवांश फल ---------- ५९
- मेष वृश्चिक नवांशगत कर्मेशको फल ---------- ५९
- मिथुनकन्या नवांशगत कर्मेशको फल ---------- ६०

- धनुमीननवांशगत कर्मेशको फल ---------- ६०
- वृषतुला नवांशगत कर्मेशको फल ---------- ६१
- मकरकुम्भ नवांशगत कर्मेशको फल ---------- ६१
- नवांशगत रोजगारको स्तर ---------- ६२

योगाध्याय

- पञ्च महापुरुष योग ---------- ६३
- रुचक र भद्रक योगको फल ---------- ६३
- हंस र मालव्य योगफल ---------- ६४
- शश योगको फल ---------- ६४
- अनफा, सुनफा, दुरुधरा र केमद्रुम योग ---------- ६५
- अनफा योगको फल ---------- ६५
- सुनफा योग फल ---------- ६६
- दुरुधरा योग फल ---------- ६७
- केमद्रुमयाग फल ---------- ६८
- ग्रन्थान्तराट सुनफा अनफा योग फल ---------- ६८
- दुरूधरा केमद्रुमयोग फल ---------- ६९
- केमद्रुमयोग भङ्ग ---------- ६९
- ग्रन्थान्तरबाट केमद्रुम भङ्ग ---------- ६९
- अमला योगको लक्षण फल ---------- ७०
- महाभाग्य र केसरी वा गजकेसरी आदि योग लक्षण ---------- ७०
- उक्त ६ योगहरूको फल ---------- ७१
- केसरी वा गजकेसरी योगफल ---------- ७१
- शकट योग फल ---------- ७२
- अधम सम वरिष्ठयोग फल ---------- ७२
- कालसर्प योग ---------- ७२
- राहुकेतुद्वारा बन्ने योग ---------- ७५
- राहुको सम्बन्ध ---------- ७६
- दृष्टिका आधारमा राहु ---------- ७७
- कालसर्प योगको प्रकार ---------- ७८

- अनन्तादि १२ कालसर्प योग ---------- ७९
  - १) अनन्त कालसर्पयोग ---------- ७९
  - २) कुलिक कालसर्पयोग ---------- ७९
  - ३) वासुकी कालसर्प योग ---------- ७९
  - ४) शङ्खपाल कालसर्पयोग ---------- ८०
  - ५) पद्म कालसर्प योग ---------- ८०
  - ६) महापद्म कालसर्प योग ---------- ८१
  - ७) तक्षक कालसर्प योग ---------- ८१
  - ८) कर्कोटक कालसर्पयोग ---------- ८२
  - ९) शङ्खचूड कालसर्प योग ---------- ८२
  - १०) पातक कालसर्प योग ---------- ८३
  - ११) विषधर कालसर्प योग ---------- ८३
  - १२) शेषनाग कालसर्पयोग ---------- ८३
- कालसर्पयोग भङ्ग (राजयोग) ---------- ८४
- कालसर्पयोगको अति पीडादायक अवस्था ---------- ८६
- कलियुग उपयोगी योग ---------- ८६
- गोलयोग फल ---------- ८७
- युगयोग फल ---------- ८७
- शूलयोग फल ---------- ८८
- केदार योगफल ---------- ८८
- पाश योग फल ---------- ८८
- दामिनी योग फल ---------- ८९
- वीणा योग फल ---------- ८९
- एकावली योग ---------- ८९
- चतुःसागर योग ---------- ८९
- पुनः चतुःसागर योग ---------- ९०
- चतुग्राही योग ---------- ९०
- लक्ष्मीयुक्त योग ---------- ९०
- विकलाङ्ग जडदरिद्र योग ---------- ९१
- गौरी योग ---------- ९१

- सरस्वती योग ---------- ९१

स्त्रीभावाध्याय

- पत्नी अल्पायु कारक ---------- ९२
- कलत्रच्युतकारक योग ---------- ९४
- पत्नीसंख्या र शुभाशुभ विचार ---------- ९४
- मतान्तरबाट पत्नीसंख्या विचार (विवाह योग) ---------- ९५
- बहुविवाह तथा पत्नी सन्तान हीन योग ---------- ९५
- पतिपत्नीकै भाग्यहीन वा भाग्यवान योग ---------- ९६
- पुनर्भूः योग ---------- ९७
- विवाहको दिशा र समय ज्ञान ---------- ९७
- स्त्रीको मृत्यु योग ---------- ९७
- स्त्रीको सौम्यत्व असौम्यत्वको विचार ---------- ९८
- ग्रन्थान्तरबाट स्त्रीका सौम्यत्व विचार ---------- ९८
- स्त्रीको भाग्यशाली योग ---------- ९९

सन्तान भावाध्याय

- सन्तान प्राप्तियोग ---------- १००
- सन्तानबाधक योग ---------- १००
- पञ्चमस्थ पापग्रहपुत्रकारक ---------- १००
- प्रयत्न पश्चात् सन्तान प्राप्तियोग ---------- १०१
- पुनः विवाहपछि सन्तान कारक योग ---------- १०१
- वाक सन्तान विचार ---------- १०२
- पुत्र वा कन्याको संख्यात्मक विचार ---------- १०३
- पुत्रहीनता या पुत्रकष्ट योग ---------- १०४
- अरूको सन्तान आफ्नो बनाउने (गोदलिने) योग ---------- १०४
- बहुपुत्र योग ---------- १०४
- नालवेष्टित जन्म योग ---------- १०५
- शीर्षादि भागबाट जन्मनिर्णय ---------- १०५
- कुन राशि कहिले बलवान हुन्छ र शीर्षोदयादि संज्ञा ---------- १०५
- प्रसव शुभाशुभज्ञान ---------- १०६

- पुत्र वा पुत्रीनिर्णय ---------- १०६

प्रश्नाध्याय

- ज्योतिष विषयमा जिज्ञासा ---------- १०७
- विभिन्न केन्द्रबाट स्थानादि विचार ---------- १०८
- तन्वादि द्वादश भावका शुभाशुभ ज्ञान ---------- १०९
- प्रश्नसमयमा लाभादि शुभाशुभ ज्ञान ---------- १०९
- नष्ट (हराएको) वस्तुको लाभालाभ विचार ---------- १०९
- श्लोकान्तरबाट पनि नष्ट वस्तुज्ञान ---------- ११०
- आठ प्रकारका प्रश्नका नाम ---------- ११०
- कार्यसिध्यासिद्ध अङ्क विद्या ---------- ११२
- पृच्छकले सोद्धा उच्चारित अक्षरबाट उत्तर दिने विधि ---------- ११२
- अक्षरहरूको (स्वर व्यञ्जनको) ध्रुवाङ्क सतालिका ---------- ११३
- मात्रा वर्ण ध्रुवाङ्क चक्र ---------- ११४
- लाभालाभ प्रश्न विचार ---------- ११४
- जय पराजय प्रश्न विचार ---------- ११५
- गमनागमन प्रश्न विचार ---------- ११५
- जीवित छ वा मृत भयो भन्ने प्रश्नविचार ---------- ११५
- यो वर्ष तीर्थ यात्रा हुन्छ कि हुँदैन प्रश्न विचार ---------- ११६
- मेघवर्षाप्रश्न ---------- ११६
- गर्भ छ कि छैन ---------- ११६
- नष्ट (हराएको) वस्तुज्ञान ---------- ११६
- कार्यावधि प्रश्न ---------- ११७
- जयपराजय प्रश्न ---------- ११८
- छोराछोरी सम्बन्धी फल ---------- ११८
- विवाहसम्बन्धी प्रश्न ---------- ११८
- परदेशी सम्बन्धी प्रश्न ---------- ११९
- कार्य सिद्ध्यसिद्धि प्रश्न ---------- ११९
- आयका नाम र प्रयोजन ---------- १२०
- ध्वजादि अष्ट आयको नाम ---------- १२१
- ध्वजादिका (वर्गादिका) स्वामी ग्रहहरू ---------- १२१
- ध्वजादि चक्र ---------- १२२
- कार्याकार्य प्रश्न ---------- १२२

- लाभालाभ प्रश्न ---------- १२३
- हराएको वस्तु लाभ हुन्छ या हुँदैन ? ---------- १२३
- चौरजाति ज्ञान ---------- १२३
- नष्टवस्तुदिग्ज्ञान ---------- १२४
- वस्तु कुशल छ वा छैन भन्ने प्रश्न ---------- १२४
- प्रवासी आउँछ वा आउँदैन ? ---------- १२४
- प्रवासीको अथवा कार्यावधि प्रश्न ---------- १२५
- छोराछोरी प्रश्न ---------- १२५
- कार्यसिद्धि प्रश्न ---------- १२६
- बन्दिमोक्ष हुन्छ या हुँदैन ---------- १२६
- कष्टमुक्तिका लागि कुन देवताको पूजा गर्ने ? ---------- १२६
- प्रश्नाक्षरबाट लग्न ज्ञान ---------- १२७
- लाभहानि सम्बन्धी प्रश्नको अन्यपद्धतिबाट गरिने ज्ञान ---------- १२७
- रोगीको शुभाशुभ ज्ञान ---------- १२८
- प्रश्नकालमा धन नाश र कार्यहानि योग ---------- १३०
- पृच्छकको सर्वसिद्धिकारक योग ---------- १३०
- धनारोग्य पदवीप्राप्ति योग ---------- १३१
- हराएको वस्तु लाभ ज्ञान ---------- १३१
- मतान्तबाट लाभ योग ---------- १३१
- प्रवासी विषयक प्रश्न ---------- १३२
- गमनागमन विषयक प्रश्न ---------- १३२
- विपरीत अवस्थामा विपरीत फल ---------- १३३
- यात्रासम्बन्धी प्रश्न ---------- १३३
- प्रश्नलग्नद्वारा भावीकष्टविचार ---------- १३३
- एक अन्य कष्टकारक योग ---------- १३५
- रोगी बाँच्छ कि बाँच्दैन प्रश्न ---------- १३५
- लग्नस्थ चन्द्रबुधकृतशुभाशुभ ---------- १३६
- लाभालाभ प्रश्न ---------- १३७
- शुक्रको रिपुव्ययस्थ भए पनि शुभ योग हुन्छ ---------- १३७
- सर्वार्थसिद्धियोग ---------- १३८
- लाभालाभ प्रश्न ---------- १३८
- योगान्तरबाट पनि लाभालाभ विचार ---------- १३९

- अन्य शुभाशुभ विचार ---------- १३९

रत्नाध्याय

- रत्नाध्यायको प्रयोजन ---------- १४०
- रत्नको परिचय ---------- १४०
- अत्यन्त दुर्लभ मणि (रत्न) हरु ---------- १४४
- माणिक्यादि नवरत्नहरूको विशेषता ---------- १४४
- माणिक ---------- १४४
- मोती ---------- १४५
- मुगा ---------- १४५
- पन्ना ---------- १४५
- पुखराज (पुष्पराज) ---------- १४६
- हीरा ---------- १४६
- नीलम ---------- १४६
- गोमेद ---------- १४७
- वैदुर्यमणि ---------- १४७
- विभिन्न रत्नोपरत्न ---------- १४७
- सामान्य रत्नोपरत्नको नाम ---------- १४८
- रत्न र ज्योतिषको सम्बन्ध ---------- १५१
- प्रमुख नवरत्नहरूको तात्विक ज्ञान र प्रयोगः ---------- १५२

  १. माणिक्य ---------- १५२

  २. मोती ---------- १५६

  ३. मूँगा ---------- १६०

  ४. पन्ना ---------- १६३

  ५. पुष्पराज (पुखराज) ---------- १६५

  ६. हीरा ---------- १६७

  ७. नीलम ---------- १७२

  ८. गोमेद ---------- १७५

  ९. वैदूर्यमणि (लहसुनिया) ---------- १७६
- रत्नधारण अनुकूल र प्रतिकूल विचार ---------- १७८

- रत्नधारण गर्नु पूर्व ध्यान दिनुपर्ने कुराहरु ---------- १७९

स्वरशकुनाध्याय

- प्रश्नसमयमा स्वर विचार ---------- १८०
- बार अनुसार शुभाशुभ स्वरज्ञान ---------- १८०
- स्वरको विशेष फल ---------- १८१
- वारका अनुसार स्वरको फल ---------- १८१
- पृथ्व्यादि तत्त्वको उदय ज्ञान ---------- १८१
- स्वरबाट रोग ज्ञान ---------- १८२
- पृच्छकको अवस्था स्थिति र स्वर अनुसार फलज्ञान ---------- १८२
- स्वरबाट जयपराजय ज्ञान ---------- १८२
- दक्षिण स्वर शुभता ---------- १८३
- स्वरबाट सन्तान विचार ---------- १८३
- प्रश्नकर्ताको चेष्टा अनुसार फलादेश ---------- १८३
- यात्रादि कार्यमा शुभ शकुन ---------- १८४
- अशुभ सूचक शकुन ---------- १८५

मुहूर्त / शान्तिकाध्यायः

- तिथिका स्वामीको नाम ---------- १८७
- तिथिका नन्दादि नाम र शुभाशुभ ज्ञान ---------- १८७
- समस्त कार्यमा निसिद्ध वारतिथि र नक्षत्रको योग ---------- १८८
- भौमाश्विनी आदियोग कहिले निसिद्ध मान्ने ? ---------- १८८
- वर्ज्य पञ्चाङ्ग दोष ज्ञान ---------- १८९
- सर्वदोषनाशक रवियोग ---------- १८९
- गुरुशुक्र अस्त भएमा गर्न नहुने कर्महरूको ज्ञान ---------- १९०
- गुरुशुक्रको बालत्व र वृद्धत्व दोष निर्णय ---------- १९०
- भद्रा (विष्टि) निवास ज्ञान ---------- १९१
- भद्राको त्याज्य ग्राह्य अवस्था ---------- १९२

- दग्धातिथि ---------- १९२
- शान्तिक (ग्रहशान्ति आदि) पौष्टिक कर्म गर्ने मुहूर्त ---------- १९३
- होमाहुतिमा ग्रहमुख विचार ---------- १९३
- अग्निवास र शुभाशुभ विचार ---------- १९४
- शिववास विचार ---------- १९५
- शुभकार्यमा दोष परिहार विचार ---------- १९६
- विवाहमा आपत् कालिन भई लग्नाभाव भएमा ---------- १९७
- ग्रहपीडित अवस्थामा व्यक्तिलाई शान्तिकादि उपाय ---------- १९८
- ग्रहहरूको स्नानौषधीका नाम र दानीय पदार्थका नाम ---------- १९९
- ग्रहदोष शान्ति गर्दा पीडित व्यक्तिले गर्ने कृत्य ---------- २००
- सूर्यादिनवग्रहहरूका वैदिक तथा तान्त्रिक जपमन्त्र ---------- २००
- चन्द्रमाको वैदिक तथा तान्त्रिक जप मन्त्र ---------- २०३
- मङ्गलको वैदिक मन्त्र ---------- २०५
- बुधको वैदिक जप मन्त्र ---------- २०६
- गुरुको वैदिक जपमन्त्र ---------- २०७
- शुक्रको वैदिक जपमन्त्र ---------- २०९
- शनिको वैदिक जपमन्त्र ---------- २११
- राहुको वैदिक जपमन्त्र ---------- २१३
- केतुको वैदिक जपमन्त्र ---------- २१४
- अष्टयोगिनीका तान्त्रिक जपमन्त्र तथा स्तोत्र ---------- २१५
- ज्योतिषशास्त्रको विविधता ---------- २१७
- ग्रन्थकर्तृपरिचयः ---------- २१९
- सन्दर्भ ग्रन्थ सूची ---------- २२०

ॐ

अथ प्रारम्भकाध्यायः

मङ्गलाचरण

श्रीगणेशं गुरुं वन्दे शारदां भास्करं परम् ।
आराध्यकुलदेवांश्च पितरौ जालपामपि ॥१॥

यावत् समापनं न स्यात् ज्योतिषे रत्नचन्द्रिका ।
तावत् प्रत्यूहबाधार्थं सारल्यार्थञ्च कामये ॥२॥

ज्योतिशास्त्रस्य गाम्भीर्यं क्वचाल्पी मानुषीमतिः ।
तयोः समन्वयं कर्तुं रचिता रत्नचन्द्रिका ॥३॥

यस्य सन्निधिमात्रेण मलिनो निर्मलायते ।
देशिकं तमहं वन्दे स्वकीयाचार्यमीश्वरम् ॥४॥

सर्गादिः साम्प्रतं प्राप्तं पारम्पर्येण दैशिकात् ।
मया विश्लेषितं ज्ञानं न किञ्चित् कुण्ठितं भवेत् ॥५॥

ज्योतिषशास्त्रको परिचय र उपयोगिता

ज्योतिषशास्त्र विश्वकै मानवसमाजका लागि अपरिहार्य विषय हो । यो कुनै धर्म वा सम्प्रदायमा सीमित छैन । यसको गहनतम अध्ययनले मानिसलाई एक भिन्नै किसिमको दृष्टि दिन्छ । जसले गर्दा ऊ आफ्नो सांसारिक जीवन यात्रा र अरूको पनि यात्राको पथप्रदर्शन गर्न गराउन सक्षम हुन्छ। संसारी यात्रा सजिलो भैदियो भने सबै किसिमका सुख त्यहीं नै जम्न थालिहाल्छ । यो शास्त्रलाई वेदको अङ्ग (आँखा) मानिएको छ । अङ्गले जहिले पनि अङ्गी अनुकूल काम गर्छ । त्यसैले यो शास्त्र वा सम्बन्धीत प्रकरणले वेदको परम लक्ष मोक्षलाई नै अवान्तर दृष्टिले अवलोकन गरेको छ । प्राणीको जन्मजन्मान्तरको पुण्यपुञ्ज परिपाक भएपछि मात्र मानिसको जन्म हुन्छ । त्यसमा पनि अनेक जन्मका शुभाशुभ कर्महरू दैव अथवा प्रारब्ध बनेर मानवलाई सुख र दुःखरूपी तरङ्गले उतार चढाव गराई रहन्छ । यो उतार चढाव भने ग्रहाधीन रहेको हुन्छ, त्यसैले पूर्वसञ्चित कर्मानुरूप ग्रहनक्षत्रहरू मानवको सुखदुःख प्रदायक निमित्त कारण बन्न पुगेको हुन्छ । ग्रहको स्थिति, अवस्था र गोचर (सञ्चार) ज्ञानले मानिसको मात्र नभएर सम्पूर्ण चराचरकै विषयमा ज्ञान गर्न सकिन्छ । ज्योतिषशास्त्र काल अर्थात् समय ज्ञान हो । काल (समय) निरवयव भए ता पनि कुनै काल्पनिक उपाधि सापेक्षतामा कालको विभिन्न भागमा विभाजन गरेको हुन्छ, त्यसप्रकार विभाज्य कालखण्ड त्रुटी आदि नामले प्रसिद्ध छन् ।

कालखण्ड ज्ञान

सूच्या भिन्ने पद्मपत्रे त्रुटिरित्यभिधीयते ।
तत्षट्या च भवेद्रेणू रेणुषष्ट्या लवः स्मृतः ॥६॥
तत्षष्ट्या लीक्षकः प्रोक्तस्तत्षष्ट्या प्राण उच्यते ।
षड्भिः प्राणैः पलं ज्ञेयं तत्षष्ट्या दण्ड उच्यते ।
दण्डषष्ट्या च नाक्षत्रमहोरात्रं प्रकीर्तितम् ॥७॥

भनिन्छ तीखो सियोले कमलको पातमा संवेगपूर्वकको प्रेसले उक्त पातलाई छेड्न जति बेर लाग्छ त्यो अर्थात् त्यति बेरको समयलाई त्रुटि भन्ने नाम बुझिन्छ। त्यस्तै ६० ओटा त्रुटीलाई रेणुनामले ज्ञान गर्नुपर्छ ६० रेणुको १ लव हुन्छ, ६० लवको १ लीक्षक हुन्छ। ६० लीक्षको १ प्राण हुन्छ। ६ मात्र प्राणको (श्वासको) एक पल हुन्छ। ६० पलको १ दण्ड हुन्छ, ६० दण्डको एक नाक्षत्र अर्थात् १ अहोरात्र हुन्छ।

त्यसैगरी सूर्यको एक अंश भोग भएको समय एक सौर दिन र चन्द्रको एक अंश भोग समय अथवा चन्द्रमा र सूर्यको १२ अंशको अन्तरलाई एक चान्द्रदिन अथवा तिथि भनिन्छ। सौरांशकै आधारमा वार र चान्द्रांशका आधारमा तिथि गणना हुन्छ।

उक्त प्रकारका दिनहरू चान्द्रमानका आधारबाट १५ दिनको एक पक्ष हुन्छ जो कि महिनामा २ पक्ष हुन्छ शुक्ल र कृष्ण। प्रतिपदादेखि पूर्णिमापर्यन्त शुक्ल र प्रतिपदादेखि औंशीपर्यन्त तिथिहरू कृष्णपक्ष भन्ने नियम छ। सौरमानका पनि आधारमा ३० अंश भुक्त भएपछि मात्र एक मास हुन्छ। त्यस्तो मास साढे २८ देखि ३२ दिनसम्मको हुन्छ।

उक्त प्रकारका दिनहरूको ६/६ महिनाको एक अयन हुन्छ। अयन दुई प्रकारका छन् दक्षिणायन र उत्तरायण। सूर्यको उत्तरबाट दक्षिण गति हुँदा दक्षिणायन र उत्तरतिर हुँदा उत्तरायण हुन्छ। यो असारको लगभग दोस्रो हप्ताबाट सुरु भएता पनि व्यावहारिक मान्यता भने निरयण मानअनुसार श्रावणको १ गतेदेखि दक्षिणायन हुन्छ। त्यस्तै उत्तरायण पनि पुषको दोस्रो हप्ताबाट नै सुरु भएको पाइन्छ तर पनि व्यवहार निरयण मानअनुसार माघ १ गतेदेखि नै मानिँदै आएको छ। यो नियम सूर्यसिद्धान्तानुसार मानिएको छ। उक्त उत्तरायण र दक्षिणायन देवासुरको दिनरात अर्थात् एक अहोरात्र मानिएको छ।

त्यस्तै दैवासुरको वर्ष मानुसी वर्षको लगभग ३६५ वर्ष हुन्छ। मनुष्य वर्षको ४३,२०,००० त्रिचालिस लाख बीस हजार सौर वर्षको एक चतुर्युग अर्थात् एक महायुग हुन्छ। ब्रह्मसिद्धान्तानुसार यस प्रकार भनिएको छ-

अयुतघ्नैर्द्विित्रिवेदैः सौरवर्षैश्च तैः समम् ।
संध्यासंध्यांशसहितं विज्ञेयं तच्चतुर्युगम् ॥८॥

त्यस्ता चतुर्युग (महायुग) ७१¹/₃ चतुर्युगको १ मनु (मन्वन्तर) हुन्छ। प्रत्येक मन्वन्तरको अन्तमा कृतयुग (सत्ययुग) वर्ष तुल्य संख्यामा जलमय

(प्रलय) सन्धि रहेको हुन्छ। यस्तै सन्धि सहित १४ मन्वन्तरको अवधिलाई एक कल्प भन्ने गरेको पाइन्छ।

युगानां सप्ततिः सैका मन्वन्तरमिहोच्यते ।
कृताब्दसंख्यास्तस्यान्ते सन्धिः प्रोक्तो जलप्लवः ॥९॥
ससन्धयस्ते मनवः कल्पे ज्ञयाश्चतुर्दशः ।
कृतप्रमाणः कल्पादौ संन्धिः पञ्चदशः स्मृतः ॥१०॥

यस्तै तरिकाले एक हजार चतुर्युग बितेपछि एक कल्प हुन्छ। एक कल्प ब्रह्माजीको एक दिन हुन्छ र यो दिनमा ब्रह्माजीले सृष्टि गर्ने काम गर्नुहुन्छ। पुनः रात पनि यत्ति नै अवधिको हुन्छ, रातमा सबै प्राणीहरूको लय हुन्छ, यतिबेला ब्रह्माजी पनि योग निद्रामा शयन गर्नुहुन्छ।

यस्तै क्रमले २ कल्पको एक अहोरात्र र ३० अहोरात्रको एक महिना १२ महिनाको एक वर्ष हुन्छ। यस्तो १०० वर्ष ब्रह्माजीको आयु हुन्छ। वर्तमान समय ब्रह्माजीको ५१ वर्षको प्रथम अहोरात्र अर्ध दिन बितिसकेको कुरा केही सिद्धान्त विज्ञहरूको रहेको छ-

इत्थं युगसहस्रेण भूतसंहारकारकः ।
कल्पो ब्राह्ममहः प्रोक्तं शर्वरी तस्य तावती ॥११॥
परमायुः शतं तस्य तयाहोरात्रसंख्यया ।
आयुषोऽर्धमितं तस्य शेषकल्पोऽयमादिमः ॥१२॥

वर्तमान कल्पमा ६ मनु बितिसकेको सिद्धान्तविद्हरूले बताएका छन्-
कल्पादस्माच्च मनवः षड् व्यतीताः ससंन्धयः ।
वैवस्वतस्य च मनोर्युगानां त्रिधनो गतः ॥१३॥

सामान्यतः ज्योतिष शास्त्र त्रिविधामा विभक्त छ। यसैलाई त्रिकाण्ड ज्योतिष भनिन्छ। त्रिकाण्ड छुट्टा छुट्टै भए पनि सामान्यतः तिनै विधाहरू जान्नुपर्छ आवश्यक छ। त्रिकाण्ड भन्नाले सिद्धान्त, संहिता र होरा भन्ने बुझिन्छ।

ज्योतिषका मुख्य शाखा

सिद्धान्तसंहिताहोरारुपं स्कन्धत्रयात्मकम् ।
वेदस्य निर्मलञ्चक्षुर्ज्योतिश्शास्त्रमकल्पषम्।।१४।।

ज्योतिषको तीन विधामध्ये सिद्धान्तले गणितीय विषय (दृष्टि)बाट ज्योतिष्पुञ्ज अर्थात् ग्रहनक्षत्रादिको स्थिति अवस्था सिद्ध गर्दछ भने संहिताले मुहूर्त विद्याको निर्णय गर्दछ । त्यस्तै होराशास्त्रले जातक सम्बन्धीत विषयको ज्ञान गराउँदछ । त्यस कारण तिनै विधाको आपाततः ज्ञानगर्न नसक्ने गणक पनि वास्तविक विषयको अभावले अपूर्ण नै ठहर्छ त्यसैले ज्योतिसम्बन्धी ज्ञान गर्नमा तीन विधाकै (त्रिस्कन्धकै) आवश्यक पर्दछ ।

ज्योतिषमा गणितको आवश्यकता

गणित ज्ञान विना ज्योतिषशास्त्रको प्रयोजन सिद्ध हुन सक्दैन । ज्योतिष विषय भन्नुपर्छ नै मुख्यरूपमा गणित हो। यो विषयका विशेषज्ञलाई गणक भनिन्छ। गणित ज्ञान विना गोल ज्ञान संभव छैन। गोल ज्ञानविना तात्कालिक ग्रहज्ञान हुँदैन तात्कालिक ग्रहज्ञानविना लग्नज्ञान हुँदैन । लग्नको ज्ञान नभए ज्योतिषीय विषयको कुनै पनि ज्ञान हुँदैन, त्यसैले आचार्य भास्कर भन्नुहुन्छ-

द्विविधगणितमुक्तं व्यक्तमव्यक्तयुक्तं
तदवगमननिष्ठः शब्दशास्त्रे पटिष्ठः ।
यदि भवति तदेदं ज्योतिषं भूरि भेदम्
प्रपठितुमधिकारी सोऽन्यथा नामधारी ।।१५।।

व्यक्ताव्यक्त गणित भन्नाले अङ्कगणित र रेखागणित भनेर बुझ्नुपर्दछ जसका आधारमा पृथ्वीमै बसेर आकाशीय ग्रहनक्षत्रको सकल ज्ञान गर्नसकिन्छ । त्यस्तो गणित विषयमा निष्ठा र शब्दशास्त्रमा (न्याय व्याकरणमा) चतुर व्यक्ति अनेक भेदयुक्त ज्योतिष विषयको अधिकारी हो अन्यथा तदतिरिक्त नामधारी ज्योतिष विषयको कलङ्करूपले चिनिने व्यक्ति हो।

गणित ज्ञान ज्योतिषशास्त्रको आधार हो भन्ने विषयमा पनि आचार्य भास्करको यस्तो भनाइ पाइन्छ-

ज्योतिश्शास्त्रफलं पुराणगणकैरादेश इत्युच्यते
नूनं लग्नबलाश्रितः पुनरयं तत् स्पष्टखेटाश्रयम् ।
ते गोलाश्रयिणोऽन्तरेण गणितं गोलोऽपि न ज्ञायते
तस्मात् यो गणितं न वेत्ति स कथं गोलादिकं ज्ञास्यति ॥१६॥

ज्योतिषशास्त्रको यथार्थ जान्ने प्रमाणयुक्त ज्योतिषीद्वारा बताइने ग्रह, नक्षत्र, राशिहरूको स्थिति र फललाई ज्योतिषीय भाषामा आदेश भन्दछन् । त्यस्तो आदेश (फलादेश) लग्नबलमा आश्रित छ, लग्न तात्कालिक स्पष्ट ग्रहहरूका आधारमा सिद्ध हुन्छ । तात्कालिक स्पष्ट ग्रहहरू गोलज्ञानका आधारमा सिद्ध हुन्छन् । गोलज्ञान गणितमा आश्रित भएको हुँदा गणितज्ञानविना ज्योतिष सिद्ध हुन सक्दैन भन्ने उक्त श्लोकको आशय हो ।

लग्न साधना गर्दा विचार पुऱ्याउनुपर्ने कुराहरू

सर्वप्रथम लग्न साधन गर्दा तात्कालिक सूर्यस्पष्ट साधन गर्नुपर्दछ । तात्कालिक सूर्य साधना गर्न साधारण अवस्थामा पात्रोको सहायताद्वारा साधना गर्नुपर्छ । विशेष विशेषज्ञहरूले त पलभादेखि नै सबै साध्य गर्न सक्छन् तर सबैमा त्यस्तो सामर्थ्य नहुने भएकाले सामान्य काम चलाउनु पर्ने अवस्थामा पात्रोमा ग्रहस्पष्ट पंक्ति मिलाएर राखिएको हुन्छ । त्यसै पंक्तिबद्ध कोष्ठहरूमध्ये प्रथम कोष्ठमा ग्रहपंक्ति दिएको गते बार र घटीपला समेत दिएको हुन्छ, त्यहाँ दिएको बार अथवा गते र घटी पलालाई लिने आफ्नो इष्टकालको गते अथवा बार पात्रोको गते अथवा बारभन्दा अगाडिको छ वा पछाडिको छ त्यो सर्वप्रथम विचार गर्ने । इष्टकालभन्दा पंक्तिपूर्वको छ भने इष्टकालमा पंक्तिलाई घटाउनु धन (+) चालन हुन्छ त्यस्तै इष्टकालभन्दा पंक्तिपछिको छ भने पंक्तिमा इष्टकाल घटाउनु ऋण (-) चालन हुन्छ । अब यो चालन सिद्ध भएपछि चालनले जुन ग्रह स्पष्ट गर्नु छ त्यसै ग्रहको गतिले गुणन गर्नु र ६० ले भाग गर्दा जति अङ्क आउँछ त्यो अङ्क अंशादि क्रमले राख्नु र त्यसैमा साप्ताहिक ग्रहस्पष्ट पञ्चाङ्गको अङ्कमा चालन अनुसार चालन धन भए जोड्नु र ऋण भए घटाउने गर्नुपर्छ, विशेष अवस्था (ग्रह मार्गी भएमा पूर्वोक्त धनमा जोड्ने र ऋणमा घटाउने ग्रह वक्री छ

भने ऋण धनको क्रम हेरी उल्टो गर्नुपर्दछ। राहु केतु सदैव वक्री हुनाले धनमा घटाउने र ऋणमा जोड्नुपर्दछ। सूर्य चन्द्र सधैं मार्गी हुनाले सदैव धनमा जोड्ने र ऋणमा घटाउने गर्नु पर्छ। उक्त क्रम पूरा भएपछि तात्कालिक ग्रहस्पष्ट सिद्ध हुन्छ। चन्द्रमा भने उपर्युक्त तरिकाले स्पष्ट हुन सक्दैन किनभने चन्द्रमाको गति (सञ्चार) ज्यादै छिटो हुने भएकोले यो ग्रहको स्पष्ट गर्ने नियम भिन्नै रहेको छ। त्यसको विधि भिन्नै तरिकाले जान्नुपर्छ।

सर्वप्रथम सूर्य साधना गरिसकेपछि सूर्यको राशि अंशा कला विकला सिद्ध हुन्छ। त्यस प्रकारको राशि अंश कुन छ त्यो अनुसार पात्रोमा प्रथम लग्न सारणी भनेर सारणी अङ्क दिएको हुन्छ, त्यहाँ ठाडोकोठापट्टि ग्रहको राशि अङ्क र तेर्सो कोठापट्टिको अङ्कहरू अंशा भनेर जान्नुपर्दछ। अंशका अङ्कहरू ० बाट सुरु भएर २९ सम्म पुगेको हुन्छ। अब तात्कालिक सूर्यको राशि र अंशा अनुसार पात्रोको राशि अंशाको अङ्क बराबरको कोठामा जाने जस्तै फागुन १० गतेको तात्कालिक सूर्यस्पष्ट १०।९।२५।५५ छ पात्रोको पनि ठाडोकोठामा जहाँ १० छ त्योबाट तेर्सो आउने र अंशाबाट आएको ९ को अङ्कबाट ठाडो झर्दा जुनकोठामा भेट हुन्छ त्यो कोठाको अङ्क कापिमा लेख्ने जस्तै-

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
१									↓		
२									↓		
३									↓		
४									↓		
५									↓		
६									↓		
७									↓		
८									↓		
९									↓		
१०	→	→	→	→	→	→	→	→	२७ १५		
१२											

यस प्रकार प्राप्त कोठाको अङ्क कापिमा लेख्ने र त्यसमा इष्टकालको अङ्क जोड्ने अब त्यो जोडेको अङ्क बराबर अङ्क भएको त्यही सारणीको कोठामा अङ्क खोज्ने जुन कोठामा त्यो बराबरको अङ्क मिल्छ त्यो अङ्कको तेर्सो पट्टि आउँदा जुन अङ्क मिल्छ त्यो राशि र ठाडो जाँदा जुन मिल्छ त्यो अंशा हुन्छ जुन राशिको अङ्क भो त्यो नै जन्म लग्न हुन्छ । जुन अंशाको अङ्क भो त्यो लग्नको अंश हुन्छ पहिले लेख्दा आएको अङ्क कला विकला हुन्छ यसरी प्रथम लग्न साधना मोटो रीतिबाट सिद्ध हुन्छ ।

ग्रहस्पष्ट गर्दा विचारणीय श्लोकहरू

इष्टात्पूर्वं पंक्तिरिष्टे पंक्तिं शोध्यं धनं भवेत् ॥१७॥
इष्टात्परं पंक्तिरिष्टं पंक्तौ शोध्यमृणं भवेत् ।
चालनेन गतिर्निघ्नी खषड्भक्त लवादिकम् ।
धनर्णं तद्ग्रहे कुर्यात् खगे वक्रे च व्यत्ययात् ॥१८॥

अर्थः- इष्टात्=इष्टकालदेखि अगाडि अर्थात् अघिल्लो दिनको (पात्रोमा गनेर राखेको) पंक्ति भए इष्टे=इष्टकालमा पंक्तिलाई शोधन (घटाउने) गर्नु अब शेष धन चालन हुन्छ । त्यस्तै इष्टात्=इष्टकालदेखि परं=पररहेको अर्थात् पछि आउँदै गरेको समयमा भोलि वा पर्सिकोमा पंक्ति भएमा पंक्तिमा इष्टकालको घटी पला शोध्यं=शोधन अर्थात् घटाउनु ऋणं भवेत्= त्यो ऋण (-) चालन हुन्छ। चालनेन=चालनले गतिर्निघ्नी=ग्रहगतिलाई गुणन गर्नु खषट्=६० ले भक्ता=भाग गर्नु त्यो लवादिक अंशादिक हुन्छ । धनार्णं=धन+ऋण-चालन अनुसार जोड्ने र घटाउने काम जुन ग्रहको साधन गर्न गएको हो त्यसको कुर्यात्=त्यसैगरी गर्नु । खगे=ग्रहहरू वक्र भएमा त व्यत्ययात्=विपरीत गर्नु अर्थात् जोड्नेमा घटाउनु, घटाउनेमा जोड्नु । यसप्रकार तात्कालिक ग्रहस्पष्ट सिद्ध हुन्छ ।

चन्द्रमा बाहेक सूर्यादि ग्रहहरू तात्कालिक स्पष्ट गर्नु पर्दा सर्वप्रथम चालन ल्याउने । चालन धन र ऋण गरी दुई प्रकारका हुन्छन् । इष्टकालको दिन भन्दा पात्राको पङ्क्तिदिन अघिल्लो भए इष्टकालमा पङ्क्तिको दिन र घडीपला घट्दछ । त्यसो भएमा धन चालन भयो । त्यस्तै पङ्क्तिमा इष्टकाल

घट्यो भने ऋण चालन हुन्छ । धन चालन हुँदा आएको अङ्क सूर्यादिको राश्यादि अङ्कमा जोडिने र ऋण हुँदा घटाउने ग्रहको मार्गी र वक्रीअनुसार माथि बताएजस्तै गर्नु पर्छ । जस्तै–

२०६८ साल वैशाख २५ गते विहान १२।३८ इष्टकाल छ । पात्रोको पङ्ति २२ गते २३।२७ रहेको छ । अब २५।१२।३८ मा घटाउँदा-

२५।१२।३८

- २२।२३।२७

२।४९।११ भयो । यहाँ इष्टमा पङ्ति घटेकोले + चालन भयो । उक्त चालनलाई ग्रहको गतिले गुणन गर्ने जस्तै- २।४९।११ x ५७।५७ यो सूर्यको गति भयो र यसले गुन्दा १६३।२४।१० यो लब्धि भयो । अब यसलाई ६० ले भाग गर्दा २।४३।२४ भयो । यो पङ्ति मिलाएको राशि अंशादिमा धन चालन भएको हुँदा जोडिने भयो । जस्तै सूर्यको राशिअनुसार कला विकला निम्नानुसार-

०।२०।२५।२७ मा

२।४३।२४ जोड्दा

०।२३।०८।५१ यो तात्कालिक सूर्यस्पष्ट भयो । यही क्रमले अरु ग्रहहरूको पनि स्पष्ट गर्न सकिन्छ ।

नामकरण विधि

ज्योतिषशास्त्र अनुसार नामकरण एक महत्त्वपूर्ण संस्कार हो । यो धर्मशास्त्र र ज्योतिषशास्त्रले पनि मानेको संस्कार हो । शास्त्रविधि अनुसार गरिने यो संस्कार आफ्ना अधीनमा हुँदैन यो काल(समय)का अधीनमा हुन्छ । समयानुसारको नामाक्षर बालकले पाएको हुन्छ । उसको जन्मसमय अनुसार नामाक्षर नक्षत्र राशि आदिको निश्चय गरिन्छ त्यसैको आधारमा भाग्यको लेखाजोखा हुन्छ । यो विधि ज्योतिषशास्त्रको अत्यन्त महत्त्वपूर्ण र सार्थक विधि रहेको छ । नामकरणमा सर्वप्रथम नक्षत्र शोधन अर्थात् नक्षत्रको कुन भागमा परेको छ त्यो जान्नुपर्दछ जसलाई भयात वा भुक्त र भभोग भनेर व्यवहार गरिन्छ ।

भयात र भभोग ल्याउन रीति

गतर्क्षनाड्यः खरसेषु शुद्धाः
सूर्योदयादिष्टघटीषु युक्ता ।
भयातसंज्ञा भवतीह तस्य
निजर्क्षनाड्या सहितो भभोगः ॥१९॥

अर्थः-जुन नक्षत्रमा बालकको जन्म भएको छ, त्यो नक्षत्रदेखि गएको नक्षत्रको घडीपलालाई ६० मा घटाउनु आएको शेष अङ्कलाई सूर्योदयादिष्टघटिषु=सूर्योदयबाट लिएको इष्ट घडीपलामा युक्ता=जोडिदिनु । यो भयातसंज्ञा भवति=भयातनाम हुन्छ । पुनः ६० बाट घटाएको शेष अङ्कमा निजर्क्षनाड्यसहितः=निज(जन्म) नक्षत्रको घडीपला जोडिदिएमा भभोग=भभोग संज्ञा हुन्छ ।

जस्तै २०६८ वैशाख २५ गते रविवार विहान १०।२५ मा १२।३७।३० इष्टकाल रहेको छ यहाँ आर्द्रा नक्षत्रले ६।३७ अर्थात् विहानको ८।० बजेम्म मात्र ओगटेको छ । बालकको १०।२५ मा जन्म भएकोले गत नक्षत्र आर्द्रा नै भयो । अब यो नक्षत्रको घडीपलालाई ६० मा घटाउँदा ५९।६०–६।३७=५३।२३ भयो । यो अङ्कमा इष्टकाल जोड्दा ५३।२३+१२।३७=६६।१०।३० भयो । ६० भन्दा बढी भएकोले ६० मा घटाउँदा ६।१०।३० बाँकी भयो । यो पुनर्वसु नक्षत्रको गत भाग भएकाले यो भयात नाम भयो । अब त्यही नै पूर्व ६० मा घटाइ रहेको अब शेषमा ५३।२३ मा निज नक्षत्र पुनर्वसुको घडीपला जोड्दा ५३।२३+५।५५=५९।२८ यो अङ्क भभोग नामले सिद्ध भयो । यो भभोगलाई ४ ले भाग गर्दा १४।५२ सम्म एक पाउ नक्षत्र भयो । आर्द्राको कु घ ङ छ मध्ये उक्त बालकको नामाक्षर कु सिद्ध भयो । त्यसैले उक्तबालकको नाम कुलराज सिद्ध भयो । एवं रीतले नामकरण गर्नुपर्दछ ।

चन्द्र स्पष्ट गर्ने तरिका

चन्द्रमा स्पष्ट गर्दा सर्वप्रथम भयात र भभोग सिद्ध गर्नुपर्दछ। नक्षत्र संख्याको पनि ज्ञान हुनुपर्दछ । त्यसपछि भयातलाई पलात्मक बनाएर (भयातको घडी संख्यालाई ६० ले गुनेर पला विपला जोड्ने) भभोगले भाग गर्ने र गतनक्षत्र संख्यालाई ६० ले गुनेर पहिले आएको भयातलाई भभोगले भाग गरेको लब्धिमा जोड्ने त्यसै अङ्कलाई २ ले गुणन गरेर ९ ले भाग गर्दा जति अङ्क आउँछ त्यो चन्द्रस्पष्ट भएको अंशात्मक अङ्क हो । अब त्यसै अङ्कलाई ३० ले भाग गर्दा लब्धि चन्द्रमाको राशि हुन्छ शेष अंशा कला विकला हुन्छ। यो विधिको श्लोकसूत्रहरूद्वारा पनि जान्न सजिलो हुन्छ। जस्तै-

खषड्घ्नं भयातं भभोगोद्धृतं तत्
खतर्कघ्न यातोडुयुक्तं द्विनिघ्नम् ।
नवाप्तं शशीभागपूर्वस्तु भुक्तिः
खखाभ्राष्ट वेदा भभोगेन भक्ताः ॥२०॥

अर्थः-खषड्घ्नं ६०×भयातं ६० ले भयातको घडी अङ्कलाई गुणन गर्नु भभोग=भभोगले उद्धृतं=भाग गर्नु, ख=० तर्क=६ अर्थात् ६० ले यातः=गत उडु=नक्षत्र युक्तं=जोडिदिनु, द्वि=दुइले निघ्नम्=गुणन गर्नु नवाप्तम्=नौ ले भाग गर्नु भाग पूर्वस्तु=आएको संख्यालाई ३० ले भाग गर्नु भुक्तिः=भुक्त शशि=चन्द्रमा स्पष्ट हुन्छ। खखाभ्राष्टवेदा=४८००० लाई भभोगेन=भभोगले भक्ता=भाग दिएमा चन्द्रमाको गति पनि स्पष्ट हुन्छ ।

जस्तै-

$$\frac{\frac{\text{भयात} \times ६०}{\text{भभोग}} + (\text{गतनक्षत्र संख्या} \times ६०)}{९} \times २$$

उदाहरण- २०६८ साल वैशाख २५ गते विहान १०।२५ मा काठमाडौंमा जन्म भएको बालकको नक्षत्र भयात सं. ६।१० छ र भभोग सं. ५९।२८ छ । उक्त सूत्र अनुसार भयात x ६०=३७०।०० ÷ भभोग संख्या ५९।२८=६।१३।१९ + (गत नक्षत्र संख्या x ६०) गत नक्षत्र मृगशीरा भएकोले गत नक्षत्र संख्या ५ भयो । उक्त सूत्रअनुसार ६०x५=३०० भयो । यो अगाडिको भभोगले भाग गरेको संख्यामा जोड्दा ३०६।१३।१९ भयो । यो संख्यालाई २ ले गुन्दा ३०६।१३।१९ x २ = ६१२।२६।३८ भयो । यो संख्यालाई ९ ले भाग गर्दा ६१२।३६।३८ ÷ ९ = ६८।२।५८ भयो । यो संख्याको अंशात्मक अङ्कलाई मात्र ३० ले भाग गर्दा लब्धि राशि संख्या र शेष अंश संख्या हुन्छ । बाँकी अङ्क कला विकला हुन्छन् । यसप्रकार तात्कालिक चन्द्रस्पष्ट हुन्छ । उक्त नियमअनुसार २।८।२।५८ यो चन्द्रस्पष्ट भयो ।

ग्रहको उदय अस्त स्थिति

ग्रहहरूको उदय र अस्त जान्नुपर्छ आवश्यक छ । ज्योतिषशास्त्रमा ग्रहको उदय अस्तको महत्त्व ज्यादै ठूलो रहेको पाइन्छ । ग्रहको उदय बल चेष्टा बल इत्यादि ग्रहबल तथा स्वाभाविक गुण विचार गर्न र अरू पनि फलादेश गर्न ग्रहको उदय अस्त वक्रादि अवस्था जान्नुपर्छ आवश्यक छ । पहिले तात्कालिक ग्रह स्पष्ट गर्नुपर्दछ र सूर्यको राशि अंशसँग अरू ग्रहको राशि अंशलाई हेर्नुपर्दछ ।

भौमे मेघा बुधे विश्वा गुरोरुद्रा भृगोर्दश ।
शनौ पञ्चदशाः प्रोक्तः कलांशे उदयास्तके ॥२१॥

ग्रहको साधारण अवस्थामा उक्त नियमानुसार उदयास्त जान्न सकिन्छ । सूर्यको राशि अंशादेखि १७ अंशा अघि या पछि भएमा मङ्गल अस्त हुन्छ । त्यस्तै बुध १३ अंशाको अघिपछि भएमा गुरु ११ अंश शुक्र १० शनि १५ अंशाको अघिपछि भएमा यी ग्रहहरू अस्त हुन्छन् । सूर्य दिनमा उदय र रातमा अस्त हुन्छन् । चन्द्रमा चतुर्दशीको अर्धोत्तर र प्रतिपदाको पूर्वार्धसम्म अस्त हुन्छ । उक्त नियम भौमादि पञ्चग्रहको साधारण अवस्थामा मात्र ठीक हुन्छ, वक्री अतिचार आदि विशेष अवस्थामा विशेष विचार गर्नुपर्दछ । राहु केतुको उदयास्त विचार गरिएको पाइँदैन ।

ग्रहहरूको बाल्यवृद्धादि अवस्था ज्ञान

बालारसंशैर्रसभे प्रदिष्टस्ततः कुमारो हि युवाऽथवृद्धः ।
मृतः क्रमादुत्क्रमतः समर्क्षे बालाद्यवस्थाः कथिता ग्रहाणाम् ॥२२॥

ग्रहहरू विषम राशिमा हुँदा ० देखि ६ अंशासम्म बालक, ६ अंशादेखि १२ अंशासम्म कुमार र १२ देखि १८ सम्म युवा १८ देखि २४ अंशासम्म वृद्ध २४ देखि ३० सम्म मृतावस्था हुन्छ ।

सम राशिमा हुँदा ० देखि ६ सम्म मृतावस्था, ६ देखि १२ वृद्धा, १२ देखि १८ सम्म युवा १८ देखि २४ सम्म कुमार र २४ देखि ३० अंशासम्म बालक अवस्था हुन्छ ।

ग्रहावस्थाको फल

फलन्तु किञ्चिद्वितनोति बाल-
श्चार्द्धः कुमारो यतते च पुंसाम् ।
युवा समग्रं खचरोऽथ वृद्धः
फलञ्च दुष्टं मरणं मृताख्यम् ॥२३॥

अर्थः-बालः=बालग्रहले तु=भने किञ्चित्=केही थोरै(अल्प) फलं=फल वितनोति= दिन्छ (विस्तार गर्छ) । कुमारः=कुमार ग्रहले अर्धं=आदि फल दिन्छ युवा समग्रं=युवा ग्रहले समग्र फल दिन्छ । अथ= त्यस्तै वृद्धः=वृद्ध ग्रहले दुष्टं=दुष्ट फल दिन्छ । मृतनामक ग्रहले मरणं=मरणसमेत फल दिन्छ । यस प्रकार ग्रहको अवस्थानुसार फलादेश गर्नुपर्दछ ।

नवांशसाधनरीति

नवांश भन्नाले राशिको नौ भागको एक भाग भन्ने बुझ्नुपर्दछ । जस्तै ३० अंशाको १ राशि हुन्छ ३० लाई ९ ले भाग गर्दा लब्धि ३।२० हुन्छ यो प्रथम नवांश हो । अब नवांश गणना गर्दा कसरी गर्ने भन्ने विषयमा निम्नलिखित सूत्ररूप श्लोकबाट जानिन्छ । जस्तै-

मेषसिंहधनूनाञ्च मेषाद्यस्तु नवांशकः ।
वृषकन्यामृगानान्तु मृगाद्यस्तु नवांशकः ॥२४॥
मिथुनतौलिकुम्भानां तुलाद्यस्तु नवांशकः ।
कर्कवृश्चिकमीनानां कर्काद्यस्तु नवांशकः ॥२५॥

उक्त श्लोकानुसार कुन राशि भोग्यांशमा छ त्यसको अंशा कति बित्यो त्यो अंशाकलाका आधारमा कुन भाग खण्डमा आएको छ त्यो भाग गन्दा जुन राशिको पर्छ त्यो राशि नवांशको आधार हुन्छ । जस्तै- ४।१५।७।३५ त्यस दिनको स्पष्टग्रह अथवा लग्न छ भने चारौं वा कर्कट राशि भुक्त भयो । अब भोग्य राशि सिंह भयो, सिंहको पनि १५ (पन्द्र) अंशा ७ (सात) कला बितेकोले मेष सिंह धनूनां भन्ने सूत्रले मेषादि नवांश गणना गर्ने आधार भयो अथवा मेषादि नवांशक भयो । अब १५ अंशा सात कला बितेकामा ३।२० ले घटाउँदै जाँदा मेषले ३।२० पायो । मेष भन्दा पछिल्लो राशि वृषले ३।२० लिंदा ६।४० भयो । यसैगरी मिथुनले ३।२० लिँदा १०।०० भयो । कर्कटले ३।२० लिँदा १३।२० भयो । सिंहले ३।२० लिँदा १६।४० सम्म जाने भयो हाम्रो इष्ट ग्रह वा लग्नको राशि अंशा १५।७ मात्र भएकाले र उक्त सिंह राशिको भाग १६।४० सम्म भएकाले यो स्पष्ट ग्रह वा लग्नको नवांशक सिंह प्रसिद्ध भयो । यसै क्रमले अरू ग्रह वा लग्नको पनि नवांश सिद्ध गर्न सकिन्छ ।

॥ इति प्रारम्भकाध्याय ॥

अथ कुण्डली प्रकाराध्याय

षड्वर्ग विचार

ज्योतिषशास्त्रमा षड्वर्ग भन्नाले ६ किसिमका कुण्डलीलाई लिएको छ। अविहित ६ कुण्डली यस प्रकार मानिन्छ- प्रथम लग्नकुण्डली, द्वितीय राशि कुण्डली, तृतीय होरा, चतुर्थ द्रेष्काण, पाँचौं नवांश र छैटौं त्रिंशांश लिएको छ । वर्गका विषयमा धेरै किसिमका वर्गहरू ज्योतिषशास्त्रमा प्रस्तुत गरेको पाइन्छ तर पनि मुख्यरूपमा फलादेशमा बढी चल्तीमा आएका षड्वर्ग नै हुन् । यिनीहरूको साधना र फलसम्बन्धी कुराहरू सामान्य ज्योतिषले पनि जान्नुपर्दछ। यो प्रक्रिया नजान्दा ज्योतिष विषयको नै उपहास हुन जान्छ तसर्थ यहाँ तालिका सहित षड्वर्ग दिइन्छ-

१) लग्न कुण्डली-

लग्न कुण्डली सर्वप्रथम सूर्यस्पष्ट गरेर राशि अंशाका आधारमा निस्किएको प्रथमलग्नलाई नै लिइन्छ । यसलाई ज्योतिषीय प्रयोजनपरक भाषामा देह, तनु इत्यादि नामले पनि पुकारिन्छ ।

२) राशि-

राशिकुण्डली चन्द्रमाको आधारमा गरिन्छ । यो कुण्डली चन्द्रमा जुन राशिमा छ त्यो राशिबाट सुरु हुन्छ। यो कुण्डलीबाट विशेष ग्रहगोचरको अवस्था र तत् तत् अवस्थाको फल भेद देखाइन्छ। लग्न अथवा जन्म समय थाहा नै नभएका मानिसहरूको सम्पूर्ण फलादेश यसै कुण्डलीबाट गर्नुपर्ने हुन्छ।

३) होरा-

यो कुण्डली प्रथम लग्नको आधारमा गणना गरिन्छ । लग्न राशि अथवा होरा गणना गर्नुपर्ने राशिहरू प्रत्येक राशिको दुई खण्ड बनाइन्छ। सामान्यतः ३० अंशाको राशि हुन्छ। दुई खण्ड बनाउँदा १५-१५ अंशाको खण्ड हुन्छ। विषम राशि भए प्रथम खण्ड अर्थात् ०-१४ अंशासम्म भए सिंह वा सूर्यको होरा भयो १५-२९ अंशा सम्म विषस राशिकै अंशा भए कर्कट वा चन्द्रको होरा भयो । त्यस्तै सम राशि भए ०-१४ अंशासम्म

कर्कट वा चन्द्रको होरा र १५-२९ सम्म सिंह वा सूर्यको होरा भयो । यस प्रकार लग्नस्पष्ट राशि अंशाबाट गर्दा होरालग्न र अरू ग्रह स्पष्ट राशि अंशाबाट गर्दा होराङ्कस्थित ग्रहहरू सिद्ध हुन्छन् । निम्नलिखित तालिकाबाट पनि स्पष्ट गरिएको छ-

(क) होराचक्र

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अंशा
रा.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१२	१५
	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	
	सिंह	कर्कट	सिंह	कर्कट	सिंह	कर्कट	सिंह	कर्कट	सिंह	कर्कट	सिंह	कर्कट	
रा.	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	३०
	कर्कट	सिंह	कर्कट	सिंह	कर्कट	सिंह	कर्कट	सिंह	कर्कट	सिंह	कर्कट	सिंह	

होरा कुण्डली बनाउँदा पहिले लग्नबाट लिने कुन राशिको कति अंशा छ माथिको नियमानुसार प्र.ल. ४।१०।१७।५० छ । अब यो सिंह राशिको १० अंशा भुक्त भएको छ । त्यसैले यो विषम राशिको १५ अंशा भित्र भएकाले सिंह होरा भयो । त्यस्तै प्र.ल. ४।१६।१८।२५ भयो भने कर्कट होरा हुन्छ यस्तै रीतले कुण्डलीमा ग्रहहरू पनि राख्नुपर्दछ । जस्तै-

सूर्य-१।१५।१८।२० चन्द्र-२।१२।१७।५५
मङ्गल-४।१४।१७।२५ बुध-१।१२।३५।५५
बृहस्पति-८।९।१९।१७ शुक्र-२।१६।१८।२५
शनि- ६।१५।१२।१८ राहु-५।१२।१८।२७
केतु-११।१२।१८।२७

(ख) होरा कुण्डली

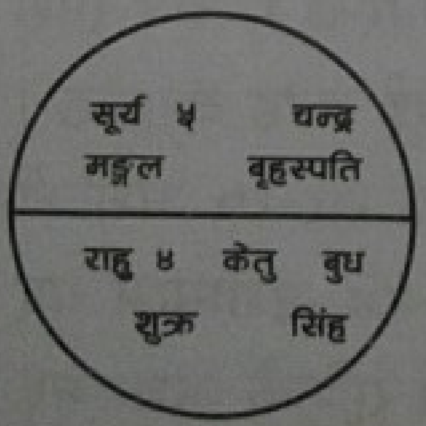

(होरा कुण्डलीमा राहु र केतु नराख्ने पनि चलन छ ।) यस प्रकार स्पष्ट ग्रहहरू कुण्डली बनाएर राख्नु पर्दा यसरी राख्न सकिन्छ । लग्न होरा सिंह भएकाले यहाँ पनि सुरु सिंहबाट गरिन्छ । यस प्रकार होराकुण्डली सिद्ध हुन्छ ।

४) द्रेष्काण-

यसमा प्रत्येक राशिको तीन खण्ड गरिन्छ। ३० अंशको राशि तीन खण्ड हुँदा प्रत्येक खण्ड १० अंशाको हुन्छ। प्रत्येक राशिको प्रथम खण्ड द्रेष्काण आफ्नै राशि हुन्छ, दोस्रो द्रेष्काण आफ्नो अर्थात् जुन राशिको द्रेष्काण लिनु छ त्यसको पाँचौं राशि द्रेष्काण हुन्छ। त्यस्तै तेस्रो द्रेष्काण आफ्नै नवौं राशि हुन्छ। तल दिइएको तालिकाबाट स्पष्ट हुन्छ-

क) द्रेष्काण तालिका

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अंशा
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१०
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	२०
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	३०

उपर्युक्त तालिकामा पहिलो लाइन १० अंशा सम्मको र दोस्रो २० अंशासम्मको तेस्रो ३० अंशासम्मको जान्नुपर्दछ।

पूर्व उदाहरणनुसार यहाँ पनि लग्न स्पष्ट र ग्रहस्पष्टकै आधारमा कुण्डलीमा राख्नुपर्दछ, जस्तै-

ख) द्रेष्काण कुण्डली

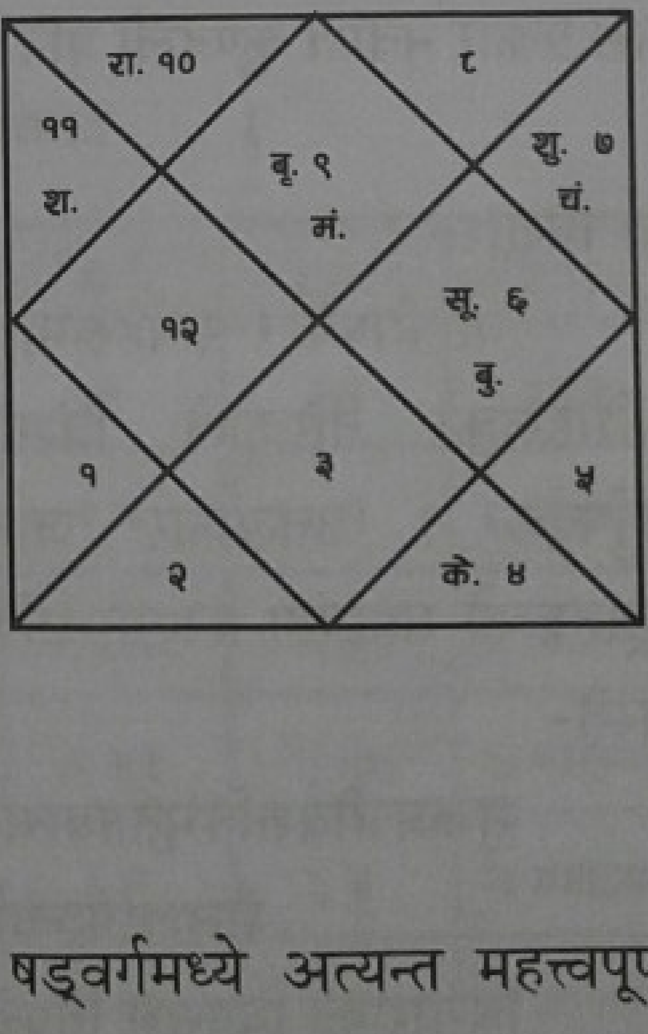

प्र.ल.-४।१०।१७।५० सूर्य-१।१५।१८।२०
चन्द्र-२।१२।१७।५५ मङ्गल-४।१४।१७।२५
बुध-१।१२।३५।४० बृहस्पति-८।९।१९।१७
शुक्र-२।१६।१८।२५ शनि-६।१५।२७।३०
राहु-५।१२।१८।२७ केतु-११।१२।१८।२७

यसै गरी पूर्वोक्त उदाहरण अनुसार द्रेष्काण कुण्डली सिद्ध हुन्छ।

५) नवांश कुण्डली-

नवांश कुण्डली ज्योतिषशास्त्रमा षड्वर्गमध्ये अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कुण्डली हो। यसबाट अनुभवी ज्योतिषीहरू अत्यन्त सूक्ष्म फल बताउन सफल हुन्छन्। यसको राम्रोसँग विचार गर्नुपर्दछ।

क) नवांश बोधक तालिका-

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अंश/कला
१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	३।२०
२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	६।४०
३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	१०।००
४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	१३।२०
५	२	११	८	५	२		८	५	२	११	८	१६।४०
६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	२०।००
७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	२३।२०
८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	२६।४०
९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	३०।००

ख) नवांश कुण्डली-

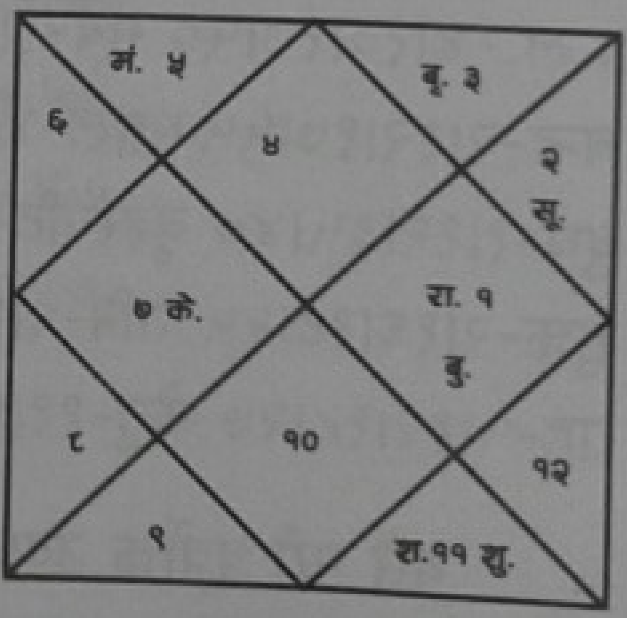

यस प्रकार नवांश कुण्डली पनि सिद्ध हुन्छ।

६) त्रिंशांश-

यो विषम र समहरूमा भिन्नाभिन्नै राशिहरूको तरिकाले त्रिंशांश गणना गर्नुपर्दछ । उक्तप्रकार जान्न श्लोक सूत्रहरूको सहायता लिएमा सजिलो हुन्छ। जस्तै-

शुक्रज्ञजीवशनिभूतनयस्य वाण:
शैलाष्टपञ्चविशिखा: समराशिमध्ये।
त्रिंशांशको विषमभे विपरीतमस्माद्
द्रेष्काणका: प्रथमपञ्चनवाधिपानाम् ॥२६॥

अर्थः- शुक्रः=शुक्र, ज्ञ=बुध, जीव=बृहस्पति, शनिः=शनि, भूतनय=मङ्गल यिनीहरूको शुक्रादिक्रमले वाणः=५, शैल=७, अष्ट=८, पञ्च=५, विशिखा=५ लग्न स्पष्ट वा ग्रहस्पष्टको राशि अंशा कला विकलामा अंशा पाँचसम्म भयो राशि सम छ भने शुक्रको (वृष) समराशिकै त्रिंशांश भयो। त्यस्तै समराशिकै पाँच अंशा भन्दा बढी भई १२ अंशा सम्म छ भने अर्थात् ५+७ सम्म बुधको समराशि अर्थात् कन्याको त्रिंशांश हुन्छ। पुनः १२+८ अर्थात् सम राशिको २० अंशासम्म बृहस्पतिको समराशिको अर्थात् मीनको त्रिंशांश हुने भयो। यस्तै प्रकारले २०+५ सम्म शनिको सम राशि मकरको त्रिंशांश भयो पुनः २५+५ अर्थात् ३० अंशा पर्यन्त मङ्गलको त्रिंशांश भयो। यसै गरी विषम राशिभएमा उक्त क्रमको विपरीत गर्नुपर्दछ। जस्तै समराशिमा शुक्र, बुध, गुरु, शनि, मङ्गल यो क्रम छ र अंशा क्रम पनि ५+७+८+५+५ यसप्रकार रहेको छ। त्यस्तै विषममा विपरीत भन्नाले मंगल, शनि, गुरु, बुध, शुक्र यो क्रमले गन्ने अंश संख्या पहिलेकै जसरी हेर्दै जाने निम्न लिखित तालिकाबाट स्पष्ट हुन्छ। जस्तै-

क) विषम राशि त्रिंशांश बोधक तालिका

मेष	मिथुन	सिंह	तुला	धनु	कुम्भ	अंशा
०	२	४	६	८	१०	राशि
१ मं.	१ मं.	१ मं.	१ मं.	१ मं.	१ मं.	५ अंशासम्म
११ श.	११ श.	११ श.	११ श.	११ श.	११ श.	१० अंशासम्म
९ गुरु	९ गुरु	९ गुरु	९ गुरु	९ गुरु	९ गुरु	२० अंशासम्म
३ बु.	३ बु.	३ बु.	३ बु.	३ बु.	३ बु.	२५ अंशासम्म
७ शु.	७ शु.	७ शु.	७ शु.	७ शु.	७ शु.	३० अंशासम्म

ख) समराशि त्रिशांश बोधक तालिका

वृष	कर्कट	कन्या	वृश्चिक	मकर	मीन	अंशा
१	३	५	७	९	११	राशि
२ शु.	२ शु.	२ शु.	२ शु.	२ शु.	२ शु.	५ अंशासम्म
६ बु.	६ बु.	६ बु.	६ बु.	६ बु.	६ बु.	१२ अंशासम्म
१२ बृ.	१२ बृ.	१२ बृ.	१२ बृ.	१२ बृ.	१२ बृ.	२० अंशासम्म
१० श.	१० श.	१० श.	१० श.	१० श.	१० श.	२५ अंशासम्म
८ मं.	८ मं.	८ मं.	८ मं.	८ मं.	८ मं.	३० अंशासम्म

ग) त्रिंशांश चक्र

पूर्वोक्त ग्रहस्पष्टका आधारमा त्रिंशांश चक्र यसप्रकार हुन्छ-

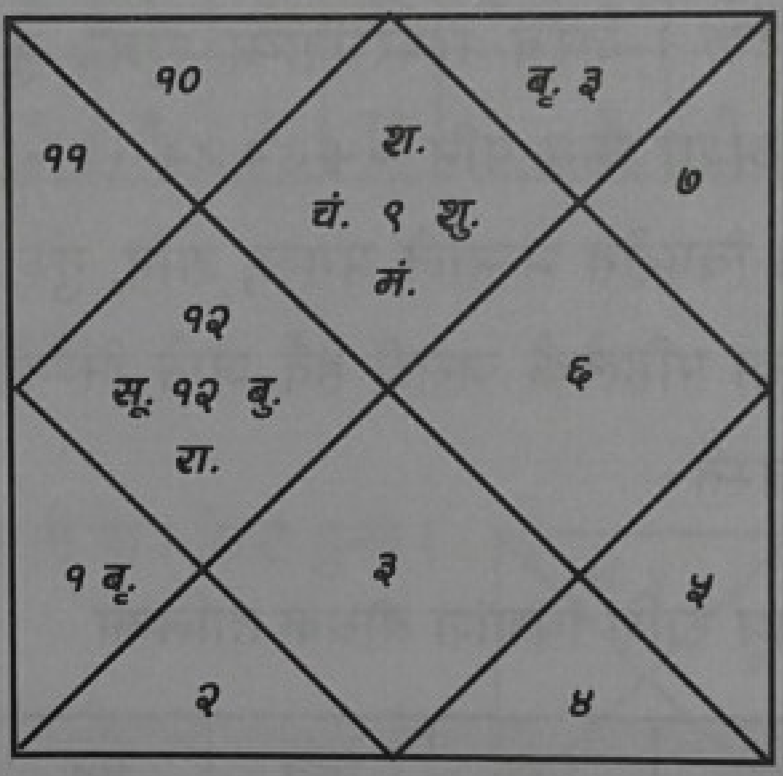

७) षड्वर्गफल-

देहात् सौख्यमुदाहरन्ति मुनयो होरावलाच्छीलताम्
द्रेष्काणात्पदवीं धनस्य निचयं राश्यांशके चिन्तयेत् ।
वर्णरुपगुणाः सुधी सुतनयान् प्रायो नवांशेऽखिलम्
षड्वर्गेषु विचारयेत् फलमिदं त्रिंशांशके स्त्री फलम् ॥२७॥

अर्थः- देहात्=लग्नात्, सौख्यं=देहसम्बन्धी सुख, उदाहरन्ति=उदाहरण सहित वर्णन गर्दछन्, मुनय=मुनिहरू, होराबलात्=होरा लग्नबलबाट, शीलताम्=शीलस्वभाव, आनि वानि इत्यादि, द्रेष्काणात्=द्रेष्काण लग्नबाट,

पदविं= कार्यक्षेत्र पदयोग्यता कार्यक्षमता इत्यादि, राश्यांशके=राशिलग्न अर्थात् चन्द्रमा बसेको राशि वा चन्द्रमा बसेका सप्तांश र नवांशबाट, धनस्य निचयम्= धन प्राप्ति (देशकाल व्यक्ति विशेष् स्थान स्वकीय स्वभाव इत्यादि) को उपाय, चिन्तयेत्=विचार गर्नु, वर्णं=ब्राह्मणादि वर्ण, रूप=स्वरूप, गुणाः=गुणहरू (आन्तरिक, वाह्यिक), सुधी=असल बुद्धि, सुतनयान्=शिष्य वा सन्तान इत्यादि प्रायः धेरैजसो अखिलं=उपर्युक्त सम्पूर्ण फलहरू नवांशे=नवांशमा नै चिन्तयेत्=उक्त फलहरू षड् वगेषु=षड्वर्गमा विचारयेत्=चिन्तन गर्नु विचार गर्नु इदं फलं=उपर्युक्त सबै फलहरू त्रिंशाशके=त्रिंशांशमा स्त्री फलं=स्त्रीसम्बन्धी फल पनि विचार गर्नु ।

॥ इति कुण्डली प्रकाराध्याय ॥

अथ दशाध्याय

१) दशा-

ज्योतिषशास्त्रमा दशाको धेरै महत्त्व रहेको छ जसको ज्ञान विना ज्योतिष फलादेश हुँदैन । शुद्ध फलादेश गर्न दशाको ठूलो भूमिका रहेको छ। वास्तवमा दशा भनेको के हो ? सामान्यतः दशाको लक्षणै थाह नभए कसरी दशाको ज्ञान र फलादेश गर्ने दशाको परिचय यस प्रकार पाइन्छ- दशा भन्नाले नवग्रह र योगिनीसमूह गरी दश मानिएको छ, तिनीहरूको भोग्यसमय दशा नामले चिनिएको छ। प्रारब्ध भोग पनि दशा भनेरै लेखेको पाइन्छ । त्यस्तै दशा अवस्था दुर्दिन दुर्नियति इत्यादि पनि हो । दशाको अर्को अर्थ अभिलाषा, चिन्ता, स्मरण, गुण-कथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जडता र मरण यी दश अवस्थालाई पनि दशा भनेको पाइन्छ । ज्योतिषशास्त्रमा भने ग्रह राशि, योगिनी र मुन्था आदिको भोग्य काललाई नै जनाउँछ ।

दशा उल्लिखित छन् । नक्षत्रगणना गरी नक्षत्रका आधारमा निश्चित गरिएका दशाहरू विंशोत्तरी, त्रिभागी, अष्टोत्तरी आदि छन्, त्यस्तै मुन्था दशा राशिका आधारमा गनिने दशा हो । लघुजातक, बृहज्जातक, पाराशरीय होराशास्त्र आदिमा लग्नकुण्डलीका आधारमा दशागणना गरिएको छ जो सटिक प्रमाणका रूपमा छ । यो विधिमा गणक भने साह्रै गणितज्ञ र चतुरो चाहिन्छ। यहाँ सर्वप्रथम लग्न चन्द्र र सूर्यमध्ये जुन बलवान छ त्यसको आद्य दशा हुन्छ। त्यसपछि केन्द्रीय दशा त्यसपछि पणफरीय त्यसपछि आपोक्लिमीय दशाक्रम हुन्छ । यी अवस्थाका क्रमहरू परस्पर बलाबलको आधारमा वर्ष संख्या राखिएको हुन्छ। ती वर्ष संख्या जोड्दै जाँदा जुन बेला खराब दशाको पालो आउँछ, त्यो बेला दुःख, व्याधि, ऋण, रोग आदिको प्रकोप हुन्छ। जुन समयमा (आयु कालमा) वर्षसंख्या सकिन्छ त्यो निश्चित मरणकाल हुन्छ । यो विधि स्वकीय परकीय मृत्युज्ञान प्रक्रिया सप्रमाण सिद्ध भएको कुरा हो । यसप्रकार दशाज्ञान गरेर फलादेश गरेमा ज्योतिषीहरू आफ्नो र शास्त्रको गरिमा बढाउन सफल हुनेछन् ।

१) योगिनी दशा गणना गर्ने विधिः-

स्वर्क्षं पिनाकि नयनैः संयोज्य वसुभिर्हरेत् ।
योगिन्यष्टौ समाख्याताः शून्यपाते च सङ्कटा ॥

अर्थः स्वर्क्ष= आफ्नो जन्म नक्षत्र अर्थात् (अर्थ गर्दा स्वर्क्षायां यस्तो सप्तमी पदको अपेक्षा गर्नुपर्छ ।) जन्म नक्षत्र संख्यामा पिनाकि नयनै भन्नाले पिनाकि शिव भन्ने बुझ्नु पर्छ उनका नयन भनेको तीन संख्या हो अर्थात् आफ्नो जन्म नक्षत्र संख्यामा तीन जोड्नु र वसुभि अर्थात् आठले भाग गर्नु शेष अनुसार योगिनीको दशा जान्नुपर्छ । जस्तै १ शेष रहेको छ भने आद्य दशा मङ्गलाको भयो २ शेष भए पिङ्गलको आद्य दशा भयो त्यस्तै तरिकाले सिद्धासम्म जान्नुपर्छ ० शेष भएमा सङ्कटा दशा भन्ने जान्नुपर्छ । निम्न लिखित तालिकाबाट स्पष्ट बुझ्न सकिन्छ ।

२) विंशोत्तरीय र त्रिभागीय दशा गणना गर्ने विधि-

नेत्रोनं जन्मनक्षत्रं नन्दभागावशेषितम् ।
आ.चं.भौ.रा.बृ.शं.बु.के.शूनां स्युः क्रमतोदशाः ॥२९॥

अर्थः-जन्मनक्षत्र संख्यामा नेत्र=दुई ऊनः=घटाउनु अवशेषितं=बाँकी रहेको अवशेषलाई नन्दभागः=नौ ले भाग गर्नु अवशेषितं=अबशेष रहेको अङ्क संख्याअनुसार अर्थात् १ शेष भए सूर्यको दशा दुई भए चन्द्रमाको ३ भए मङ्गलको यसै गरी आ.चं.भौ.रा.वृ.शं.बु.के.शु. भन्नाले आ भनेको आदित्य चं. भनेको चन्द्रमा भौ. भनेको भौम रा. भनेको राहु बृ. भनेको बृहस्पति शं. भनेको शनिश्चर बु. भनेको बुध के. भनेको केतु शु. भनेको शुक्र ।

यसप्रकार दशाको आदि अर्थात् उक्त ग्रहबाट सुरु हुन्छ भनेर जान्नुपर्छ । त्यसपछि आद्यदशाको वर्षसंख्या कति छ त्यसमा त्यसपछि उपर्युक्त क्रमले अर्को दशा वर्षसंख्या जोड्नु अनि वर्तमान सम्म जाँदा जुन ग्रहको वर्षकाल आउँछ त्यो ग्रहको त्यही समयमा दशा छ भनेर जान्नुपर्छ । वर्षसंख्या विंशोत्तरीय र त्रिभागीयमा भिन्नाभिन्नै छन् । तिनीहरूको क्रम निम्नलिखित श्लोकबाट दिइन्छ ।

३) विंशोत्तरीय दशावर्ष संख्या निर्धारण विधि-

षडादित्ये दशेन्दौ च सप्तवर्षाणि मङ्गले ।
अष्टादशसमो राहौ षोडशाब्दो बृहस्पतौ ॥३०॥
एकोनविंशतिर्मन्दे बुधे सप्तदशैव तु ।
सप्तवर्षाणि केतौ च विंशतिर्भार्गवे स्मृतः ॥३१॥

अर्थः-षडादित्ये=सूर्यको दशावर्ष ६ वर्षसम्म जान्नुपर्छ त्यस्तै दशेन्दौ=चन्द्रमाको १० वर्ष मङ्गलको ७ वर्ष राहुको १८ वर्ष बृहस्पतिको १६ वर्ष शनिको १९ वर्ष बुधको १७ वर्ष केतुको ७ वर्ष शुक्रको २० वर्ष यसप्रकार जम्मा दशावर्ष संख्या १२० भएकाले विंशोत्तरी भनिएको हो । उक्त प्रकारले गर्दा विंशोत्तरीय दशा वर्ष सजिलै जान्न सकिन्छ ।

४) त्रिभागीय दशावर्षसंख्यानिर्धारण विधि-

सूर्याब्धिशून्यं रसनागचन्द्रे भौमाब्धिनागश्च तमोऽर्कशून्यम् ।
दशाष्टजीवे रविरष्टमन्दे रुद्राब्धिसौम्ये युगचाष्टकेतौः ॥
विश्वाब्धि शुक्रे क्रमशश्च वर्षाः मासाः त्रिभागी मुनयो वदन्ति ॥३२॥

अर्थः-सूर्याब्धिशून्यम्=सूर्यको ४ वर्ष ० महिना चन्द्रमाको ६ वर्ष ८ महिना मङ्गलको ४ वर्ष ८ महिना त्यस्तै तम= राहुको १२ वर्ष ० महिना वृहस्पतिको १० वर्ष ८ महिना मन्दे=शनिको १२ वर्ष ८ महिना सौम्ये=बुधको ११ वर्ष ४ महिना केतुको ४ वर्ष ८ महिना शुक्रको १३ वर्ष ४ महिना । यो क्रमले मुनिहरूले त्रिभागीय वर्ष संख्या बताएका छन् ।

५) विंशोत्तरी त्रिभागी दशागणना चक्र-

ग्रह	विंशोत्तरी महादशा	त्रिभागी महादशा	नक्षत्रहरु	नक्षत्रहरु	नक्षत्रहरु
सूर्य	६	४।०	कृत्तिका	उत्तरफाल्गुनी	उत्तराषाढा
चन्द्र	१०	६।८	रोहिणी	हस्ता	श्रवण
मङ्गल	७	४।८	मृगशिरा	चित्रा	धनिष्ठा
राहु	१८	१२।०	आर्द्रा	स्वाती	शतभिषा
बृहस्पति	१६	१०।८	पुनर्वसु	विशाखा	पूर्वाभाद्रपदा
शनि	१९	१२।८	तिष्य	अनुराधा	उत्तराभाद्रपदा
बुध	१७	११।४	अश्लेषा	ज्येष्ठा	रेवती
केतु	७	४।८	मघा	मूल	अश्विनी
शुक्र	२०	१३।४	पूर्वाफाल्गुनी	पूर्वाषाढा	भरणी

६) योगिनी दशागणना चक्र-

मङ्गला	१	०	आर्द्रा	चित्रा	श्रवण
पिङ्गला	२	०	पुनर्वसु	स्वाती	धनिष्ठा
धान्यका	३	०	तिष्य	विशाखा	शतभिषा
भ्रामरी	४	अश्विनी	अश्लेषा	अनुराधा	पूर्वाभाद्रपदा
भद्रिका	५	भरणी	मघा	ज्येष्ठा	उत्तराभाद्रपदा
उल्का	६	कृत्तिका	पूर्वाफाल्गुनी	मूल	रेवती
सिद्धा	७	रोहिणी	उ.फा.	पूर्वाषाढा	०
सङ्कटा	८	मृगशिरा	हस्ता	उत्तराषाढा	०

७) विंशोत्तरीय महादशान्तर्दशा बोधक चक्र

(ग्रहहरूको मुख्य दशावर्षमा अन्तरदशाका वर्ष, महिना, दिनहरू)

सू.	चं.	भौ.	रा.	बृ.	शं.	बु.	के.	शु.
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
सू.	चं.	भौ.	रा.	बृ.	शं.	बु.	के.	शु.
०।३।१८	०।१०।०	०।४।२७	२।८।१२	२।१।१८	३।०।३	२।४।२७	०।४।२७	३।४।०
चं.	मं.	रा.	बृ.	शं.	बु.	के.	शु.	आ.
०।६।०	०।७।०	१।०।१८	२।४।२४	२।६।१२	२।८।९	०।११।२७	१।२।०	१।०।०
मं.	रा.	बृ.	शं.	बु.	के.	शु.	आ.	चं.
०।४।६	१।६।०	०।११।६	२।१०।६	२।३।६	१।१।९	२।१०।०	०।४।६	१।८।०
रा.	बृ.	शं.	बु.	के.	शु.	आ.	चं.	भौ.
०।१०।२४	१।४।०	१।१।९	२।६।१८	०।११।६	३।२।०	०।१०।६	०।७।०	१।२।०
बृ.	शं.	बु.	के.	शु.	आ.	चं.	भौ.	रा.
०।९।१८	१।७।०	०।११।२७	१।०।१८	२।८।०	०।११।१२	१।५।०	०।४।२७	३।०।०
शं.	बु.	के.	शु.	आ.	चं.	भौ.	रा.	बृ.
०।११।१२	१।५।०	०।४।२७	३।०।०	०।९।१८	१।७।०	०।११।२७	१।०।१८	२।८।०
बु.	के.	शु.	आ.	चं.	भौ.	रा.	बृ.	श.
०।१०।६	०।७।०	१।२।०	०।१०।२४	१।४।०	१।१।९	२।६।१८	०।११।६	३।२।०
के.	शु.	आ.	चं.	भौ.	रा.	बृ.	श.	बु.
०।४।६	१।८।०	०।४।६	१।६।०	०।११।६	२।१०।६	२।३।६	१।१।९	२।१०।०
शु.	आ.	चं.	भौ.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.
१।०।०	०।६।०	०।७।०	१।०।१८	२।४।२४	२।६।१२	२।८।९	०।११।२७	१।२।०
कृत्तिका उ.फा. उ.षा.	रोहिणी हस्ता श्रवण	मृगशिरा चित्रा धनिष्ठा	आर्द्रा स्वाती शतभिषा	पुनर्वसु विशाखा पू.भा.	पुष्य अनुराधा उ.भा.	अश्लेषा ज्येष्ठा रेवती	मघा मूल अश्विनी	पू.फा. पू.षा. भरणी

८) त्रिभागीय महादशा अन्तरदशा चक्र-

(ग्रहहरूको मुख्य वर्ष, महिनामा अन्तरदशाका वर्षमहिनाहरू)

आ. ४।०	चं. ६।८	भौ. ४।८	रा. १२।०	बृ. १०।८	श. १२।८	बु. ११।४	के. ४।८	शु. १३।४
सू. ०।२।१२	चं. ०।६।२०	मं. ०।३।८	रा. १।९।१८	बृ. १।५।१२	श. २।०।२	बुं. १।७।८	के. ०।३।८	शु. २।२।२०
चं. ०।४।०	मं. ०।४।२०	रा. ०।८।१२	बृ. १।७।६	श. १।८।८	बु. १।९।१६	के. ०।७।२८	शु. ०।९।१०	आ. ०।८।०
मं. ०।२।२४	रा. १।०।०	बृ. ०।७।१४	श. १।१०।२४	बु. १।६।४	के. ०।८।२६	शु. १।१०।२०	सू. ०।२।२४	चं. १।१।१०
रा. ०।७।६	बृ. ०।१०।२०	श. ०।८।२६	बु. १।८।१२	के. ०।७।१४	शु. २।१।१०	सू. ०।६।२४	चं. ०।४।२०	मं. ०।९।१०
बृ. ०।६।१२	श. १।०।२०	बु. ०।७।२८	के. ०।८।१२	शु. १।९।१०	आ. ०।७।१८	चं. ०।११।१०	मं. ०।३।८	रा. २।०।०
श. ०।७।१८	बु. ०।११।१०	के. ०।३।८	शु. २।०।०	आ. ०।६।१२	चं. १।०।२०	मं. ०।७।२८	रा. ०।८।१२	बृ. १।९।१०
बु. ०।६।२४	के. ०।४।२०	शु. ०।९।१०	आ. ०।७।६	चं. ०।१०।२०	मं. ०।८।२६	रा. १।८।१२	बृ. ०।७।१४	श. २।१।१०
के. ०।२।२४	शु. १।१।१०	आ. ०।२।२४	चं. १।०।०	मं. ०।७।१४	रा. १।१०।२४	बृ. १।६।४	श. ०।८।२६	बु. १।१०।२०
शु. ०।८।०	आ. ०।४।०	चं. ०।४।२०	मं. ०।८।१२	रा. १।७।६	बृ. १।८।८	श. १।९।१६	बु. ०।७।२८	के. ०।९।१०

९) रुद्रयामलोक्त योगिनी दशान्तर्दशा चक्र-

(योगिनी मुख्य दशावर्षमा अन्तरदशाका वर्ष, महिना, दिनहरू)

मङ्गला	पिङ्गला	धान्यका	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	सङ्कटा
चं. १	सू. २	बृ. ३	मं. ४	बु. ५	श. ६	शु. ७	रा. ८
मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०।०।१०	०।१।१०	०।३।०	०।५।१०	०।८।१०	१।०।०	१।४।१०	१।९।१०
पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.
०।०।२०	०।२।०	०।४।०	०।६।२०	०।१०।०	१।२।०	१।६।२०	०।२।२०
धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पि.
०।१।०	०।२।२०	०।५।०	०।८।०	०।११।२०	१।४।०	१।२।१०	०।५।१०
भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पि.	धा.
०।१।१०	०।३।१०	०।६।०	०।९।१०	१।१।१०	०।२।०	०।४।२०	०।८।०
भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पि.	धा.	भ्रा.
०।१।२०	०।४।०	०।७।०	०।१०।२०	०।१।२०	०।४।०	०।७।०	०।१०।२०
उ.	सि.	सं.	मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.
०।२।०	०।४।२०	०।८।०	०।१।१०	०।३।१०	०।६।०	०।९।१०	१।१।१०
सि.	सं.	मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.
०।२।१०	०।५।१०	०।१।०	०।२।२०	०।५।०	०।८।०	०।११।२०	१।४।०
सं.	मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.
०।२।२०	०।०।२०	०।२।०	०।४।०	०।६।२०	०।१०।०	१।२।०	१।६।२०
०	०	०	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा
आरद्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्ता
चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	०	०

१०) योगिनीदशा विचार-

कलिकाले विशेषेण विचार्या योगिनी दशा ।
तस्य विज्ञानमात्रेण फलं वाच्यं शुभाशुभम् ।।३३।।

अर्थः- कलियुगमा विशेष गरी योगिनी दशाको विचारबाट शुभाशुभ फलादेश गर्नु राम्रो अर्थात् सप्रमाण हुन्छ ।

भ्रामर्याञ्च तथोल्कायां संकटान्तर्दशाभवेत् ।
तदा तु यमराजस्य सदनं प्राप्यते नृभिः ।।३४।।

भ्रामरी या उल्काको महादशामा सङ्कटान्तर पर्न गएमा (दुःख, रोग व्याधि, ऋण) शनि राहु राम्रो नभए मृत्यु समेत गराउन सक्छ ।

११) मङ्गलादि योगिनीहरुका स्वामी ग्रहहरु–

पतयोमङ्गलादीनां चन्द्रार्क–गुरू–भूमिजाः ।
बुधःसौरीसितोराहुःक्रमेणोक्तामनीषिभिः॥३५॥

आठ योगिनीहरूका पति ग्रहहरू यो क्रमले जान्नुपर्छ, मङ्गलाका पति चन्द्रमा पिङ्गलाका पति सूर्य धान्यका पति गुरु भ्रामरीका पति मङ्गल भद्रिकाका पति बुध उल्काका पति शनि सिद्धाका पति शुक्र सङ्कटाका पति राहु (विकटाका पति केतु) हुन् । यही क्रमले पूजा वा मन्त्र जपमा पनि साथै गर्न राम्रो हुन्छ ।

विंशोत्तरीयदशावर्षयोग चक्र–

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
१६	१७	२५	३४	३५	३६	२४	२७	२६
२३	३५	४१	५३	५२	४३	४४	३३	३६
४१	५१	६०	७०	५९	६३	५०	४३	४३
५७	७०	७७	७७	७९	६९	६०	५०	६१
७६	८७	८४	९७	८५	७९	६७	६८	७७
९३	९४	१०४	१०३	९५	८६	८५	८४	९६
१००	११४	११०	११३	१०२	१०४	१०१	१०३	११३
१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०

त्रिभागीयदशावर्षमासयोग चक्र–

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
४।०	६।८	४।८	१२।०	१०।८	१२।८	११।४	४।८	१३।४
१०।८	११।४	१६।८	२२।८	२३।४	२४।०	१६।०	१८।०	१७।४
१५।४	२३।४	२७।४	३५।४	३४।८	२८।८	२९।४	२२।०	२४।०
२७।४	३४।०	४०।०	४६।८	३९।४	४२।०	३३।४	२८।८	२८।८
३८।०	४६।८	५१।४	५१।४	५२।८	४६।०	४०।०	३३।४	४०।८
५०।८	५८।०	५६।०	६४।८	५६।८	५२।८	४४।८	४५।४	५१।४
६२।०	६२।८	६९।४	६८।८	६३।४	५७।४	५६।८	५६।०	६४।०
६६।८	७६।०	७३।४	७५।४	६८।०	६९।४	६७।४	६८।८	७५।४
८०।०	८०।०	८०।०	८०।०	८०।०	८०।०	८०।०	८०।०	८०।०
कृ. उ.फा. उ.षा.	रो. ह. श्र.	मृ. चि. ध.	आ. स्वा. शत.	पुनर्वसु वि. पू.भा.	पुष्य अनु. उ.भा.	अश्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अ.	पू.फा. पू.षा. भ.

योगिनीमूलदशावर्षयोग चक्र-

म. १		पिं. २		धा. ३		भ्रा. ४		भ. ५		उ. ६		सि. ७		सं. ८	
आ. चि. श्रवण		पु. स्वा. धनि.		तिष्य विशा. शतभिषा		अश्विनी अश्ले. अनु. पू.भा.		भ. म. ज्ये. उ.भा.		कृ. पू.फा. मू. रे.		रो. उ.फा. पू.षा.		मृ. ह. उ.षा.	
मं १	३७	पिं २	३८	धा ३	३९	भ्रा ४	४०	भ ५	४१	उ ६	४२	सि ७	४३	सं ८	४४
पिं ३	३९	धा ५	४१	भ्रा ७	४३	भ ९	४५	उ ११	४७	सि १३	४९	सं १५	५१	मं ९	४५
धा ६	४२	भ्रा ९	४५	भ १२	४८	उ १५	५१	सि १८	५४	सं २१	५७	मं १६	५२	पिं ११	४७
भ्रा १०	४६	भ १४	५०	उ १८	५४	सि २२	५८	सं २६	६२	मं २२	५८	पिं १८	५४	धा १४	५०
भ १५	५१	उ २०	५६	सि २५	६१	सं ३०	६६	मं २७	६३	पिं २४	६०	धा २१	५७	भ्रा १८	५४
उ २१	५७	सि २७	६३	सं ३३	६९	मं ३१	६७	पिं २९	५४	धा २७	६३	भ्रा २५	६१	भ २३	५९
सि २८	६४	सं ३५	७१	मं ३४	७०	पिं ३३	६९	धा ३२	६८	भ्रा ३१	६७	भ ३०	६६	उ २९	६५
सं ३६	७२	मं ३६	७२	पिं ३६	७२	धा ३६	७०	भ्रा ३६	७२	भ ३६	७२	उ ३६	७२	सि ३६	७२

भुक्तभोग्य दशावर्ष साधना गर्ने विधि

भयातनाडी निहता दशब्धै-
भभोग नाड्य निहता फलंयत्।
वर्षादिकं भुक्तमिह प्रवीणै-
र्भोग्यं दशा वान्तरितं निरुक्तम्।

अर्थः भयातको घडीलाई पलात्मक बनाई प्रथम दशाका वर्षसंख्याले गुणन गरेर पलात्मक भभोगले भाग दिँदा (गर्दा) लब्धि वर्षसंख्या हुन्छ। अवशेषलाई १२ ले गुणन गरी पुनः अधिको पलात्मक भभोगले भाग गर्ने लब्धि मास हुन्छ। त्यस्तै अवशेषलाई पुनः ३० ले गुनेर अधिकै पलात्मक भभोगले भाग गर्ने लब्धि दिन हुन्छ। यसप्रकार भुक्त वर्ष मास र दिन आएपछि सामान्य प्रथम दशावर्षमा भुक्त वर्ष मास र दिन घटाइदिँदा अवशेष भोग्य वर्ष मास र दिन हुन्छ। यसप्रकार गरिएको भुक्तोन वर्ष मान सटिक

प्रमाण सिद्ध हुन्छ। जस्तै- आर्द्रा नक्षत्रको भुक्त घडी (भायात) ६।११ रहेको छ, त्यस्तै भभोग ५९।२८ छ भने–

भयात x ६०=३६०
+ ११
———
३७१

आर्द्रा नक्षत्रको प्रथम दशा राहुको हुँदा वर्ष संख्या १८ छ, यसले गुणन गर्दा ३७१ x १८=६६७८ भयो। अब भभोगको घडी पलालाई

५९ x ६०=३५४०
+२८
———
३५६८

यो पलात्मक भभोग भयो। यसले अघिको पलात्मक भयातलाई भाग गर्दा–

```
३५६८)६६७८(१
     ३५६८
     ————
     ३११०
     × १२
३५६८)३७३२०(१०
     ३५६८०
     —————
      १६४०
      × ३०
३५६८)४९२००(१३
     ४६३८४
     —————
      २८१६   शेष त्याग गर्ने।
```

उक्त अवस्थामा १ वर्ष १० महिना १३ दिन मुख्य आद्यदशा वर्ष संख्यामा घटाउँदा-

१७।११।३०
- १।१०।१३
————
१६। १।१७ यो भोग्य वर्ष मास दिन भयो। यस्तैगरी अन्यत्र (त्रिभागी, योगिनीमा) पनि गर्नुपर्छ।

॥ इति दशाध्याय ॥

फलाध्याय

मङ्गला मूलदशा फल

वैरिणां विवदनं विनाशनं, वाहनस्य बहुरत्नलाभदा ।
कामिनीसुतगृहाद्विलासदा, मङ्गला सकलमङ्गलोदया ॥१॥

अर्थः- मङ्गलाको दशा उदय भएमा शत्रुहरूको विवाद विनाश हुन्छ (यदि शत्रुसँग विवाद मुद्दामामिला चलिरहेको भए मङ्गला सुरु हुँदा विवाद टुङ्गिन्छ) धेरै थरिका वाहन, रत्नहरूको लाभ गराउँछ, घर, स्त्री पुत्रादिबाट सुख, सबै किसिमको मङ्गल मङ्गलादशाको सुरुबाट हुन्छ (यदि जन्मकुण्डलीमा पूर्णचन्द्रमा २,४,५,७,९,१० र ११ मा भई ६, ८, १२ मा कर्कट राशिमा छैन भने उक्त फल मङ्गलाले पूरै दिन समर्थ हुन्छिन् । यदि उक्त योग भएमा विशेष विचार गरेर मात्रै दशा फल बताउनुपर्दछ ।

पिङ्गलामूलदशा फल

दुःखशोककुलरोगवृद्धिता, व्यग्रता च कलह स्वजनैश्च ।
अन्त्य भाग फलदा कथिताऽसौ पिङ्गला च विदुषां सुखदाऽऽदौ ॥२॥

अर्थः- दुःख, शोक, कुलरोगको वृद्धि, व्यग्रता (बेचैन, व्याकुलता) आफन्तमा कलह, पिङ्गलादशाको अन्त्य भागमा मात्रै उक्त फल प्राप्ति हुन्छ । आदिमा त मङ्गला तुल्य सुख दिने हुन्छ । त्यो पनि कुण्डलीमा सूर्यग्रहको बलाबल विचार गरेर भन्नुपर्दछ केवल श्लोकार्थमा मात्रै भर पर्नु हुँदैन ।

धान्यकामूलदशा फल

धनं धान्यवृद्धिं धरानाथमान्यं सदायुद्धभूमौ जयं धैर्यबन्तम् ।
कलत्राङ्गनानां सुखं चित्रवस्त्रैर्युतं धान्यका धातुवृद्धिं करोति ॥३॥

अर्थः- धन धान्यादिको वृद्धि, राजमान प्राप्ति, युद्धमा (मुद्दामामिलामा) जयप्राप्ति, धैर्य बढ्ने, स्त्रीपुत्र (परिवार कुटुम्भ आदि) को सुख, चित्रविचित्र वस्त्र पहिरनको प्राप्ति, धातुवृद्धि (शारीरिक बल वृद्धि) यो धान्यका दशा फल जान्नु, परन्तु जन्मकुण्डलीमा गुरु अनुकूल नभए उक्त फल विपरीत पनि हुन सक्छ विचार गरेर फलादेश गर्नु ।

भ्रामरी मूलदशाफल

विदेशे भ्रमं हानिमुद्वेगता च कलत्राङ्गपीडा सुखैर्वर्जिता च ।
ऋणं व्याधिवृद्धिं तथा भूपकोपं दशा भ्रामरी भोगभङ्गं करोति ॥४॥

अर्थः- विदेश भ्रमण, हानि, उद्वेग र स्त्रीपीडा, अरू कुनै तरिकाले पनि सुख नहुने, ऋण र व्याधि रोगको वृद्धि, राज्यबाट पनि पीडा इत्यादि भ्रामरीका दशामा हुन्छ। (यदि मङ्गल ग्रह ३, ६, ११ मा छ र स्वगृही, मित्र गृही उच्च राशि भई आफ्नो षडबलमध्ये चारबल पूर्ण छ भने भ्रामरीको शान्ति गर्दा शुभ फल प्राप्त हुन्छ।)

भद्रिका मूलदशा फल

धनानां विवृद्धिं गुणानां प्रकाशम्
समीचीनवस्त्रागमं राजमानम् ।
अलङ्कारदिव्याङ्गनाभोगसौख्यं
दशाभद्रिका भद्रकार्य करोति ॥५॥

अर्थः- धनको वृद्धि, गुणको प्रकाश, सुन्दर वस्त्रादि प्राप्ति, राजमान प्राप्ति, अलङ्कारले युक्त भएका स्त्रीहरूसँगको सुखसन्तोषपूर्वक व्यवहार अथवा सुन्दरस्त्रीहरूसँगको भोग प्राप्ति, अरू कल्याणकारी कामको सुरु गराउँछ। (यदि जन्मकुण्डलीमा बुध ग्रह शुभ भएमा उक्त सबै फल सिद्ध हुन्छ बुध ग्रह नीचो भई पाप पिडीत भए शान्त्यादि कार्यबाट मात्र शुभ हुन्छ। तसर्थ बुधग्रहको बलाबल विचार गरेर मात्र फलादेश गर्नु उपयुक्त हुन्छ।)

उल्कामूलदशा फल

जनानां विवादं ज्वराणां प्रकोपं
धनादिष्टदारादिकानां वियोगम् ।
स्वगोत्रे विवादं सुहृद्बन्धुवैरं
दशाचोल्किकाऽनर्थकर्त्री सदैव ॥६॥

अर्थः- आफन्तमा विवाद, रोगव्याधिबाट प्रकोप, धन स्त्री पुत्रादिबाट वियोग (एक्लोपनको अनुभव हुनु) हितैसीहरूमा फाटोपार्नु। यस्तैकिसिमले उल्काका दशाले सदैव अनर्थकारी गराउँछ। (यदि शनि ग्रह जन्मकुण्डलीमा शुभ भए शुभ नै हुन्छ तर शान्ति गराएपछि मात्र राम्रो हुन्छ भनेर जान्नुपर्छ।)

सिद्धा मूलदशाफल

राज्ञोऽधिकारं स्वजनादिसौख्यं
धनादिलाभं गुणकीर्तिसिद्धिम् ।
वामादिलाभं सुतवृद्धिसौख्यम्
विद्यां च सिद्धा प्रकरोति पुंसाम् ॥७॥

अर्थः- राज्याधिकार, कुनै नेतृत्व प्राप्ति, आफ्नाबाट सुख सन्तोष, धनादि, संपत्तिको लाभ, गुण कीर्तिको वृद्धि, विद्याको सिद्धि हुनु, सन्तान बढ्नु (सुख बढ्नु) अन्य अनेक प्रकारका सुखसन्तोष हुनु सिद्धाको दशा समयमा गराउँछ। (यदि यस प्रकारको सबै सुख र शुभ हुन शुक्र ग्रह शुभ भएमा मात्र हुन्छ अन्यथा अशुभ पनि हुन सक्छ विचारगरेर मात्र फलादेश गर्नुपर्दछ।)

संकटामूलदशाफल

जनानां विवादं ज्वराणां प्रकोपं
कलत्रादिकष्टं पशूनां विनाशम् ।
गृहे स्वल्पवासं प्रवासाभिलाषं
दशा संकटा संकटं राजपक्षात् ॥८॥

अर्थः- आफन्तमा विवाद, ज्वरादि अनेक रोगहरूको प्रकोप, स्त्रीपुत्रादिमा कष्ट, घरमा थोरै मात्रामा वास, विदेश भ्रमणको इच्छा, राजपक्षबाट पीडा इत्यादि अनेक क्लेश दुःख सङ्कटाका दशामा हुन्छ । (विशेष विचार राहुको अवस्था हेरेर फलादेश गर्नुपर्दछ ।)

विंशोत्तरी अष्टोत्तरी तथा त्रिभागी सूर्यादि महादशा फल

सूर्यमहादशाफल

देशान्तरञ्च निजबन्धुवियोगदुःख-
मुद्वेगरोगभयचोरभयानि पीडा ।
पूर्वस्थितस्य निखिलस्य धनस्य नाशो
भानोर्दशाजननकालदशा भवन्ति ॥१॥

श्लोकान्तरेऽपि (श्लोकान्तरमा पनि)

उद्विग्नचित्तपरिखेदितवित्तनाशं
क्लेश प्रवासगदपीडमहाभिघातम् ।
संक्षोभितः स्वजनबन्धुवियोगमेति
सौरी दशा भवति राजकुलाभिघातः ॥२॥

अर्थः-देशान्तरगमन आफ्ना बन्धुबान्धवसँग वियोग अनेक प्रकारका दुःख विभिन्न किसिमका रोगको उद्वेग हुनु चोर भय पीडा पहिलेदेखि

सञ्चित सम्पत्तिको नाश इत्यादि सूर्यका दशा समयमा हुन्छ । (विशेष विचार जन्मकुण्डलीमा सूर्यको स्थिति हेरेर मात्र फलादेश गर्नु पर्दछ । यदि सूर्यग्रह ३,६, १०,११ यी स्थानमा छ र नीच छैन पाप पीडित पनि छैन र ६,८,१२ मा सिंह राशि परेको छैन शुभ युतदृष्ट भए माथि बताएको सबै फल विपरीत हुन्छ ।)

चन्द्रमाको महादशाफल

हेमादिभूतिवरवाहनयानलाभः
शत्रुप्रतापबलवृद्धि परंपरा च ।
इष्टान्नदानशयनासनभोजनानि
नूनं सदा शशिदशागमने भवन्ति ॥१०॥

श्लोकान्तरबाट
सम्यग्विभूतिवरवाहनछत्रयानं
क्षेमप्रतापबलवीर्यसुखानि तस्य ।
मिष्टान्नपानशयनासन भोजनानि
चन्द्रो ददाति धनकाञ्चनभूमिलाभम् ॥११॥

अर्थः-चन्द्रमाको दशाकालमा सुवर्णादि धन ऐश्वर्यको लाभ श्रेष्ठ वाहनादि पाल्की सहितको लाभ शत्रु पराजय आफ्नो इच्छामाफिकको अन्न प्राप्ति साथै दान गर्ने इच्छा बढ्नु शयनादिको सुख उत्तम स्थान आसनको प्राप्ति उत्तम भोजन इत्यादिको सुख गराउँछ । विशेष कुरा चन्द्रमाको अवस्था पूर्ववत् विचार गर्नु यहाँ कर्कट राशिको पनि विचार गर्नुपर्दछ ।

मङ्गलको महादशा फल

भूपालचौरभयवह्निकृता च पीडा
सर्वाङ्गरोगभयदुःखसुदुखिता च ।
चिन्ताज्वरश्च वहुकष्टदरिद्रयुक्तः
स्यात् सर्वदा कुजदशाजने नराणाम् ॥१२॥

ग्रन्थान्तरबाट

शस्त्राभिघातो नृपतेश्च पीडा
चौर्याग्निरोगाश्च धनस्य हानिः ।
कार्याभिघातश्च नरस्य दैन्यं
भवेद्दशायां धरणीसुतस्य ॥१३॥

अर्थः-राजभय चोरभय अग्नि र हतियारहरूबाट पीडा सर्वाङ्गमा रोग अनेक किसिमका दुःख चिन्ता ज्वरो आदि कष्ट दरिद्रता दुष्कर्ममा प्रवृत्ति आदि मङ्गलका दशाकालमा जान्नुपर्छ परन्तु मङ्गलको पनि पूर्व भने जस्तै शुभाशुभ विचार गरेर मात्रै फलादेश गर्नु ।

राहुको महादशाफल

दीनो नरो भवति बुद्धिविहीनचिन्ता
सर्वाङ्गरोगभयदुःखसुदुःखिता च ।
पापानि बन्धवहुकष्ट दरिद्रयुक्तं
राहोर्दजननकालदशा भवन्ति ॥ १५॥

ग्रन्थान्तरबाट पनि-

बुद्ध्या विहीनमतिविभ्रमसर्वशून्यं
विश्वं भयातिविषमापदमृत्युतुल्यम् ।
व्याधिर्वियोगधनहानिविषानि चैवं
राहोर्दशा सृजति जीवति संशयञ्च ॥१६॥

अर्थः-राहुको दशामा मनुष्य बुद्धिहीन दीन चिन्तायुक्त सर्वाङ्गरोगले आक्रान्त भयभीत बहुत दुःख व्याकुलता पापकर्ममा इच्छा खराब कामले गर्दा बन्धन अनेक कष्ट दरिद्रताको प्राप्ति इत्यादि राहुको दशा समयमा जान्नुपर्छ । विशेष विचार गर्दा राहु बसेको राशिको स्वामी र शनिश्चरको अवस्था अनुसार राहु दशाको विचार गर्नु उपयोगी हुन्छ ।

गुरुको महादशा फल

राज्याधिकार परिवर्धित चित्तवृत्तिं
धर्माधिकार परिपालनशुद्धबुद्धिम्।
सविग्रहोऽपि धनधान्यसमृद्धिता च
स्याद्देवता गुरूदशागमने भवन्ति ॥१७॥

श्लोकान्तर

नृपप्रसादं धनधान्यपुत्रः
कलत्रमित्रादिषु रत्नलाभम्।
नीरोगतां शत्रुजयञ्च सौख्यं
गुरोर्दशा वाञ्छितमातनोति ॥१८॥

अर्थः-राजमान प्राप्ति चित्तमा अनेक प्रकारका सन्तोष धर्मकर्ममा बुद्धि बढ्ने शरीरमा आरोग्य सद्विचारको वृद्धि इत्यादि गुरुको महादशापाक समयमा जान्नुपर्दछ। (विशेष गुरुको अवस्था र ९, १२ राशि ६, ८, १२ मा नभए मात्रै अन्यथा नराम्रो हुन्छ।)

शनिको महादशा फल

मिथ्यापवादबनबन्धनमर्थहानि-
र्मित्रे च बन्धुवचनेषु च युद्धबुद्धिः।
सिद्धिं च कार्यमपि यत्र सदा विनष्टं
स्यात्सर्वदा शनिदशागमने भवन्ति ॥१९॥

श्लोकान्तर

मिथ्यापवादवधबन्ध निराश्रयञ्च
मित्रातिवैरधनधान्यकलत्रशोकम्।
आशानिराशकृतनिष्फलसर्वशून्यं
कुर्याच्छनैश्चरदशा सततन्नराणाम् ॥२०॥

अर्थः-शनिका महादशामा मिथ्या अपवाद, बन्धन, मृत्युतुल्य कष्टकारक अर्थहानि, स्वजन, मित्रसँग झगडा बढ्ने सिद्ध हुन लागेको काम पनि बिग्रने आशा निराशामा जाने इत्यादि जान्नुपर्छ तर शनि शुभकारक शुभयुतदृष्ट शुभस्थानको मालिक भई ३।६।१०।११ मा भए पूर्वकथित फल विपरीत हुन्छ शनिको पूजा जप होम गर्नाले अझ बढी राम्रो फल दिन्छ।

बुधको महादशा फल

दिव्याङ्गना मदनसङ्गमकेलिसौख्यं
नानाविधैः समभिरागमनोऽभिरामैः।
हेमादिरत्नविभवागमकोशधान्यं
स्यात्सर्वदा बुधदशागमने भवन्ति ॥२१॥

श्लोकान्तर
दिव्याङ्गनावदनपङ्कजषड्पदस्य
लीलाविलासवरभोग समन्वितस्य।
नानाप्रकारविभवागमकोशवृद्धिः
क्षिप्रं पुनर्बुधदशाभिमतार्थसिद्धिम् ॥२२॥

सुन्दरी स्त्रीहरूसँगको भोगविलास, प्राप्ति सुवर्ण रत्नादिको प्राप्ति, विभिन्न वैभव ऐश्वर्य लाभ अनेक स्वजन सहित उत्तम भोगहरूको प्राप्ति बुधका महादशाकालमा गराउँछ। जन्मकुण्डलीमा बुधको अवस्था पूर्ववत् विचार गर्नु।

केतुको महादशा फल

भार्यावियोगजनितञ्चशरीरदुःखं
द्रव्यस्य हानिरतिकष्टपरंपरा च।
रोगश्च बन्धुकलहश्च विदेशिता च
केतोर्दशाजननकालदशा भवन्ति ॥२३॥

श्लोकान्तर

विषादकर्तृ धनधान्य हर्तृ
सर्वापदां मूलमनर्थ दात्री ।
भयङ्करी रोगविपद्विधात्री
केतोर्दशा स्यात् किल जीवहन्त्री ॥२४॥

अर्थः-भार्यादिमा रोग वियोगादि भय शारीरिक दुःख धनको हानि कष्ट कारक रोग शत्रुवृद्धिबन्धुबान्धवमा मनमुटाव वैदेशिक इच्छा व्यर्थ भ्रमण विषादकारी धेरै किसिमका आपत्तिहरूको प्राप्ति अनेक कार्यानर्थ भयङ्कर डर लाग्दो अवस्था इत्यादि केतुका दशामा जान्नुपर्छ । यो पनि राहुजस्तै मङ्गलका साथको सम्बन्धबाट विचार गर्नुपर्छ ।

शुक्रको महादशा फल

आरामवृद्धिपरिसर्वशरीरवृद्धिं
श्वेतातपत्रधनधान्यसमाकुलञ्च ।
आयुः शरीतरसुतपौत्रसुखं नराणां
द्रव्यञ्च भार्गवदशाऽऽगमने भवन्ति ॥२५॥

श्लोकान्तर

मित्रोपचारमनिश प्रमदाविलासं
श्वेतातपत्रनृपपूजितदेशलाभम् ।
हस्त्यश्वयानपरिपूर्णमनोरथाश्च
शौक्री दशा सृजति निश्चलराज्यलक्ष्मीम् ॥२६॥

अर्थः-वाग बगैंचा आदि मनोरञ्जकादि स्थान र सामग्रीको प्राप्ति शरीर पुष्टी छत्र आसनादि लाभ अनेक धनधान्य घरमहल इत्यादि आयुबल आरोग्य छोरा नाती समेतको सुख हात्ती घोडा गाइभैंसी आदि चतुष्पादबाट पनि सुखसन्तोष इच्छा पूर्ण सब कार्य हुनु आफ्नो अधिकार (कुल जातिअनुसारको) क्षेत्राधिपतिसमेत शुक्रका महादशामा गराउँछ । (विशेष विचारमा जन्म कुण्डलीमा शुक्रको अवस्था शुभयोग दृष्टि स्थानाधिपति इत्यादि कुरा विचरा गरेर मात्रै फलादेश गर्नुपर्दछ अन्यथा विपरीत पनि हुनसक्छ ।) ।

ज्योतिष फलादेशमा दशाफल नै मुख्य फलादेश हो । यो प्रक्रियाको

राम्रो विचार गर्न सक्ने ज्योतिषी ९५% सफल हुन्छ। जनसमाजमा प्रायः गरेर ज्योतिषी परामर्श ग्रहदशा फलाध्यायकै विषयमा हुने गर्दछ। प्रश्नकर्ताहरू पनि यस्तै फलाध्यायकै विषयमा बढी प्रश्न गर्ने गर्दछन्। तसर्थ ग्रहफल बताउँदा फलकथित श्लोकमा मात्रै भरमा फलादेश गर्नु हुँदैन। ग्रहको स्थान सम्बन्ध बल दृष्टि र अवस्था आदिको खुबै विचार गर्नुपर्दछ। विशेषतः ऋषिमहर्षिहरूले योगका विषयमा पनि अनेक कुराहरू सूचना गरेका छन् धेरै सूक्ष्मतम कुराहरू जान्न नसके पनि सामान्य तहका कुरा भने साधारण ज्योतिषीले पनि जान्नुपर्छ आवश्यक छ। कुण्डली बोध सम्बन्धीत साधारण ज्ञान पनि गर्न नसक्ने मानिसले ज्योतिषीको नामलाई कलङ्कित गर्नु राम्रो हुँदैन। तसर्थ साधारण नियम यस प्रकार रहेको छ-

दशाफल विशेष विचार

मुख्य दशामा अन्तरदशा आउँदा कहिलेकाहिं मुख्य दशाको फल विपरीत भई अन्तर दशाफल दशौं गुणा वृद्धि भएर हानि पुऱ्याएको प्रत्यक्षरूपमै जानकारी भएको छ। शुभ फलदिने अन्तर दशा त्यत्ति वृद्धि भएर जाँदैन पापफल दिने अन्तर दशा शुभ फल दिने मुख्य दशाको अधिन हुन चाँहदैन। त्यस कारण त्यस्तो अवसर हुन मुख्यदशाको स्वकीय शत्रु वाला ग्रहको अन्तर आएमा आफ्नो ६, ८, १२ वाला ग्रहदशा अन्तर भएमा पनि लग्नबाट पनि त्रिकवालाको अन्तर आएमा त्यो अशुभ फलदिने हुन्छ, त्यस्तो किसिमको ग्रहको अन्तर हुँदा पाप फल १० गुणा बढाएर दिने गर्दछ। निम्नलिखित श्लोक पनि विचार गरौं-

केन्द्राधीश्वरकोणनायकदशाश्चान्तर्दशाः शोभनाः ।
सामान्याश्च धनत्रिलाभभवनाधीशग्रहाणांदशाः॥
षष्ठाष्टव्ययभावनायकदशाः कष्टा भवेयुः सदा ।
नेतुर्लग्नमवेक्ष्यतत्तदधिपास्तत्तद्दशाभुक्तिषु ॥१७॥

अर्थः-केन्द्राधीश्वर=केन्द्रका स्वामी केन्द्र भन्नाले १,४,७,१० स्थान जान्नुपर्छ त्यस्तै कोण भन्नाले १,५,९ यसैलाई त्रिकोण पनि भन्दछन्। कोण नायक त्रिकोणको स्वामी अन्तरदशा=उक्त केन्द्रत्रिकोणाधिपतिको अन्तरदशा आएमा र यिनीहरूको शत्रुभिन्न मुख्यदशा भए शोभना

शुभदायक हुन्छ । धन=द्वितीय स्थान त्रि=तृतीय स्थान लाभ एकादश स्थान यी तीन स्थानका स्वामी ग्रहको शत्रु भिन्न मूलदशामा अन्तर भएर आएमा सामान्य=फलसामान्य जान्नुपर्छ षष्टःअष्टःव्ययः नायएक ६,८,१२ का स्वामीको जुनसुकै मुख्य दशामा अन्तर भएर आए पनि कष्टा भवेयुः दुःखदायक हुन्छन् । यस प्रकार लग्न विचार गरेर मात्र सम्बन्ध र सम्बन्धीको भोगभुक्ति भएमा सम्बन्धअनुसारकै फल बताउनुपर्दछ ।

६, ८, १२ का स्वामी शुभ ग्रह(शुक्र बृहस्पति) भइ केन्द्रमा बसेका भएमा यिनीहरूको मूलदशा पनि शुभ फल दिने र अन्तर पनि शुभै फल दिने हुन्छ । यिनमा यिनीहरूका शत्रु अन्तर भएर आएमा केही शुभ फल कटौती गर्छन् सबै सक्दैनन् । बुध स्वतः शुभ भएको भए र शुक्रबृहस्पति पनि केन्द्राधीश नभएर केन्द्मा भए अब यिनीहरूमा आउने पाप ग्रह र शत्रुग्रहको अन्तरले पाप वृद्धि गर्न सक्दैन । यस्तोमा शुभ नै फल बढी दिन्छ । शुभग्रह केन्द्राधीश भएर केन्द्रमा छन् पापसम्बन्धी पनि छन भने यस्तो शुभदशामूलमा पापान्तर वा त्रिकाधिप वा शत्रु ग्रहको अन्तरले आफ्नो स्वभाव भन्दा १० गुणा पाप वृद्धि फल दिन्छन् । त्यस्तै पापी ग्रह केन्द्राधीश भई ३,६, १० , ११ भावमा भएमा आफ्नो पाप फल पूरै शुभमा बदल्छन् । यदि केन्द्राधीश नभई उक्त स्थानमा भएर शुभ दृष्टि युक्तछन् भने आधामात्र शुभ फल दिन्छन् । ६,८,१२ का स्वामी भई केन्द्रमा बसेका भए आफ्नै पूरैपाप फल दिन्छ । ६,८,१२ का स्वामी भई त्रिकोण धन ७,८ मा भए शुभ ग्रहका मूल दशामा आफ्नो अन्तर हुँदा १० गुण वृद्धि गरी पाप फल दिन्छन् । फेरि पापी नै भए पनि लग्नेश हो र उसको अन्तर भएमा पाप फल परिवर्तन गरी एक पाउ शुभ फल दिन्छन् । पापी ग्रह स्वगृही मित्र गृही भए आफ्नो अन्तरकालमा उदासीन भएर रहन्छन् ।

यस प्रकार ग्रहहरूको अवस्था स्थान र सम्बन्ध सबै विचार गरेर मात्र दशाध्यायको व्याख्या विश्लेषण गर्नुपर्छ अन्यथा सबै विपरीत भई ज्योतिषी उपहासको पात्र बन्न पुग्छ र समाजमा शास्त्रप्रति आस्था विश्वासको कमी आउनसक्छ । जसका माध्यमले शास्त्र प्रति अविश्वसको बिन्दु मात्रै पलाउँछ भने त्यस्ता व्यक्तिलाई गोहत्या ब्रह्महत्या तुल्य दोष लाग्छ । तसर्थ शास्त्रको उहापोह भएर मात्र फलादेश गर्नुपर्दछ ।

॥ इति फलाध्याय ॥

अथ भावाध्याय

भाव

भावका अर्थ धेरै छन्; अस्ति वा भवतीति भाव भावको वास्तविक अर्थ सत्ता नै हो, परन्तु अरू अर्थ पनि सन्दर्भानुसार प्राप्त भएकै छन । भाव शब्द प्रयोजनपरक शब्द हो । यो दार्शनिक विषयमा सत्ता वा आत्मा भन्ने अर्थमा बढी बोध हुन्छ, साहित्यमा मनको अवस्था वा मनको विकार भन्ने हुन्छ तिनै वैकारिक अर्थमा स्थायी-उद्दिपनादि भावको प्रस्तुति साहित्यमा पाइन्छ । ऐतिहासिक विषयमा विद्वान् अर्थ भएको पाइन्छ । कोशकारहरूले प्रष्टरूपमा लेखिदिएका छन् नेपालीशब्दकोश तथा अमरकोशमा पनि यसप्रकार दिएको पाइन्छ-

भगिनीपतिरावुत्तो भावोविद्वानथावुकः । अ.को.३८५
विकारो मानसो भावोऽनु भावो भावबोधकः । ४०४
भावसत्ता स्वभावाभिप्रायचेष्टात्मजन्मसु । २७५०

इत्यादिबाट भावका अर्थ विभिन्न छन् भन्ने कुरा थाहा हुन्छ । तर पनि ज्योतिषशास्त्रको भावको अभिप्राय उक्त अर्थसित सम्बन्धीत सबै नभएर सत्ता अर्थग्राही भाव हो तात्कालिक ग्रहसत्ता नै यसको अभिप्राय हो ।

द्वादशभाव

ज्योतिषशास्त्रले (१२ भाव) द्वादश भाव मानेको छ । प्रथम भाव, लग्न, तनु, आद्य, उदय इत्यादि नामले चिनाउने गरिन्छ । द्वितीय भाव धन, कुटुम्ब, स्व, कोश इत्यादि त्यस्तै तृतीय सहज, पराक्रम, दुश्चिक्य इत्यादि चतुर्थ भाव सुहृत, मित्र, पाताल, अम्बु, अम्ब, गृह, क्षेत्र इत्यादिले चिनिन्छ । पुनः पाँचौं भाव विद्या, बुद्धि, सुत, शिष्य, मस्तिष्क इत्यादि भाव नामले चिनिन्छ । त्यस्तै षट भाव रिपु, ब्रण, घात इत्यादि सप्तम भाव पति

पत्नी व्यापार इत्यादि नामले जानिन्छ । आठौं भावलाई मृत्यु ऋण रोग इत्यादि नामले चिनिन्छ । नवौं भाव धर्म, पितृ, भाग्य, गुरु इत्यादि त्यस्तै दशम भाव कर्म, वैदेशिक योग, आकाश, मेसूरण, व्यापार इत्यादि नामले जानिन्छ । त्यस्तै एकादश आय, लाभ इत्यादि र बाह्रौं व्यय, खर्च इत्यादि नामले द्वादश भावालाई पहिले जान्नुपर्दछ । यी सामान्य भाव र नाम हुन् विशेष अवस्थामा ज्योतिषशास्त्रमा यी भावहरूको अनेक नामबाट पनि व्यवहार गर्ने गरेको पाइन्छ । तिनका पनि यथा शक्य यहाँ नाम दिने काम गरिएको छ ।

भाव बलाबलज्ञान

सबै भावहरू पनि स्वतः बलवान हुन सक्दैनन् । यिनीहरू स्वस्वामी युक्त दृष्ट भएमा मात्र बलवान मानिन्छन् । मित्र दृष्ट वा युक्त हुँदा पनि कोहि ग्रहमात्र बलवान मानिन्छन् । मित्र भिन्न भए पनि बुध, गुरु, शुक्र र पूर्ण चन्द्र भने ६, ८ भिन्न स्थानमा युत दृष्ट हुँदा ती राशिहरू बलवान मानिन्छ । बुध गुरु युत दृष्ट जुन राशि पनि बलियो हुन्छ । अरूहरू भने शुभत्व हुँदाहुँदै पनि स्थान विशेषलाई बढी हेर्ने गरेको पाइन्छ ।

राशिहरूको पाददृष्टि र कीटादि संज्ञा

मेष, वृष, सिंह, पश्चार्धधनु र पूर्वार्धमकर यी राशिहरू चारपाउवाला अर्थात् चतुष्पादी हुन् । त्यस्तै कर्कट वृश्चिक राशिलाई कीट राशि भन्दछन् । मीन र मकरको पश्चार्धलाई जलचर राशि कीट भए पनि वृश्चिक र कर्कट उभयचर पनि हुन् । कन्या घट(कुम्भ) मिथुन तुला धनुको पूर्वार्ध भाग यी राशिहरू द्विपाउवाला हुन् ।

भावको केन्द्रादि संज्ञा

द्वादश भावहरूमध्ये १।४।७।१० स्थानलाई केन्द्र चतुष्टय कण्टक इत्यादि नाम प्रसिद्ध छन् ।त्यस्तै २।५।८।११ भावहरूलाई पणफर र बाँकी ३।६।९।१२ भावलाई आपोक्लीम नाम प्रसिद्ध छन् । जस्तै-

एवं प्रकारले ६, ८, १२ स्थानलाई दुःस्थान पनि भन्दछन् । त्यस्तै ३,६, १०, ११ लाई उपचय पनि भन्दछन् । इत्यादि ज्योतिषीय परिभाषाहरू अनेक हुन सक्छन् । ती सबै प्रसङ्गअनुसार सम्झँदै र बुझ्दै जानुपर्दछ ।

भावको शीर्षादि संज्ञा ज्ञान

शीर्षमुखवाहुहृदयोदराणि कटिवस्तिगुह्यसंज्ञानि।
ऊरुजानूजङ्घे चरणाविति राशयोऽजाद्याः ॥१॥

अर्थः-मेषादि राशि (लग्नादि भाव) को प्रथम भाव शीर्ष=शिर जान्नुपर्छ त्यस्तै द्वितीय मुख तृतीय वाहु(हात) चतुर्थ हृदय पाँचौ उदर(पेट) छैटौं कट्टि सातौं वस्ति आठौं गुहृय नवौं उरू दशौं जानू(घुँडा) एघारौं जङ्घा (पिडौला) बाह्रौं चरण (गोलीगाँठोभन्दा मुनिको भाग) यति काल पुरुषको अङ्गावयव जान्नुपर्छ ।

त्रिकोण परिचय

त्रिकोणको अर्थ तीनकुना हो । जीवन चक्रको पनि तीनकुना अथवा तीन विशिष्ट स्थान ऋषिमहर्षिहरूले कल्पना गरेका छन् । भावकुण्डलीमा प्रथम स्थान पञ्चम स्थान र नवम स्थानलाई त्रिकोण भन्ने गरेको पाइन्छ । कुण्डलीको आकार पनि त्यस्तै प्रकारको देखिन्छ । त्यसैले यी स्थानहरू त्रिकोण नामले प्रसिद्ध छन् । यो स्थान शुभ मानिन्छ । त्रिकोणेशसित सम्बन्ध राख्ने ग्रहहरू दुःस्थानेश नभए ती समेत शुभ फल दिनमा उद्यत हुन्छन् । यो मेरो स्वकीय अनुभव हो ।

॥ इति भावाध्याय ॥

राशि ज्ञानाध्याय

राशि

राशि भन्नाले चन्द्रमाले भोग्ने अर्थात् चन्द्र भोग्य नक्षत्र समूह हो । यसैलाई मेषादि नामले पुकारिन्छ । मेषादि राशि नै पूर्व क्षितिजमा उदयावस्थामा लग्नादि नामले चिनाइन्छ । लग्न र राशिको भिन्नता पनि यत्तिबाटै भएको हो । त्यही क्षितिजमा उदयावस्थाको नक्षत्रसमूहलाई लग्न भनिन्छ । त्यति खेर नै चन्द्रमा जुन समूहमा छ त्यसलाई राशि भनिन्छ । राशि वा लग्न बाह्र प्रकारका छन् । ती हुन् मेष, वृष, मिथुन, कर्कट, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ र मीन ।

राशिका स्वामीहरू

उक्त राशिहरू ग्रहका आ-आफ्ना स्थान वा घर भनेर ज्योतिषशास्त्रमा व्यवहार गरेको पाइन्छ । अब यहाँ कुन ग्रहको कुन स्थान वा घर हो भन्ने जिज्ञासामा ज्योतिषशास्त्रमा यस प्रकार बताइएको छ । मेष राशिको स्वामी मङ्गल हो अर्थात् मेष राशि मङ्गलको घर हो । त्यस्तै वृष राशि शुक्रको घर हो त्यस्तै मिथुन बुधको, कर्कट चन्द्रमाको, सिंह सूर्यको, कन्या पुनः बुधको, तुला शुक्रको, वृश्चिक मङ्गलको, धनु गुरुको, मकर र कुम्भ शनिको, मीन गुरुको यसप्रकार सूर्य र चन्द्रमाको मात्र एक एक राशि स्थान वा घर पाएका छन् अरू ग्रहले भने दुई-दुईओटा पाएका छन् । तालिकाबाट अझ सजिलोसँग जान्न सकिन्छ हेरौं तालिका-

मेष	वृष	मिथुन	कर्कट	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
मङ्गल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मङ्गल	बृहस्पति	शनि	शनि	बृहस्पति

मेषादि राशिको पुंस्त्री तथा चरादि संज्ञा

पुंस्त्रीक्रूराऽक्रूरौ चरस्थिरद्विस्वभावसंज्ञाश्च ।
अजवृषमिथुनकुलीरा पञ्चमनवमैः सहैन्द्र्याद्याः ॥१॥

अर्थः-पुं=पुरुष स्त्री=महिला क्रूर=कठोर कर्कश (साह्रो) अक्रूर=

मुलायम, नरम, कोमल, चर=चञ्चल, गतिशील, स्थिर=गतिहीन नचल्ने द्विस्वभाव=चरस्थिरकै प्रकृति अनुरूप संज्ञा=नाम च=पनि अज=मेष वृष=वृष मिथुन= मिथुन कुलीर=कर्कट पञ्चम=पाँचौं नवम=नवौं सह=साथ ऐन्द्री=इन्द्रसम्बन्धी (पूर्वदिशा) आद्या=आदिरूपले जान्नुपर्छ ।

मेषादि बाह्र राशिहरू क्रमैले मेष पुरुष राशि मेष क्रूरराशि मेष चर राशि मेष राशिको दिशा पूर्व एवं रीतले सबैको जान्नुपर्दछ । अर्थात् मेष पुरुषक्रू वृष स्त्री अक्रू मिथुन पुरुष क्रूर कर्कट स्त्री अक्रूर सिंह पुरुष क्रूरकन्या स्त्री अक्रूर तुला पुरुष क्रूर वृश्चिक स्त्री अक्रूर धनु पुरुष क्रूर मकर स्त्री अक्रूर कुम्भ पुरुष क्रूर मीन स्त्री अक्रूर ।

चरस्थिरादि पनि मेषादि क्रमैले गन्नुपर्दछ । जस्तै-

चर	स्थिर	द्विस्वभाव
मेष	वृष	मिथुन
कर्कट	सिंह	कन्या
तुला	वृश्चिक	धनु
मकर	कुम्भ	मीन

पूर्वादि दिशा कुन कुन राशिको हो त्यो पनि तालिकाबाट स्पष्ट गरिन्छ जस्तै-

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्कट
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

यसप्रकार पञ्चम नवमै भनेर श्लोकमा भन्नुको तात्पर्य कर्कट सम्म चार क्रमैले भएपछि सिंह पञ्चम राशि भएकोले पूर्वमै भयो भनेको हो त्यस्तै नवौं राशि धनु पनि पूर्वको नै भयो ।

मेषादि राशिको शीर्षोदय संज्ञा

मेषाद्याश्चत्वारः सधन्विमकराः क्षपाबलाज्ञेया ।
पृष्ठोदया विमिथुनाः शिरासान्ये ह्युभयतो मीनः ।।

मेष, वृष, कर्कट, धनु र मककर पृष्टोदय राशि हुन् । त्यस्तै मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक र कुम्भ राशिहरू शीर्षोदय राशि हुन् । मीन उभयोदय राशि जान्नुपर्छ ।

मेषादि राशिहरू दिवा रात्र्यादि बलज्ञान

मेष वृष मिथुन कर्कट धनु र मकर यी राशिहरू रात्रिमा बलिया हुन्छन् । बाँकी सबै दिवा बली जान्नुपर्छ ।

राशिहरुको वर्णज्ञान

अरुणसितहरितपाटलपाण्डुविचित्राः सितेतरपिशङ्गौ
पिङ्गलकर्बुरबभ्रुकमलिना रुचयो यथा सङ्ख्यम् ॥१॥

अर्थः-मेषादि द्वादश राशिहरूको क्रमैले अरूणः=रातो सित=सेतो हरितः=हरियो पाटल=केही सेतो र रातोको मिश्रण पाण्डु=धूवाँजस्तो सेतो विचित्र=अनेकरूप मिसिएको सितेतर=कालो पिशङ्ग=सुनजस्तो पहेलो पिङ्गल=महजस्तो केहीमात्र पहेंलो कर्बुर=सेतो र कैलोको मिसावट बभ्रुक=शुद्ध कैलो मलिन=अलिअलि धमिलिएको पानी अथवा सेतो माछाजस्तो रूचयः= उपरोक्त रूपको प्रकाश यथासंख्यम्=क्रमिक संख्या अनुसार जान्नुपर्छ अर्थात् मेषको रातो वृषको सेतो मिथुनको हरियो कर्कटको पाटल (केही सेतो) सिंहको पाण्डु धुवाँजस्तो किञ्चित सेतो कन्याको विचित्र=धेरै रङ्ग भएको तुलाको सितेतर(कालो), वृश्चिकको पिशङ्ग सुनजस्तो, धनुको पिङ्गल=महजस्तो, मकरको कर्बुर=सेतो र कैलोको मिश्रण, कुम्भको बभ्रुक= शुद्ध कैलो र मीनको मलिन=धमिलो धमिलो पानी अथवा सेतो माछाको जस्तो रङ्ग यस प्रकारका रूचय प्रकाश राशिहरको बुझ्नुपर्छ ।

कुन-कुन राशिमा कुन-कुन ग्रह उच्च या नीच हुन्छन् ?

मेषे रविर्वृषे चन्द्रो मकरे च महीसुतः ।
कन्यायां रोहिणीपुत्रोगुरुः कर्के झषे भृगुः ॥२॥
शनिस्तुलायामुच्चस्थ मिथुने सिंहिका सुतः ।
उच्चात्सप्तमगा नीचा राशौ वापि नवांशके ॥३॥

अर्थः-मेषमा रवि, वृषमा चन्द्रमा, मकरमा मङ्गल, कन्यामा बुध, कर्कटमा गुरु, मीनमा शुक्र, तुलामा शनि, मिथुनमा राहु उच्च हुन्छन् । उच्च भएका राशिदेखि सप्तम राशिमा नीचा हुन्छन् । जस्तै सूर्य मेषमा उच्च छन् भने तुलामा सप्तम भएकाले नीचा मानिन्छन् ।

परम उच्चा परम नीचाग्रहज्ञान

दशम-तृतीयाष्टाविंशः पञ्चदशः पञ्चमाः ।
सप्तविंश विंशांशारर्कादिना परमोच्च नीचाः ॥४॥

अर्थः-उच्च भएर बसेका सूर्यादि ग्रहहरूको अंशा स्व-स्व राशिमा १० अंशा सूर्यको३ अंशा चन्द्रमाको २८ अंशा मङ्गलको १५ बुधको ५ अंशा बृहस्पतिको २७ अंशा शुक्रको र २० अंशा शनिको परमोच्च नीच राशिमा भए परमनीच जान्नुपर्छ । जस्तै सूर्य ०।९।५५ देखि ०।१०।५५ सम्म परम उच्च त्यस्तै ६।९।५५ देखि ६।१०।५५ सम्म परम नीचो हुन्छ । यस्तै प्रकारले अरू ग्रहहरू पनि जान्नुपर्छ । राहु र केतुका सम्बन्धमा शनिवत् राहु मङ्गलवत् केतु लिनु पर्छ । अन्यकार्यमा पनि राहु केतु अकथित भएमा शनि भौमवत् लिनुपर्दछ ।

ग्रहहरूको स्वकीय मूल त्रिकोण

सिंहो वृषभमेषौ च कन्याधन्वि तुलाघटाः ।
रव्यादीनां क्रमान् मूलत्रिकोणा राशयः क्रमात् ॥५॥
राहोः कुम्भः केतोः सिंहः ।

अर्थः-सूर्यको सिंह, चन्द्रमाको वृष, मङ्गलको मेष, बुधको कन्या, बृहस्पतिको धनु, शुक्रको तुला, शनिको कुम्भ, राहुको कुम्भ, केतुको सिंह यी राशिहरू ती ती ग्रहहरूको मूल त्रिकोण हुन् । आफ्ना मूल त्रिकोणमा वा मित्रका मूल त्रिकोणमा र आ-आफ्ना उच्चमा हुँदा ग्रहहरू बलवान मानिन्छन् ।

ग्रहहरूको दृष्टि

पादैकदृष्टिर्दशमे तृतीये द्विपाददृष्टिर्नवपञ्चमे वा।

तृपाददृष्टिश्चतुरष्टके वा सम्पूर्णदृष्टिः सम सप्तमे च ॥६॥

श्लोकान्तरेऽपि

त्र्याशं त्रिकोणं चतुरस्त्रमस्तं

पश्यन्ति खेटाश्चरणाभिवृद्धया।

मन्दो गुरूर्भूमिसुतः परे च

क्रमेण सम्पूर्णदृशो भवन्ति ॥७॥

अर्थः-सामान्य अवस्थामा ग्रहहरू जुन स्थान वा राशिमा छन् ती स्थान राशिदेखि १०-३ स्थान वा राशिमा एक पाउ मात्र देख्दछन्। त्यस्तै ९-५ मा द्विपाउ दृष्टि हुन्छ। त्यस्तै ८-४ मा तीन पाउदृष्टि र पूरै अथवा चारै पाउ दृष्टि चाहिं आफू बसेको राशिबाट सातौं राशि वा स्थानमा हुन्छ।

ग्रहहरूको विशेष दृष्टिस्थान

पूर्णं पश्यन्ति रविजस्तृतीयदशमे त्रिकोणमपि जीवः।

चतुरस्त्रं भूमिसुतः सितार्कबुधहिमकराः कलत्रञ्च ॥

अर्थः-रविजः=शनिश्चर पूर्ण=पूर्णरूपले सम्पूर्ण दृष्टिले तृतीयदशमे तीन र दशौं स्थानलाई पश्यन्ति=देख्दछन् जीव=गुरु अपि=पनि त्रिकोण=५-९ स्थानलाई पश्यति=पूर्णरूपले देख्छन्। भूमिसुतः=मङ्गल अपि चतुरस्त्रं ४-८ स्थानलाई पश्यति= पूर्णरूपले देख्छन्। सितार्कबुधहिमकरा शुक्र सूर्य बुध चन्द्रमा(सबैग्रह) कलत्रञ्च सप्तमस्थानलाई सम्पूर्ण दृष्टिले देख्दछन्।

॥ इति राशि ज्ञानाध्याय ॥

जातकाध्याय

जातकशास्त्र परिचय

जातकशास्त्र भन्नाले ज्योतिषका त्रिकाण्डमध्ये होरा काण्डलाई लिएको छ होराको अर्थ अहोरात्र हो। वैयाकरणीय संस्कार गर्दा अहोरात्रको सिद्धरूप होरा सिद्ध हुन्छ। यहाँ अहोरात्रमा हुने जन्म मरणादिको विचार यो विभागले विश्लेषण गरेको हुन्छ। दिनमा र रातमा गरी ३० मुहूर्तहरू क्रमले घुमेका हुन्छन् कुन-कुन मुहूर्तमा जन्मेका बच्चाहरू कस्ता हुन्छन् ती मुहूर्त पनि दुई दुई घडी अर्थात् ४८ मिनेटको अन्तरमा परिवर्तन हुन्छन्। यो गणित पनि ज्यादै स्थूल भएकाले जातकाध्यायले प्रत्येक लग्नको अंश द्रेष्काणादिबाट विचार गर्ने गरेको छ जसको ज्ञान अत्यन्त सूक्ष्म छ। शास्त्राचार्यको महती कृपा भएपछि मात्र दिव्य ज्योतिषी ज्ञान अन्तस्करणमा स्फूरण हुन्छ। केबल शास्त्र रटाइले मात्र जातकाध्याय पूरा गर्न सकिँदैन। यो त शास्त्र सिद्धिका साथै गुरुकृपा र उपासना सिद्धि (मन्त्र सिद्धि) भए पनि पूरा हुन्छ ।

जातक भन्नाले नवजात जीव हो त्यो मनुष्य पनि हुन सक्छ मनुष्येतरलाई पनि आवश्यक भए लिन सकिन्छ। प्रायः गरेर आजको समाजमा जातक नवजात जीव मनुष्य मात्रै अर्थारूढ भएको छ। नवजात कस्तो अवस्थामा जन्मेको छ ग्रहको तात्कालिक अवस्था कस्तो छ लग्नादि षड्वर्गको स्थिति के कस्तो छ इत्यादि विचारबाट जातकका लागि गर्नुपर्ने कार्यका लेखाजोखा गरिन्छ। यदि जातकको कुनै अरिष्ट छैन राम्रो मुहूर्त लग्न नवांश शुभ छन् ग्रहगोचर शुभ भए वा उसको शुभ संस्कार शास्त्र निर्देशित निश्चित समयमा गर्दै लान यो प्रकरणको मुख्य भूमिका हुन्छ।

॥ इति जातकाध्याय ॥

अरिष्टाध्याय

सद्योमृत्यु अरिष्ट

अरिष्ट भन्नाले ग्रह र लग्नको अवस्था प्रतिकूल हुनु हो । यो अवस्थाले व्यक्तिको तुरुन्त मृत्यु पनि गराउँछ । कुनै अरिष्ट केही समय मृत्युतुल्य दुःख दिएर छुट्छ कुनै सामान्य दुःख कष्ट भोगेर छुट्छ। सद्योमृत्यु अरिष्टलाई बालारिष्टि पनि भन्दछन् । यस्ता अरिष्टहरू कस्तो योग वा स्थिति भएमा हुन्छन् भन्ने विषयमा जातकशास्त्रहरू धेरै छन् र ती सबैमा प्रायः एकैमत भएता पनि कुनै कुनै अवस्था भने मत भिन्नता जस्तो पनि देख्न सकिन्छ। एवं प्रकारका अधिकाधिक ग्रन्थ पढेर निश्चय गर्न आजको मान्छेलाई गाह्रो छ त्यसैले अत्यन्त साररूप भएका ग्रन्थहरूको पनि सार मात्र यहाँ प्रस्तुत गरिन्छ ।

चन्द्रबाट सद्योमृत्यु अरिष्ट

पष्ठाऽष्टमेऽपि चन्द्रः सद्योमरणाय पापसन्दृष्टः।
अष्टाभिः शुभदृष्टो वर्षैमिश्रैस्तदर्धेन ॥१॥

अर्थः-यदि जन्मकुण्डलीमा चन्द्रः=चन्द्रमा षष्ठाऽष्टमेऽपि=षष्टम अथवा अष्टम भए पनि पापसन्दृष्ट=पापग्रहद्वारा पूर्णदृष्ट अथवा अष्टम भए पनि पापसन्दृष्ट=पापग्रहद्वारा पूर्णदृष्ट छ भने सद्योमरणाय=यो योग तुरुन्त मरणको हुनेछ, अष्टाभिः=अष्टवर्षपर्यन्त(यहाँ हेत्वार्थे तृतीय जटाभिः तापसः) शुभदृष्टो=शुभ ग्रहले देखे आठ वर्ष पर्यन्त र मिश्रैः=शुभ पापग्रहद्वारा दृष्ट भए तदर्धेन=आठको आधा चारवर्षमात्रै बाँच्दछ । एवं प्रकारले जान्नुपर्छ उक्त शुभाशुभ दृष्ट योग नभए अरिष्ट पनि छैन भन्नुपर्छ ।

अन्य ग्रहयोगबाट हुने अरिष्ट

क्षीणचन्द्रो व्ययस्थाने पापो लग्ने स्मरेऽष्टमे ।
शुभैश्च रहिते केन्द्रे शीघ्रं नश्यति बालकः ॥२॥

अर्थः-बालकको जन्मकालमा क्षीण चन्द्र द्वादशमा भई पाप ग्रह लग्न सप्तम र अष्टमा होस् केन्द्र शुभग्रहले रहित होस् यस्तो योगमा जन्मिएको बालक शीघ्र नै अर्थात् पाँच वर्ष भित्रैमा नश्यति=नाश हुने सम्भावना छ ।

दशमस्थो दिवानाथ पापैर्बहुभिरीक्षितः ।
मेषवृश्चिककर्कस्थः सद्यो मृत्युप्रदो भवेत् ॥३॥

अर्थः-दशमभावमा मेष वृश्चिक र कर्कट भई धेरै पाप ग्रहले देखिएको सूर्य छ भने तत्काल (नाम संस्कार भित्रै) मृत्यु हुन्छ ।

सप्तमे भवने भौमश्चाष्टमे भार्गवो यदि ।
नवमे भवने सूर्यः स्वल्पायुर्जायते नरः ॥४॥

अर्थः-सप्तम भावमा मङ्गल होस् अष्टम भावमा शुक्र होस् र नवम भावमा सूर्य होस् त यस्तो क्रम मिलेमा बालक अल्पायु हुन्छ ।

क्षीणचन्द्रो यदा लग्ने पापाश्चाष्टमकेन्द्रगाः ।
अस्ते लग्नपतिः पापैर्युक्तो नश्येत तदा शिशुः ॥५॥

अर्थः-लग्नस्थानमा क्षीणचन्द्र भएर अष्टम वा केन्द्रमा पापीग्रह भए अनि लगन पति सातौं मा पापयुक्त भए भने बालक बाँच्न मुश्किल पर्छ ।

लग्ने क्रूरे क्रूरराशौ क्रूरपातालगस्तथा ।
दशमे भवने क्रूरः कष्टं जीवति बालकः ॥६॥

अर्थः-लग्न क्रूरराशि भई चतुर्थ दशममा पनि क्रूर ग्रह बसेका छन् भने बालक कष्टले बाँच सक्छ ।

षष्ठे च द्वादशे राशौ यदा पापग्रहो भवेत् ।
तदामातृभयं विन्द्याच्चतुर्थदशमे पितुः ॥७॥

अर्थः-छैटौं र बाह्रौंमा पाप ग्रह भए आमालाई कष्ट दिन्छ । त्यस्तै चौथो र दशौं भावमा पनि पाप युक्त दृष्ट भएमा पितालाई कष्ट कारक जान्नुपर्छ ।

अर्को मन्दः कुजश्चन्द्रः प्रसूतौ पञ्चमे यदि ।
आत्मनश्च पितुर्भ्रातुमातुश्चैवाशुभं क्रमात् ॥८॥

अर्थः-यदि बालकको जन्म समयमा पञ्चमस्थानमा सूर्य भए बालक स्वयंलाई कष्ट, शनि भए पितालाई कष्ट मङ्गल भए दाजुलाई कष्ट र चन्द्रमा भए आमालाई कष्ट हुन्छ भनेर जान्नुपर्छ ।

सप्तमे भवने भानुर्मध्यस्थो भूमिनन्दनः ।
राहुर्व्ययस्तथैवापि पिता कष्टेन जीवति ॥९॥

अर्थः-जसको जन्मकुण्डलीमा सप्तममा सूर्यहोस् दशममा मङ्गल, द्वादशमा राहु भयो भने पिता कष्टले बाँच्दछ ।

अष्टमस्थो यदा राहुः केन्द्रे च नीच चन्द्रमाः ।
सद्य एव भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥१०॥

अर्थः-अष्टममा राहु होस् केन्द्रमा चन्द्रमा नीचो भए बालकको सद्यमृत्यु हुन्छ भनी जान्नुपर्छ ।

अष्टमे च निशानाथः केन्द्रे क्रूरो यदा भवेत् ।
चतुर्थे च यदा राहुर्वर्षमेकं सजीवति ॥११॥

अर्थः-जन्मकालमा आठौं चन्द्रमा भई केन्द्रमा क्रूर ग्रह भएमा र राहु चौथो भए एक वर्ष बाँच्छ ।

वक्रीः शनिर्भौमगृहे केन्द्रषष्ठाष्टमेऽपि वा ।
कुजेन बलिना दृष्टो हन्ति वर्षद्वये शिशुम् ॥१२॥

अर्थः-वक्रको शनि, मङ्गलको क्षेत्रमा (१-८ मा) वा केन्द्रमा अथवा षष्टाष्टम स्थानमा होस् र बलवान भएर मङ्गलले लग्न अष्टमा पूर्ण दृष्ट गरेमा पनि बालकलाई दुई वर्ष अरिष्ट हुन्छ ।

शनिक्षेत्रे यदा भानुर्भानुक्षेत्रे यदा शनिः ।
वत्सरे द्वादशे मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥१३॥

अर्थः-जन्मकालमा शनिक्षेत्र १०/११ मा सूर्य हो र सूर्यक्षेत्र ५ मा शनि भएमा बालकलाई बाह्र वर्षमा मृत्यु गराउँछ ।

जन्मलग्ने यदा भौमश्चाष्टमे च बृहस्पतिः ।
वर्षे च द्वादशे मृत्युर्यदि रक्षति शंकरः ॥१४॥

अर्थः-बालकको जन्मकालमा लग्नमा मङ्गल भई आठौं बृहस्पति होस् त शंकरले रक्षा गरे पनि बाह्र वर्षमा मृत्यु हुन्छ ।

॥ इति अरिष्टाध्याय ॥

अथ अरिष्ट भङ्गाध्याय

लग्नेश तथा शुभग्रह र शुभयोगद्धारा अरिष्ट भङ्ग

सर्वानिमानतिबल: स्फुरदंशुजालो
लग्नस्थित: प्रशमयेत् सुरराज मन्त्री ।
एको बहूनि दुरितानि सुदुस्तराणि
भक्त्या प्रयुक्त इव शूलधरप्रणाम: ॥१॥

अर्थ:-अति बलवान बृहस्पति लग्नमा भएमा सम्पूर्ण अरिष्ट नाश गरी दिन्छ जसरी भक्तिपूर्वक शिवजीलाई गरिएको प्रणामले पापहरू नाश हुन्छन् त्यस्तै बृहस्पतिले पनि अरिष्ट नाश गर्दछ ।

लग्नाधिपोऽतिबलवानशुभैरदृष्ट: ।
केन्द्रस्थितै: शुभखगैरवलोक्यमान: ।
मृत्युं विधूय विदधाति सुदीर्घमायु:
सार्धं गुणैर्बहुभिरुर्जितया च लक्ष्म्या ॥२॥
लग्नाष्टमवर्त्यपि बुधगुरूभार्गवदृकाणगश्चन्द्र: ।
मृत्यु प्राप्तमपि नरं परिरक्षत्येव निर्व्याजम् ॥३॥

अर्थ:- बलवान लग्नेश पापग्रहदेखि अदृष्ट भएर केन्द्रमा भएर शुभग्रहदेखि दृष्ट भएमा सम्पूर्ण अरिष्टको नाश गरिदिन्छ र सबै प्रकारको शुभत्व प्रदान गरी दीर्घायु र सर्वसम्पत्तिवान बनाइदिन्छ ।

बालकको जन्मलग्नबाट अष्टमस्थानमा भएर पनि चन्द्रमा यदि बुध गुरु या शुक्रको द्रेष्काणमा भए सबै अरिष्ट नाश गरेर बालकको रक्षा गर्दछ ।

राहुस्त्रिषष्ठलाभे लग्नात् सौम्यैर्निरीक्षित: सद्य: ।
नाशयति सर्वदुरितं मारुत इव तूलसंघातम् ॥४॥

अर्थ:- बालकको जन्मलग्नदेखि ३।६।११ स्थानमा राहु होस् र

शुभग्रहले दृष्ट होस् त सबै अरिष्ट नाश गरिदिन्छ जसरी ठूलो आँधीले कपासको थुप्रो उडाउँछ।

शीर्षोदयेषु राशिषु सर्वे गगनाधिवासिनः सुतौ
प्रकृतिस्थञ्चारिष्टिं विलीयते घृतमिवाग्निस्थम् ॥५॥

अर्थः-जन्मसमयमा यदि सम्पूर्ण ग्रहहरू शीर्षोदय राशिमा छन् भने सबै ग्रहजन्य अरिष्ट अग्निले घिउ समाप्त गरे झैं समाप्त गरिदिन्छन् कुनै पनि अरिष्टि हुँदैन।

तत्काले यदि विजयी शुभग्रहः शुभनिरीक्षितोऽवश्यम्।
नाशयति सर्वारिष्टं मारुत इव पादपान् प्रबलः ।

अर्थः-जन्मसमयमा एउटा मात्रै ग्रह यदि अरू ग्रहका साथ विजयी भएको होस् र शुभग्रहले दृष्ट होस् त सम्पूर्ण अरिष्टिको त्यसै गरी नाश गर्दछ जसरी प्रबल वायुले रुखहरू नाश गर्दछ।

पक्षे सिते भवति जन्म यदि क्षपायां
कृष्णे तथाऽहनि शुभाशुभदृश्यमानः ।
तं चन्द्रमा रिपुविनाशगतोऽपि यत्ना-
दापत्सु रक्षति पितेव शिशुं न हन्ति ॥

अर्थः-यदि बालकको जन्म शुक्ल पक्षको रात्रिमा भएको छ अथवा कृष्णपक्षको दिनमा भएको छ भने चन्द्रमा ६।८ मा भएर शुभाशुभ दृष्ट जे भए पनि त्यस्तो चन्द्रमा पिताले पुत्रलाई पालना गरेझैं पालन गर्छ नोक्सान गर्दैन। यस्तो योगमा बाल्यकालमा जातक पेटको रोगी हुन्छ यस्तो अनुभवमा आएको छ।

॥ इति अरिष्ट भङ्गाध्याय ॥

अथ कर्मजीवाध्याय

कर्मेशको अवस्था, स्वभावअनुसारको कार्यजीविका

आजको समस्या, सबै ज्योतिष फलादेशको विषयमा यो कुराले नै आएर अड्काउने गर्छ । प्रश्नकर्ताहरू सर्वप्रथम के काम गर्ने विदेश जान मिल्छ कि मिल्दैन, कता जाने र कुन पेसा गर्ने ? यस्तो अवस्थामा प्राय ज्योतिर्विदहरू अल्मलने गर्छन यसको समाधान गर्न सजिलो त छैन तर पनि आचार्यहरूको सिद्धवचनका आधारमा भन्नुपर्दछ । आचार्य र ग्रन्थहरू विभिन्न छन् भिन्नाभिन्नै मत मतान्तरहरू प्रशस्त पाइन्छ तर पनि बृहज्जातक फलदीपिका आदि सिद्धग्रन्थका आधारमा कर्माजीविका अर्थात् के काम गर्ने र कसरी जीवन निर्वाह गर्ने भन्ने निर्णय सहित उपयोगी देश स्थान विशेषको यहाँ पनि उधृत गर्ने कोशिस गरिएको छ ।

अर्थाप्तिं कथयेद् विलग्नशशिनोः प्रावल्यतः खेचरैः
कर्मस्थैः पितृमातृशात्रवसुहृद्भ्रात्रादिभिः स्त्री धनात् ।
भृत्याद्वा दिननाथलग्नशशिनां मध्ये बलीयाँस्ततः
कर्मेशस्थनवांशराशिपवशाद् वृत्तिं जगुस्तद्विदः ॥१॥

अर्थः- लग्न वा चन्द्रमा जो बलियो छ त्यसको दशमस्थ ग्रह धनलाभ कारक हुन्छ भनेर जान्नु, (सर्वप्रथम विचार गर्नुपर्छ) अब विशेष विचारमा यदि दशम भावमा सूर्य भए पिताबाट अर्थात् पिताको आज्ञा उपदेश लगानी इत्यादि माध्यम भएर धन आम्दानी हुन्छ । त्यस्तै चन्द्रमा भए आमाबाट, मङ्गल भए शत्रुबाट (विरोधी कारणबाट), बुध भए मित्रबाट, गुरु भए दाजुभाइबाट, शुक्र भए स्त्रीबाट र शनि भए नोकर भृत्यबाट आम्दानी हुन्छ अथवा यिनीहरू आम्दानी रोजगाकार लागि सहायक हुन्छन् ।

रोजगार विचार गर्न लग्न, चन्द्र र सूर्यमा जुन ग्रह सबैभन्दा बलियो छ, त्यसैको दशमेश जुन ग्रहको नवांशमा छ त्यो ग्रहका राशिको शील अर्थात् स्वभाव अनुसार र त्यस राशिको प्रकृतिअनुसार जीविका हुन्छ ।

कुनै आचार्यका मतानुसार लग्न सूर्य र चन्द्र यी तीनै ओटाको दशमेश लिनुपर्छ सर्ववलीलाई प्राथमिकता दिनुपर्छ कम बली ग्रह सहायक हुन्छ। अथवा कहीं कहीं वृत्ति परिवर्तन आउँछ यस्तो बेला तीनै ग्रहदशा वा अन्तर दशाको परिपाकमा कार्य परिवर्तन भई जीविकाधार प्राप्ति हुन्छ।

यही कुरा भट्टोत्पलले पनि बृहज्जातकमा भनेका छन्-'**होरेंद्वोः लग्नचन्द्रयोः दिवाकराद्यैः**' इत्यादि वाक्य लेखेर उक्त कुरालाई स्पष्ट पारेका छन् ।

'**भवन्ति वित्तदास्तेऽपि स्वदशासु विनिश्चिताः**' गार्गी

दुई नियम यहाँ स्थापित गरिएको छ । प्रथम धनलाभदायक ग्रह अर्थात् रोजगारमा सहायक सम्बन्धी ग्रह र तिनका सम्बन्धीका विषयमा पनि छ। यो नियम आज रोजगारीका हजारौं साधन भएका बेला त्यत्ति माथि भने जत्तिले मात्र त भने जस्तो हुन सक्दैन । अथवा आजको विकसित युगमा कर्मका साधन अनन्त छन् तापनि केही आन्तरिक नियम अनुसार मात्रै उक्त आदेश गर्नुपर्छ। नत्र जति भने पनि भनाइ कम्ती नै हुन सक्ने सम्भावना हुन्छ।

अर्को नियम छ व्यक्ति कुन चाहिं काम गर्न चाहन्छ र त्यसले कुन चाहिं गर्नुपर्छ अनि के गरेर लाभ हुन्छ; यसका लागि बलवान लग्न सूर्य चन्द्रदेखि दशमेशको विचार गरेर त्यो दशमेश कसको नवांशमा छ जुन ग्रहको राशिमा छ त्यसको प्रकृतिवाला जीविकासटिक साक्षात प्रमाण र नियम अनुसार रहेको छ, त्यो विचार गर्ने ।

कतिपय आचार्यहरूको भनाइ उक्त त्रिविध दशमेश जसको नवांशमा छ त्यो राशि स्वामीकोशील अनुरूप जीविका हुन्छ । इत्यादि विचार गर्नु पर्ने कुराहरू प्रामाणिकरूपमा नै दिएका छन् ।

कुन ग्रह वा राशिबाट कुन सम्भावित वृत्ति हुन्छ अर्थात् कर्माजीवभन्नाले आजीविका (बच्ने आधार) इत्यादि हो, त्यो कसरी चल्छ भन्ने सम्बन्धमा यो विस्तारपूर्वक अब बताइन्छ-

सूर्यनवांशबाट रोजगार विचार

फलद्रुमैर्मन्त्रजपश्च शाठ्यात् द्यूतानृत्तैः कम्बलभेषजाद्यैः ।
धातु क्रियाद्वा क्षितिपालपूज्यात् जीवत्यसौ पङ्कज वल्लभांशो ॥२॥

अर्थः-यदि त्रिविध (लग्न सूर्य र चन्द्र) बलिष्ट दशमेश सूर्यको नवांशमा छ भने फल, फूल, वृक्ष मन्त्र, जप, शठता (धोकेबाजी) जुवा झूठो बोल्नु कम्बल औषधिको काम चिकित्सा धातुक्रिया राजाबाट कदर मान जागिर इत्यादि हुन्छ ।

चन्द्रमनवांश फल

जलोद्भवानां क्रयविक्रयेण
कृषिक्रियागोमहिषीसमुत्थैः ।
तीर्थाटनाद् वा वनिताश्रयाद् वा
निशाकरांशे वसनक्रयाद् वा ॥३॥

अर्थः- चन्द्रमाको अर्थात् कर्कट नवांशमा दशेमश भए पानीबाट उत्पन्न हुने वस्तुको क्रयविक्रयबाट कृषिमाध्यमबाट गाई भैंसी पशुचौपायबाट भेडा बाख्राबाट डेरी ऊन सम्बन्धी कामबाट तीर्थयात्रा गर्ने गराउने माध्यमबाट दूर संगठन तीर्थव्रत पूजापाठ गरेर स्त्रीको काम वा स्त्रीको सहयोगबाट शृङ्गारिक सामानको खरिद विक्रिबाट यस्तै पानी दूध र विशेष स्त्रीसम्बन्धी कार्य इत्यादिबाट आजीविका चलाउन सकिन्छ ।

मेष वृश्चिक नवांशगत कर्मेशको फल

भौमांशके धातुरणप्रहारै-
र्महानसाद्भूमिवशात्सुवर्णात् ।
परोपतापायुधसाहसैर्वा
म्लेच्छाश्रयात्सूचकचौरवृत्या ॥४॥

अर्थः- यदि दशमेश मेष, वृश्चिक नवांशमा छ भने धातु सम्बन्धी (सुन, तामा, सिल्भर आदि) युद्धकला (जुडो कराते शस्त्र विद्या आदि) प्रहारसम्बन्धी (दादागिरी गुण्डागर्दी आदि) सेना, पुलिस, महानस (भान्छा) होटल, पाककार्य आदि आगो सम्बन्धी काम, प्लाष्टिक सम्बन्धी कार्य तैजस पदार्थ (तेल मट्टितेल आदिको व्यापार, भवन निर्माण तथा यस प्रकारको सामानको उत्पादन जमीन जग्गा सम्बन्धीको काम अर्कोलाई सताएर फाइदा लिने, नीच जातिका मान्छेहरूको संगत, मजदुरहरूको नायक चुगलीखोर एक अर्कामा झगडा गराउने दूत वा सिपाही आदि आदि हुनु चोर वेमानीको संगतले आफ्नो इज्जतको ख्याल नराख्ने अपयशपूर्वक जीवन बिताउने स्वभावको हुन्छ।

मिथुनकन्या नवांशगत कर्मेशको फल

काव्यागमैर्लेखकलिप्युपायैर्ज्योतिर्गणज्ञानवशाद्बुधांशे ।
परार्थवेदाध्ययनाज्जपाच्च पुरोहितव्याजवशाद् हि वृत्तिः ॥५॥

अर्थः- बालकको जन्मकालमा यदि बुधको नवांश ३/६ मा कर्मेश (दशमेश) बसेको भए काव्यागम (काव्य रचना गर्नु व्याख्या आदिबाट जीविका गर्नु) लेखन प्रवृत्ति लिपिविद्या छापाखाना आदि विभिन्न प्रकारका लेखनकला आदिमा निपुण ज्योतिष आदि ग्रहनक्षत्र विद्याको ज्ञान गणित सम्बन्धी ज्ञान पूजापाठ मन्त्र जप आदि कार्य सहित पुरोहित आदि कार्यबाट जीविका गर्ने हुन्छ। उक्त कार्यमा उक्त व्यक्ति सदा सफल पनि हुन्छ।

धनुमीननवांशगत कर्मेशको फल

जीवांशके भूसुरदेवतानां
समाश्रयाद्भूमिपतिप्रसादात्।
पुराणशास्त्रागमनीतिमार्गात्
धर्मोपदेशेन कुसीदवृत्या ॥६॥

कर्मेश (दशमेश) यदि गुरुका नवांशमा ९/१२ मा भए त्यो व्यक्ति देवता ब्राह्मणको सेवासत्कार गर्ने हुन्छ, साथै आश्रम खोल्न, विद्यालय, देवमन्दिर, तीर्थ, घाट आदिको स्थापना, संरक्षण गर्ने हुन्छ। स्वयं जपतप

धर्मकर्म, काम गर्ने, प्रशन्न चित्त, सरकारी क्षेत्रमा सचिवसम्म भै राजकोश आदिको पनि व्यवस्थापक हुन्छ। नीतिशास्त्र धर्मशास्त्र आदि आध्यात्मिक रहस्य जान्ने, धर्मोपदेशक व्याजमा धनलगाउने, व्याज आदि अपरिश्रम र धर्ममाध्यमबाट धनागम गरेर जीविका चलाउने हुन्छ।

वृषतुला नवांशगत कर्मेशको फल

स्त्रीसंश्रयाद्गोमहिषीगजाश्वै-
स्तौर्यत्रिकैर्वा रजतैश्चगन्धैः।
क्षीराद्यलङ्कारपटीपटाद्यैः
शुक्रांशकेऽमात्यगुणैः कवित्वात्॥५॥

अर्थः-दशमेश यदि शुक्रको २।७ नवांशमा छ भने त्यस्तो समयमा जन्म लिने व्यक्ति स्त्रीसंश्रय (स्त्रीहरूबाट) सम्बद्ध कार्य शृङ्गारादि कार्य वस्त्र खरिद विक्री गर्ने हुन्छ। यदि शुक्र क्षीण बली भई कर्मेशलाई पाप ग्रहको पूर्णदृष्टि भए वेश्याहरूको कारणबाट धनागम हुन्छ। उपर्युक्त अवस्थाको छैन र शुभ योग दृष्ट भएमा नाचगान वाद्यवादन गर्न सिपालु अभिनयकर्ता वाहन क्रय विक्रय गर्ने चाँदीको काम सुगन्धित अत्तर आदिको दूधका पदार्थको व्यवहार गहना स्त्रीवस्त्र मन्त्री आदि उच्च ओहदाको कार्य सल्लाह दिने इत्यादि कामबाट आफ्नो जीवन धन्य बनाउछ र सजिलैसँग जीविका चलाउँछ।

मकरकुम्भ नवांशगत कर्मेशको फल

शन्यांशके मूलफलैः श्रमेण
प्रेष्यैः खलैर्नीचधनैः कुधान्यैः।
भारोद्वहाद् कुत्सितमार्गवृत्या
शिल्पादिभिर्दौरुमयैर्वधाद्यैः॥८॥

अर्थः- कर्मेश यदि शनिका १०।११ नवांशमा भए कन्दमूल (तरूल आलु पिंडालु आदि) माटामुनि फल्ने चिजको व्यवसायबाट धन कमाउँछ

त्यस्तै ठूलो ठूलो शारीरिक दुःख गर्ने हुन्छ। त्यस्तै सन्देशवाहक पनि उक्त मानिस हुन्छ। दुष्ट र नीचको संगतिबाट आयआर्जन गर्छ। नीच संगत या मार्गबाट अनेक सीप सिक्नुका साथै कार्यक्षेत्र पनि त्यस्तै बनाउँछ। भारी बोक्नु जस्ता भयानक डरलाग्दा काम गर्ने हुन्छ। त्यस्तो दुःखले आर्जे पनि नराम्रो खानपिउनाले पैसा खेर हाल्ने गर्छ। फलामका सानातिना काम गर्ने गर्छ जस्तै स्टोभ बनाउनु टुटे फुटेका भाँडा बनाउने साँचो कुर्सी आदि पुरानो मर्मत गर्ने काम गरेर जीवन निर्वाह गर्ने हुन्छ। त्यस्तै पशुवध आदि मदिरा व्यापार गरेर पनि आय आर्जन गर्छ।

नवांशगत रोजगारको स्तर

अंशेशे बलवत्ययत्नधनसम्प्राप्तिं बलोनेंऽशपे ।
स्वल्पं प्रोक्तफलं भवेदुदयतः कर्मर्क्षदेशे फलम् ।
अंशस्योक्तदिशं वदेत् पतियुते दृष्टे स्वदेशे फलं
सत्यन्यैः परदेशजं तदधिपस्यांशे स्वदेशेस्थिरे ॥९॥

अर्थः- पूर्वोक्त जीविकाकारक नवांशेश यदि बलवान भएर शुभ दृष्ट छ भने राम्रो आम्दानी र राम्रो रोजगार पनि पाइन्छ। निर्बल भए भने त सामान्य आम्दानी हुनेछ।

दशमस्थानमा जुन राशि छ त्यो राशिको देश (स्थान) मा नै जागिर पाउँछ। अथवा नवांश राशिको दिशा पट्टि रोगजार मिल्छ।

यदि राशि वा नवांश राशि आफ्नो स्वामीले युत वा दृष्ट छ भने अथवा उक्त राशि स्थिरांशमा वा स्थिर राशिमा भए आफ्नै जन्मस्थानमा उन्नति गराउँछ। यदि त्यो स्थानमा अन्य ग्रह शत्रुग्रह युत वा दृष्ट भए परदेशमा गएर उन्नति गराउँछ। स्थिर राशि शुभ ग्रह भए स्वदेशमा र क्रूर ग्रह र चर राशि भएमा टाढा टाढा गरेर आर्थिक उन्नति गर्नुपर्ने हुन्छ।

अनेक देशविदेशमा काम गर्न सक्ने अवस्थामा देशको किटान गर्न नसके उक्त राशि र ग्रहको प्रकृति अनुसार दिशाको सङ्केत गर्नुपर्छ।

॥ इति कर्मजीवाध्याय ॥

अथ योगाध्याय

पञ्च महापुरुष योग

रूचकभद्रकहंसकमालवाः सशशका इति पञ्च च कीर्तिताः ।
स्वभवनोच्चगतेषु चतुष्टये क्षितिसुतादिषु तान् क्रमशो वदेत् ॥१॥

अर्थः-योगाध्याय भनेर ग्रहको योग अनुसार फलको पनि तारतम्य भन्ने कुरा शास्त्र प्रमाण अनुसार बताइन्छ । यहाँ सर्वप्रथम रुचकादि पञ्चमहापुरुष योगको विषयमा बताइन्छ । यो योग मङ्गलादि पञ्च ग्रहका आधारमा बन्दछ । पाँचयोगको क्रम यस प्रकार गणना गरेको छ । १.रुचक २.भद्रक ३.हंसक ४.मालक ५.सशक । यी योगहरू मङ्गल ग्रह आफ्नो राशि १।८ र उच्च राशि १० मा भई केन्द्रमा भए रुचक योग हुन्छ। त्यस्तै बुध ग्रह ३।६ मा भई केन्द्रमा भए भद्रक योग हुन्छ । त्यस्तै गुरु ९।१२ र ४ भई केन्द्रमा हंसक योग हुन्छ। शुक्र २।७।१२ मा भए र केन्द्रमा हुँदा मालवक योग हुन्छ। त्यसैगरी शनिश्चर १०।११।७ मा भई केन्द्रमा भए सशशक योग हुन्छ। यसप्रकार योग हुने भए, अब यिनका फलका विषयमा पनि बताइन्छ ।

रूचक र भद्रक योगको फल

दीर्घास्यो बहुसाहसाप्तविभवः शूरोऽरिहन्ता बली
गर्विष्ठो रूचके प्रतीतगुणवान् सेनापतिर्जित्परः ।
आयुष्मान् सकुशाग्रबुद्धिरमलो विद्वज्जनश्लाघितो
भूपो भद्रकयोगजोऽतिविभवश्चा स्थान कोलाहलः ॥२॥

अर्थः- रुचक योगमा जन्मेको बालक ठूलो लाम्चो मुख (अनुहार) धेरै साहसिलो धेरै मेहनत गर्नेवाला अनेक धनसम्पत्ति आर्जन गर्नेवाला शूरवीर, शत्रुनाशक शारीरिक र बौद्धिक बलवाला सेनापति रणविजेता इत्यादि शुभ गुणयुक्त हुन्छ । त्यस्तै भद्रक योगमा जन्मेको

बालक पनि कुशाग्र बुद्धि भएको स्वच्छ आचरण गर्ने वाला विद्वान्द्वारा प्रशंसा पाउने अनेक वैभवशाली सभा समारोहमा आफ्नो वैदुष्यपूर्वक अलग पहिचान गराउन समर्थ सज्जनको प्रिय हुन्छ ।

हंस र मालव्य योगफल

हंसेसद्भिरभिष्टुतः क्षितिपतिः शङ्खाब्जमत्स्याङ्कुशै-
श्चिह्नैः पादकराङ्कितः शुभवपुर्मिष्टान्नभुक् धार्मिकः ।
पुष्टाङ्गो धृतिमान् धनी सुतवधूर्भाग्यान्वितो वर्धनो
मालव्ये सुखभुक् सुवाहनयशा विद्वान् प्रसन्नेन्द्रियः ॥३॥

अर्थः-हंस योगमा जन्मिएको बालक सज्जनद्वारा प्रशंसा गरिएको हुन्छ । राजातुल्य राजा हुन योग्य चिह्नहरू हात गोडामा हुन्छन् । जस्तै (शङ्खमत्स्याङ्कुशाः) शङ्ख, मत्स्य अङ्कुश इत्यादि चिह्नहरू हातपाउमा हुनसक्छन् अन्य शुभलक्षण युक्त हुन्छ । मृदुअन्न अथवा मिष्टान्न भोजी आडम्बर रहित धार्मिक हुन्छ । त्यस्तै मालव्य योगमा जन्मिएको बालक पुष्ट शरीर भएको धैर्यशाली धनी सन्तान र पन्तीको सुख भएको हरेक कार्यमा भाग्यले साथ दिनेवाला उन्नतिशील निरन्तर आर्थिक वृद्धि गर्ने अनेकानेक भौतिक आध्यात्मिक आदि सुख भोग गर्ने वाला राम्रा वाहन राख्नेप्रसिद्ध बुद्धिमान् पढाइ लेखाइबाट इज्जत कमाउने प्रशन्न चित्त भएको अरुलाई पनि खुशी राख्ने व्यक्तित्व भएको हुन्छ ।

शश योगको फल

शस्तःसर्वजनैः सुभृत्यबलवान् ग्रामाधिपो वा नृपो
दुर्वृत्तः शशयोगजोऽन्यवनिता वित्तान्वितः सौख्यवान् ।
लग्नेन्द्वोरपि योगपञ्चकमिदं साम्राज्यसिद्धिप्रदं
तेष्वेकादिषु भाग्यवान् नृपसमो राजा नृपेन्द्रोऽधिकः ॥४॥

अर्थः- शश योगमा जन्म लिएको मान्छे सबै समाज वा जनसमुदायबाट प्रशंसा पाउने हुन्छ, राम्रा सजिला सेवक भएको हुन्छ ।

गाउँको नायक मुख्य मान्छे वा राजा पनि हुनसक्छ। अलि शिथिल वा लोसेत्रो पन भए पनि आँटेको पुरा गर्ने हुन्छ। अन्य स्त्रीसँग पनि स्नेह भएको अनेक सुखका साधन प्रयोग गर्ने परधनको पनि सुख पाउने वाला हुन्छ।

यी उक्त कथित पाँचयोग लग्न र चन्द्रमा दुबैदेखि भएका भए असाध्यै उयोगी साम्राज्यदायक वा सिद्धि दायक हुन्छन्। कुनै एकदेखि मात्र भएमा फलमा कमी आउन सक्छ। लग्न वा चन्द्र एकदेखि भए पनि ग्रहयोग भने एक भन्दा बढी भएमा फलमा अत्यन्त उत्कृष्टता हुन्छ। जस्तै पाँचै ग्रहका पाँच योग भएमा साम्राज्यसफलदाता हुन्छ र चार मात्रै भएमा राजाधिराज त्यस्तै तीन योग भएमा राजासमान दुई योग भएमा सर्वसुखसम्पन्न एक भएमा पनि भाग्यमानी हुनेछ।

उक्त पञ्च महापुरुषयोग अरू ग्रन्थमा पनि अनेक फलभेदपूर्वक लेखेको पाइन्छ। तर पनि विशेष योग भेद लग्न चन्द्र दुबैबाट हुने योग र छुट्टै छुट्टै हुँदा हुने विशेषता अन्यत्र नपाइने हुँदा यो ग्रन्थको विशेष महत्त्व हुन पुगेको छ। त्यत्ति मात्रै नभएर एक योग र एक भन्दा बढी योग हुँदा हुने विशिष्टता यहाँ उल्लिखित छ। यो नै लिखित पुस्तकको महत्त्व हो।

अनफा, सुनफा, दुरुधरा र केमद्रुम योग

रविवर्ज्य द्वादशगैरनफा चन्द्राद् द्वितीयगैः सुनफा
उभयस्थितैर्दुरुधरा केमद्रुमसंज्ञकोऽतोऽन्यः ॥५॥

अर्थः-सूर्यलाई छोडेर चन्द्रदेखि द्वादशस्थानमा कुनै ग्रह बसेको भए अनफा त्यस्तै द्वितीयस्थानमा भए सुनफा अनि द्वादश र द्वितीय दुबै स्थानमा ग्रहहरू भए दुरुधरा र दुबैतिर ग्रह नभए केमद्रुम योग हुन्छ।

अनफा योगको फल

चौरः स्वामी दृप्तः स्ववशो मानी रणोत्कण्ठः।
क्रेधात् सम्पद्साध्यः सुतनुः कुजेऽनफायां प्रगल्भश्च॥

अर्थः- यदि चन्द्रमा देखि बाह्रौंमा मङ्गल भई अनफा योग बनेको भए त्यो मनुष्य चोर घमण्डी लुटाहा फटाहाको मालिक लडाई झगडा गर्ने

लुटपिटबाट धन आर्जन गर्ने अरूको ईर्ष्या गर्ने घमण्डी स्वभावको हुन्छ ।

त्यस्तै चन्द्रदेखि बुध बाह्रौं भएर अनफा योग भए गान भजन गर्ने वाद्यवादन गर्न सिपालु लेखन पठनपाठन गर्ने वक्ता कवि समाजमा राम्रो काम गर्ने स्वभावको हुन्छ ।

त्यस्तै गुरु द्वादश भई अनफा भएमा पनि गंभीर बुद्धिमानी राज सचिव धेरै सम्मान पूजा पाउने हुन्छ ।

शुक्र द्वादश भई अनफा भए स्त्री र राजाको प्रिय गर्ने शुभ कार्य गर्ने सुन्दर शरीरवाला हुन्छ । त्यस्तै शनि द्वादश भई अनफा भए लामा हात भएको चौपाय पाल्ने शुभगुण वाला सन्तान भएको खरो स्वभाव र दुष्ट स्त्रीको भरण गर्नेवाला हुन्छ ।

सुनफा योग फल

चन्द्रमादेखि द्वितीय स्थानाम मङ्गल भई सुनफा योग बनेको भए त्यो व्यक्ति भयङ्कर पराक्रमी स्ववाहुबलद्वारा धन आर्जन गर्ने निष्ठुर हिंस्रक झगडालु स्वभावको आफ्नै अधिकार विस्तार गर्न खोज्ने हुन्छ ।

त्यस्तै बुधग्रहद्वारा सुनफा भएको भए वेदादिशास्त्र ज्ञाता धर्मात्मा सबैको भलो गर्ने कवि लेखन सिल्प भएको मनस्वी सुन्दर स्वभाव र शरीर भएको हुन्छ ।

गुरु द्वितीय भई सुनफा योग भएको भए त्यो व्यक्ति सम्पूर्ण विद्यावान् गुणी, चतुर, अध्यापक, सचिव आदि विशिष्ट पदमा आसीन भएको अनेक सम्बन्ध र सम्पत्तिले युक्त हुन्छ ।

यदि शुक्रद्वारा सुनफा योग भएको भए स्त्री क्षत्र र गृहके संरक्षक पशुवाहनादि युक्त शृङ्गारिक सामग्रीको व्यवसाय गर्ने धेरै मानसम्मान पाउने सचिव वा मन्त्री हुन्छ ।

शनिद्वारा सुनफा योग भएमा विशिष्ट बुद्धिमान भई ग्राम पूजित धनी गुप्तकार्य गर्ने अली ढीला स्वभावको धुलो मैलो भए पनि वास्ता नगर्ने आन्तरिक र अरूको गोपनीयता पहिल्याउने स्वभावको हुन्छ ।

दुरुधरा योग फल

मङ्गल र बुधको बीचमा चन्द्रमा भई दुरुधरा योग बनेको भए त्यो मानिस झूठ बोल्ने धनी चतुर अरूलाई ठग्ने लोभी वृद्ध स्त्रीमा आसक्त रहने कुलमा मुख्य मानिएको हुन्छ ।

यदि मङ्गल गुरु बीच चन्द्रमा भए आफ्नो कामले भए पनि कपटी स्वभावभएको हुन्छ । धनको कारणले वैर गर्ने रिसाह आडम्बर गर्ने संग्रही हुन्छ ।

त्यस्तै शुक्र मङ्गलका मध्य चन्द्र भई दुरुधरा बनेको भए सुन्दर स्त्रीको मालिकस्वयं सुन्दर भई राम्रा वस्त्र लगाउने हरेक काममा सोखी हतियार धारी कसरत गर्ने लडाकु हुन्छ ।

यदि बुध गुरुका बीच चन्द्रमा भए धर्मात्मा शास्त्रज्ञ बोल्नमा चतुर सबैको उत्कर्ष गर्ने सर्वसम्पत्ति वाला प्रसिद्ध दानी कडा मिजासको (स्वभाव) भएको हुन्छ ।

यदि शनि मङ्गलका बीचमा चन्द्रमा भए रतिप्रिय संग्रही व्यसनी क्रोधी छुल्याहा विनाकाम झगढा गर्ने अनेक विधिबाट धनसञ्चय गर्ने हुन्छ ।

त्यस्तै बुधशनिका बीचमा चन्द्रमा भए अनेक देशविदेश घुम्नेवाला परधनमा निर्लोभी असल विचार विद्याविज्ञानले युक्त सबैले मान्य आफन्त नजिकका सम्बन्धीसँग मात्र विरोध गर्ने वाला हुन्छ ।

बुध र शुक्रका बीचमा चन्द्र भई दुरुधरा भएमा प्रिय बोल्नेवाला सुन्दर शरीर सबैको प्रिय सामाजिक एकता प्रवृत्ती भएको पुण्यवान राजा र प्रजा सबैबाट सम्मानित बोल्न जान्ने सुखी मन्त्रीतुल्य चतुर शासन गर्नसक्ने हुन्छ ।

यदि गुरु शुक्रबीच चन्द्रमा भए बुद्धिमान धैर्यवान स्थिर बुद्धिवाला नीतिवान अनेक रत्नादिले पूर्ण प्रसिद्ध राजकार्य गर्ने सर्वशास्त्रवेत्ता सबको गुरूपूज्य हुन्छ ।

यदि शनि शुक्र का बीचमा चन्द्रमा भए आफ्नो उमेरभन्दा बढी उमेरकी स्त्रीसँग विवाह गर्ने हुन्छ, कुलाचारयुक्त चतुर स्त्रीहरूको प्रिय गाउँ वा नगरको नेता जानिफकार समृद्धशाली धनविद्यामा पनि राजाबाट सम्मान पाउनेवाला हुन्छ ।

केमद्रुमयोग फल

केमद्रुमे भवति पुत्रकलत्रहीनो
देशान्तरे व्रजति दुःखसमाभितप्तः ।
ज्ञातिप्रमोदनिरतो मुखरकुचैलो
नीचः सदा भवति भीतियुतः श्चिरायुः ॥६॥

अर्थः- माथि बताए अनुसार चन्द्रमादेखि द्विद्वादश स्थान खाली हुँदा केमद्रुम योग पर्न जान्छ । जसको कुण्डलीमा केमद्रुम योग परेको छ त्यो मनुष्य श्रीमती छोरा आदिबाट हीन अथवा पत्नीपुत्र सम्बन्धी दुःखले पीडित हुन्छ । अनेक देशान्तरमा व्यर्थ भ्रमण गर्नेवाला अनेक किसिमका दुःखले अभितप्त पाक्ने हुन्छ । बन्धु इष्टमित्रलाई भने सुखदिने बढी बोल्ने मलिन कन्थाधारी नराम्रो लगाउने नीच संगत नीचै बुद्धि भएको मनमा डर बोक्ने लामो आयु भएको दुःशील प्रवृत्तिको हुन्छ ।

ग्रन्थान्तराट सुनफा अनफा योग फल

स्वयमधिगतवित्तः पार्थिवस्तत्समो वा
भवति हि सुनफायां धीधनख्यातिमांश्च ।
प्रभुरगदशरीरः शीलवान् ख्यातकीर्ति
विषयसुखसुवेषो निर्वृतश्चानफायाम् ॥७॥

अर्थः-सुनफा योगमा जन्मेको बालक आफ्नै बाहुबलद्वारा धन प्राप्ति गर्छ राजा तुल्य स्वतन्त्र भएर सबै माथि अनुशासन गर्ने हुन्छ । आफ्नो बुद्धिरूप धनले संसारभरि ख्याती प्राप्त हुन्छ ।

अनफा योगमा जन्मेको बालक पनि जनताहरूलाई आफ्नै वशमा गर्ने आफ्नो अनुशासनमा हिंडाउने निरोगी सत्शीलवान् संसारभरि आफ्नो सुयश कीर्तिफैलाउने सम्पूर्ण विषय भोग सुखसमृद्धि भएको चिन्ता निवृत्त भएको हुन्छ ।

दुरुधरा केमद्रुमयोग फल

उत्पन्नभोगसुखभुग्धनवाहनाढ्य-
स्त्यागान्वितो दुरुधराप्रभवः सुभृत्यः ।
केमद्रुमे मलिनदुःखितनीचनिःस्वा
प्रेष्या खलश्च नृपतेरपि वंशजाता ॥८॥

अर्थः- दुरुधरा योगमा उत्पन्न जातक सुखोपयोगी धनवाहनको धनी दानप्रिय चरित्रिवान एवं राम्रा सेवकहरू सहित भएको आफन्तहरूले पनि राम्रो मान्ने हुन्छ ।

केमद्रुम योगमा जन्मेको बालक भने उक्त तीन योगमा जन्मोको जस्तो नभई अत्यन्त अशुभ फल भोग्नेवाला हुन्छ । यो योगमा जन्मेको व्यक्ति यदि राजवंशमा नै जन्मेको भए पनि मलिन दुखि दुष्ट प्रकृतिको धनहीन अरूको सेवा गरेर रहने यस्तै वेचैन मनको हुन्छ ।

केमद्रुमयोग भङ्ग

केन्द्रे शीतकरेऽथवा ग्रहयुते केमद्रुमो नेष्यते ।
केचित् केन्द्रनवांशकेषु च वदन्त्युक्तिः प्रसिद्धा न ते ॥९॥

अर्थः- यदि चन्द्रमा केन्द्रमा बसेको होस् अथवा चन्द्रमा का साथमा अरू कुनै ग्रह युक्त होस् त उक्त केमद्रुम योग भङ्ग हुन्छ । कुनै आचार्यहरूको भनाइमा चन्द्रमा केन्द्रीय राशिको नवांशमा भए पनि केमद्रुम योग भङ्ग हुन्छ भन्छन् तर यो मत त्यत्ति प्रसिद्ध छैन भनी वराहमिहरले भनेका छन् ।

ग्रन्थान्तरबाट केमद्रुम भङ्ग

पूर्णः शशी यदि भवेच्छुभसंस्थितो वा
सौम्यामरेज्य भृगुनन्दन संयुतश्च ।
पुत्रार्थसौख्यजनकः कथितोमुनीन्द्रैः
केमद्रुमे भवति मङ्गलसुप्रसिद्धिः ॥१०॥

अर्थः-केमद्रुम योग भए पनि पूर्ण चन्द्रमा बुध भए पनि गुरु वा शुक्र जुन भए पनि साथै भएर अथवा शुभस्थान (वृष, कर्कट, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन) मा बसको भए केमद्रुम भङ्ग भई धनपुत्र दिने मङ्गल गराउने हुन्छ। उक्त दोष हुँदैन।

अमला योगको लक्षण फल

अमलायोग विख्यातं चन्द्रात्तु दशमे शुभाः ॥

अर्थः-चन्द्रदेखि दशममा शुभ ग्रह छन् भने अमला नामक योग हुन्छ। यो योगमा जन्मलिने व्यक्ति सदाचारी, धर्मवान्, प्रसन्न चित्तवाला, सौभाग्यशाली, राजमान्य, कोमल स्वभावको हँसिलो, सबैसँग प्रेमपूर्वक बोल्ने, नम्र र धनी हुन्छ। यथा श्लोक पनि प्रमाणका लागि दिइन्छ-

आचारवान् धर्मपतिः प्रसन्नः
सौभाग्यवान् पार्थिवमाननीयः।
मृदुस्वभावः स्मितभाषणश्च
धनी भवेच्चामलयोगजातः ॥

महाभाग्य र केसरी वा गजकेसरी आदि योग लक्षण

ओजेस्वर्केन्दुलग्नान्यजनि दिवि पुमांश्चेन्महाभाग्ययोगः
स्त्रीणां तद्व्यत्यये स्याच्छशिनि सुरगुरोः केन्द्रगे केसरीति।
जीवान्त्याष्टारिसंस्थे शशिनि तु शकटः केन्द्रगे नास्ति लग्नात्
चन्द्रेकेन्द्रादिगेऽर्कादधमसमवरिष्ठाख्ययोगाः प्रसिद्धाः ॥११॥

अर्थः- यदि दिनमा जन्म भएर सूर्य चन्द्र र लग्न तीनैवटा विषम राशिमा भएर पुरुषकै जन्म भएमा महाभाग्य योग हुन्छ। त्यस्तै रात्रिमा जन्म भएर उक्त सूर्यलग्न र चन्द्र समराशिमा भएर स्त्रीको जन्म भए त्यो पनि महाभाग्ययोग हुन्छ। बृहस्पतिबाट केन्द्रमा (१,४,७,१०) मा चन्द्रमा भए गजकेसरी वा केसरी योग हुन्छ। बृहस्पतिदेखि ६,८,१२ मा चन्द्रमा

भए शकट योग हुन्छ । यदि चन्द्रमा लग्नबाट केन्द्रमा भए उक्त शकट योग बन्दैन । सूर्यदेखि केन्द्र १,४,७,१० मा चन्द्रमा भए अधम योग हुन्छ । त्यस्तै सूर्यदेखि २,५,८,११ मा चन्द्र भए मध्य वा सम योग हुन्छ र सूर्यदेखि ३,६,९,१२ मा चन्द्रमा भए उत्तम वा वरिष्ठ योग हुन्छ ।

उक्त ६ योगहरूको फल

महाभाग्ये जातः सकलनयनानन्दजनको
वदान्यो विख्यातः क्षितिपतिरशीत्यायुरमलः ।
वधूनां योगेऽस्मिन् सति धन सुमाङ्गल्यसहिता
चिरं पुत्रैः पौत्रैः शुभमुपगता सा सुचरिता ॥१२॥

अर्थः- महा भाग्ययोगमा जन्मेको व्यक्ति (पुरुष) सबैका आँखालाई आनन्द दिने, उदार, प्रसिद्ध, राजा, असी वर्ष पर्यन्त निरोगी भएर बाँच्ने इत्यादि गुणयुक्त हुन्छ ।

त्यस्तै स्त्रीको महाभाग्यशाली योग परेको भए धन सौभाग्य सत्पुत्रवती लामो समयसम्म बाँच्ने, नातिहरूको कीर्तिले सधैं खुसी हुन पाउने र स्वयं सुचरित्रताले आफ्नो कुलकै कीर्ति भर्नेवाली हुन्छिन् ।

केसरी वा गजकेसरी योगफल

केसरीव रिपुवर्गनिहन्ता
प्रौढवाक् सदसि राजसवृत्तिः ।
दीर्घजीव्यतियशाः पटुबुद्धिः
तेजसा जयति केशरि योगे ॥१३॥

अर्थः- केसरी अथवा गजकेसरी योगमा जन्म लिएको मानिस केसरी (सिंह) झैं पराक्रम गर्ने वाला शत्रु विजयी हुन्छ । आफ्ना प्रसिद्ध र प्रामाण्य वाकशक्तिद्वारा सबैलाई वश गर्नसक्ने सभा समारोहमा आफ्ना प्रसिद्ध प्रौढ वचनले सबैलाई मोह पार्न सक्ने, कुशलतापूर्वक गरेका कार्यले राजसम्मान पाउने वाला दीर्घायु यशस्वी चतुर र तेजस्वी जस्ता गुणले युक्त हुन्छ ।

शकट योग फल

क्वचित् क्वचिद्भाग्यपरिच्युतः सन्
क्वचित् पुनः सर्वमुपैति भाग्यम् ।
लोके प्रसिद्धोऽपरिहार्यमन्तः
शल्यं प्रपन्नः शकटेऽतिदुःखी ॥१४॥

अर्थः-शकट योगमा पैदा भएको व्यक्ति कुनै कुनै समया वा कार्यमा भाग्य विलकुल साथ दिंदैन र कार्य लथालिङ्ग बनाइदिन्छ । कहिले पुनः भाग्यले साथ दिएर नसोचेको पनि सिद्ध गराइदिन्छ । यस्तै कारणले गर्दा लोकमा प्रसिद्ध भएर पनि आफ्नो अवस्था सम्झेर उक्त व्यक्ति हृदयमा असह्य कष्ट र पीडालाई लुकाएर बसेको हुन्छ जसको निराकरण जिन्दगीमा गर्न नसकेर दुःखी भई रहन्छ ।

अधम सम वरिष्ठयोग फल

कष्टमध्यमवराह्वययोगे द्रव्यवाहनयशः सुखसम्पत् ।
ज्ञानधीविनयनैपुणविद्यात्यागभोगजफलान्यपि तद्वत् ॥१५॥

अर्थः-अधम सम र वरिष्ठ योगमा धन वाहन यश सुख ज्ञान बुद्धि विद्या विनय निपुणता सुख भोग इत्यादि सबै क्रमैले अधम योगमा खराब मध्य अथवा सममा मध्य र वरिष्ठमा उत्तम फल प्राप्त हुन्छ भन्ने जान्नुपर्छ ।

कालसर्प योग

अग्रे राहुः पृष्ठे केतुरन्तरश्च नवग्रहाः ।
कालसर्पो भवेत् योगो वंशनाशो भवेद् ध्रुवम् ॥१६॥

अर्थः- जसको जन्मकुण्डलीमा अगाडि राहु र पछाडि केतु बसेका र माझमा सबै ग्रह छन् भने कालसर्प नामको योग पर्दछ । यस्तो योग पर्न गएमा वंशपीडा वा नाश गर्दछ भन्ने शास्त्र प्रमाण रहेको छ । विशेषः कालसर्प

योगका विषयमा धेरै मतमतान्तरहरू पाइएका छन् । कसैले राहुकेतु बीच अरू ग्रह भएमा कालसर्प हुन्छ भन्दछन् कसैले केवल राहुको अग्रतामा मात्र कालसर्पयोग हुन्छ अन्यथा उक्त योग हुँदैन भन्ने गरेको पाइन्छ। अर्को थरी विपरीत कालसर्प पनि हुन्छ। यो योग पनि कालसर्पसमान कष्टदायी हुन्छ र अर्को मतअनुसार विपरीत कालसर्प त राजयाग हुन्छ यो योग त ठूला ठूला पुरुषार्थ सिद्धिका लागि सहायक हुन्छ भनी यस्ता योग भएका अनेक कुण्डली समेत सङ्कलन गरी देखाएका छन् । यस्तो विविध प्रमाण प्राप्त अवस्थामा सामान्य ज्योतिर्विदहरूका लागि संशय हुनु स्वाभाविकै हो । यस्तो अवस्थामा अनेक कुण्डली आफैंले विचार गर्दै रेकर्ड राख्दै गरे पनि आफैंलाई साक्षात् अनुभव हुन्छ । यस्तो अनुभव गर्न नसके विशिष्ट प्रामाणिक ग्रन्थका सैद्धान्तिक आधारमात्र विश्वास गर्नुपर्छ अन्यथा मनगढन्ते कुरामा मात्र दगुर्दा आफैं अलपत्र पर्न सकिने हुनाले विचारपूर्वक अनुसन्धान गर्नुपर्दछ ।

कतिपय विद्वान्हरूले राहुकेतुको गणना नै गर्नुपर्दैन, किन भने पराशर वराहमिहिर आदि विद्वान् महर्षिहरूले नउठाएको कुरा समाजमा भ्रम फैलाउने मात्र हो भन्ने कुरा पनि उठाएका छन् । उक्त समस्या संशय निराकरण यस प्रकार गर्न सकिन्छ। महर्षि वराहमिहिरले आफ्नो बृहज्जातक नामक ग्रन्थमा केवल सात ग्रहको मात्र वर्णन गर्नु भएको छ । जसमा राहुकेतुको नाम लिएकै छैन । कालसर्पयोगको अवस्थामा त राहुकेतुकै कारणबाट हुने हो यही विशेष स्थितिको नाम कालसर्प योग हो । राहुकेतु सदैव एक अर्कोसँग समसप्तक स्थितिमा हुन्छन् अर्थात् १८०° अंशमा सिद्धि छन् । यस्तो स्थिति नै कालसर्पयोगको स्थिति हो र राहु केतु छाया ग्रह हो भन्ने कुरा सर्वत्र प्रसिद्ध छ ।

सिद्धान्तप्रसिद्ध कुरा के छ भने पृथ्वी सदैव सूर्यको चारै तिर घुम्ने गर्दछ। पृथ्वी जुनबाटो लिएर सूर्यको परिक्रमा गर्छ,त्यो बाटोलाई क्रान्तिवृत्त भनिन्छ । चन्द्रमाले पृथ्वीलाई परिक्रमा गर्दा उक्त क्रान्तिवृत्तलाई काट्दछ त्यही क्रस बिन्दुलाई राहु र त्यसको विपरीत अर्को भागको अर्थात् १८०° अंशको बिन्दुलाई केतु भनिएको हो। यिनीहरू सधैं वक्रीय गतिमा रहन्छन्। किनकि चन्द्रमा र पृथ्वीको वक्र गति नभएकाले यिनीहरूको अग्र गति हुने सम्भावना हुँदैन र अस्तको पनि अवस्था हुँदैन ।

कसरी कालसर्प योग भयो त भन्ने विषयमा अनेक विद्वान्हरूले

अनेक मत भेद देखाएर विशिष्ट महर्षिहरूले उल्लेखनगरेको भन्ने प्रमाणसावित गरे पनि कालसर्प योग सिद्ध भएको महर्षिहरू कै सङ्केत आधारमा देखाउन सकिन्छ ।

यद्यपि महर्षि पराशर एवं वराहमिहिरले प्रत्यक्षरूपले आफ्ना ग्रन्थहरूमा कालसर्प भनेर नाम किटानी गरेका छैनन् तथापि उनीहरले आफ्ना ग्रन्थमा नाभस योगको वर्णन गरेका छन् । नाभस योग शब्दको अर्थ आकाश स्थित ग्रहहरूको विशेष अवस्थाको कुरा हो । यस प्रकार ग्रहयोगमा राशिहरूको विशेष सम्बन्धको कुरा नभएर केवल ग्रह अवस्थाको मात्र योग विशेष बताएका छन् । यहाँ ग्रहकुण्डलीमा कस्तो प्रकारले ग्रहहरू स्थित छन् त्यो नै विशेष महत्त्व हो । यो विशेष स्थितिको आकृति संख्या आश्रय दलयोग भनेर विविध भागमा विभाजन गरेका छन् । यवन जातकमा पनि १८०° नाभस योगहरू रहेका छन् । महर्षि पराशरले पनि दलयोगमा लेखेका छन् । यदि सूर्य, मङ्गल र शनि कुण्डलीको ४।७।१० भावमा स्थित छन् भने सर्पयोग हुन्छ । बृहस्पति, बुध र शुक्र ४।७।१० मा भए मालायोग हुन्छ । लग्न र सप्तमभाव मा सबै ग्रह भए शकट योग हुन्छ । दशम चतुर्थमा सबै ग्रह भए विहग योग हुन्छ । त्यस्तै नवपञ्चम तथा लग्न भावमा सबै ग्रह भए श्रंगाटक योग हुन्छ । इत्यादि सबै योग सर्प योग नै हुन र यी योगमा जन्म लिने मानिस जीवनमा सुखी हुन सक्दैन । जातक विपरीत स्वभावको हुन्छ ।

क्रूर निर्धन एक्लो भाव नित्य दुःखले पीडित अर्काको सहायताले मात्र जीवन निर्वाह गर्नुपर्ने इत्यादि अशुभ लक्षणहरूको फल बताएकाले उक्त अवस्था ग्रहहरूको अर्ध गोलस्थितिको भएकाले र ग्रहको तात्कालिक स्पष्टताले राहुकेतु अन्तर स्थिति भएको बुझाउँछ । त्यसैले समयानुसारी विद्वानूहरूको भाषा सङ्केत हुने भएकाले नाम लिएको छैन भन्नुपर्छ नहुने कुरा सिद्ध हुन आउँछ । समय परिवर्तनका साथ साथै भाषा भंगि र ज्ञानविज्ञान पनि आफ्ना नविनरूप लिएर उपस्थित भएका हुन्छन् । त्यसैले नाम शब्द सधैं एक प्रकारका हुँदैनन् समयका वेगले जनमानसमा नयाँ उत्बोधनहरू अनेक हुन्छन् । ती सबै सत्य नभए व्यवहार हुन गाह्रो हुन्छ । त्यसैले मत मतान्तरमा मात्र सीमित नभई सैद्धान्तिक सङ्केतात्मक आधारलाई मान्नु योग्य हुन्छ ।

कालसर्प योग राहुकेतुका माझमा सबै सात ग्रह हुंदा हुन्छ भन्ने कुरा

अन्य शास्त्रका आधारमा पनि भन्न सकिन्छ जस्तै-

अग्रे राहु रधः केतुः सर्वे मध्येगताः ग्रहाः ।
योगोऽयं कालसर्पाख्यः शीघ्रं स्वं बन्धुनाशयेत् ॥

श्लोकान्तरबाट पनि

योगोऽयं कालसर्पाख्यः स्त्रीं स्वं बन्धुं विनाशयेत् ॥१७॥

ग्रन्थान्तरबाट पनि

अग्रे वा चेत् पृष्ठतोऽप्येक पार्श्वे
भानांष्टंके राहु केत्वो न खेटः ।
योगः प्रोक्तः कालसर्पश्च तस्मिन्
जातो जाता वाऽर्थपुत्रार्तिमीयात् ॥१८॥

अन्यमतेऽपि

राहुकेतुमध्ये ग्रहा सर्वे विघ्नदा कालसर्पसंज्ञकः ।
सुतत्रासदि सकलदोषाः रोगेन प्रवासे मरणं ध्रुवम् ॥१९॥

इत्यादि कालसर्पयोगका विषयमा अनेक ग्रन्थान्तरमा लेखिएका छन् । तथापि सबैको भनाइ राहुको अग्रता अर्थात् जन्मकुण्डलीमा प्रथम द्वितीयादि भावमा राहुको अग्रता र केतुको पश्चतालाई नै विशेष जोड दिएको पाइन्छ । कतिपय टीका टिप्पणीमा भने राहु वा केतु अग्रपश्चा जे भए पनि अरू ग्रहहरूलाई अन्तरमा पार्दछन् भने त्यो कालसर्प योग हुन्छ । परन्तु प्रामाणिक ग्रन्थका आधारमा त्यस प्रकारको न भनेकोले विपरीत अवस्थामा कालसर्प योग हुँदैन । बरु त्यस्तो योग लग्नेश त्रिकोणेशको विशिष्ट सम्बन्ध छ भने राजयोग बन्न सक्छ ।

राहुकेतुद्वारा बन्ने योग

अनेक धार्मिक ग्रन्थमा राहुको अधिदेवता काल र प्रत्यद्धिवता सर्पलाई मानेको पाइन्छ । राहु र केतुको जन्म नक्षत्र भरणी र अश्लेषा हुन् । मुहूर्त चिन्तामणिका अनुसार पनि भरणी नक्षत्रका देवता यम र अश्लेषा नक्षका देवता सर्प हुन् । त्यसो भएको हुँदा राहु र केतु मिलाएर कालसर्प योग भन्ने गरेको पाइन्छ ।

कालसर्पयोग जुन भावमा बन्छ त्यो भावको कारकत्वलाई नै प्रभावित बनाउँछ। यो सबै ज्योतिषीहरूलाई थाहा छ कि भावको कारकत्व लग्नबाटै हुन्छ। लग्नफल कारकको मुख्य हुन्छ। यदि लग्न र लग्नेश सूर्य र चन्द्रमा यिनीहरू लग्नकै समान फलदायी हुन्छन्। यिनीहरूमध्ये एउटा मात्रै बलवान भए पनि धेरै अरिष्टि नाश गर्दछ। यिनीहरू चारवटै बलवान भएमा कालसर्प जन्य दोष नभएर सर्वकल्याणकारी राजयोग बन्न पुग्छ। मुहूर्तचिन्तामणि नामक ग्रन्थमा स्पष्ट भनेको छ। यदि बृहस्पति लग्नमा बलवान भएर बसेको भए हजारौं दोष नाश गर्दछ र शुभ गुण युक्त बनाउँदछ भने कलासर्प दोष पनि हजारौंमध्ये एक दोष हो। यो दोष उक्तप्रकारका लग्नेश आदि शुभ फलदाता ग्रहहरू बलवान भई शुभ योगकारक भए उक्त दोष नबन्ने हुनसक्छ। परन्तु यदि उक्त लग्नेश आदि ग्रन्थहरू (लग्नेश लग्न सूर्य चन्द्र) बलवान छैनन् र पीडित छन भने शुभ योग प्रभाव हीन भएर कालसर्प योग धेरै बलवान बन्न पुग्दछ। यस्तो अवस्थामा मात्र कालसर्पयोगले आफ्नो नराम्रो फलप्रवाह गर्दछ। त्यसैले सधैं लग्न लग्नेश सूर्य र चन्द्र यिनीहरूको बलाबल विचार गरेर मात्र अरू फलादेश गर्नु उचित हुन्छ।

महर्षि पराशरका अनुसार राहु वृषमा उच्चो र वृश्चिकमा नीचो हुन्छ भने अरू ग्रन्थमा राहु मिथुनमा उच्चो र धनुमा नीचो हुन्छ भनी बताएको पाइन्छ। कसैले कन्या राशिमा राहु स्वगृही र कहीं मेषमा स्वगृही मानिएको छ। जे भने पनि वस्तुतः राहु वृष मिथुनमा शुभ र वृश्चिक धनुमा अशुभ कारक हुन्छ।

राहुको सम्बन्ध

बृहस्पति र राहुको समसम्बन्धी हो अर्थात् राहुको र गुरुको सम सम्बन्ध रहेको छ। राहुका साथ शनि, बुध र शुक्रको भने मित्रतारूप सम्बन्ध छ। सूर्य, चन्द्रमा र मङ्गलसँग भने शत्रुवत् सम्बन्ध छ अर्थात् राहुको शनिबुध र शुक्र मित्र हुन्। गुरु सम र सूर्य चन्द्र मङ्गल शत्रु हुन्। कर्कट राशि राहुको मूल त्रिकोण र केतुको मकर। अन्य शास्त्र प्रमाण अनुसार '**राहोःकुम्भ केतोःसिंहः**' भनी राहुको मूलत्रिको कुम्भ भएको र केतुको सिह भएको सिद्ध हुन्छ। महर्षि जैमिनीका अनुसार राहु कुम्भमा स्वगृही र केतु सिंह स्वगृही बताइएको छ। त्यसैले विद्वान्हरू मेषदेखि

कर्कटराशि सम्म बलवान मान्दछन् । सिंहदेखि तुला पर्यन्त मध्य बली र वृश्चिकदेखि मीनसम्म निर्बल मान्दछन् ।

फलदीपिकाका अनुसार उच्च र स्वगृही शुभ ग्रह शुभ फललाई बढाउँछन् भने नीच र शत्रुगृही पीडित पापग्रहहरू पाप फललाई बढाउँछन् । राहु ग्रह पनि पापग्रह भएकाले उक्त शुभाशुभ विचार गरेर फलादेश गर्नुपर्छ । गति फल अनुसार वक्री गतिवाला ग्रह सधैं बलवान सचेष्ट हुने भएकाले र राहु सदा वक्री हुनाले राहुको पाप फल अति नै सफल हुन्छ ।

दृष्टिका आधारमा राहु

राहु केतुको दृष्टि अरू ग्रहको जस्तै सामान्य अवस्था (सातौंमा पूर्ण दृष्टि) मा त मानिएकै छ तर विशेष दृष्टि भएकाले राहु र केतुले आफ्नो पूर्ण दृष्टि सातौं स्थानमा मात्र नदिएर ५,९ र १२ स्थानमा दिएको हुन्छ । तसर्थ आफ्ना स्थानदेखि ५,७,९,१२ भावको शुभाशुभ फलको अधिकार राहुले लिएको हुन्छ ।

केतु पनि धनुराशिमा उच्चो र मिथुनमा नीचो अथवा वृषमा नीचो र वृश्चिकमा उच्चो हुन्छ भन्ने मतान्तर छ । जैमिनीले यसलाई वृश्चिक राशिको स्वामी पनि भनेका छन् र मूलत्रिकोण राशि मकर मानेका छन् । केतुको मित्र मङ्गल र शुक्र सूर्य शनि राहु शत्रु र शेष सम मानेको छ ।

पूर्वकथित कालसर्प योग दुई भागमा विभाग भएको छ । जस्तै-

क) १. उदित काल सर्पयोग २. अनुदित कालसर्प योग

उदित कालसर्पयोग भन्नाले जन्मकुण्डलीको उदित भागमा (७ देखि १२ भाव सम्म उदित अर्थात् प्रकाशित) राहु भएको अवस्था र अनुदित (अप्रकाशित) भन्नाले उक्त स्थानको विपरीत भागमा राहु भएको अवस्था ।

ख) १. राहुका मुख भागमा सबै ग्रह हुनु ।

२. राहुका मुख भागमा कुनै ग्रह नहुनु ।

उक्त अवस्था द्वयको उदित कालसर्प योगको दुष्परिणाम जीवनको पहिलो भागमा र अनुदित अवस्थाको फल पछिल्लो भाग वा अवस्थामा जान्नुपर्दछ ।

राहुका मुखागमा सबै ग्रह बसेको अवस्था सबैभन्दा भयदायक

छ। यसको तुलानामा अन्य अवस्था केही कम भय दिने भन्नुपर्छ। ग्रहणकालिक कालसर्प योग पनि अत्यन्तै भयदायक जान्नुपर्छ। अरू अवस्था भन्ने सामान्य नै हुन्छन्। तत्सम्बन्धी ग्रहको दशा अन्तरदशामा केही बढी दुःख दायक बन्न सक्छन्। एवं प्रकारले हरेक अवस्थाको प्रकृति अनुसार विचार गर्नुपर्छ।

कालसर्प योगको प्रकार

सामान्यतः कालसर्पयोगको प्रकार २८८ रहेको छ। ज्योतिष विद्वान्हरूद्वारा अनुसन्धान गरी उक्त प्रकार निर्धारण गरेको हो। मेषादि १२ राशिमा घुम्दा प्रत्येक राशिको क्रमले १२ प्रकार र १२×१२ गर्दा १४४ र यसको विपरीत पुनः १४४ गर्दा २८८ योग भएको ठहर गरेको छ। उक्त योगमा मुख्य १२ योग १२ वटै नामले प्रसिद्ध छन्। यदि शान्ति गर्नुपर्दा पनि कुनचाहिँ योग परेको छ त्यसैको नाम लिएर सङ्कल्प गर्नु राम्रो हुन्छ।

उक्त योगको फलादेश गर्ने समयमा पुरा नियमहरूलाई पनि सम्झनुपर्दछ, जस्तै कि राहु कुण्डलीको कुन भागमा छ, ग्रहहरू कसरी बसेका छन्, राहुको मुखमा छन् वा पीठमा छन् अथवा पुच्छरमा छन् त्यो सबै विचार गरेर अनिमात्र शुभाशुभ बताउनुपर्छ। अर्को कुरा राहु पुरुष राशिमा छ वा स्त्री राशिमा छ त्यो पनि विचार गर्नुपर्छ। राहु कुन राशिमा छ त्यो पनि हेर्नुपर्छ।

कालसर्प सकारात्मक पनि हुन्छ नकारात्मक पनि हुन्छ। त्यसकारण पुरा विचार गरेर मात्र भन्नुपर्छ। विस्तारपूर्वक कालसर्पयोगको वर्णन गर्न र वर्णन गरिएको कुरा सम्झन पनि गाह्रो हुने भएकाले यहाँ संक्षिप्त तरिकाले उल्लेख गरिन्छ।

फलित योग, दशान्तरदशा र गोचरको सङ्कलित फलमा निर्भर हुन्छ। केवल कालसर्प योगको प्रभाव एक योगको भ्रान्ति हुन्छ। ग्रह योग आफ्नो फल मुख्यतः आफ्नै दशा अन्तरदशामा दिन्छ भने त्यस्तै फल ग्रहहरूको बलाबलमा निर्भर हुन्छ।

भावको अनुसार कालसर्पयोगको विभिन्न नामहरू दिइएको हुन्छ। ती नाम ऋषिमहर्षिहरूले भाव योग्यता अनुसार दिएको हो नाम अनुसारकै फल उग्र अति उग्र महाति उग्ररहेका छन्। जस्तै-

अनन्तादि १२ कालसर्प योग

१) अनन्त कालसर्पयोग-

यो योग प्रथम भावमा राहु र सप्तम भावमा केतु भएर बन्न पुगेको हुन्छ। यो योगमा जन्म लिएको व्यक्तिको शिक्षा साधारण श्रेणीमा चल्छ, धेरै बोल्न खोज्दैन समय आएपछि सबै कुराको बदला लिएरै छोड्ने स्वभावको हुन्छ। व्यवहारमा धेरै मेल हुने किसिमको यसको मिजास छैन। अर्कोलाई आक्षेप दोष दिनु इत्यादि अर्काको निन्दा यत्तिबाटै आफ्नो दोष निराकरण गर्न चाहन्छ।

२) कुलिक कालसर्पयोग-

द्वितीय भावमा राहु र अष्टम भावमा केतु भई अन्तरमा अरू ग्रहहरू हुँदा कुलिक कालसर्प योग हुन्छ। जसको फल निम्न प्रकार बताइन्छ -

राहु यदि द्वितीय स्थानस्थित स्त्रीकारक राशिमा भए कालसर्प जनित दोष कम हुन्छ, स्त्रीकारकमा पनि वृष कर्कट भएमा अझ कम दोषकारक हुन्छ। राहु स्वभावैले स्त्री राशिमा शुभ फल दिन्छ। कुलिक कालसर्प योग हुँदा पूर्वार्जित सम्पत्ति कमै मात्रामा मिल्छ। खानेकुरामा विशेष रुचि हुन्छ। ठूलो ठूलो व्यवसाय गर्ने मन हुन्छ, धनको अभावले इच्छा पूरा हुन नसक्ने हुन्छ। त्यसकारण घरजग्गा धितो राखेर भए पनि कार्य गर्न पर्ने हुन्छ। यसप्रकार ऋण लिएर साझेदारी गरेर अनेक दुःख गरेर भए पनि आर्थिक विकास गर्न सक्ने हुन्छ। यसप्रकारको जातक उदारबुद्धिको अधिक मेहनती दानी हुन्छ। आफ्नो आयलाई स्थिर राख्न सक्ने हुन्छ। यदि राहु पुरुष राशिमा छ भने धेरै धन सम्पत्तिको नोक्सानी गर्ने हुन्छ। पुरुष राशिमा पनि तुलाभन्दा पछि अझ बढी खराबी हुन्छ। यसप्रकारका जातकको पिताको मृत्युपश्चात भाग्योदय हुन्छ। हर कारणले गर्दा मानसिक तनाव क्रोधी चिडचिडापन र गुप्ताङ्गमा रोग हुन सक्छ।

३) वासुकी कालसर्प योग-

तृतीय भावमा राहु र नवममा केतु भई अरू ग्रहहरू बीचमा हुँदा बासुकी नामको कालसर्प योग हुन्छ। उक्त योगमा पैदा भएको जातकको

स्त्री राशि भए केही शुभ र पुं राशिमा भए पूरै अशुभ हुन्छ। यो भावको पुं राशिमा रहेको योगले दाजुभाइलाई मारक योग हुन्छ। नमारे पनि मृत्युतुल्य कष्ट भने दिएरै छोड्छ। जातक अतिशय आत्म विश्वासी घमण्डी हुन्छ। यिनीहरूका मित्र हुँदैनन्। यिनीहरू अरूको उपहास गर्न उत्साही हुन्छन्। कम बोले पनि बढी आडम्बर गर्ने हुन्छन्। हरेक अशुभ कार्यारम्भले लोकमा निन्दा पाउने हुन्छन्। निर्दयी अर्काको मर्म नजान्ने स्वभावका हुन्छन्। पढाइ लेखाइमा पनि अनेक वाधा अड्चन आइरहने हुन्छ। सौतेनी आमाको पीडा समेत सहनुपर्ने हुन्छ इत्यादि प्रायः अशुभ कारक बनाउँछ।

४) शङ्खपाल कालसर्पयोग-

चतुर्थ भावमा राहु र दशममा केतु भई अन्तरमा अरू ग्रहहरू भए शङ्खपाल नामक कालसर्प योग हुन्छि। यो योग पनि अरू जस्तै स्त्रीकारक राशि र पुं राशि अनुसार कम बेसी फलदायक हुन्छ। पुं राशिमा राहु भई उक्त योग बनेको भए दारिद्र्य, कोढ रक्त पित्त पागलपन इत्यादि असाध्य रोगद्वारा ग्रसित हुन्छ। हरेक कारणले घर त्याग्नु पर्ने पनि हुन सक्छ। बोलीमा विकार अथवा लाटोपन क्षयरोग हृदयरोग इत्यादि रोग द्वारा अल्पायु समेत गराउँछ। अरू विशेष केही नभए आडम्बरपूर्वक संन्यास पनि गराउँछ। यसप्रकारको जातकको जन्म पश्चात पिताले पनि दुःख पाउँछ। बाबुको जागिर वा कार्यक्षेत्रबाट निस्कनुपर्ने धन खर्च इत्यादि हुन्छ। भाइ नहुनु, भए पनि अनेक अशुभ हुने हुन्छ। आमा मामा सबैलाई दुःख दिने हुन्छ। दुई विवाह गर्नुपर्ने हुन्छ। यदि मिथुन सिंह र कुम्भ चारौं भए सम्पत्ति प्राप्ति त हुन्छ तर सन्तान पीडा भने भइरहन्छ। शिक्षाक्षेत्र पनि अधुरै रहन्छ। पाप कर्मबाट धन आर्जन हुन्छ। मातापितामा एक चाँडै बच्चा अवस्थामै बिछोड हुन्छ। असफल र अपमानले जीवनभर दिक्क बनाउँछ।

५) पद्म कालसर्प योग-

पञ्चम भावमा राहु एकादश केतुभ भई अन्तरमा अरू ग्रह हुँदा पद्मनामको कालसर्प योग बन्दछ। उक्त योग पुं राशिमा भएको छ भने पुत्र शोकले पीडा दिन्छ। सन्तान पहिले जन्म लिनै नसक्ने र जन्मिए पनि अल्पायु हुने हुन्छ। आर्थिक र शारीरिक कष्टले गर्दा शिक्षा क्षेत्र

पनि आम्दानिमा लगाउन नसकिने हुन्छट । अनेक बाधा अड्चनले गर्दा व्यवसाय पनि पूर्ण सफलतामा हुँदैन । बुद्धिबल कल्पना शक्ति भएर पनि काममा नआउने हुन्छ । स्त्री सन्तानबाट पनि सन्तोषको वातावरण बन्दैन । जातक नपुंसक तुल्य हुन्छ । सांसारिक वातावरणमा योग्य अयोग्यको ख्याल हुँदैन । यसप्रकारको जातक पढ्नेलेख्ने र आन्तरिक चिन्तनमा मग्न रहने र ग्रन्थ नै सबै सुखको साधन हुने गर्छ । यिनीहरू उत्तम संशोधनले लेख्ने या भावमय कविता अत्यन्त मार्मिक र गहिरो विषयमा पुगी काव्य रचना गर्ने गर्छन् तर यसको पाठक लोकमा नपाउँदा दुःखी हुन्छन् । दुःखले यिनीहरूलाई साथ नछोड्ने प्रण गरेको छ र यिनीहरूमा पनि दुःख पचाउन सक्ने सामर्थ्य छ । यिनीहरूको कुनै उपायद्वारा सन्तान भएमा पिताको गुण यशलाई कलङ्कित पारिदिन्छन् ।

६) महापद्म कालसर्प योग-

राहु षष्ठ र केतु बाह्रमा हुँदा योग बन्दछ । यो योगमा पनि पुं राशिमा परेको छ भने अरूजस्तै बढी पीडा दायक हुन्छ । पुरुष राशिमा यो योग छ भने जातक खेलमा सुख मान्ने हुन्छ परन्तु खेलबाट अनेक धोखा हुनाले अन्तमा कष्ट नै पाउँछ । बच्चापनमा अनेक किसिमको रोगले दुःख दिन्छ । प्रेत, पिसाचहरूले पनि अनेक दुःख दिन्छन् । कोढ, रक्तपित्त, रक्तक्यान्सर, चर्मरोग इत्यादि रोगबाट ग्रसित हुन्छ । पेटको रोग सन्धि वाथ इत्यादि पनि हुन्छिन् । यदि स्त्रीराशिमा यो योग बनेको भए खेलमा नाम प्राप्ति हुन्छ उद्यमी पहलमानी आदिबाट नाम चर्चित हुन्छ । उक्त रोग पनि हुँदैनन् । आखिरमा भने सामान्य दुःखकष्टपूर्वक भूतप्रेतको पिशाचहरूका पीडाले मृत्यु हुन्छ । जसोतसो गरेर जीवनमा पेनशन भोक्ता हुन्छ ।

७) तक्षक कालसर्प योग-

जब राहु सप्तम भई केतु लग्नमा हुन्छ अन्य ग्रह अन्तर हुँदा तब मात्र यो योग बन्दछ । यहाँ धेरैजसो ज्योतिर्विदहरू नराम्रो फल बताउने गर्छन् तर यहाँ पुरुषराशिमा भए पनि पुरुषको पौरुषत्त्वलाई यो योगले बढाउँछ । यहाँ अशुभ भनेको पुं. राशिमा यो योग भएको जातकले श्रीमतीलाई धेरै कष्ट दिन्छ र घरमा धेरै असन्तोषको वातावरण बनाउँछ यदि ऊ व्यक्ति नहुँदा उसको घर निकै सुधारिएको हुन्छ । उसको घर आगमनले जहिले पनि असन्तोष सिर्जना हुन्छ । यदि सबल शुभग्रहको दृष्टि सातौंमा भए व्यवसाय

राम्रै हुन्छ । यदि दशौंमा बृहस्पति भई लग्नमा शुक्र भए सम्पूर्ण सुखका साधन सहित व्यवसायबाट फाइदा गर्ने हुन्छ । अन्यथा व्यवसायबाट लाभ पनि हुँदैन । धनको कमीले गर्दा अस्थिर व्यवहार हुन्छ घर छोड्नु पर्ने दोस्रो विवाह गर्नुपर्ने अनेक आपत्ति पनि हुन्छ । यदि मिथुन कन्या तुला र धनुमा उक्तयोग भए पुनर्विवाह गर्नु नपर्ने पनि बताइएको छ । अरू राशिमा भए विवाह नभए पनि अन्य स्त्रीसँग भए पनि कामना पूर्ति गर्ने हुन्छ । राम्रो जागिर भए पनि नोकरीमा कुनै दोष लाग्ने सम्भावना रहेको छ । स्त्रीराशिमा भए उक्त दोष नभएर राम्रो नै फल प्राप्त गराउँछ ।

८) कर्कोटक कालसर्पयोग–

अष्टम भावमा राहु र द्वितीय भावमा केतु हुँदा कर्कोटक नामक कालसर्पयोग हुन्छ । यो योगमा जन्म लिएको जातक पुं राशिमा छ भने पत्नी झगडालु हुनेछे । घरको कुरा अन्त गर्ने र घरको सामान चोर्ने हुन्छे । अभागी स्त्रीले गर्दा अनेक दुःख ल्याउने गर्छे । अकस्मात् धनप्राप्त गर्ने इच्छाले गर्दा सट्टापट्टामा चिट्ठाढुकुटी इत्यादिमा जुवामा मन लगाउने गर्छ धन पनि यस्तैमा खर्च हुन्छ । वारवार यातना पाउने हुन्छ । यस्ता व्यक्तिको अचानक मृत्यु पनि हुन्छ । स्त्री राशिमा भए उक्त दोषको कमी हुन्छ । स्त्री सुशीला हुन्छे ।

९) शङ्खचूड कालसर्प योग–

यदि नवम भावमा राहु र तृतीय भावमा केतु भई अन्तरमा अरू ग्रह बसेका भए शङ्खचूड नाम गरेका कालसर्प योग हुन्छ । यो योगमा जन्म लिने जातक दिदीबहिनीसहित भएको हुन्छ । भाई भने नहुने भए पनि कष्ट भोग्नेवाला हुन्छ । यो जातक नास्तिक स्वभावको हुन्छ । विजातीय विवाह गर्ने जेठी केटी वा विधवासँग विवाह गर्ने अस्थिर प्रेम भएको पिताको मर्यादा नराख्ने सङ्कीर्ण भाग्यवाला हुन्छ । पुं राशि भए पनि सिंहधनु राशि नवममा भए केही स्थिरता प्रेममा भएको हुन्छ । सन्तानका लागि दोस्रो विवाह गर्ने वाला विदेशमा बस्ने विदेशी स्त्रीसँग विवाह वा सम्बन्ध राख्ने हुन्छ । शिक्षा क्षेत्र भने यिनीहरूको राम्रै हुन्छ । भाइहरूमा सँगै बस्न नसक्ने बाबुसँग भए पनि अलगिएर बस्ने अलक्क बसेपछि मात्र धेरै थरी काममा रुचि लिएर धनवृद्धि गर्ने । पछि आफ्ना सन्तानसँग पनि छुट्टिएरै बस्न मन पराउने स्वभावको हुन्छ ।

१०) पातक कालसर्प योग-

दशम भावमा राहु र चतुर्थ भावमा केतु भई अन्तरमा सातै ग्रह बसेका भए पातक नामको कालसर्प योग हुन्छ । यस्तो योगमा जन्म लिएको मानिस अत्यन्त अभिमानी वाचाल स्वभावको हुन्छ । आर्थिक स्थिति अस्थिर भइरहन्छ । उसलाई कसैले पनि विश्वास गर्न सक्दैन । यो जातकको जन्म भएपछि आमाबाबुलाई पनि अति दुःख परेको हुन्छ । धनहानि कार्यक्षेत्रमा अनेक वाधा आइपरेको हुन्छ । बाबुलाई अनेक रोग व्याधिले आक्रमण गर्नेछ । यदि राहुका साथै सूर्यचन्द्रमा भए बच्चा बेलामा नै मातापिताको वियोग हुने सम्भावना ज्यादा हुन्छ । यस्ता व्यक्ति अधिकार पाएपछि मात्रै काम काज गर्ने गर्छन् । अनेक सुख प्राप्तिका कल्पना गर्ने गर्छन् । स्त्री राशिमा भए आमा बाबुको जायजेथा पाउन नसक्ने हुन्छ पाए पनि दिगो हुँदैन । वहुत कष्ट सहेर प्रौढावस्थामा सन्तान धन कीर्ति पाउने हुन्छन् । मुद्दा मामिलामा जित भए पनि कामकाज नहुँदा सन्तोष नहुने हुन्छ । स्वतन्त्र व्यवसायबाटै लाभ हुन्छ ।

११) विषधर कालसर्प योग-

एकादशमा राहु र पञ्चम भावमा केतु हुँदा उक्त विषधर नामको कालसर्प योग पर्छ । यो योगमा पैदा भएको मानिस पूर्वजन्मको श्रापको कारण पुत्र सन्ततिसुखबाट वञ्चित हुनुपर्ने हुन्छ । पुत्र मर्नु, गर्भपात हुनु, स्त्री बाँझी हुनु इत्यादि कष्टकारक हुन्छ । जातक अत्यन्त धनी बन्ने चाहना हुन्छ । उक्त चाहना पूरा गर्न जुवा चिठ्ठा आदिको आश्रय लिन पुग्छ । यस्तै तरिकाले व्यवहार गर्दा कतिपय उतारचढाव आउँछन् । अर्काको धन हडप्ने इच्छा अत्यन्त तीव्ररूपले लागेको हुन्छ । हित मित्रका नजिक नपर्ने र अरूको सहायता नगर्ने बानी हुन्छ । भाग्योदयमा रोकावट आइरहन सक्छ । नोकरी योग्यताअनुसार पाइन्छ । छोरी अधिक जन्माउनेवाला र स्त्रीराशिमा भए दोष कम र गुण बढी हुन्छ ।

१२) शेषनाग कालसर्पयोग-

यो योग द्वादशभावमा राहु र षष्ठ भावमा केतु भएर अन्तरमा अरू ग्रह भएमा उक्त शेषनाग नामक कालसर्पयोग पर्न आउँछ । यदि राहु

पुरुषराशिमा भएर यो योग परेको भए नेत्ररोग हुने सम्भावना बढी हुन्छ। बडप्पन देखाउने फजुल खर्च गर्ने इत्यादि जातकको स्वभाव हुन्छ। सन्तान कम हुनु, हुँदै नहुन पनि सक्छ। धेरै व्रत उपवास औषधि जस्ता उपाय गरे पनि बढीमा दुई सन्तान हुन सक्छन्। आफ्नी श्रीमतीसँग सधैं असन्तुष्ट हुनेवाला व्यभिचारी प्रवृत्तिको हुन्छ। उक्त जातकका स्त्री सधैं रोगी हुन्छे। स्त्रीसुख सामान्य नै छ। दुई विवाह वा परस्त्रीगामी हुन्छ। आँखाको रोगले पीडित हुन्छ। धेरै कमाए पनि उत्तिकै खर्च गर्ने हुन्छ। अपयश र निन्दा गर्नुपर्ने ठाउँमा बढी खर्च गर्ने हुन्छ।

माथि उल्लिखित फल कथनबाट यो स्पष्ट हुन्छ कि कालसर्प योग सबैका लागि अशुभ होइन। कालसर्पयोग स्त्री राशिमा शुभ र पुरुष राशिमा अशुभ इत्यादि कुरा माथि नै भनिसकियो अब यहाँ पिष्टपेषण गरिरहनु उचित छैन। सामान्यतः कालसर्प वा जुनसुकै योग पनि राशिदृष्टि आदि सम्बन्ध अनुसार हुने गर्छन्। तसर्थ यहाँ पनि मोटामोटीरूपमा फल बताइयो, उक्त फल समय अवस्था हेरी भन्नुपर्छ। जसरी शनिको साँढेसात मांगलिक आदि दोष सधैं एकनाश हुँदैनन्। अवस्था र सम्बन्धअनुसार शुभाशुभ फल दिन्छन् त्यस्तै यो कालसर्प योग पनि जान्नुपर्छ।

कालसर्पयोग भङ्ग (राजयोग)

ज्योतिषशास्त्र अत्यन्त गम्भीर र अद्भूत शास्त्र हो। यो सामान्य अभ्यासले यसको इयत्ता पाउन सकिँदैन। गहन अध्ययनका साथ साथै गुरुको सल्लाह परामर्श पनि गर्दै रहनुपर्छ। ईश्वरीय कृपा नभईकन पनि यो विद्या सिद्ध हुँदैन। गुरुको परामर्श अनुसार आफ्ना इष्टदेव गायत्रीमाताको कृपादृष्टि भएपछि मात्र यो विद्या सिद्ध हुन आउँछ। केबल अध्ययन बलले मात्र सिद्ध गर्न सकिँदैन।

ज्योतिष विद्या अनेक भागमा विभाजित छ। अनेक योगहरू ग्रहहरूका आधारमा सिद्ध भएका छन्। ग्रहहरू राशिका आधारमा विभिन्न फलदायक बन्छन्। राशिहरू तात्कालिक अवस्था अनुरूप हुन्छन्। हाम्रा ऋषिमहर्षिहरू साह्रै दूरदर्शी र सूक्ष्मदर्शी थिए भन्ने करा उनीहरूका उपदेश कृतिहरूले स्पष्ट पारिसकेको छ। उनीहरूले केवल जन्मकुण्डलीमा योग देखेर मात्र प्रभावित नहुन अनेक प्रकारका युक्ति र स्थितिको अवलोकन

गर्ने आदेश दिएका छन् । योग त्यस्तै प्रकारको देख्दैमा फल त्यस्तै नहुने कुरा जम्ल्याहा बच्चाहरूको उदाहरणबाट स्पष्ट गराएका छन् । त्यसैले ज्योतिषाचार्यले अत्यन्त गहन विचार गरेर मात्र फलादेश गर्नुपर्छ । एउटै लग्न, योग, नवांश सम्म पनि विविध फलादाता भएको स्पष्टै छ । यस्तो अवस्थामा तृशांश र षष्ट्यांश समेतको विचार गरी फलभिन्नता देखाउन सक्नुपर्छ । तृशांश र षष्ट्यांश जीवनको आधार हो । ग्रहहरूको आपसी सम्बन्ध पनि एक विशेष महत्त्वपूर्ण आधार हो । यस्तै अंशात्मक आधारबाटै सन्तान विवाह आयु आदि सुख इत्यादि देख्न सकिन्छ । ग्रहको योगमा पनि ग्रहबल विचार गर्नुपर्छ । जस्तै सातौंको शनि मङ्गल योग पत्नी नाशक हुन्छ भने कर्कट राशिमा सप्तमभावस्थित शनि, मङ्गल योग पत्नी सती र सत्स्वभाव वाली हुन्छे ।

विविध अवस्था र योगमा विचार गर्नुपर्ने कुरा के छ भने यदि कुनै प्रकारको योग परेको छ भने साथै भङ्ग पनि छ कि छैन हेर्नुपर्छ । जस्तै चन्द्रमाको केमद्रुम योग अनिष्टकारक छ तर चन्द्रमा केन्द्रमा वा अरू अरू योग इत्यादिमा भङ्ग पनि भएका हुन्छ । त्यस्तै रुचकादि योग पञ्च महापुरुषयोग इत्यादि भङ्ग हुन्छन् । त्यस्तै कालसर्प योग पनि कतै भङ्ग भएको छ कि छैन भनी खूब विचारपूर्वक हेर्नुपर्छ । विभिन्न अवस्थामा कालसर्प योग पनि भङ्ग भएको हाम्रा अग्रज ऋषिमहर्षिहरूले बताएका छन् । त्यसै प्रमाणका आधारमा कालसर्पयोग भङ्गभएको वा नभएको विचार गरेर यदि भङ्ग नभएको भए कालसर्पजनित दोष शान्त गराउन शान्तिकाध्यायको सहारा लिई शान्ति गराउने वा गर भनेर भन्नुपर्दछ ।

कालसर्पयोग भङ्ग भयो भने उक्त योग राजयोगमा परिवर्तन अर्थात् राजयोग बन्न पुग्छ ।

१) यदि जन्मकुण्डलीमा लग्न, सूर्य र चन्द्रमामध्ये कुनै दुइवटा बलवान छन् भने कालसर्प भङ्ग हुन्छ । बलवानमा पनि षड्बलमध्ये पाँच बल भए पुग्छ । (षड्बल भन्नाले स्थानबल, दिग्बल, सम्बन्धबल, योगबल, कालबल, दृष्टिबल)

२) यदि जन्मकुण्डलीमा पञ्च महापुरुष योग बनेको भए नि कालसर्पयोग भङ्ग हुन्छ ।

३) यदि जन्मकुण्डलीमा केन्द्र वा त्रिकोणमा शुभग्रहस्थित भए अथवा उपचय स्थानमा पाप ग्रह भए पनि कालसर्प योग भङ्ग हुन्छ ।

४) यदि शुक्र ग्रह द्वितीय वा द्वादशमा छ भने पनि र अन्य ग्रहको

शुक्रमा युति दृष्टि नभए पनि कालसर्प भङ्ग हुन्छ ।

५) बृहस्पति लग्न वा चौथो भावमा छ र अन्य युत दृष्ट नभए पनि उक्त योग भङ्ग हुन्छ ।

६) यदि बुधादित्य योग केन्द्र त्रिकोणमा भई बुध अस्त छैन भने पनि कालसर्प योग भङ्ग हुन्छ ।

७) सबै ग्रहको दिकबल प्राप्त छ अन्य दोषकारक छैन भने पनि कालसर्पयोग भङ्ग हुन्छ । (दिगबल भन्नाले लग्नमा गुरु चौथो बुध सातौं शनि र दशौं मङ्गल इत्यादि)

उपर्युक्त योगको प्रत्येक अवस्थामा कालसर्प योग भङ्ग र साथै राजयोग प्राप्त हुन्छ ।

कालसर्पयोगको अति पीडादायक अवस्था

कालसर्प योग कहिले बलशाली भएर कष्टदायक हुन्छ भन्ने जिज्ञासा भएमा भन्न सकिन्छ कि जब ग्रहयोगका माध्यमले चाण्डाल योग, ग्रहण योग, केमद्रुमयोग र अमोचक योग इत्यादि अवस्थामा छ भने भयानक पीडा दिने हुन्छ । उक्त योगको सामान्य परिचय यसप्रकाररहेको छ-

१) लग्न वा लग्नेश पीडित अवस्था ।

२) चाण्डाल योग भन्नाले राहु बृहस्पति योग हुन्छ ।

३) ग्रहण योग राहुका साथ चन्द्रसूर्यको योग ।

४) चन्द्रमादेखि द्वितीय र द्वादशस्थानमा कुनै ग्रह अर्थात् सूर्यबाहेक कुनै ग्रह नहुनु केमद्रुम योग हुन्छ ।

५) राहुका साथ शुक्र ग्रहको योग हुनु अमोचक योग हो । उक्त योगमा कालसर्प योग अत्यन्त पीडादायक हुन्छ ।

कलियुग उपयोगी योग

ये योगाः कथिताः पुरा बहुतरास्तेषामभावे भवेद्
गोलश्चैकगतैर्युगं द्विगृहगैः शूलस्त्रिगेहोपगैः ।
केदारश्च चतुर्षु सर्वखचरैः पाशस्तुपञ्चस्थितैः
षट्स्थैर्दामिनिका च सप्त गृहगैर्वीणेति संख्या इमे ॥२०॥

अर्थः- महर्षिहरूले धेरै किसिमका योगहरू बताएका छन् । परन्तु सबै योग कलियुगमा मिल्न सकेका छैनन् । योग र फलको विषमताले गर्दा आज ज्योतिषशास्त्रमा शंका लाग्न थालिसकेकाले पुनः ऋषिहरूले उक्त श्लोकमा कलियुग सापेक्ष योगहरू बताएका छन् । यी हुन् गोलयोग, युगयोग, शूलयोग, केदारयोग, पाशयोग, दामिनी र वीणायोग । यसप्रकार सातयोगहरू कलियुग सुहाउँदो योग रहेका छन् ।

यदि जन्मकुण्डलीमा राहु केतुबाहेक अरू सात ग्रहहरू एकै घर वा स्थानमा भए गोल योग हुन्छ । त्यस्तै दुई घरमा भए युग तीनमा भए शूल चार घरमा भए केदार पाँच घरमा भए पाश छ घरमा भए दामिनी सातैघरमा भए वीणा नामक योगहरू पर्दछन् ।

गोलयोग फल

विद्या सत्वौदार्य सामर्थ्यहीनाः
नानायासा नित्यजातप्रयासाः ।
येषां योगः सम्भवेद् गोलनामा
नामासत्यप्रीतयोऽनीतयस्ते ॥२१॥

अर्थः-जसको कुण्डलीमा गोलयोगपरेको छ त्यो मानिस विद्या सामर्थ्यहीन हुन्छ, अनेक किसिमको दुःख प्रयास गर्नेवाला मिथ्या र कुनीतिमा विश्वास गर्ने हुन्छ ।

युगयोग फल

पाखण्डेनाखण्डितः प्रीतिभाजो
निर्लज्जाः स्युर्धर्मकर्मप्रयुक्ताः ।
पुत्रैरर्थैः सर्वथा ते वियुक्ता
युक्ताऽयुक्तज्ञानशून्या युगाख्ये ॥२२॥

अर्थः-जसको कुण्डलीमा युगयोग परेको छ त्यो व्यक्ति पाखण्डि धर्मकर्म विहीन(खण्डित) प्रेम गर्नेवाला निर्लज्ज विनाकामको धर्मकर्म गर्ने धनपुत्रबाट विमुख योग्य अयोग्यकुराको ख्याल नगर्ने स्वभावको हुन्छ ।

शूलयोग फल

युद्धे वादे तत्पराः क्रूरचेष्टाः
क्रूराः स्वान्ते निष्ठुरा निर्धनाश्च ।
योगो येषां सूतिकाले हि शूलः
शूलप्रायास्ते जनानां भवन्ति ॥२३॥

अर्थः-जसको कुण्डलीमा शूलयोग परेको छ त्यो मानिस युद्ध र विवादमा तत्पर, क्रूर चेष्टा वाला अन्तस्करण पनि क्रूरताले नै भरिएको निष्ठुर र निर्धन पनि हुन्छ ।

केदार योगफल

सत्योपेताश्चार्थवन्तो विनीताः
कृष्यौत्सुक्याश्चोपकारा दराश्वाः ।
योगे केदारे नरास्तेऽपि धीरा
धीराश्चापि धैर्यं तेषां विशेषात् ॥२४॥

अर्थः-जसको कुण्डलीमा केदार योग परेको छ त्यो मानिस सात्विक स्वभावको धनी अति नम्र खेतीमा इच्छा भएको (खेतबारीमा फाप भएको) परोपकारी धैर्यवान् धीरमानिसका साथ र संगत गर्ने उसको धैर्य नै विशेषता भएको हुन्छ । उसको धैर्यरूप धन नै प्रशंसनीय हुन्छ ।

पाश योग फल

दीनाकारास्तत्पराश्चापकारे
बन्धेनार्त्ता भूरिजल्पा सदम्भाः ।
नानानर्थाः पाशयोगप्रजाता
जाताख्याताः प्रीतयः स्युर्मनुष्याः ॥२५॥

अर्थः- जसको कुण्डलीमा पाश योग परेको छ, त्यो मानिस दुःखीजस्तो आकारको हुन्छ । कसैको भलाइ नगर्ने, बन्धन पर्नुपर्ने, धेरै वकवाद गर्ने सेखी गर्ने अनर्थकारी र जङ्गली जनावरमा प्रेम गर्ने हुन्छ ।

दामिनी योग फल

जातानन्दो नन्दनाढ्यो: सुधीरो
विद्वान्भूप: कोपसञ्जाततोष: ।
चञ्चच्छीलौदार्यवुद्धि: प्रशस्त:
शस्त सूतो दामिनी यस्य योग: ॥२६॥

अर्थ:-जसको कुण्डलीमा दामिनी योग परेको छ त्यो मानिस सदा आनन्दयुक्त धनपुत्रवान धैर्यशाली विद्वान् राजाले मान्य राजातुल्य रिस न उठ्ने अशल शीलस्वभाव उदारवुद्धिवाला सबैतिरबाट जस (यश) पाउने हुन्छ ।

वीणा योग फल

अर्थोपेता: शास्त्रपाराङ्गताश्च
सङ्गीतज्ञा: पोषका: स्युर्बहूनाम् ।
नानासौख्यैरन्वितास्तु प्रवीणा
वीणायोगे प्राणिनां जन्म येषाम् ॥२७॥

अर्थ:- जसको जन्मकालमा वीणायोग परेको छ त्यो मानिस धनी शास्त्रपारङ्गत सङ्गीत जान्ने परोपकारी धेरैलाई पालनपोषण गर्ने अनेक किसिमको सुख भोग्ने ज्यादै प्रवीण (चलाख) हुन्छ ।

एकावली योग

लग्नतश्चान्यतो वापि क्रमेण पतिता ग्रहा: ।
एकावली समाख्यातो महाराजो भवेन्नर: ॥२८॥

अर्थ:-लग्न वा अन्य स्थानदेखि क्रमैसँग वा व्यतिक्रमले भए पनि एक स्थानमा एक ग्रह भएर बसेका भए त्यो एकावली योग हुन्छ। त्यस्तो योगमा जन्म लिने मानिस सर्वाधिकारी महाराज हुन्छ ।

चतु:सागर योग

चतुर्थ केन्द्रसंज्ञेषु सौम्या: पापग्रहा: स्थिता: ।
चतु: सागरयोगोऽयं राज्यदो धनदो भवेत् ॥२९॥

अर्थः-जसको कुण्डलीमा सवै ग्रह केवल चारै केन्द्रमा मात्र छन् भने चतुः सागर योग हुन्छ त्यस्तो योगमा जन्मलिने मानिसलाई राज्य धन दिने हुन्छ।

पुनः चतुःसागर योग

कर्कटे मकरे मेषे तुलायाञ्च ग्रहाःस्थिताः ।
चतुः सागरयोगः स्यात् सर्वारिष्टानि सूदनः ॥३०॥

अर्थः- कर्कट, मकर, मेष र तुला राशिमा मात्रै सबै ग्रह बसे भने पनि चतुःसागर योग बन्छ। यो योगले पनि पूर्ववत् शुभ फल दिन्छ साथै सबै अरिष्टको नाश गर्छ।

चतुर्ग्राही योग

चतुर्ग्रहैरेकगृहे च संस्थै-
र्धीधर्मनदुश्चिक्य तनुस्थितैर्वा।
दासीषु जातः क्षितिपालतुल्यो
भवेन्नरेन्द्रोऽम्बुधिपारयायी ॥३१॥

अर्थः-जसको कुण्डलीमा चार शुभ या पाप ग्रहहरू लग्नमा वा तृतीयमा अथवा चतुर्थ स्थानमा या पञ्चमस्थानमा अथवा नवमस्थानमा बसेका छन् भने चतुर्ग्रही नामक योग हुन्छ। यस्तो योगमा उत्पन्न मनुष्य राजा तुल्य वा राजै हुन्छ। देशविदेशमा समेत ख्याती प्राप्त हुन्छ।

लक्ष्मीयुक्त योग

लग्नं लग्नेशसंयुक्तं यस्य जन्मनिजायते ।
नमुञ्चन्ति गृहं तस्य कुलस्त्रिय इव श्रियः ॥३२॥

अर्थः- लग्नपति लग्नमा बसेको छ भने कुलिन स्त्रीले जस्तै उसको घरलाई लक्ष्मीले छोड्छिन्।

पुनः

चन्द्रेण मङ्गलो युक्तो जन्मकाले यदा भवेत् ।
तस्य जातस्य गेहं तु लक्ष्मीर्नैव विमुञ्चति ॥३३॥

अर्थः- जसको जन्मसमयमा चन्द्रमा र मङ्गलको योग भएमा लक्ष्मी योग हुन्छ यो परेमा लक्ष्मीले त्यसको घर कहिल्यै पनि छाड्दिनन् ।

विकलाङ्ग जडदरिद्र योग

कर्कवृषजोपगते चन्द्रे लग्ने धनी सुरुपश्च ।
विकलाङ्गजडदरिद्राः शेषेषु विशेषतः कृष्णे ॥३४॥

अर्थः-जसको जन्मकुण्डलीमा मेष, वृष, र कर्कट लगन भई त्यही लग्नमा चन्द्रमा छ भने धनी र राम्रो रूपवान् हुन्छ । अन्यथा लग्नमा चन्द्रमा बसे विकल अङ्गवाला जड दरिद्र हुन्छ । विशेषतः कृष्ण पक्षको जन्म भए उक्त दोष धेरै मात्रामा प्राप्त हुन्छ ।

गौरी योग

सुन्दरगात्रःश्लाघितगोत्रः पार्थिवमित्रः सद्गुणपात्रः ।
पंकजवक्त्रः संस्तुतजैत्रो राजति गौरीयोगसमुत्थः ॥३५॥

अर्थः- गौरीयोगमा सुन्दर शरीर प्रशंसित राजातुल्य विशिष्ट व्यक्तिसँगको मित्रता स्वयं गुणवान् (छोराछोरी पनि सद्गुणी) कमलजस्तो कान्तिमान मुखमण्डल सबैले प्रशंसा गर्ने खालको काम गर्नेवाला सबैलाई खुशीराजी राख्नेवाला उक्त गौरीयोगमा हुन्छ । उक्त गौरीयोग स्वच्चगत या स्वक्षेत्री गुरुले देखेको चन्द्रमा लग्नबाट केन्द्र त्रिकोणमा परेको भए हुन्छ ।

सरस्वती योग

शुक्रवाक्पतिसुधाकरात्मजैः केन्द्रकोणसहितैर्द्वितीयगैः ।
स्वोच्चमित्रभवनेषु वाक्पतौ वीर्यगे सति सरस्वतीरिता ॥३६॥

अर्थः-शुक्र, गुरु र बुध यदि तीनैवटा लग्नदेखि १,४,७,१०,५,९ र २ मा हुन् र गुरु स्वोच्च मूलत्रिकोण स्वक्षेत्रमा भएर बलवान भएको भए सरस्वती योग हुन्छ । उक्त सरस्वती योगमा जन्म लिएको मानिस साह्रै बुद्धिमान अनेक शास्त्रकला जान्ने अनेक विषयमा पारङ्गत सुन्दर स्त्री र सन्तानयुक्त सबैले पूजिने श्रद्धेय हुन्छ ।

॥ इति योगाध्याय ॥

अथ स्त्रीभावाध्याय

दारेशे सुतगे प्रनष्टवनितोऽपुत्रोऽथवाधीश्वरो
द्यूनेवा निधने गतोऽपि कुरुते पत्नीविनाशं ध्रुवम् ।
क्षीणेन्दौ सुतगे व्ययस्ततनुगैः पापैरदारात्मजः
स्त्रीसंगाद् धननाशनं मदगयोः स्वर्भानुभान्वोर्वदेत् ॥१॥

अर्थः-

१) सप्तमेश यदि पञ्चमा होस् त जातककी स्त्री अल्पायु हुन्छे या वियोग होला । अथवा सन्तान नहुन सक्छ ।

२) पञ्चमेश सप्तममा होस् अथवा अष्टममा होस् (निधनेश्वरोऽपि) यस्तो वाक्यान्तर भेटिएकोले यदि अष्टमेश सप्तममा होस् त चाँडै पत्नीनाशक योग हुनेछ । अथवा पत्नी सुख हुँदैन ।

३) पञ्चममा क्षीणचन्द्रमा भएर १।७।१२ भावमा पापग्रह बसेको भए स्त्री अथवा पुत्र आदिको सुख हुँदैन ।

४) सप्तममा राहु र सूर्य बसेका भए स्त्रीकाकारण धन खर्च हुने हुन्छ । उक्त श्लोकमा प्रनष्ट भन्ने शब्द आएको छ । उक्त शब्दको अर्थ 'णश अदर्शने' धातुको अर्थ अनुसार मृत्यु वा वियोग टाढा रहनु आदि हुन सक्छ ।

पत्नी अल्पायु कारक

शुक्रेवृश्चिकगे मदे मृतवधूः कामे वृषस्थे बुधे
स्त्रीनाशस्त्वथ नीचगे सुरगुरौ द्यूनाधिरूढे तथा ।
जामित्रे झषगे शनौ सति तथा भैमेऽथवा स्त्रीमृतिः
चन्द्रक्षेत्रगयोर्मदेऽर्किकुजयोः पत्नी सती शोभना ॥२॥

अर्थः-

१) लग्नदेखि सप्तममा वृश्चिक राशि होस् र त्यसैमा शुक्र बसेको भए
२) सप्तमभाव वृष होस् र त्यसैमा बुध बसेको भए
३) नीचो गुरु सातौंमा भए
४) सप्तम भावमा मीन राशि भई शनि बसेको भए
५) सातौं मङ्गल भए यी पाँच योग पत्नीको अल्पायु योग हुन्छ ।

कर्कट राशिमा सातौं भएर शनि र मङ्गल बसेका भए पनि पत्नी सती योग्य राम्रो शील स्वभावकी दीर्घायुवाली हुन्छे । यो योग सप्तममा पाप अपवाद हो ।

विचारणीय कुराः प्रथम योगका विषयमा विचारणीय कुरा के छ भने वृषलग्नमा मात्रै सप्तम भाव वृश्चिक हुन्छ त्यहाँ शुक्र हुँदा अन्यत्रको जस्तो लग्नेस्थराशि शुभ हुँदैन । लग्नेश भएर बसेको भए पनि यहाँ शुक्रले षष्टेशका नै विशेष फल दिने भएकाले मूल श्लोकमा उक्त कुरा भनिएको हो ।

अर्को योग वृषस्थ बुध पनि सप्तममा हुँदा अष्टमेश भएकोले अन्य स्थानमा भनिएको बुध लग्नेश अष्टमेश हुनु राम्रो र सातौंमा शुभ ग्रह भएकाले शुभ फल दिन्छ भनेकोमा यहाँ भने वृषस्थ मात्र बुधको सप्तममा हुनुको विशेष दोष हो ।

तेस्रो योग जहाँ पनि नीचगत बृहस्पति पत्नीसुखमा हानि गर्छ भने सप्तमानै नीचगत बृहस्पति अवश्य नै स्त्रीनाशक नै हुन्छ ।

चौथो योग कन्या लग्नको सप्तम भावमा रहेको शनि (सातौं भावमा मीनस्थ शनि) पञ्चमेश र षष्टेश भएर बसेको हुँदा र मङ्गल तृतीयेश र अष्टमेश हुने हुनाले स्त्रीनाशक विशेष हुने भए, किनभने मीनस्थ शनि अन्य भावमा शुभ फलदाता हो तथापि यहाँ भने शुभफल दिन नसक्नेहुन्छ ।

उक्तयोगमा अरू पनि महत्त्वपूर्ण कुरा बुझ्नुपर्छ । सप्तमेश अष्टममा छ अष्टमेश सप्तममा छ भने विवाहसुख हुँदैन भनेकोमा स्त्रीका कुण्डलीमा पनि यही क्रमले जान्नुपर्छ । यदि उक्त योगमा विवाह सजिलै भै गए पनि वैवाहिक जीवन भने बहुत कष्टकर भएरै जान्छ, यसमा सन्देह छैन ।

कलत्रच्युतकारक योग

अस्ते वास्तपतावसद्ग्रहयुते दृष्टेऽप्यसन्मध्यगे
नीचारातिगृहेऽर्ककान्त्यभिहिते ब्रूयात् कलत्रच्युतिम् ।
कामे वा सुतभाग्ययोर्विकलदारोऽसौ सपापेभृगौ
शुक्रे वा कुजमन्दवर्गसहिते दृष्टे परस्त्रीरतः ॥३॥

अर्थः-

१) सप्तम भाव या सप्तमेश यदि पापग्रहदेखि युत वा दृष्ट भएमा अथवा सप्तमेश नीचगत या शत्रु गत वा अस्तगत छ वा असत ग्रहका माझ छ भने पनि पत्नीसँग अलग्गिनु पर्ने हुन्छ। यहाँ अलग्गिनु भन्नाले मृत्यु वा टाढा हुनु अथवा भिन्नै भएर अंश लिएर बस्नु इत्यादि हुन सक्छ।

२) पाँच सात र नवौं भावमा पापयुक्त शुक्र छ भनेपत्नी रोगी हुन्छे।

३) यदि शुक्र मङ्गल या शनिका वर्गमा भएर शुक्रलाई शनि वा मङ्गलले पूर्णदृष्टि भयो भने पनि जातक परस्त्रीगामी हुन्छ।

पत्नीसंख्या र शुभाशुभ विचार

स्त्रीसंख्या मदगैर्ग्रहैर्मृतिमसत्खेटैश्च सद्भिः स्थितिं
द्यूनेशे सबले शुभे सति वधू साध्वी सुपुत्रान्विताः ।
पापेऽपि स्वगृहं गतः शुभकरः पत्न्याश्चकामस्थिताः
हित्वा षड्व्ययरन्ध्रपान्मदनगाः सौम्यास्तु सौख्यावहाः ॥४॥

अर्थः-

१) जन्मकुण्डलीमा सप्तमस्थ ग्रहको संख्या बराबर पत्नीहरू हुन्छन्। यदि सातौं स्थानमा पापग्रह भए जति पाप संख्या छन्। त्यति नै स्त्रीहरू नाशिन्छन् वा दुष्टा कलहकारिणी हुन्छन्। जति शुभ ग्रह संख्या छन् त्यत्ति स्त्रीहरू सज्जन सत्स्वभावका जीवित हुन्छन्।

२) सप्तमेश बलवान छ र शुभग्रह छ भने पत्नी साध्वी पुत्रवती हुन्छे।

३) सप्तमगत पापग्रह भए पनि स्वगृही वा स्वोच्चको भए शुभ सन्तानकारक हुन्छ।

४) सप्तममा ६।८।१२ भावेशलाई छोडेर अन्य शुभग्रह भए मात्र शुभ ग्रहको फल (साध्वी पुत्रवती) दिन्छन्।

मतान्तरबाट पत्नीसंख्या विचार (विवाह योग)

यावन्तो वा विहङ्गा मदनसदनगाश्चेन्जधीशदृष्टाः
तावन्तो नुर्विवाहास्त्वथ सुमतिमता ज्ञेयमित्थं कुटुम्बे ।
कार्यो होरागमज्ञै रधिक बलवतां खेचराणां हि योगात्
आदेश्यं तत्र वीर्यं रविविधुकुभुवामङ्गदिक्शैलसंख्यम् ।।५।।

अर्थः- जति ग्रह सातौं घरमा छन् अथवा सातौं स्थानबाट देख्दछन् (अथवा पूर्णदृष्टि दिने ग्रह जति छन्) त्यत्ति नै संख्यामा पुरुषको विवाह हुन्छ। उत्तम बुद्धिवाला दैवज्ञले यस्तै प्रकारले कुटुम्ब स्थानादिबाट विचार गरेर बाबुको भाइहरूको पनि विवाह संख्या जानोस्। शास्त्रवेत्ताले अधिक बलवान ग्रहका योगबाट पनि उक्त कुरा विचार गरोस्। बलाबल विचार गर्दा सूर्यको छ बल चन्द्रमाको दशबल मङ्गलको सातबल अरू ग्रहहरूको पनि छ बल जान्नुपर्छ।

केन्द्रस्था वा त्रिकोणे यदि खलु गृहिणी कारकाख्या नभोगाः
कामार्थेशौ निजर्क्षे परिणयनविधिः स्यात्तदानी नुरेकः।
जायाधीशः कुटुम्बाधिपतिरपि युतश्चेत्त्रिके गर्हिताख्यै-
र्यावद्भिः शुक्रयुक्तो नियतमिह भवेत् तावतीनां विरामः ।।६।।

अर्थः- स्त्रीकारकग्रह (शुक्रचन्द्र गुरु बुध) केन्द्रमा भए अथवा त्रिकोणमा भए अथवा सातौंको र दोस्रो घरको स्वामीग्रह आफ्नै घरमा भए एउटै विवाह जान्नुपर्छ। सप्तमभावको स्वामी अथवा दोस्रो घरको स्वामी ग्रह शुक्र ग्रहसँग युक्त छ भने जति क्रूरग्रहले देख्छन् र त्रिकस्थान (६।८।१२) मा भए त्यत्ति नै स्त्रीको मृत्युकारक हुन्छ।

बहुविवाह तथा पत्नी सन्तान हीन योग

भौमार्क्यस्ते भृगुजशशिनो दारहीनोऽसुतो वा
क्लीबेऽस्ते वा भवति भवगौ द्वौ ग्रहौ स्त्रीद्वयं स्यात् ।
द्वन्द्वर्क्षांशे मदपतिसितौ तस्य जायाद्वयं स्यात्
ताभ्यां युक्तैर्गगननिलयैर्दारसंख्या वदन्तु ।।७।।

अर्थः-

१) चन्द्रमा र शुक्रदेखि सप्तम स्थानमा यदि मङ्गल र शनि बसेका भए जातक स्त्री सन्तानरहित हुन्छ । अथवा दोष परिहार भएर विवाह भैगए पनि सन्तान हुन गाह्रो हुन्छ । सन्तान भैगए पनि सन्तानबाट सुख छैन ।

२) लग्नदेखि सप्तम भावमा नपुंसक ग्रह बसेको भए पनि पत्नीहीन हुन्छ । एकादश भावमा दुई ग्रह बसेका भए दुई विवाह हुन्छ ।

३) सप्तमेश र शुक्र द्विस्वभाव राशिमा भए पनि अथवा द्विस्वभाव नवांशमा भए पनि दुईविवाह हुन्छ ।

४) सप्तमेश र शुक्र जती ग्रहसँग युक्त छन् त्यत्ति नै विवाह हुन्छ भन्ने जान्नुपर्छ । यदि अधिक विवाह नगरेको भए पनि त्यति नै स्त्रीसँग सम्बन्ध भने अवश्यै हुन्छ ।

पतिपत्नीकै भाग्यहीन वा भाग्यवान योग

भार्यानाशस्त्वशुभसहितौ वीक्षितौ वार्थकामौ
तत्र प्राहुस्त्वशुभफलदां क्रूरदृष्टिं विशेषात्
एवं पत्न्या अपि सति मदे चाष्टमे वास्ति दोषः
सौम्यैर्दृष्टे सति शुभयुते दम्पती भाग्यवन्तौ ॥८॥

अर्थः-

१) यदि अर्थ काम (द्वितीय भाव र सप्तम भाव) मा पाप ग्रह युक्त वा दृष्ट अर्थात् दोस्रो र सप्तम भावामा पापग्रह बसेको होस् अथवा ती दुबै स्थान पापग्रहद्वारा पूर्ण देखिएको होस् त पत्नी नाश गर्दछ । पापास्थितिको अपेक्षा दृष्ट विशेष अशुभ मानिन्छ ।

२) त्यस्तै स्त्रीको कुण्डलीमा पनि सातौं र आठौं भावमा पापग्रह बसेको होस् या ती दुबै ठाउँलाई पापग्रहले देख्छन् भने पति नाश गर्ने हुन्छ । यहाँ पनि दृष्टिविशेष बलियो हुन्छ ।

३) उक्त सप्तम र द्वितीय भाव शुभ युत वा दृष्ट छन् भने दम्पती नै भाग्यशाली हुन्छन् ।

पुनर्भूः योग

चन्द्रे समन्दे मदगे पुनर्भूः
पतिर्भवेद् वाप्यसुतो विदारः ।
नीचारिभस्थैरशुभैर्मदे स्त्री
पुंसोर्मृति स्यान्निधने धने वा ॥९॥

अर्थः- स्त्रीको कुण्डलीमा शनि र चन्द्रमा सातौं स्थानमा योग भए उक्त स्त्रीको पुनः विवाह गर्नुपर्ने हुन्छ । यदि पुरुषको कुण्डलीमा उक्त योग भए स्त्रीपुत्ररहित हुन्छ । यदि २।७।८ मा नीचगत अथवा शत्रुगत ग्रह पापी भएर बसेको भए स्त्रीको भए पति नाश गर्छ पुरुषको भए पत्नी नाश गर्छ ।

विवाहको दिशा र समय ज्ञान

कामस्थकामाधिपभार्गवानां
ऋक्षं दिशं संशति तस्य पत्न्याः ।
शुक्रोऽस्तपो वा तनुनाथ भांशक-
त्रिकोणमायाति तदा विवाहः ॥१०॥

अर्थः- सप्तम भावमा बसेको ग्रह, सप्तमेश र शुक्र जुन राशिमा छ त्यही राशिको दिशामा जातकको विवाह हुन्छ ।

सप्तमेश अथवा शुक्र जब लग्नेश पनि नवांश राशिबाट त्रिकोणमा गोचर गऱ्यो भने त्यही समय महिना वा पक्षमा विवाह हुन्छ भनेर जान्नुपर्छ ।

स्त्रीको मृत्यु योग

कलत्रनाथे रिपुनीचसंस्थे
मूढेऽथवा पापनिरीक्षिते वा ।
कलत्रभे पापयुतेऽथ दृष्टे
कलत्रहानिं प्रवदन्ति सन्तः ॥११॥

अर्थः-यदि सप्तमेश नीचगत छ शत्रुक्षत्री छ अस्त छ अथवा पापदृष्ट छ र सप्तम भाव पनि पापयोग र पापदृष्टि छ भने अवश्य पत्नी

नाश गराउँछ । समय निर्धारण भने यिनै खराब ग्रहको गोचर वा यिनैका दशा अन्तर दशामा जान्नुपर्छ ।

स्त्रीको सौम्यत्व असौम्यत्वको विचार

उदयहिमकरौ द्वौ युग्मगौ सौम्यदृष्टौ
सुतनयपतिभूषासम्पदुत्कृष्टशीला ।
अशुभसहितदृष्टौ चोजगौ पुंस्वभावा
कुटिलमतिरवश्या भर्तुरुग्रा दरिद्रा ।।१२।।

अर्थः-लग्न र चन्द्रमा समराशिमा भए स्त्री सौम्य, स्वभाववाली, सुन्दर गुणवती, सौभाग्यवती, सुन्दर, सुशील, पति-पुत्रवती, प्रशंसनीय, चरित्रवती हुन्छे।

यदि लग्न र चन्द्र दुइवटै विषम राशिवाला हुन् त स्त्री स्वभाव हीन, कुटिल, बुद्धिवाली, कलहप्रिया, उग्र स्वभाववाली, पुरुषोचित चेष्टा गर्ने, लज्जाहीन, दरिद्र, कुप्रसंगका कुरा र अश्लील दृष्टान्त दिएर बोल्ने वाली हुन्छे।

लग्न र चन्द्रमामध्ये एक सम र एक विषम भएमा सामान्य स्वभावकी हुन्छे ।

ग्रन्थान्तरबाट स्त्रीका सौम्यत्व विचार

युग्मर्क्षे लग्नेन्द्वोः प्रकृतिस्थारुपशीलगुणयुक्ता ।
ओजे पुरूषाकारा दुःशीला दुःखिता चैव ।।१३।।

अर्थः- पूर्ववत् जान्नू ।

ब्रह्मवादिनी योग-

सितकुजजीवेन्दुसुतैर्बलिभिर्लग्ने समश्च यदि राशिः ।
स्त्री ब्रह्मवादिनी स्यात् भूरिशास्त्रकुशला प्रतीता सा ।।१४।।

अर्थः-जुन स्त्रीको जन्मसमयमा बलवान शुक्र, मङ्गल, गुरु र बुध लग्नमा हुन तथा सम राशि (२,४,६,८,१०,१२) को लग्न छ भने त्यस्ती स्त्री अवश्य ब्रह्मवादिनी (ब्रह्मज्ञानी मोक्षशास्त्रमा कुशला र संसारमा ख्याति प्राप्त हुन्छे ।

स्त्रीको भाग्यशाली योग

चन्द्रास्तोदयभाग्यपाः सह शुभैः सुस्थानगा भास्वराः
पूज्या बन्धुषु पुण्यकर्म कुशला सौन्दर्यभाग्यान्विता ।
भर्तुः प्रीतिकरी सुपुत्रसहिता कल्याणशीला सती
तावत् भाति सुमङ्गली च सुतनुर्यावच्छुभाद्येऽष्टमे ॥

अर्थः- स्त्रीको कुण्डलीमा लग्नेश, चन्द्रमा, सप्तमेश र भाग्येश यदि राम्रो ठाउँमा बलवान शुभ ग्रह युक्त दृष्ट भएर रहेका भए त्यस्ती स्त्री प्रतिष्ठित परिवारमा जन्मेर मानीय पुण्यशालीनी सत्कार्यमा कुशल सुन्दर भाग्यवती (सज्जन कुलीन घरमा विवाहिता हुन्छे) पतिकी अत्यन्त प्रिया पुत्रवती कल्याणी हुन्छे । उक्त फल अष्टम भावमा शुभयोग शुभ दृष्टिको अधिकता र पापयोग दृष्टिको अभावमा मात्र सर्वाधिक फल सिद्ध हुन्छ ।

॥ इति स्त्रीभावाध्याय ॥

अथ सन्तान भावाध्याय

सन्तान प्राप्तियोग

सुस्था विलग्नशशिनोः सुतभेशजीवा
सुस्थाननाथशुभदृष्टियुते सुतर्क्षे ।
लग्नात्मपौ यदि युतौ च मिथः सुदृष्टौ
क्षेत्रे परस्परगतौ यदि पुत्रसिद्धिः ॥१॥

अर्थः-लग्न अथवा चन्द्रमादेखि पञ्चमेश र बृहस्पति यदि केन्द्रमा छन् भने र अस्तगत नीचगत र शत्रुक्षेत्री नभए शुभग्रहको युत दृष्ट भएको पञ्चम भाव भए अथवा लग्न र पञ्चमेशसँगै भए अथवा लग्नेश वा लग्न पञ्चमेश वा पञ्चमभावसँग कुनै सम्बन्ध छ भने पुत्रसन्तान उचित समयमा प्राप्त हुन्छ ।

सन्तानबाधक योग

लग्नामरेड्यशशिनां सुतभेषु पापै-
र्युक्तेक्षितेष्वथ शुभैरयुतेक्षितेषु ।
पापोभयेषु सुतभेषु सुतेश्वरेषु
दुःस्थानगेषु न भवन्ति सुताः कथञ्चित् ॥२॥

अर्थः- लग्न, चन्द्र र गुरुदेखि पञ्चम भावमा पाप योग पापदृष्टि छ भने र शुभयोग दृष्टि न भए यदि पञ्चमस्थान पापग्रहका बीचमा भए या त लग्नेश, चन्द्र गुरु र पञ्चमेश त्रिक ६।८।१२ मा छन् भने यात पञ्चमेश आदि सबै नीचगत छन् भने पनि सन्तान बाधक योग बन्छ । यस्तो भएमा सन्तान हुन गाह्रो पर्छ ।

पञ्चमस्थ पापग्रहपुत्रकारक

पापेस्वर्क्षगते सुते तनयभाक् तस्मिन् सपापे पुनः
पुत्राःस्युर्बहुलाः शुभस्वभवने सोग्रे सुते पुत्रहा ।
संज्ञा चाल्पसुतार्क्षभित्यलिवृषस्त्रीसिंहभानां विदुः
तद्राशौ सुत भावगेऽल्पसुतवान् कालान्तरेऽसाविति ॥३॥

अर्थः- पञ्चमस्थानमा स्वक्षत्री पापग्रह छ भने पुत्र सन्तान दिन्छ। स्वक्षेत्र भन्नाले आफ्नो उच्च मित्रक्षेत्र मूलत्रिकोण पनि भएमा भन्ने लिनुपर्छ। यदि पञ्चममा शुभग्रह स्वक्षत्री छ भने र पापयुक्त छ भने ता पुत्र सन्तान नाशक योग बन्छ। त्यस्तै २।६।५।८ वाला राशि पञ्चममा भए अल्पसन्तान गराउँछ। यी राशिलाई अल्पसुतार्क्ष भन्दछन्। पञ्चमभावमा उक्त राशि भए कम सन्तान अथवा धेरै समय पछि सन्तान हुने हुन्छ।

यदि उक्त ग्रह र स्थानेश उचित अथवा जो जसरी भनेको छ त्यस्तो नभएर विलक्षण देखिन गएमा मिश्रित फल सन्तान हुन्छन् तर धेरै समय पछि वा कुनै औपचारिक विधि पुगेपछि सन्तान प्राप्त हुन्छन्।

प्रयत्न पश्चात् सन्तान प्राप्तियोग

सूर्ये चाल्पसुतर्क्षगे निधनगे मन्दे कुजे लग्नगे
लग्नाष्टव्ययगैः शनीड्यरुधिरैश्चाल्पात्मजर्क्षे सुते ।
चन्द्रे लाभगते गुरूस्थितसुतस्थाने सपापे भवेत्
लग्नेऽनेक खगान्विते तनयभाक् कालान्तरे यत्नतः ॥४॥

अर्थः-

१) पञ्चममा सूर्यग्रह २।६।८।५ राशिमा छ र शनि अष्टममा अनि मङ्गल लग्नमा छ भने सन्तान हुन सजिलै हुँदैन।

२) १।८।१२ भावमा क्रमशः शनि, गुरु र मङ्गल छन् र पञ्चममा अल्पसुत राशि छ भने पनि उपाय विना सन्तान हुँदैनन्।

३) चन्द्रमा एघारौं भावमा छ बृहस्पतिबाट पाँचौं स्थानमा पापग्रह छ र लग्नमा अनेक (दुई वा दुई भन्दा धेरै) ग्रह भए इत्यादि योगमा धेरै समयपछि वा कुनै उपायपछि मात्र सन्तान हुन्छन्।

पुनः विवाहपछि सन्तान कारक योग

सूर्ये नान्ययुते सुतार्क्षसहिते चन्द्रस्य गेहे स्थिते
भौमे वा भृगुजेऽपि वा सति सुताप्राप्तिद्वितीयास्त्रियम्।
मन्दे वा बहुपुत्रवाञ्छशिनि वा सौम्योऽपि वाल्पात्मजे
देवेड्ये बहुदारिका शशिगृहे तद्वत्सुताधिष्ठिते ॥५॥

अर्थः-

१) एक्लो सूर्यपाँचौंमा कर्कट राशिमा होस् अथवा मङ्गल वा शुक्र पञ्चमस्थित कर्कटमा होस् त दोस्रो विवाह पछि सन्तान हुन्छन् ।

२) पञ्चमकर्कटमा एक्लै शनि होस् दोस्रो विवाह पछि धेरै सन्तान हुन्छन् त्यसमा पनि धेरै छोराहरू हुन्छन् ।

३) कर्कट गतपञ्चम बुध होस् वा चन्द्रमा होस् त थोरै छोरा हुन्छन् ।

४) पञ्च गत कर्कट राशिमा गुरु भए धेरै छोरी हुन्छन् ।

वाक सन्तान विचार

वाक्स्थानेशो गुरूर्वा व्ययरिपुविलयस्थानगो वाग्विहीन-
श्चैवं पित्रादिकानां पतय इह युता मूकता स्याच्चताभ्याम् ।
वागीशात् पञ्चमेशस्त्रिक भवनगतः पुत्रधर्माङ्गनाथा
रन्ध्रेद्वेष्यान्तिमस्था यदि जनुषि नृणामात्मजानामभावः ॥६॥

अर्थः-

१) यदि पञ्चमेश अथवा बृहस्पति १२।६।८ भावमा छन भने जन्मनेवाला लाटो अथवा वाक्विकारवाला हुन्छ । यस्तै प्रकारले यदि पिता आदि स्थानको स्वामी पनि त्यस्तै त्रिक स्थानमा भए पिता आदिको वाक्विकार (बोल्न नजान्ने, अड्कि अड्कि बोल्ने आदि) हुन्छ । जस्तै दशम घरको पति त्रिकमा भए पिता पञ्चमको पुत्र चौथोको आमा तेस्रोको भाई आठौंको दिबिहिनी या बुहारी आदि एकादशको फुपु छैटौंको मामा वा शत्रु दोस्रोको सशुरा इत्यादि जान्नुपर्छ ।

२) बृहस्पतिको राशिबाट ६।८।१२ घरमा पञ्चमेश छ र पाँचौं र लग्नको पति जन्मलग्नको राशिबाट ६।८।१२ मा छ भने मनुष्य पुत्र (सन्तान) अभाव हुन्छ भनिदिनुपर्छ ।

पुत्र वा कन्याको संख्यात्मक विचार

किञ्चित्कालं विलम्बः शुभखगसहितास्तेऽथ कर्के सुतर्क्षे
चन्द्रे कन्याप्रजावान् प्रमितिततनयवांश्चाथ देवेन्द्रपूज्यात् ।
क्रूरश्चेत् पञ्चमस्थः सुतभवनगतः स्यात्तदाऽपत्यहीन-
छायापुत्रःस्वगेहाद्यदि भवति सुते सूनुरेकस्तदानीम् ॥७॥

अर्थः-यदि सप्तमस्थान शुभग्रहयुक्त होस् र कर्कट राशिगत पञ्चमस्थानमा चन्द्रमा भए केही समय बिलम्ब भई सन्तान हुन्छन् । यदि कर्कटस्थ पञ्चम चन्द्र मात्र भए कन्या सन्तान हुन्छन् छोरा भने प्रमित (एउटासम्म) हुन्छ । त्यस्तै बृहस्पतिदेखि पाँचै घरमा क्रूरग्रह छ अथवा त्यो क्रूर ग्रह लग्नदेखि पाँचौं भावमा छ भने पनि सन्तान हुँदैनन् । त्यस्तै आफ्नै राशिबाट पाँचौं घरमा बसेको शनि अर्थात् वृष मिथुनको शनि छ भने पनि एउटा मात्र पुत्र हुन्छ । यसमा पनि क्रूरग्रहको योग दृष्टि भने पूर्ववत् सम्झनु पर्छ ।

कुम्भे चेत्पञ्चपुत्रस्तदनु च मकरे नन्दनेऽप्यत्मजाः स्यु-
स्तिस्रो भौमः सुतानां त्रितयमथ सुतादायको रौहिणेयः ।
इत्थं काव्यः शशाङ्को जनुषि च गुरूणा केवलेनैव पुत्राः
पञ्चस्युः केतुराह्वोः क्रियवृषभवने कर्कटे नोविलम्बः ॥८॥

अर्थः-जन्मलग्नदेखि कुम्भको शनि पाँचौंमा भए पाँच पुत्र हुन्छन् त्यस्तै मकरको शनि भए तीन छोरा र मकरगत पञ्चममा मङ्गल भए पनि तीन छोरा हुन्छन् । पाँचौ घरमा बुध भए कन्या सन्तान हुन्छन् पाँचौं घरमा चन्द्रमा र शुक्र पनि कन्या सन्तान दिन्छन् । यदि पाँचौं घरमा एक्लो बृहस्पति भए पाँच पुत्र हुन्छन् (तर धनु वा मीन राशिगत पाँचौं बृहस्पति पुत्रका विषयमा चिन्तादायक हुन्छ बरु बृहस्पतिको पाँचौंमा पूर्ण दृष्टि असाध्यै शुभ हुन्छ ।) जो यदि पाँचौं घरमा मेष वृष र कर्कटको राहु वा केतु छन् भने सन्तान हुन बिलम्ब हुँदैन यो भन्दा विपरीत भए विलम्ब हुन्छ ।

पुत्रहीनता या पुत्रकष्ट योग

पापे लग्ने लग्नपे पुत्रसंस्थे
धीशेवीर्ये वेश्मनीन्दावपुत्रः ।
ओजर्क्षेंऽशे पुत्रगे सूर्यदृष्टे
चन्द्रे पुत्रक्लेशभाक् स्यादसूनुः ॥९॥

अर्थः-

१) लग्नमा पापग्रह, पञ्चममा लग्नेश, पञ्चमेश तृतीयमा, चतुर्थमा चन्द्रमा यस्तो योग परेमा अपुत्र नै हुन्छ । (पापलग्ने इत्यत्र पाप पदेन पापराशिरपि वोद्धव्यः) ।

२) विषम राशि विषम नवांशमा चन्द्रमा होस् पञ्चममा सूर्यले देखेको छ भने पुत्रको कारण सधैं कष्ट हुन्छ ।

अरूको सन्तान आफ्नो बनाउने (गोदलिने) योग

मान्दं सुतर्क्षं यदि वाथ बौधं
मान्द्यार्कपुत्रान्वितवीक्षितं चेत् ।
दत्तात्मजः स्यादुदयास्तनाथ
सम्बन्धहीनो विबलः सुतेशः॥१०॥

अर्थः- पञ्चम भावमा ३।६।१०।११ राशिहरूमा मान्दि (गुलिक) अथवा शनि होस् वा पञ्चम भावमा पूर्णदृष्टि रहेको होस् । लग्नेश र सप्तमेश कुनै सम्बन्ध नबनेको होस् र पञ्चमेश निर्बल छ भने यी दुबै योगमा सन्तान गोद लिएर मात्रै बाबु आमा बन्न पाइन्छ अन्यथा हुँदैन ।

बहुपुत्र योग

सुतनाथजीवकुजभास्करेषु वै
पुरूषांशकेषु च गतेषु कुत्रचित् ।
मुनयो वदन्ति बहुपुत्रतां तदा
सुतनाथवीर्यवशतः सुपुत्रताम् ॥११॥

अर्थः-पञ्चमेश, गुरु, मङ्गल र सूर्य पुरुष राशि र पुरुष नवांशमा भएर कुनै पनि भावमा हुन ऋषिमुनिहरूको मतमा यसप्रकारको व्यक्तिका धेरै सन्तान छोराछोरी सबै असल गुणशीलवाला हुन्छन्। पञ्चमेश वक्री, शुभ दृष्टयुक्त होउन त सबै विषयमा योग्यपुत्र होलान्। पञ्चमेश निर्बल भएता छोरा अयोग्य होलान्।

नालवेष्टित जन्म योग

छागे सिंहे वृषे लग्ने वृश्चिके नालवेष्टितः ।
नृलग्ने दक्षिणे पार्श्वे स्त्रीलग्ने वामपार्श्वगः ॥१२॥

अर्थः-मेष, सिंह, वृष र वृश्चिक लग्नमा जन्म लिएको बच्चाको अङ्ग नाल वेष्टित अर्थात् नाल बेरिएर जन्मन्छ। यदि नृलग्न विषम लग्नमा जन्मेको भए दाहिने अङ्गमा र स्त्रीलग्न(समलग्न) मा भए बायाँपट्टि जान्नुपर्छ।

शीर्षादि भागबाट जन्मनिर्णय

शीर्षोदये विलग्ने मूर्द्धा प्रसवोऽन्यथोदये चरणैः ।
उभयदये च हस्तौ शुभदृष्ट्या शोभनोऽन्यथा कष्टम् ॥१३॥

अर्थः-शीर्षोदय लग्नमा बालकको जन्म भएको भए शिरबाट जन्म भनेर जान्नुपर्छ। पृष्टोदय लग्न भए गोडाबाट जन्म हुन्छ र उभयोदय लग्न भए हातबाट पहिलो प्रसव हुन्छ भनेर जान्नुपर्छ। यदि जन्मलग्नलाई शुभयोग शुभ दृष्टि छ भने सुखैले जन्म लिएको र पापयोग दृष्ट लग्न भए कष्टपूर्वक जन्मिएको भन्नुपर्छ।

कुन राशि कहिले बलवान हुन्छ र शीर्षोदयादि संज्ञा

मेषाद्याश्चत्वारः सधन्विमकराः क्षपाबला ज्ञेयाः ।
पृष्टोदया विमिथुनाः शिरसान्ये ह्युभयतो मीनः ॥१४॥

अर्थः- मेष, वृष, मिथुन, कर्कट, धनु र मकर यी राशिहरू रात्रिबली हुन्छन् र उक्त गन्तिमा 'विमिथुना' मिथुन बाहेक अर्थात् मेष, वृष, कर्कट,

धनु र मकर यी राशिहर पृष्टोदय (पछाडिबाट उदाउने) नामक हुन अरू राशिहरू मीन बाहेक शीर्षोदय (शिर पट्टिबाट उदाउने) भनेर जान्नुपर्छ र मीन भने उभयोदय (बीचबाट) उदाउने भनेर जान्नुपर्छ ।

प्रसव शुभाशुभज्ञान

शुभग्रहैः स्वबन्धुगैः सुखेन संयुतः सवः ।
सुताङ्कसप्तमस्थितैरसत्ग्रहैस्तु कष्टतः ॥१५॥

अर्थः– यदि बालकको जन्म समयमा शुभ ग्रह द्वितीय र चतुर्थ स्थानमा छन् भने सुखैले बालक जन्मेको छ, त्यस्तै पाचौं, सातौं र नवौं स्थानमा पाप ग्रहयुत वा दृष्ट छ भने कष्टले बालकको जन्म भएको छ भन्नुपर्छ पर्दछ ।

पुत्र वा पुत्रीनिर्णय

पुंराश्यंशेऽधिश्वरे पुंग्रहेन्द्रैर्युक्ते ॑दृष्टे पुंग्रहे पुंप्रसूतिः ।
स्त्रीराश्यांशे स्त्रीग्रहैर्युक्तदृष्टे स्त्रीणां जन्म स्यात् सुतर्क्षे सुतेशे ॥१६॥

अर्थः-पञ्चमेश पञ्चम भाव यदि विषम राशि, विषम नवांशमा छ भने र पञ्चमभावमा पुरुष ग्रहहरू (सूर्य, मङ्गल, गुरु) को योग भए या त्यस्तै दृष्टि भएपुत्र जन्मन्छ (प्रथम पुत्र नै हुन्छ) अन्यथा (पञ्चमेश पञ्चम भाव समराशि समांशमा भएर स्त्रीकारक (चन्द्र शुक्र बुधले युत दृष्टि भए छोरीको जन्म वा छोरी पहिलो सन्तान हुन्छ ।

॥ इति सन्तान भावाध्याय ॥

अथ प्रश्नाध्याय

ज्योतिष विषयमा जिज्ञासा

'जन्तुनां नरजन्म दुर्लभः' प्राणीहरूमा नरजन्म (मनुष्यजन्म) अत्यन्त महत्त्वपूर्ण जन्म हो। यस्तो महत्त्वपूर्ण जन्म भएर पनि यसको कुनै प्रकारको सुरक्षित भने छैन यो जति खेर पनि विनष्ट हुनसक्दछ। **'दुर्लभो मानुषो देहो तत्रापि क्षणभङ्गुरः'** यस्तो अवस्थामा मानिसलाई आफ्नो विषयमा जानकारि लिन मन लाग्नु स्वाभाविकै हो।

कुनै पनि मान्छे आफ्ना विषयमा जान्न चाहन्छ म कस्तो स्वभावको छु ? मलाई के गर्न प्रारब्धले पठायो ? कुन प्रयासल मेरो कल्याण हुन्छ ? कस्तो व्यवसायले मेरो भविष्य राम्रो बन्छ ? इत्यादि प्रश्नहरू हरेक क्षण मानव मस्तिष्कमा आवेश भइरहन्छ। यस्ता प्रकारका जिज्ञासा शान्त गर्न मानिसहरू ज्योतिषशास्त्री वा ज्योतिषीको सहायता लिने गर्छन्। उक्त अवस्थामा मानवका जीवनभरिको प्रश्नको समाधान भूत भविष्यत् वर्तमान अवस्थाको बोध गरेर हुन्छ। त्यस्तो बोध ज्योतिषीय माध्यममा काल गणना माध्यमबाट हुन्छ। काल गणना गर्न पृच्छकको जन्मसमय अत्यन्त सही हुनुपर्छ। साथै कुन देशविशेष कुन ठाँमा उसको जन्म भएको हो त्यही आधारबाट उसका साह्राका साह्रा जिज्ञासा र समस्या समाधान हुन्छन्।

उक्त प्रकारका समस्या समाधान गर्न जन्म समय सत्य हुनुपर्छ। अब समस्या के छ भने आफू जन्मिएको आफूलाई बोध हुँदैन। समय सम्झिदिने मानिसको अभाव हुँदा त्यसको समस्या समाधान गर्ने मार्ग नै बन्द हुने भयो।

आफ्नो जन्मसमय थाहै नभएकाहरूलाई पनि त आफ्नो भूतभविष्यत् बारे जान्न मन छ। तर यस्तो अवस्थामा ज्योतिर्विदहरू नष्ट जातकाध्यायको सहारा लिन गएको पाइन्छ। त्यहाँ पनि समस्या के छ भने केही समय पूर्व गरिएको प्रश्न वा निर्माण गरिएको नष्ट जातक गणना केही

समयपछि पुनः त्यो पनि हरायो वा नष्ट भएमा भिन्नै खालको पत्रिका बन्ने र भिन्नै बनेको पत्रिकाले भिन्नै अर्थ दिने हुँदा भविष्यकथनमा विविधता वा सन्देह हुने भयो । यस्तो अवस्थामा समाधानका मार्ग ऋषिमुनिहरूले धेरै विचारपूर्वक खोजी गरे । उक्त मार्ग प्रश्नकालीन मार्ग हो । पृच्छकले उसको भाग्य अनुसार सोध्नेर त्यही भाग्यानुसार आशनारूढ हुने भएकोले जन्मसमय ज्ञान भएका जन्मपत्री आदि साधन नभएकाहरूलाई पनि सजिलै ज्योतिषशास्त्रको मार्ग बताउन विभिन्न आचार्यहरूले प्रश्न कालकै सहारा लिएका छन् । त्यही बाटो अवलम्बन गरी विभिन्न मतमतान्तरहरू खोजि गरी यहाँ पनि सकेसम्म सबैको समस्या समाधान गर्न सकियोस् भन्ने हेतुले योप्रश्नाध्याय सुरु गरेको हो ।

प्रश्नाध्याय पनि लगभग जन्मकुण्डली जस्तै तर यसका फल विवेचना भने केही फरक छन् कतै गोचर तुल्य कतै समयप्रवाह कतै सगुन अपसगुन इत्यादि र कतै पृच्छक द्वारा प्रसारित सङ्केतहरू विचारणीय छन्, तर जुनसुकै विचार गरे पनि प्रश्नसङ्केतहरू भने राम्रोसँग ख्याल गर्नुपर्छ । अन्यथा ज्योतिर्विद हास्यको पात्र पनि हुन सक्छ ।

विभिन्न केन्द्रबाट स्थानादि विचार

च्युतिर्विलग्नाद्धिबुकाच्चवृद्धि-
र्मध्यात् प्रवासोऽस्तमयान्निवृत्तिः ।
वाच्यं ग्रहैः प्रश्नविलग्नकालाद्
गृहं प्रविष्टो हिबुके प्रवासी ॥१॥

अर्थः-लग्नबाट स्थान परिभ्रस अथवा स्थान छोड्ने नछोड्ने विषयमा विचार गर्ने । 'हिबुकाच्च' हिवुक चतुर्थ स्थानबाट वृद्धि विशेष विचार गर्ने । त्यस्तै 'अस्तमयात्' सप्तम भावबाट निवृत्ति सम्बन्धी कुराको विचार गर्ने र दशम भाव(मध्यात्)बाट प्रवाससम्बन्धी कुरा विचार गर्ने । यदि उक्त केन्द्रादि स्थान शुभ युक्त दृष्ट भए उक्त वृद्ध्यादि शुभ फल बढ्ने र अशुभ भए घट्ने हुन्छ ।

तन्वादि द्वादश भावका शुभाशुभ ज्ञान

यो यो भावः स्वामीदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा स्यात् तस्य तस्यस्ति वृद्धिः ।
पापैरेवं तस्य भावस्य हानिर्निर्देष्टव्या पृच्छतो जन्मतो वा ॥२॥

अर्थः-जो जो भाव आफ्नो स्वामी ग्रहले युक्त र दृश्य छन् अथवा शुभग्रहहरू पनि जुन जुन राशिमा युतदृष्ट छन् भने पनि ती ती भावहरू राम्रो शुभफल दिन्छन् । जुन जुन भावमा पापग्रह शत्रु भावग्रहहरूको युत दृष्टि हुन्छ ती ती भावहरूको फल हानिकारक हन्छ । यस्तै प्रकारले शुभाशुभ फल निर्देशन गर्नु, प्रश्नलग्नबाट भए पनि जन्मलग्नबाट भए पनि ।

प्रश्नसमयमा लाभादि शुभाशुभ ज्ञान

सौम्ये विलग्ने यदि वाऽस्य वर्गे
शीर्षोदये सिद्धमुपैति कार्यम् ।
अतोविपर्यस्तमसिद्धिहेतुः
कृच्छ्रेण संसिद्धकरं विमिश्रम् ॥३॥

अर्थः- लग्नमा शुभग्रह (बु.गु.शु. पूर्णचन्द्र) हुन् या शुभ ग्रहको षड् वर्गमा लग्न होस् अथवा शीर्षोदय राशिलग्नमा भएको होस् त कार्यको तुरुन्त सिद्ध हुनेछ । यसको विपरीत अर्थात् लग्नमा पापग्रह होस् या पापग्रहका षड्वर्गमा लग्न परेको होस् अथवा पृष्टोदय राशिलग्नमा रहेको होस् त कार्यको सिद्धि हुँदैन । यदि शुभग्रह र पाप ग्रह दुबै मिसमास भएका छन् भने दुबैथरीबाट सम्बन्ध भएको लग्न छ भने कष्टपूर्वक कार्यसिद्ध हुन्छ ।

विशेष-षड्वर्ग भन्नाले होरा द्रेष्काण सप्तमांश, नवांश, द्वादशांश, त्रिंशांश इति यस प्रकार जान्नुपर्छ ।

नष्ट(हराएको) वस्तुको लाभालाभ विचार

होरास्थितः पूर्णतनुः शशाङ्को
जीवेन दृष्टो यदि वा सितेन ।
क्षिप्रं प्रणष्टस्य करोति लब्धिं
लाभोपयातो बलवाञ्छुभश्च ॥४॥

अर्थः-यदि प्रश्नकालीन लग्नमा होरा (लग्न) स्थित पूर्णचन्द्र (अर्धाधिक) छ र बृहस्पति अथवा शुक्रद्वारा पूर्णदृष्ट छ भने नाशिएको (हराएको) वस्तु तुरुन्तै पाइन्छ। त्यस्तै बलवान शुभ ग्रहहरू लाभस्थानमा भए पनि हराएको वस्तु चाँडै पाइन्छ।

श्लोकान्तरबाट पनि नष्ट वस्तुज्ञान

पूर्णः शशी लग्नगतः शुभो वा
शीर्षोदय सौम्यनिरीक्षितश्च।
नष्टस्य लाभं कुरुते तदाऽऽशु
लाभोपयातो बलवाञ्छुभश्च ॥५॥

अर्थः-पूर्ववत् छ यहाँ विशेष अर्थ लग्न यदि शीर्षोदय राशिको भए पनि शुभ ग्रहद्वारा पूर्ण दृष्ट छ भने हराएको वस्तु तुरुन्तै पाइन्छ। सर्वप्रथम प्रश्न पृच्छकद्वारा सोधिएपछि ज्योतषीले विचार गर्नुपर्छ प्रश्न कुन कोटी वा विधानको हो। प्रश्नका अवस्थाअनुसारका फलदिने हुन्छन् तसर्थ प्रश्नका प्रकार र नाम यहाँ दिइन्छ।

आठ प्रकारका प्रश्नका नाम

संयुक्तः, असंयुक्तः, अभिहितः, अनभिहितः,
अभिघातकः, आलिंगितः, अभिधुमितः,दग्ध इति ॥६॥

अर्थः- प्रश्नकर्ताद्वारा गरिने प्रश्न ८ प्रकारका हुन्छन्।

१) संयुक्त	२) असंयुक्त
३) अभिहित	४) अनभिहित
५) अभिधातक	६) आलिंगितः
७) अभिधूमित	८) दग्ध

इत्यादि प्रश्नका नाम रहेका छन्।

१) यदि पृच्छकले प्रश्न सोद्धा प्रश्नकालीनसमयमा आफ्नो शरीरमा कतै नछोइ वा साधारण प्राकृतिक अवस्थामा सोध्यो भने त्यस्तो प्रश्न संयुक्त हुन्छ। यो प्रश्नको फल शुभ हुन्छ। उत्तर दिंदा के सम्बन्धी

प्रश्न गरेको छ बिरामी सम्बन्धी भए निको हुन्छ हराएको विषय भए भेटिन्छ, इत्यादि जान्नुपर्छ ।

२) यदि प्रष्टा असंयुक्त प्रश्न (प्रश्न गर्ने समय बाटोमा भए हिंड्दै सोधेको भए ओछ्यानमा बसेर सोधेको भए अथवा बाहनमाथि बसेर सोधेको भए भावरहित उपेक्षापूर्वक सोधेको भए खालि हात सोधेको भए उक्त प्रश्न असंयुक्त हुन्छ। धेरै ढीला भएर फल मिल्छ अथवा कष्ट साध्य हुन्छ भन्ने ।

३) यदि प्रश्न समयमा पृच्छक वायाँ हातले वायाँपट्टि कुनै अङ्ग छुँदै सोध्यो भने अभिहित प्रश्न हुन्छ यो हानिकारक हुन्छ ।

४) यदि प्रश्नसमयमा प्रश्नकर्ता अरूका शरीर छुँदै भन्छ भने अनभिहित प्रश्न हुन्छ यो पनि कार्यको हानि ने गर्ने हुन्छ ।

५) यदि प्रश्नकर्ता प्रश्नसमयमा आफ्नै शिर वा मस्तक कमर हृदय हात गोडा मल्दै सोधेको भए अभिधातक प्रश्न हुन्छ यसको फल शोक सन्ताप बढाउनेहुन्छ ।

६) यदि प्रश्नसमयमा प्रश्न गर्ने मान्छे दाहिने हातले आफ्नै दाहिने अङ्गलाई स्पर्श गर्दै प्रश्न सोध्यो भने आलिङ्गित नामक प्रश्न हुन्छ यस्तो प्रश्नले सोध्नेलाई सुख दिन्छ ।

७) यदि प्रश्नकालमा सोध्नेवाला व्यक्ति दाहिने हातले होस् वा वायाँ हातले होस् सब अङ्गको अर्थात् कहिले शिर छुने दायाँ हातले कहिले वायाँ हातले अरू कुनै अङ्ग छुने पुनः त्यस्तै प्रकारले कुनै निश्चित अङ्ग वा हात आदिमा नभएका अवस्थाको प्रश्न भयो भने अतिधूमित नामको प्रश्न हुन्छ। यस्तो प्रश्नको फल किञ्चित राम्रो सफल हुनसक्ने किञ्चित नराम्रो जस्तै मित्रका आगमन र शत्रुको वैरत्वको खबर जस्ता राम्रा नराम्रा एकै चोटि वा पृथक पृथक पनि हुनसक्छ। यसप्रकारको धूमित प्रश्न देखिएमा धेरै विचार पुऱ्याएर मात्र ज्योतिषीले बोल्नुपर्छ अन्यथा आफ्ना पनि कुरा कुनै मिल्ने र कुनै विल्कुलै नमिल्ने खालका उत्तरहरू आउने सम्भावना छ। पृच्छकले ज्योतिषीको गुण ग्रहण गर्न सक्दैन। दोष भने जति सूक्ष्म भए पनि पृच्छकका आँखामा पर्वततुल्य हुनेगर्छ। दोषको तुरुन्त फैलावट हुन्छ यो दोषको स्वभाव हो ।

८) यदि प्रश्न गर्नेवाला व्यक्ति प्रश्न गर्ने समयमा रूँदै दुःख वा भयले व्याकुल हुँदै होचो स्थानमा होस् ज्यादै नजिक भए पनि होचो ठाउँमा

दुर्गन्धित ठाउँमा बसेर एकदम विलौना गर्दै अधीरले भक्ति पनि गर्दै यस्तो प्रकारले सोधेमा प्रश्न दग्ध नामक हुन्छ। यस्तो दग्ध प्रश्नको फल शोक, सन्ताप, दुःख, पीडा र अत्यन्त हानि गराउने हुन्छ।

कार्यसिध्यासिद्ध अङ्क विधा

नदृश्यतेऽष्टद्वितीये च कार्यं
रसैः समुद्रैर्निजकार्यसिद्धि।
सप्तात्रयोऽङ्का कथयन्ति धैर्यं
नवैकपञ्चत्वरितं वदन्ति ॥७॥

अर्थः- मेरो काम कहिले सिद्ध हुन्छ अथवा काम बन्दैन इत्यादि प्रश्न आएमा निम्न तालिका र उक्त श्लोकका आधारमा उत्तर दिन सकिन्छ।

१	२	३
४	५	६
७	८	९

उक्त तालिकामा पृच्छकले आफ्नो प्रश्न राखिसकेपछि अक्षता वा दायाँ हातको कान्छी औंलाले कोठाको एउटा अङ्कलाई छुने उसले छोएको अङ्कको फल यस प्रकार रहेको छ भनी बताइदिने जस्तै आठ र दुई अङ्कलाई छोएको भए कार्य हुन सक्दैन श्रम निरर्थक हुन्छ भनिदिने। छ र चार छोएको भए कार्यसिद्धि हुन्छ राम्रो छ । सात वा तीन अङ्कमा परेको भए अलि समय लाग्छ, ढीला भए पनि काम बन्छ भनिदिने त्यस्तै ९।१।५ अङ्कमा हात परेको भए छिट्टै काम बन्छ भनिदिनु। यसप्रकार पृच्छकको सकुन समेत पनि विचार गरेर भन्नुपर्छ।

पृच्छकले सोद्धा उच्चारित अक्षरबाट उत्तर दिने विधि

प्रश्न गर्ने मान्छे सधैं सजिलो जान्ने खालको हुँदैन । त्यस्तो अवस्थामा यदि प्रश्न गर्ने समय पात्र इत्यादि हेरेर प्रश्न गराउने र त्यसमा आफूले विचार गर्ने। प्रत्येक प्रश्नका नियम अनुसार ध्रुवाङ्क बनाउने त्यसमा क्षेपकाङ्क जोड्ने अनि मात्र प्रश्नको प्रकृति अनुसार उत्तर दिने।

दिनको प्रथम भागमा बालक प्रश्न सोध्ने वाला छ भने उसको

मुखबाट उसलाई राम्रो लाग्ने अथवा उसले जानेको फूलको नाम भन्न लगाउने त्यस्तै गरी दिनको द्वितीय भागमा प्रश्न गरेको भए वा प्रश्नकर्ता स्त्री भए उसका मुखबाट फलको नाम उच्चारण गर्न लगाउने ।

त्यस्तै दिनको तृतीय भागमा प्रश्न गरेको भए वृद्धका मुखबाट वृक्षको नाम भन्न लगाउने । प्रश्न समय रात्रिमा छ भने जुनसुकै सोध्नेवाला (बालक, स्त्री, वृद्ध) भए पनि फूलैको नाम उच्चारण गराउने त्यो उच्चारित वाक्यबाट तल तालिकाको सहायतामा ध्रुवाङ्क बनाउने ।

प्रकारान्तरमा पनि यो विधि रहेको छ । जस्तै प्रश्नकर्ता जो सुकै होस् प्रातः कालमा फूलको नाम लिन लगाउनु, मध्याह्नमा फलको, अपराह्नमा देवताको र सायंकाल अर्थात् रात्रिमा भए नदनदीको नाम लिएर त्यो उच्चारित नामाक्षरहरूको ध्रुवाङ्क लेख्नुपर्छ । त्यो विधि तल तालिका सहित दिइने छ ।

अथवा पृच्छकको पुरा प्रश्न वाक्यकै ध्रुवाङ्क ग्रहण गरे सबभन्दा राम्रो हो तर पृच्छकले जो सोद्धछ त्यो वाक्य अस्पष्ट हुनसक्छ नबुझीकन राखिन्छ त्यसकारण यो पुष्पादि नामग्रहण गर्नुपरेको हो ।

अथवा जातिविशेष पनि लिन सकिन्छ जस्तै प्रश्नकर्ता ब्राह्मण छ भने उसका मुखबाट फूलको नाम लिन लगाउनु तथा क्षत्री छ भने पृच्छकका मुखबाट कुनै नदीको नाम लिन लगाउनु त्यसैगरी वैश्य भए उसलाई कुनै देवताको नाम लिन लगाउनु त्यस्तै प्रश्नकर्ता शूद्र भए उसका मुखबाट कुनै फलको उच्चारण गराउने यो रीतिद्वारा जति प्रश्न पनि सप्रमाण उत्तर दिन सकिन्छ ।

अक्षरहरुको (स्वर व्यञ्जनको) ध्रुवाङ्क सतालिका

प्रश्नकालमा प्रश्नकर्ताको मुखबाट जो प्रश्न शाब्दिकरूपमा प्रकट हुन्छ त्यसमा वर्णहरूको ख्याल गर्नुपर्छ । अनि कुन कुन वर्णहरू त्यहाँ उच्चारित भए र तीनको ध्रुवाङ्क कति हो ? त्यो क्रमैसँग लेख्दै जाने । वर्णहरूका ध्रुवाङ्क निम्न क्रमले जान्नुपर्छ । जस्तै यी अक्षरहरू (स्वर र व्यञ्जनहरूको) का ध्रुवाङ्क भए यिनीहरूको प्रयोग तालिकाबाट पनि गर्न सकिन्छ ।

मात्रा वर्ण ध्रुवाङ्क चक्र

मात्रावर्ण	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
ध्रुवाङ्क	१२	२१	११	१८	१५	२२	१८	३२	२५	१९	२५
मात्रावर्ण	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
ध्रुवाङ्क	१३	११	२१	३०	१०	१५	२१	२३	२६	२६	१०
मात्रावर्ण	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ
ध्रुवाङ्क	१३	२२	३५	४५	१४	१८	१७	१३	३५	२८	१८
मात्रावर्ण	ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह
ध्रुवाङ्क	२६	२७	८६	१६	१३	१३	३५	२६	३५	३५	१२

उक्त अक्षर ध्रुवाङ्कमा प्रश्न कर्ताले प्रश्न गर्दा प्रश्नाक्षर लिन पनि सकिन्छ। प्रश्न बोध नभए आफूलाई सजिलो हुने गरी फूल आदिका नाम भन्न लगाएर वा समय र जाति विशेष नाम भन्न लगाएर अक्षरग्रहण गर्ने र उक्त अक्षरका मात्रा र वर्णका ध्रुवाङ्क लेख्ने लेखिएका ध्रुवाङ्क संख्या जोड्ने त्यसलाई ध्रुवाङ्क पिण्ड भन्ने गर्छन्।

अब ध्रुवाङ्क पिण्डमा प्रश्न अनुसारको क्षेपकाङ्क हुन्छ। त्यो क्षेपकाङ्क ध्रुवाङ्कमा जोड्ने तल विधि बताइन्छ। त्यस अनुसार फल बताउने।

लाभालाभ प्रश्न विचार

यदि पृच्छकको समस्याअनुसार प्रश्न राखेको छ, उसले अत्यन्त विश्वास मानेर श्रद्धापूर्वक सोधेको छ भने मात्र यो पद्धति अर्थात् ज्योतिषसम्बन्धी मार्ग देखाई दिनु, अन्यथा आफू केवल उपहासको मात्र पात्र बन्नुहुँदैन। आफ्नो विद्याको गरिमालाई कायम राख्नु अहङ्कार वा मानी हुन्छ की भन्ने डर लिनु पनि हुँदैन। त्यसकारण विद्याको महिमा मात्र विचार गरी उक्त लाभालाभ विषयमा विचार गर्नुपर्दछ।

लाभ तथा हानि के हुन्छ भनी गरिएको प्रश्नमा क्षेपकाङ्क ४२ लिनुपर्छ। उक्त प्रश्नकर्ताले गरेको प्रश्नका वर्णहरूलाई लिने हो वा पुष्पादिबाट वर्णलिने हो त्यो निश्चय भने ज्योतिषीले आफ्नो सजिलो अनुसार प्रश्नसम्बन्धी वर्णहरूको तालिकामा दिएका अङ्क अनुसार ध्रुवाङ्क लिई ध्रुवाङ्क पिण्ड बनाउने त्यसमा प्रश्न सम्बन्धी क्षेपकाङ्क जोडिदिने

योगाङ्कलाई भाजकाङ्कले भाग गरिदिने शेषादिबाट फल बताइदिने ।

जस्तै लाभालाभ सम्बन्धी प्रश्नमा क्षेपकाङ्क (४२) हुन्छ र भाजकाङ्क (३) हुन्छ । शेष १,२ र ० हुन्छ । १ शेष बच्यो भने पूर्णलाभ २ शेष बच्यो भने अल्पलाभ र ० शेष बच्यो भने हानि हुन्छ भनिदिनु पर्छ । यसप्रकार फूलादि नाम भन्न लगाएर पनि हुन्छ ।

जस्तै कुनै प्रश्नकर्ताले फूलादिमा पात्र र समयानुसार फलको नाम ग्रहण गर (भन) भनियो त्यसो भनेकोमा उस कर्ताले आँप भन्यो । यहाँ आ, प छ बीचमा आएको अनुस्वारलाई वर्णको वा मात्राकोरूपमा प्रश्नशास्त्रमा लिएको छैन । तसर्थ आ को ध्रुवाङ्क २१ र प को ध्रुवाङ्क २८ अ को ध्रुवाङ्क १२ भएमा उक्त ध्रुवाङ्क योग गर्दा २१+२८+१२=६१ भयो । यो प्रश्न लाभालाभको थियो । यसकारण क्षेपकाङ्क ४२ जोड्नुपर्‍यो । अब जम्मा ६१+४२=१०३ भयो । अब यसलाई ३ ले भाग गर्दा १०३÷३=३४ भाग भयो शेष १ बच्यो । अब भनिदिनुपर्‍यो कि आँटेका काम राम्रो छ राम्रो फाइदा हुन्छ छिट्टै गरिहाल इत्यादि ।

जय पराजय प्रश्न विचार

जयपराजय सम्बन्धी प्रश्नमा पनि सबै क्रम पूर्ववतै हो । यहाँ क्षेपकाङ्क भने ३४ हुन्छ र भाजकाङ्क ३ हुन्छ । यसमा पनि १ शेष रहे आफ्नो विजय हुन्छ २ रहे सन्धि (मिलाप) र ० रहे पराजय नै हुन्छ ।

गमनागमन प्रश्न विचार

गमानागमन प्रश्नमा क्षेपकाङ्क ३३ हुन्छ भाजकाङ्क ३ हुन्छ । १ शेष रहे छिट्टै यात्रा हुन्छ परदेशी सम्बन्धी प्रश्न भए पनि छिट्टै आइपुग्छ । २ शेष रहे तुरुन्तै यात्रा हुन सक्दैन परदेशी भए केही समय लगाएर आउँछ । ० शेष रहे आपत्ति आइपर्ने इत्यादि भनिदिनुपर्छ ।

जीवित छ वा मृत भयो भन्ने प्रश्नविचार

यदि कुनै व्यक्तिका विषयमा अज्ञात भएकोले फलानो व्यक्ति जीवित छ कि छैन (मर्‍यो) भन्ने प्रश्न शोधेमा पूर्ववत् ध्रुवाङ्कमा क्षपकाङ्क

४० जोड्नु र ३ ले भाग गर्नु । यहाँ पनि १ शेष शुभ जीवित छ भन्नुपर्छ २ शेष रहे कष्टका साथ बाँचेको छ भन्ने ० शेषमा जीवित छैन भनी दिने । यसप्रकार विचार गर्नुपर्छ ।

यो वर्ष तीर्थ यात्रा हुन्छ कि हुँदैन प्रश्न विचार

यदि पृच्छकले भने यो वर्ष तीर्थयात्रा हुन्छ कि हुँदैन ? यस्तोप्रश्न भएमा ध्रुवाङ्कमा ३९ क्षेपकाङ्क जोड्नु ३ ले भाग गर्दा १ शेष आए शुभ शीघ्र तीर्थयात्रा हुन्छ । २ आएमा मध्यम हुन्छ ० आएमा राम्रो छैन ।

मेघवर्षाप्रश्न

वर्षा हुन्छ कि हुँदैन भन्ने प्रश्नमा ३२ क्षेपकाङ्क जोड्ने ३ ले भाग गर्ने १ शेषमा छिट्टै वर्षा हुन्छ २ मा केही समय लाग्छ तर राम्रो वर्षा हुँदैन ० शेषमा वर्षा हुँदैन ।

गर्भ छ कि छैन

यो प्रश्नमा कुनै विवाहित सधवा यौवनवती स्त्रीको गर्भ छ कि छैन भन्ने प्रश्नमा ध्रुवाङ्कमा २६ क्षेपकाङ्क जोड्ने ३ ले भाग गर्ने १ शेषमा गर्भ छ २ मा सन्देह छ उपाय पश्चात गर्भ रहन्छ ० शेषमा गर्भ छैन र हुन पनि मुश्किल छ ।

नष्ट (हराएको) वस्तुज्ञान

यदि प्रश्नकर्ताले मेरो माल हरायो कता छ ? कुन दिशामा होला इत्यादि प्रश्न गर्दा ज्योतिषीले त्यतिखेर विचार गरिहाल्नुपर्छ कि सो ध्नेवाला कता फर्केको छ तलमाथि कता हेरेको छ त्यो विचार गर्ने ऊ(सोध्नेमान्छे) जुन दिशातर्फ फर्केर सोध्छ त्यही दिशापट्टि उसको हराएको वस्तु छ भन्ने । त्यसैगरी उसको सिधा दृष्टि भए सामान्य सिधै ठाउँमा छ र तलतिर दृष्टि भए भैमा गडेको छ इत्यादि विचार गरेर भन्ने ।

उक्त विधिबाट सन्तोष यदि ज्योतिषीलाई नभए ध्रुवाङ्क पिण्डमा १२ ले भाग गर्ने यहाँ क्षपकाङ्क जोड्नु पर्दैन । शेषलाई मेषादि राशिमान्ने १ शेष मेष २ वृष १२ मीन एवं रीतले जान्नुपर्छ । १ शेषमा गाउँमा छ भन्ने २

शेषमा खेतमा छ भन्ने ३ शेषमा चारबाटो परेका ठाउँमा अर्थात् चौबाटो परेको घर इत्यादि जान्नुपर्छ । ४ शेष भए गडेको छ भन्नुपर्छ । ५ शेष अन्तरिक्षमा माथिल्लो तलामा वा झुन्ड्याइएको छ भन्ने ६ शेष रहेमा शून्य स्थानमा छ ७ शेषमा बाटोमा वा बाटाका छेउमा छ ८ शेष भए आफ्नै घरमा होला ९मा दुइचार जनाको समूहमा छ । १० शेष भए दुई तीन तलामाथि छ ११ भए पानीका छेउछाउ वा गाग्री घैंटा पानीका छेउछाउमा होला । १२ भए नदी किनार तिर होला भनिदिनुपर्छ ।

कार्यविधि प्रश्न

यदि कोही ज्योतिषीका नजिक आएर सोध्यो कि मेरो फलानो काम कहिले सम्म होला, बन्ला इत्यादि प्रश्न गरेमा ज्योतिषीले सावधानपूर्वक माथि बताइएअनुसार प्रश्नको कोटी छुट्याउने, कुन कोटीको प्रश्न हो (संयुक्त, असंयुक्त, अभिहित, अनभिहित, अभिधातिक, आलिङ्गित, अभिधूमित, दग्ध) यदि आलिंगिन प्रश्न हो भने एकै दिनमा कार्यसिद्धि हुन्छ भनिदिनु, अभिधूमित भए १ महिनासम्ममा कार्यसिद्धि हुन्छ । दग्धमा १ वर्षसम्म कठिनले बन्न सक्ला भन्नुपर्छ ।

अथवा कसैले मेरा काम हुन्छ वा हुँदैन भए कहिलेसम्म हुन्छ ? इत्यादि प्रश्न गरेमा तिथि, वार, नक्षत्रको संख्यामा एकत्र गरी (जस्तै रवि वार १, शुक्ल प्रतिपदा १, अश्विनी १, यसै गरी सोमवार भए २ इत्यादि क्रमले) ३ ले गुणन गर्नु र ६ जोड्नु पुनः ९ ले भाग गर्नु शेष अङ्कको निम्नानुसार फल बताउनु ।

यदि १ शेष रह्यो भने पहिलो पक्ष अथवा १५ दिनभित्रमा काम बन्छ भनिदिनु २ शेषमा एक महिना ३ शेषमा एक ऋतु वर्तमान ऋतुभर (सामान्यतः ऋतु २ महिनाको हुन्छ यहाँ ऋतु भन्नाले ऋतु सुरु भएको १५ दिन बाँकी भए त्यो १५ दिन र आउँदो ऋतुभरिमा काम हुन्छ भन्नुपर्छ ।) ४ शेष भएमा अयन (अयन ६ महिनाको हुन्छ । अयन उत्तर दिनुपर्दा ६ महिना भने हुन्छ) ५ शेष रहे दिनभरमा काम हुन्छ भएन भने पाँच दिन भित्रमा हुन्छ ६ शेष रहेमा आजको रातभरमा वा ६ रात्रिभित्र काम बन्छ । सात शेष रहेमा ७ प्रहरमा (दुई दिन पनि पूरा नभइकन कार्यसिद्धि हुन्छ) ८ शेष रहेमा घडी (अथवा ८ घडी, तीन घण्टामा कार्य बन्छ) ९ शेष भए पलाभरमा वा ९पला भित्र अर्थात् ४ मिनेट मा कार्यसिद्धि हुन्छ । यसप्रकार कार्यवधिको विषयामा विचार गर्नु ।

जयपराजय प्रश्न

सोध्नेवाला मनुष्य यदि आफ्नो दाहिने भागतिर रहेर सोध्यो भने जय हुन्छ । वायाँपट्टि भएर सोध्यो भने पराजय हुन्छ र आम्ने साम्ने भएर सोध्यो भने सन्धि पछाडिबाट सोध्यो भने मरण हुन्छ भन्नुपर्छ ।

छोराछोरी सम्बन्धी फल

गर्भवती स्त्रीबाट (अमुकनाम्नी स्त्रीबाट) छोरा जन्मन्छ कि छोरी भन्ने प्रश्नमा प्रश्न समयको तिथि वार नक्षत्र र योग जम्मा गरी त्यसैमा प्रश्न कर्ताको नामाक्षर सहित ७ ले भागदिने लब्धि छोडेर शेष अङ्कमा १,३,५,० शेष आएमा छोरा हुन्छ र २,४,६ आएमा छोरी हुन्छे भनिदिनु ।

अथवा उक्त कुरा चित्त नबुझेमा प्रश्नकर्ताको प्रश्नअनुसार ध्रुवाङ्क पिण्ड साधना गर्ने यहाँ क्षेपकाङ्क चाहिंदैन सिधै ३ ले भाग गर्ने १ शेषमा छोरा २ शेषमा कन्या ० शेष रहे गर्भै छैन यदि भैगएको भए पनि सफलता पाउन सक्दैन भनिदिनु । अथवा पृच्छकले कता छोएर प्रश्न गरीरहेको छ त्यो पनि विचार गर्ने जस्तै ओठ कण्ठघाँटी निधार कान शिर नङ छोएर सोधेको छ भने पुत्रजन्म हुन्छ भनिदिने । यदि नाभी हात पाउ स्तन यी अङ्ग छोएर प्रश्न गरेको भए कन्या जन्म हुन्छ भनिदिनु सिद्ध हुन्छ ।

विवाहसम्बन्धी प्रश्न

यदि पृच्छकद्वारा मेरो वा अमुक नामवाला व्यक्तिको विवाह कहिले हुन्छ सजिलो असजिलो कसरी हुन्छ ? यस्तो प्रश्न आएछँदा प्रश्न पिण्डाङ्कलाई आठले भाग गर्ने यदि १ शेष रह्यो भने अनायास कुनै प्रकारको प्रतिक्रिया नगरीकन सजिलै विवाह हुन्छ भन्ने दुई शेष रह्यो भने केही प्रयत्नपूर्वक सहयोगीहरू लगी विवाह हुन्छ ३ शेष रह्यो भने विवाह हुन सक्दैन वाधक तत्त्व छ भन्ने ४ शेष भए कन्या नाश योग छ ५ शेषमा पितृक्लेश छ (विचार नपुऱ्याए मृत्यु हुनसक्छ) अथवा पिताजीको परदेश जानुपर्ने छ ६ शेषमा राज्य वा राजनेताको प्रकोप हुन्छ, ७ शेषमा कन्या वर दुबैतर्फ खराब वा दुर्मरण योग छ ८ शेष रह्यो भने सन्ताननाशक योग छ विवाह नगरे राम्रो हुन्छ भनिदिनु ।

परदेशी सम्बन्धी प्रश्न

तिथिघस्रौ तथा लग्नं नामाक्षर समन्वितम् ।
नक्षत्रकरणंश्चैव सप्तभिर्भागमाहरेत् ॥८॥
एकेन तत्र वासश्च द्वाभ्याञ्चागमनं भवेत् ।
तृतीये चार्द्धमार्गे तु चतुर्थे ग्रामसन्निधौ ॥९॥
पञ्चमे पुनरावृत्तिः षष्ठे व्याधिसमाकुलः ।
सप्तमे शून्य कार्यस्यात्प्रश्नश्च कथितो बुधैः॥१०॥

अर्थः-यदि कसैले साधे कि मेरो अमुक नामवाला व्यक्ति परदेशमा अलप भएका छन् । उनी घर फर्कन्छन् वा फर्कदैनन् कुशल छन् या छैनन् इत्यादि प्रश्न उठेमा प्रश्न सोधेको पक्ष, तिथि, वार, लग्न, सोध्नेको (विदेशीको) नामाक्षर (अ वर्गादि संख्या अनुसार गन्ने) प्रश्न कालिक नक्षत्र करणसमेत जोड्ने, ७ ले भाग गर्ने ।

त्यसमा १ शेष भएमा जहाँ गएको हो त्यहीं छ, राम्रोसँग बसेको छ, २ शेष आएमा प्रवासी आफ्नो ठाउँबाट हिँडिसक्यो, ३ शेषमा आधा बाटोमा आइसकेको छ, ४ शेष रहेमा आफ्नै गाउँनजिक आइपुग्यो, ५ शेष रह्यो भने बीचबाट फर्क्यो अथवा आउने बित्तिकै फर्कने भयो, ६ शेष भएमा रोगले पीडित छ र ७, ० शेष भएमा काममा व्यस्त छ, तत्काल आउने सम्भावना छैन भन्नुपर्छ ।

कार्य सिद्ध्यसिद्धि प्रश्न

प्रश्नाक्षरं द्विगुणितं वारसंख्यासमन्वितम् ।
पञ्चभिर्गुणितं तच्च पिण्डं मुनिभिराभजेत् ॥११॥
एकत्रिशेषे वैलम्ब्यात् कार्यसिद्धिर्द्विवेदयोः ।
तत्क्षणात् पञ्चभिः षड्भिः कार्यनाशस्तु सप्तभिः॥१२॥

अर्थः-यदि प्रश्नकर्ताले सोधे कि मेरो (हाम्रो) कार्य सिद्धि हुन्छ या हुँदैन इत्यादि प्रश्नमा पूर्ववत् फूल फलादि वा आफ्नो सजिलो अनुसार प्रश्न गर्न लाउने त्यो गरिएको प्रश्नको अक्षर संख्यालाई दुईले गुणन गर्ने ।

त्यो दुइ गुणित अङ्कमा वर्तमान बार संख्या जोड्ने वार जोडेर जति संख्या आउँछ त्यो अङ्कलाई ५ ले गुणन गर्ने पञ्चगुणित अङ्क संख्यालाई सातले भाग दिने यदि शेष १ अथवा ३ आयो भने बिलम्ब भएर अर्थात् ढिलो कार्यसिद्धि हुन्छ। २ अथवा ४ शेष आयो भने केही कम ढिलो कार्य सिद्धि हुन्छ। त्यस्तै ५ वा ६ शेष बचेमा तत्काल कार्य सिद्धि हुन्छ ७ शेष रहेमा काम नाश हुन्छ।

आयका नाम र प्रयोजन

'ज्योतिषां भूरिभेदम्' ज्योतिषशास्त्रहरू अनेक भेदयुक्त छन् । विभिन्न कार्यका लागि विभिन्न प्रयोग तर स्वाभाविकै हो तर पनि यहाँ एउटै कार्यका लागि पनि विचारणीय दृष्टिकोण विभिन्न भएकाले विभिन्न विशेषता जान्नुपर्छ ज्योतिर्विद्का लागि आवश्यक हो । ऋषिमहर्षिहरूको विभिन्न अनुभवलाई अनुसन्धान गर्दै नवीनतम अभ्यास गर्नु हाम्रो कर्तव्य हो । जसले गर्दा आफ्नो साधना परिपक्व र ज्योतिषशास्त्रको परमप्रयोजन सिद्धि हुन्छ ।

ज्योतिषशास्त्रको परमप्रयोजन भन्नाले ज्योति वेदाङ्ग हो अङ्गले जहिले नि अङ्गीको हित गर्छ अङ्गी वेद भएकाले वेदको परम प्रयोजन संसारजन्य दुःखको अत्यन्तिक निवृत्ति र रमानन्दको प्राप्ति हो। यही परम सुख दिन र आइपरेका दुःख हटाउने क्रममा ज्योतिषशास्त्रले पनि अनेक भूमिका खेलेको पाइन्छ।

अनेक दृष्टिकोणबाट जिज्ञासुहरूको संशय निराकरण गर्ने क्रममा ध्वजादि आठ आयका माध्यमबाट अझ सजिलोसँग ज्योतिर्विज्ञानको महत्त्व प्रशस्त गर्ने काम ऋषिहरूले गरेका छन्। त्यही प्रक्रियालाई यहाँ पनि सूक्ष्मतम सूचनामात्र गर्ने प्रयास यहाँ पनि गरिको हो। बृहत जानकारी भने केरलतत्त्व प्रश्नसंग्रह दाक्षिणत्य प्रश्नसंग्रह जस्ता बृहत् पुस्तककै आश्रय लिनु पर्छ।

ध्वजादि अष्ट आयको नाम

ध्वजो धूम्रश्च सिंहश्च श्वानो वृषखरौ गजः ।
ध्वांक्षश्चायाष्टकं ज्ञेयं शुभाशुभफलं क्रमात् ॥१३॥

अर्थः-ध्वजादि अष्ट आयका नाम यस प्रकार छन्-

१) ध्वज	२) धूम्र
३) सिंह	४) श्वान
५) वृष	६) खर
७) गज	८) ध्वांक्ष

यी आठ आयहरूले कार्यानुसार शुभाशुभ फल दिन्छ ।

प्रश्नादिमा आयको विचार गर्ने तरिका यसप्रकार छ । जस्तै प्रश्नकालमा प्रश्नको प्रथम वर्ण कुन छ त्यो वर्णअनुसार आय जान्नुपर्छ । वर्णहरूको आठ वर्गमा वर्गीकरण गरेको हुन्छ । जस्तै- अ, आ, इ, उ, ए, ऐ, ओ, औ, इत्यादि अ वर्ग त्यस्तै क, ख, ग, घ, ङ, यी क वर्ग भए । यस्तै क्रमले अ, क, च, ट, त, प, य, श, ल गरी आठ वर्ग छन् । यी आठ वर्गमा अ वर्गले ध्वजको आय भएको क वर्गले धूम्रको च वर्गले सिंहको ट वर्गले श्वानको त वर्गले वृषका प वर्गले खरको य वर्गले गजको र शल वर्गले ध्वाङ्क्षको प्रतिनिधित्व गरेको हुन्छ । प्रश्नमा आदिवर्ण कुन वर्गको उच्चारण भयो त्यो प्रश्न त्यही आयको भयो । त्यसको कार्यअनुसार शुभाशुभ फलदिन्छ जसको यहाँ स्पष्ट गरिन्छ ।

ध्वजादिका (वर्गादिका) स्वामी ग्रहहरू

ध्वजे सूर्यश्च विज्ञेयः धूम्रे भौमस्तथैव च ।
सिंहे शुक्रश्च विज्ञेयः श्वानः सौम्यस्तथैव च ॥१४॥
वृषे गुरूश्च विज्ञेयः खरे सूर्यसुतस्तथा ।
गजे ध्वाङ्क्षे चन्द्रराहू ह्येते च पतयः स्मृताः ॥१५॥

अर्थः-ध्वजका स्वामी अर्थात् अवर्गका स्वामी सूर्य धूम्र तथा क वर्गका स्वामी मङ्गल सिंह तथा चवर्गका स्वामी शुक्र त्यस्तै श्वान र ट

वर्गका स्वामी बुध वृष र त वर्गका स्वामी गुरु खर र पवर्गका स्वामी शनि हुन् । गज र य वर्गका स्वामी चन्द्रमा र ध्वाङ्क्ष र शलवर्गका स्वामी राहु हुन् भनेर जान्नुपर्छ ।

ध्वजादि चक्र

सं.	आय	वर्गाक्षर					स्वामी ग्रह
१	ध्वज	अ	इ	उ	ए	ओ	सूर्य
२	धूम्र	क	ख	ग	घ	ङ	मङ्गल
३	सिंह	च	छ	ज	झ	ञ	शुक्र
४	श्वान	ट	ठ	ड	ढ	ण	बुध
५	वृष	त	थ	द	ध	न	बृहस्पति
६	खर	प	फ	ब	भ	म	शनि
७	गज	य	र	ल	व	०	चन्द्र
८	ध्वाङ्क्ष	श	ष	स	ह	०	राहु

जब प्रश्नकर्ता प्रश्न गर्दछन् तब त्यो प्रश्नमा प्रथम अक्षर के छ जस्तै 'आज मेरो काम बन्छ या बन्दैन' भन्दा आ अक्षर पहिले उच्चारण भयो त्यसैले यो प्रश्नको ध्वज आय भयो । वर्ण स्वामी सूर्य भए त्यसैले यो प्रश्न शुभ भयो काम बन्छ । यस्तैप्रकारले मेरो काम आज बन्छ भन्दा मकार प्रथम उच्चारित वर्ण भयो म पवर्गीय वर्ण भएकोले यो वर्गको स्वामी ग्रह शनि भयो यो प्रश्न अशुभ भयो काम बन्न गाह्रो छ इत्यादि तरिकाबाट भन्न सकिन्छ ।

कार्याकार्य प्रश्न

ध्वजकुञ्जरसिंहेषु वृषे सिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ।
ध्वाङ्क्षे श्वाने खरे धूम्रे कार्यसिद्धिर्भवेन्न हि ॥१६॥

अर्थः-यदि पूर्वोक्त रीतिबाट विचार गर्दा ध्वज, कुञ्जर (गज) सिंह र वृष आय आएमा कार्यसिद्धि हुन्छ । त्यस्तै ध्वांक्ष, श्वान, खर र धूम्र आय आएमा कार्यको हानि हुन्छ सिद्धि हुँदैन ।

लाभालाभ प्रश्न

ध्वजे गजे वृषे सिंहे शीघ्रंलाभो भवेत् ध्रुवम् ।
ध्वांक्षे श्वाने खरे धूम्रे नाशश्च कलहप्रदः ॥१७॥

अर्थः-यदि कुनै काम गरेर लाभ छ कि छैन ? भन्ने प्रश्नमा ध्वज, सिंह, वृष, गज, आय भएमा लाभ हुन्छ भन्ने र अरू धूम्र, श्वान, खर, ध्वाङ्क्ष आय आएमा उक्त काम गरेर लाभ छैन हानि छ भन्ने ।

हराएको वस्तु लाभ हुन्छ या हुँदैन ?

ध्वजे गजे वृषे सिंहे नष्टलाभो भवेत् ध्रुवम् ।
ध्वाङ्क्षे श्वाने खरे धूम्रे हानिर्भवति निश्चितम् ॥१८॥

अर्थः- श्लोकैबाट स्पष्ट छ ।

चौरजाति ज्ञान

ध्वजे च ब्राह्मणश्चौरो धूम्रे क्षत्रिय एव च ।
सिंहे वैश्यश्च विज्ञेयः खरे च सेवकस्तथा ॥१९॥
गजे दासी च विज्ञेयो ध्वाङ्क्षे च नायकस्तथा ।
वृषे श्वाने तथा ज्ञेयश्चौरश्चान्त्यजसंभवः ॥२०॥

अर्थः-ध्वज आय भएमा हराएको वस्तु लिने वा चोर्ने मान्छे ब्राह्मण जातिको होला यसैगरी धूम्र भए क्षत्रि, सिंह भए व्यापारी, वैश्य जातिको होला यसैगरी खर आय रहेछ भने सेवक वा आफ्नै सन्तान होला । यदि गज आय छ भने दासी अथवा आफ्नो सेवा गर्ने स्त्री होली । ध्वाङ्क्ष आय भए आफ्नै मालिक वा आफूभन्दा उच्च दर्जाको मान्छे होला यदि वृष श्वान आय भए शूद्र जातिको चोर होला । ज्योतिषी यस्तै रीतले जाति बताउनु ।

नष्टवस्तुदिग्ज्ञान

ध्वजे पूर्वगतं वस्तु धूम्रे चाग्नेयदिग्गतम् ।
सिंहे च दक्षिणगतं श्वाने नैर्ऋतिरेव च ॥२१॥
पश्चिमे वृषभे ज्ञेयं वायव्यां च खरे तथा ।
उत्तरे कुञ्जरे द्रव्यमीशान्यां ध्वाङ्क्षके तथा ॥२२॥

अर्थः-यदि कसैले सोध्यो कि मेरो अमुक वस्तु हरायो कुन दिशामा छ ? भन्ने प्रश्नमा ध्वज आय भए पूर्वतिर छ भन्नुपर्छ धूम्र भए आग्नेयतर्फ सिंहमा भए दक्षिणतिर श्वानमा भए नैऋत्यतिर वृषमा पश्चिम खर भए वायव्यतर्फ गज भए उत्तरमा ध्वाङ्क्ष आय भए ईशान पट्टि हराएको वस्तु छ ।

वस्तु कुशल छ वा छैन भन्ने प्रश्न

ध्वजे सिंहे वृषे चैव कुञ्जरे कुशलं भवेत् ।
ध्वाङ्क्षे श्वाने खरे धूम्रे नास्तीति कुशलं वदेत् ॥२३॥

अर्थः-यदि प्रवासी कुशल छ कि छैन भन्ने प्रश्नमा ध्वज, सिंह, वृष तथा गज आय आएमा कुशल छ । यदि ध्वाङ्क्ष श्वान खर धूम्र आय भएमा कुशल छैन रोग या अन्य चिन्ताले पीडित छ भन्ने ।

प्रवासी आउँछ वा आउँदैन ?

ध्वजे धूम्रे समीपस्थो दूरस्थो गजसिंहयोः ।
वृषे खरे च मार्गस्थो ध्वांक्षे श्वाने पुनर्गतः ॥२४॥

अर्थः-यदि परदेशी आउँछ वा आउँदैन भन्ने प्रश्नमा ध्वज र धूम्र आय आउदा परदेशी नजिकै आइपुगेको छ अब छिट्टै घर आउँछ भन्ने गज र सिंह आय भए टाढा पुगेको छ । समय लाग्छ आउन त आउँछ भन्ने वृष र खर आय भएमा परदेशीबीच मार्गमा आएर बसेको छ बीचमा आएर अलपत्र छ भन्नुपर्छ ध्वाङ्क्ष र श्वान आय भएमा बीचैबाट फर्कन्छ या गाउँसम्म आएर फर्कन्छ भनिदिनु ।

प्रवासीको अथवा कार्यविधि प्रश्न

ध्वजे पक्षमिति प्रोक्तं धूम्रे सप्तदिनं तथा ।
एक विंशति सिंहे च श्वाने मासं तथैव च ॥२५॥
वृषे तु सार्धमासञ्च खरे मासद्वयं तथा ।
गजे मासत्रयं प्रोक्तं ध्वाङ्क्षे ह्ययन संमितम् ॥२६॥

अर्थः-यदि कसैले मेरो फलानो काम कहिलेसम्म सिद्ध हुन्छ भनेकोमा र प्रवासी कहिलेसम्म आउँछ भनेकोमा उक्त शुभ आय आएर कार्य बन्छ । प्रवासी आउँछ भन्ने आयका आधारमा अगाडि नै निश्चय भइसकेपछि पुनः प्रश्नानुसार आय विचार गर्ने ध्वज आय भएमा पक्षभरमा अर्थात् १५ दिनभित्र कार्यसिद्धि वा प्रवासीको आगमन हुन्छ । त्यस्तै धूम्र आय भएमा हप्ता दिनमा सिंहमा एक्काइस दिन त्यस्तै श्वानमा एक महिनासम्मा वृषमा पैंतालीस दिन खरमा दुई महिना गजमा तीन महिना र ध्वाङ्क्षमा ६ महिना सम्म भन्ने उत्तर दिनु । यदि प्रथम प्रश्न शुभाशुभ भएमा अर्थात् कार्य हुन्छ या हुँदैन विदेशी आउँछ वा आउँदैन भन्ने प्रश्नमा यदि कार्यनाश हुन्छ बन्दैन प्रवासी आउँदैन भन्ने उत्तर आइसकेकोमा पुनः कहिलेसम्म भन्ने अवधि सीमा भएको प्रश्न विचार गर्नुपर्दैन किनभने पूर्व उत्तरैले गतार्थ भइसकेको छ ।

छोराछोरी प्रश्न

ध्वजे वृषे गजेसिहे गुर्विण्याः पुत्रमादिशेत् ।
धूम्रे श्वाने खरे ध्वाङ्क्षे कन्याजन्म विनिर्दिशेत् ॥२७॥

अर्थः-यदि कसैले सोध्यो अमुक गर्भवती स्त्रीबाट के जन्मन्छ ? योप्रश्नमा ध्वज वृष गज सिंह शुभ आय भएमा पुत्र र अरू आय भएमा छोरी जन्म हुन्छ भन्नुपर्छ ।

त्यस्तै प्रकारले जयपराजयमा पनि ध्वज गज, सिंह, वृष, आय शुभ हुन्छ वादिले (स्थायीले अथवा प्रश्न गर्नेवालाले) जित्दछ । विपरीत भए प्रतिवादी वा विपक्षीले जित्छ भन्नुपर्छ ।

कार्यसिद्धि प्रश्न

ध्वजे गजे स्थिरं कार्यं त्वरितं वृषसिंहयोः ।
दीर्घकाले खरे श्वाने ध्वाङ्क्षे धूम्रे न सिध्यति ॥२८॥

अर्थः-ध्वज र गज आय भएमा कार्य स्थिर हुन्छ चाँडो सकिंदैन ढिलो भएर सिद्ध हुन्छ। वृष, सिंह आयमा तुरुन्त काम बन्छ, खर श्वान भएमा साह्रै विलम्व वा नोक्सान खपेर काम बन्छ, ध्वांक्ष धूम्रमा त कामै बन्दैन ।

बन्दिमोक्ष हुन्छ या हुँदैन

धूम्रे श्वाने खरे ध्वांक्षे बन्दी शीघ्रं प्रमुच्यते ।
ध्वजे गजे वृषे सिंहे बन्दिकष्टं समादिशेत् ॥२९॥

अर्थः-कुनै बन्दी जन कहिले मुक्त होला ? यस्तो प्रश्नमा अरू प्रश्नको विपरीत जस्तै धूम्र, श्वान, खर र ध्वांक्ष आय आएमा बन्दी चाँडै मुक्त हुन्छ। अन्य ध्वज गज वृष, सिंह आय भएमा बन्दी मुक्त हुन सक्दैन ।

कष्टमुक्तिका लागि कुन देवताको पूजा गर्ने ?

ध्वजे भैरव पूजास्याद् धूम्रे च जगदम्बिकाम् ।
सिंहे च पूजयेत् सूर्यं श्वाने वायुसुतं तथा ॥३०॥
वृषे शिवार्चनं चैव खरे वागीश्वरीं तथा ।
गणेशं गजराजाख्ये ध्वांक्षे च पितृपूजनम् ॥३१॥

अर्थः-यदि सबै प्रश्नमा अनिष्ट प्रद हुन गएमा प्रश्नकर्ता दुःखी भएर भन्छ कि अब के गर्ने होला ? यस्तो अपशोच शान्त गर्न र त्वरित कार्यसिद्धि गर्न पुनः ध्वजादि चिह्न स्पर्श गराउने वा पूर्ववत् प्रश्न गराएर ध्वजादि आयको अनुसार देव देवताको पूजा प्रार्थना गर्न लगाउने कार्य सिद्धि व्याधिबाट मुक्ति जस्ता विशेष कामहरू बन्छन् ।

जस्तै ध्वज आय आएमा भैरव पूजा गर्ने, महामृत्युञ्जय पाठजप गर्ने, धूम्र आय भएमा जगदम्बिका पूजा गर्ने । प्रमुख पीठ गुह्येश्वरी,

दक्षिणकालीजस्ता पीठमा पूजा प्रार्थना गर्ने । दुर्गा सप्तशती सम्पुटित पाठ नवार्ण मन्त्र, जप, होम गर्ने । त्यस्तै सिंह आय भएमा सूर्यको पूजा गायत्री जप होम गर्ने श्वान आय भएमा हनुमानजीको पूजा आराधना गर्ने तत्सम्बन्धी मन्त्र, जप, होम गर्ने । वृषमा शिवजीको जप होम एकादश आवृत्ति अथवा लघुरुद्री गर्ने । खरे वागीश्वरी सरस्वती बगलामुखी मन्त्र, जप, होम गर्ने । गज भएमा गणेशको पाठजप, पूजा इत्यादि गर्ने । त्यस्तै ध्वांक्ष आय आएमा प्रेतपिशाच अथवा पितृको श्राद्धादिकार्य विधिपूर्वक गर्ने ।

प्रश्नाक्षरबाट लग्न ज्ञान

अवर्गे सिंहलग्नञ्च कवर्गे मेषवृश्चिकौ ।
चवर्गे यूकवृषभौ टवर्गे युग्मकन्यके ॥३२॥
तवर्गे धनमीनौ च पवर्गे कुम्भनक्रकौ ।
यशवर्गे कर्कटश्च लग्नं शब्दाक्षरैर्वदेत् ॥३३॥

अर्थः-यदि प्रश्नको प्रथम अक्षर अवर्गीय छ भने सिंह लग्न जान्नुपर्छ । त्यस्तै क, वर्गीय भए मेष, वृश्चिक लग्न भन्नुपर्छ । च वर्गीय भएमा तुला र वृष जान्नुपर्छ । ट वर्गीय भए मिथुन कन्या जान्नुपर्छ । त वर्गीय तुला र वृष जान्नुपर्छ । ट वर्गीय भए मिथुन कन्या जान्नु त वर्गीय भए धनमीन जान्नुपर्छ । त्यस्तै प वर्गीय भए मकरकुम्भ जान्न । य, श वर्गीय भए कर्कट जान्नुपर्छ । यसप्रकार प्रश्नको आद्यवर्णानुसार लग्न ज्ञान गर्नु ।

लाभहानि सम्बन्धी प्रश्नको अन्यपद्धतिबाट गरिने ज्ञान

राशिं चरमुदयन्तं पश्येद्यदि पापसंज्ञितेष्वेव ।
एषां मध्यादेकतमः कार्यं गच्छति नाशं तथार्थ मनुष्याणाम् ॥३४॥

अर्थः-प्रश्नलग्नमा यदि चर राशि उदय भएको छ र लग्नलाई सूर्य, मङ्गल, शनिमध्ये कुनै एकले लग्नलाई पूर्ण दृष्टिद्वारा देखेको भए पृच्छकको साह्रा कार्यको नाश साथै धन सम्पत्ति पनि नाश हुने योग आएको छ भनिदिए हुन्छ ।

रोगीको शुभाशुभ ज्ञान

रोगार्ते जन्मर्क्षं पश्यत् पापो न तस्य शिवमस्ति ।
लग्नान्निधनगतः पृच्छाकाले शुभं हन्यात् ॥३५॥

अर्थः-यदि कुनै रोगी व्यक्तिका विषयमा शुभाशुभ सोधेको भए प्रश्नलग्नमा रोगीको जन्मराशिलाई (चन्द्रस्थ राशिलाई) यदि कुनै पनि पापग्रहले पूर्ण देख्दछ भने शुभ हुँदैन । त्यो जन्मराशिलाई देख्ने पापीग्रह यदि अष्टमा रहेछ भने त पूरै अशुभ (अत्यन्त दुःख वा मरण) हुन्छ ।

यदि रोगी स्वयं या कुनै प्रतिनिधिद्वारा दैवज्ञकहाँ गई अमुक रोगी रोगबाट मुक्त हुन्छ या हुँदैन ? कुनै अनिष्ट (मृत्यु) त हुँदैन ? भन्यो भने त्यतिखेरको कुण्डली लग्न स्थिर राशिको छ र पापग्रहयुक्त दृष्ट छ भने रोग शान्ति हुँदैन । चर राशि भई शुभ युत दृष्ट छ भने रोग शान्ति छिट्टै हुन्छ । यदि केवल लग्न चर राशिमात्र छ कुनै पनि शुभाशुभ ग्रहको युत दृष्ट छैन भने पनि रोग शान्ति हुन्छ । स्थिर लग्न भई शुभ ग्रहयुत दृष्ट छ र वर्ग पनि शुभै छ भने केही विलम्ब भई ग्रह पूजा आदि उपायद्वारा रोग शान्त हुन्छ । उक्त कुरा चर स्थिरको मात्र भयो । यदि प्रश्न लग्न द्विस्वभाव राशिको भए के गर्ने भन्ने विषयमा भट्टोत्पलद्वारा विरचित 'आर्यासप्तति'अनुसार द्विस्वभाव राशिको ०° देखि १४° पर्यन्त स्थिर राशिवत मान्ने १५° देखि २९° सम्म चरवत भयो ।

यदि लग्नमा शुभ ग्रह स्थित भएर चरराशि लग्नमा भए रोगी चाँडै नै स्वास्थ्य लाभ गर्छ । परन्तु स्थिर या चर राशिमा पापग्रह छ भने चाहिं पृच्छकलाई शुभ हुन सक्दैन । त्यस्तै जन्मराशि र प्रश्न लग्नमा एकै साथ पापीग्रह छ भने अनिष्ट कारकै हुन्छ । केवल चर राशि स्थिर राशि फल ढिलो र चाँडोको मात्रै कारक हुन्छ ।

यदि प्रश्नकालमा अष्टमस्थस्थित पापीग्रह भए त्यो पनि शुभ फलनाशक हुन्छ तर पनि पापादिको तारतम्यतापूर्वक सम्झनुपर्छ । पापफल कमबेसी भन्नेमा यदि लग्नमा शुभफल दृष्ट छ र अष्टममा मात्र पापग्रह छ अथवा अष्टमका माध्यमले पापप्रकोप वृद्धि गरेको छ भने पनि अशुभ कमै हुन्छ । त्यस्तै लग्नमात्र पापवृद्धि कारक छ अष्टम शुभ भए पनि शुभ

वृद्धि त्यत्ति हुँदैन । दुबैतर्फ विचार गरी निश्चय गर्नुपर्छ । रोगीका विषयमा अष्टमस्थानमा रहेको शुभग्रह निश्चय नै अशुभ फल कम गरेर शुभोन्मुख गराउँछ ।

आचार्य वारहमिहीरले पनि उनेको 'दैवज्ञवल्लभा' नामक प्रसिद्ध ग्रन्थमा बताएका छन् कि लग्नमा वा अष्टममा पापग्रह होस् त त्यो रोगीको जन्मराशि (चन्द्रस्थ राशि)लाई पनि देख्दछ भने निःसन्देह मृत्यु हुन्छ । देख्ने भन्ने विषयमा पूर्ण दृष्टिलाई नै लिनुपर्छ। इत्यादि कुराले गर्दा ज्योतिषमाअन्यत्र मत भेद भए पनि प्रश्नशास्त्रमा प्रायः विशिष्ट विद्वान् वराहमिहिर भट्टोत्पल महर्षि वादरायण इत्यादिको मतैक्यता रहेको पाइन्छ । उक्त कुराहरू अझ स्पष्ट जानकारीको लागि (वराहमिहिर विरचितैदैवज्ञवल्लभा ८.१) विशेष विचार गरेमा स्पष्ट हुन्छ ।

सामान्यतः रोगीको सम्बन्धी प्रश्नमा चन्द्रमामा पनि पापदृष्टि अनिष्टकारक हुन्छ । त्यसकारण लग्न र चन्द्र प्रति शुभप्रभाव भए शुभ निश्चित हुन्छ । लग्न लग्नेश चन्द्र र त्रिक भाव (६,८,१२) यी स्थानहरू शुभ प्रभाही हुनैपर्छ । यदि उक्त स्थान र ग्रहहरू पीडित (पापयुक्त दृष्ट मध्यगत भएमा रोग शान्ति छिटो हुँदैन धेरै लामो समय सम्म कष्ट कारक नै हुन्छ। यदि उक्त अवस्थामा क्षीण चन्द्र त्रिकगत छ भने र अष्टम पापयुक्त छ लग्नेश निर्बल छ भने त मृत्यु ग्रसित हुन्छ ।

पूर्ण चन्द्रमालाई बृहस्पतिको दृष्टि छ र गुरु शुक्र केन्द्रमा भए रोगी चाँडै नै स्वस्थ भइजाने छ । यसप्रकार वराहमिहिर र भट्टोत्पलको मत रहेकोपाइन्छ । विशेष वराहमतमा चर राशि प्रश्नलग्नमा छ र रोगीको प्रश्न भए '**रोगीयाति यमालयम्**' रोगी निश्चय नै मर्छ । तर पनि स्वकीय अनुभवमा भने त्यो सिद्ध हुने कुरामा व्यभिचार रहेको छ। त्यस्ता अवस्थामा आएका रोगीहरू पनि स्वास्थ्य लाभ गरेर बसेको पाइएकाले निश्चित चरलग्नमा पाप प्रवाह नै मृत्युकारक हुन्छ । अन्यथा असंभव पनि सिद्ध हुँदोरहेछ। त्यसकारण सामान्यतः सबै भावको अनुभव गरी निश्चित निर्णय तात्कालिक लग्नबाट गर्नुपर्ने हुन्छ । सबै लेखेको पढेको पुनः पढेर मात्र हुँदैन आफूले अभ्यास गरेका कुराहरू पूरै ख्यालमा राखी अगाडि अगाडि भनिएका र आफूले प्रत्यक्ष गरिसकेका कुरालाई पनि ध्यानमा राखी पुनः आफ्ना विचारलाई पनि परिमार्जित गर्दै लानुपर्छ ।

प्रश्नकालमा धन नाश र कार्यहानि योग

दुश्चिक्यनवमनिधनत्रिकोणकेन्द्राश्रिताः पापाः ।
कुर्वन्ति कार्यनाशं घातं चार्थस्य जातस्य ॥३६॥

अर्थः- यदि कार्य सिद्धिमा धनलाभ हुन्छ या हुँदैन भन्ने प्रश्नमा उक्त श्लोककथित योग भए धनहानि र कार्यको नाशक योग हुन्छ। यस्तो योगमा कुनै नयाँ काम नगर्नु भनिदिनुपर्छ। कथित योग यसप्रकार रहेको छ।

१) तृतीय र नवममा पापग्रह हुनु ।
२) तृतीय नवम र अष्टममा पापग्रह हुनु ।
३) त्रिकोणमा पाप ग्रह हुनु ।
४) केन्द्रमा पापग्रह हुनु ।

उक्त स्थानमध्ये कुनै दुई स्थानमा पापग्रह भए धनहानि र कार्यनाश गराउँछ। केवल तृतीय स्थानस्थ पापग्रह धननाशक हुँदैन। तृतीय स्थानमा पापग्रह भए केन्द्रमा वा त्रिकोणमा अथवा एकादशमा पापग्रह भए उक्त धननाशक योग हुन्छ। केन्द्रमा पनि एउटा मात्रै केन्द्रमा पाप ग्रह भए उक्त योग बन्दैन कम्तिमा तृतीयमा पापग्रह भई दुई वा दुईभन्दा बढी केन्द्रमा पापग्रह हुनुपर्छ। अन्यथा उक्त योग सिद्ध हुँदैन।

पृच्छकको सर्वसिद्धिकारक योग

केन्द्रोपगा नवमपञ्चमगाश्च सौम्याः
केन्द्राष्टवर्ज्यमशुभाः स्त्रिषडायसंस्थाः ।
सर्वार्थसाधनकराः परिपृच्छतां स्यु
रेभिर्विपर्ययगुणैस्तु विपर्ययः स्यात् ॥३७॥

अर्थः-यदि प्रश्नकालीन लग्नमा केन्द्र त्रिकोणमा शुभ ग्रह छन् र केन्द्र अष्टममा अशुभ (पाप) ग्रह छैनन् र अशुभ ग्रह त्रिषडाय तीन छ र एघारमा भए पृच्छकको सर्वार्थ सिद्धि कारक योग हुन्छ यो भन्दा विपरीत भएमा विपरीतै फल जान्नुपर्छ।

धनारोग्य पदवीप्राप्ति योग

भवति स आश्रयणीयो द्वितीयसप्तमाष्टमलग्नेषु।
यदि सन्ति शुभाः पुंसां धनमारोग्यं सुखं दद्युः॥३८॥

अर्थः-यदि धनसमृद्धि सम्बन्धी प्रश्न गरेको छ भने लग्न, द्वितीय, सप्तम र अष्टम यी स्थानहरूमा शुभग्रह स्थित छन् या शुभ प्रवाह छन् भने मनुष्यलाई सुख आरोग्य धनसम्मान पदवी आदि प्राप्त हुन्छ। साथै अरूलाई आश्रय दिनेवाला (आश्रयणीयाः) हुन्छ।

हराएको वस्तु लाभ ज्ञान

हिबुकं द्वितीयमथवा शुभस्तृतीयं समाश्रितो भवनम्।
आनयति नष्टमर्थं गन्तुं शक्नोति नैव दूरतरम्॥९॥

अर्थः-यदि हराएको वस्तु मिल्छ वा मिल्दैन भन्ने प्रश्नमा यदि प्रश्न लग्नदेखि द्वितीय, तृतीय या चतुर्थमा शुभ ग्रह भए त्यो वस्तु घर वरिपरि नै छ टाढा गएको छैन, तुरुन्तै मिल्छ भन्नुपर्छ।

मतान्तबाट लाभ योग

लग्नाद् द्वितीये यदि वा तृतीये
शुभेन युक्तोहिबुकेऽथ वा स्यात्।
सौम्यैः सुहृत्सप्तदशास्थितैर्वा
निः संशयं चोरितवस्तुलाभः॥४०॥
लग्ने सम्पूर्णतनुर्जीवेन सितेन विक्षितश्चन्द्रः।
केन्द्रोपचयस्थैर्वा यदि सौम्यैः स्वोपचयगैराप्तिः॥४१॥

अर्थः-प्रश्न कालिक लग्नदेखि दोस्रो वा तेस्रो वा चौथो स्थानमा शुभग्रह युक्त भए र सात दश स्थित शुभ ग्रह भए हराएको माल निश्चय नै पाइन्छ सन्देह हुँदैन।

यदि लग्नमा पूर्ण तनु (पूर्ण चन्द्र) चन्द्र शुक्र या गुरुले देखेका छन् भने र उपचय (३।६।१०।११) मा र केन्द्रमा शुभ ग्रह छन् भने पनि नष्ट वस्तु लाभ हुन्छ ।

प्रवासी विषयक प्रश्न

लग्नाद् द्वितीयभवनं तृतीयं वा ग्रहेण संयुक्तम् ।
दूरगतस्यागमनं प्रवृत्तिमथवा विनिर्दिशति ॥४२॥

अर्थः-यदि प्रवासीको आगमन हुन्छ, हुँदैन भन्ने प्रश्नमा प्रश्नलग्नदेखि द्वितीय अथवा तृतीय भाव ग्रहयुक्त भए प्रवासी निश्चय नै आउँछ (अथवा सूचना मात्रै भए पनि छिट्टै हुन्छ) मतान्तरमा भने यदि २,३,६,११ भावमा पापग्रह छ र दुई तीन भावमा गुरु, शुक्र भए प्रवासी अवश्य नै आउँछ, यो वराहमिहिरको मत हो । उक्त प्रथम मत वादरायणको हो, वादरायण र वराहमा भिन्नता थोरैले देखिएको छ ।

मतान्तर-

लग्नाद्रसातलाद्वा शुभो द्वितीयोऽथवा तृतीयस्थ ।
ब्रूयान्नष्टप्राप्तिं प्रवासिनश्चाप्यथाऽऽगमनम्॥४३॥

अर्थः-पृथुयशाअनुसार लग्न वा चतुर्थ स्थानदेखि २, ३ भावमा अर्थात् २, ३ अथवा ५, ६ मा शुभ ग्रह भए नष्ट वस्तु पनि तुरुन्तै पाइन्छ र प्रवासी पनि छिट्टै आउँछ ।

गमनागमन विषयक प्रश्न

वृषसिंहवृश्चिकघटैर्विद्धिस्थानं गमागमौ न स्तः ।
न मृतं न चापि नष्टं न रोग शान्तिर्न चाभिभवः ॥४४॥

अर्थः-यदि प्रश्नलग्न स्थिर राशिको (२,५,८,११) होस् त लाभालाभ विषयक प्रश्नमा लाभ हुन्छ । गमनागमनसम्बन्धी प्रश्नमा केही पनि हुँदैन अर्थात् आउने पनि आउँदैन जाने पनि जाँदैन । रोगीका विषयमा पनि रोग शान्ति पनि हुँदैन मृत्यु पनि हुँदैन । जयपराजयमा जय नै हुन्छ पराजय हुँदैन ।

विपरीत अवस्थामा विपरीत फल

तद्विपरीतं तु चरैर्द्विशरीरैर्मिश्रितं भवति ।
लग्नेन्द्वोर्वक्तव्यं शुभदृष्ट्याशोभनमतोऽन्यत्॥४५॥

अर्थः-यदि उक्त स्थिर लग्नभन्दा विपरीत भए अर्थात् चर लग्न भए स्थिरको पूरै विपरीत जानु, गमनागमन हुन्छ रोगीको मृत्यु हुन्छ, नष्ट वस्तु प्राप्ति हुँदैन । यदि द्विस्वभाव राशि भए उक्त दुबैफल मिश्रित जान्नुपर्छ । यदि शुभ दृष्टि भएता फल पनि शुभै हुन्छ ।

यात्रासम्बन्धी प्रश्न

उदयगते चरराशौ भृगुगुरूबुधभास्करेषु चैकतरः ।
गमनमुपदिशति पुंसां निवर्तनं वर्तमानोऽन्यसंस्था वा ॥४६॥

अर्थः-यदि यात्राविषयमा प्रश्न गरेको छ भने प्रश्नलग्न चर राशिको छ र त्यस लग्नमा शुक्र बृहस्पति बुध र सूर्यमध्ये कुनै एक स्थित छन् भने पृच्छकको यात्रासजिलै हुन्छ। यदि स्थिरलग्न छ अथवा चरै भए पनि उक्त ग्रहहरू लग्नमा छैनन् र यात्रा हुने विशष अवस्थादेखि भिन्न भए यात्रीको प्रथमतः यात्रा नै हुँदैन यदि यात्रा भैगए पनि आधा बाटाबाटै फर्कनुपर्ने अथवा यात्रा बदल्नु पर्ने हुन्छ ।

प्रश्नलग्नद्धारा भावीकष्टविचार

यद्यपि पापो निधने लग्नात् चैकादशेऽपि वा प्रष्टुः ।
आदिशति वर्तमानं व्याधिं दुःखस्य वा पतनम्॥४७॥

अर्थः-यदि प्रश्न लग्नबाट अष्टम र एकादशस्थानमा कुनै पापग्रह बसेको भए पृच्छकलाई रोगबाट पीडा वा कुनै ठूलो आपत्ति प्राप्त हुन्छ ।

विशेष कुरा- निधनस्थानमा पापग्रह सदैव आयुक्षकारक हुन्छ । अतः अष्टमस्थ पापीग्रह प्रश्नकर्ताको रोग र शोकको सूचना दिन्छ । साथै

एकादशस्थान सर्वोच्च उपचय स्थान मानिन्छ। उस स्थानमा पनि प्रश्नकालमा पापग्रह हुँदा दुःख नै वृद्धि हुन्छ। यद्यपि पापग्रह दशम एकादशमा शुभ अन्यत्र भएता पनि प्रश्नकालमा अष्टम मा पाप भए एकादश पनि पापयुक्त हुँदा दुःखोपचय अर्थात् दुःखवृद्धि हुन्छ। यदि अष्टमस्थान पाप विद्ध छैन र अष्टमेश र एकादशस्थित पापीग्रहको कुने सम्बन्ध नभए एकादशस्थ पापीले अनिष्ट गर्दैन बरु सुख समृद्धि नै गर्छ।

लग्नस्थ पापग्रह पनि कष्टकारक हुन्छ। सामान्यतः यस्तो मानिन्छ कि लग्न या अष्टमस्थानमा रहेको पाप ग्रह रोगीको जन्मराशि (चन्द्रस्थ) लाई देख्दछ भने रोगीको मृत्यु गराउँछ। रोग सम्बन्धी प्रश्नमा भने यस प्रकार विचारगर्नुपर्छ- प्रथम भाव वैद्य हुन्छ भने सप्तम भाव रोग हुन्छ र चतुर्थ भाव औषधि हुन्छ भने दशमभाव रोगी हुन्छ। यी भावहरू परस्पर दृष्ट हुन्छन्। यी भावहरू परस्परमित्र हुनु रोगीको शीघ्र स्वास्थ्यलाभ हुनु हो। यिनीहरूमा परस्पर शत्रुभाव हुनु रोगीको दुर्मरण हुनु हो। नीलकण्ठीकारले पनि यही कुरा प्रष्ट्याएका छन्। १)पापयुक्त दृष्ट लग्न भए डाक्टर(वैद्य) को असावधानीका कारण रोगीको मृत्यु हुन्छ। त्यस्तै चतुर्थस्थान भए गलत औषधि या विषादि सेवन का कारण रोगीको मृत्यु हुन्छ। त्यस्तै सप्तम स्थान पापयुतदृष्ट भए एक रोगबाट अन्यरोग उत्पन्न भई मृत्यु हुन्छ। यदि दशमस्थान पापयुत दृष्ट छ भने स्वयं रोगीको आफ्नै कारणबाट मृत्यु हुन्छ। प्रश्नचिन्तामणिकारले पनि यही कुरा स्वीकारेका छन्। उनको श्लोक यसप्रकार छ-

रोगिणो भिषजो मैत्री मैत्री भैषजरोगयोः ।
व्याधिरुपशमोवाच्यः प्रकोपः शात्रवे तयोः ॥

माथि उल्लिखित रोगी वैद्य र रोग र औषधिको मित्रता भए मात्र रोग निको हुन्छ अन्यथा राम्रो प्रयास गरे पनि सफलता नहुन सक्छ। शत्रुभाव भएमा त रोगको प्रकोप बढ्ने डर हुन्छ। त्यस्तै रोगशान्तिकारयोग पनि यसप्रकार बताएका छन्।

एक शुभो बलिर्लग्ने त्रायते रोगपीडितम् ।
सौम्या धर्मारिलाभस्था तृतीयस्था गदापहाः ॥

उक्त तथ्यलाई स्वीकार गर्दै प्रश्न विद्याकार वादरायणले पनि यसप्रकार प्रमाणित गर्न गइरहेका छन् । लग्नमा एउटा मात्रै ग्रह शुभ र बलवान भएपनि रोगीलाई बचाउन सफल हुन्छ । लग्न भन्नाले प्रश्नलग्न भनेर बुझ्नु पर्छ ।

एक अन्य कष्टकारक योग

व्याधिं स्वभवनलग्ने जामित्रे निधनेऽस्ति मरणं वा ।
कलहं प्रष्टुरुपेयाद् व्ययं पृच्छके तु वदेत् ॥४८॥

अर्थः-रोगीको प्रश्नमा अथवा सामान्य शुभाशुभ प्रश्नमा यदि पृच्छक या रोगीको जन्मराशि (चन्द्रस्थ राशि) या जन्मलग्न प्रश्नलग्नबाट सप्तम अथवा अष्टमस्थानमा पर्‍यो भने रोग वृद्धि या रोगीको मृत्यु हुन्छ । त्यस्तै सामान्य शुभाशुभ पृच्छकका लागि कलह बढाउने कारण सहित हानि गराउँछ ।

ग्रन्थान्तरबाट कष्टकारक योग-

शशिनं शशिपुत्रो वा पश्यति पापो विलग्नगेहस्थम्।
आदेष्टव्यः प्रष्टुः कष्टो व्याधिर्न सन्देहः ॥४९॥

अर्थः-प्रश्नलग्नमा यदि चन्द्रमा होस् अथवा बुध होस् र त्यसैलाई पापग्रहले पूर्णदृष्टि दियो भने पृच्छकलाई साह्रै कष्ट हुन्छ रोग व्याधिहरूले दुःख दिन्छन् यसम सन्देह छैन ।

रोगी बाँच्छ कि बाँच्दैन प्रश्न

विलग्ने षष्ठपः पापे जन्मराशिनिरीक्षते ।
चतुर्थाष्टमगे चन्द्रे पापमध्य गतोऽपिवा
विधौ लग्नस्मरे भानौ रोगी याति यमालयम् ॥५०॥

अर्थः-१) यदि प्रश्नकुण्डलीमा (प्रश्नलग्नमा) रहेको षष्टेश अथवा पापीग्रह यदि रोगीको जन्मराशि (चन्द्रस्थ राशि) लाई देख्दछ भने ।

२) चौथो आठौंमा चन्द्रमा भए

३) यदि चन्द्रमा प्रश्नलग्नमा पापमध्य भएर बसेको छ भने

४) लगनमा चन्द्रमा छ र सातौंमा सूर्य छ भने यी चारै योगमा रोगी बाँच्न सक्दैन ।

लग्ननाथे च सबले केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे ।
उच्चगे वा त्रिकोणे वा रोगी जीवति निश्चयम् ॥५१॥

अर्थः- यदि 'जीवति मृयतिवा' यस्तो प्रश्नमा लग्नेश बलवान भएर बसेको छ केन्द्रमा शुभग्रह छन् पाप ग्रह पनि उच्च त्रिकोणमा छन् शुभ ग्रह वा लग्नेश उच्च वा त्रिकोणमा भए रोगी निश्चय नै जीवन लाभ पाउँछ अवश्य बाँच्दछ ।

एक शुक्रो बलिर्लग्ने त्रायते रोग पीडितम् ।
सौम्या धर्मारिलाभस्था तृतीयस्था गदापहाः ॥५२॥

अर्थः-यदि रोगसम्बन्धी प्रश्नकुण्डलीम एक्लो शुक्र बलवान लग्नमा अथवा बलावन शुक्र एक्लै भए पनि लग्नमा रहेको भए रोगीलाई पालन गर्छ । यदि त्यस्तो नभएर शुभ ग्रहहरू ९,६,११ र ३ स्थानमा छन् भने पनि रोगीको रोग नाश गराइदिन्छ ।

लग्नस्थ चन्द्रबुधकृतशुभाशुभ

लग्नस्थं चन्द्रजं चन्द्रः क्रूरो वा यदि पश्यति ।
धनलाभो भवत्याशु किन्त्वनर्थोऽपि पृच्छतः ॥५३॥

अर्थः-यदि प्रश्नलग्नमा बुध वा चन्द्रमा बसेका छन् र क्रूर ग्रहले पूर्णदृष्टिले देखेमा पृच्छकलाई धनलाभ त हुन्छ परन्तु त्यो धनले अनर्थ पनि गर्छ ।

लाभालाभ प्रश्न

चन्द्रश्चतुर्थे यदि सप्तमे शुभो
विलग्नगो वा दशमे विवस्वान् ।
सद्योऽर्थलाभो मनुजस्य वाच्य-
स्तदेति सत्यो बलिरेवमाह ॥५४॥

अर्थः-सत्याचार्य र बलीका मतमा यदि चन्द्रमा चतुर्थमा या सप्तममा होस् अथवा लग्नमा शुभग्रह होस् दशममा सूर्य छन् भने पृच्छकको तुरुन्तै अर्थलाभ योग हुन्छ छिट्टै अर्थोन्नति हुन्छ ।

अन्यमतेऽपि
चतुर्थे सप्तमे चन्द्रे खेरवौ लग्नगे शुभे ।
प्रष्टुः सद्योऽर्थलाभः स्याल्लग्ने वा सुरमन्त्रिणि ॥५५॥

अर्थः-यदि ४।७ मा चन्द्रमा होस् लग्नमा शुभग्रह भई १० मा सूर्य छन् भने धनलाभ तुरुन्तै हुन्छ । यदि त्यस्तो योग परेन तर पनि गुरु लग्नमा भए भने पनि सद्यो अर्थ लाभ हुन्छ ।

शुक्रको रिपुव्ययस्थ भए पनि शुभ योग हुन्छ

शुक्रस्य षष्ठसंस्थानं योगदं भवति ध्रुवम् ।
व्ययस्थितस्य शुक्रस्य यथा योगं वदन्ति हि ॥५६॥

अर्थः-षष्ठमस्थित शुक्र अवस्य नै राज्य अथवा भोगविलाश दिने हुन्छ । यो शास्त्रवेत्ताहरूले अनुभव गरिसकेका छन् । यहाँ बसेर द्वादश भावलाई पूर्ण दृष्टि दिएर भोग बढाउने काम गर्छ । बाह्रौंमा बसेको शुक्र यदि स्वगृही स्वचादि हुँदा जसरी राजयोग बन्छ त्यस्तै छैटौंमा पनि शुभ हुन्छ । बृहस्पति पनि ३,६,८,१२ भावको स्वामी भए पनि अथवा अनिष्ट भावमा बसे पनि योगकारक हुन्छ भनी उत्तरकालामृतमा यसरी भनिएको छ-

रिःष्फाष्टारिगतस्य राशिरशुभस्तद्भेशयुग्दृष्टभं
भ्रष्टं स्यात् क्रमशः सितज्ञगुरवः स्युस्तेषु सौख्यप्रदाः ॥

गुरूको अशुभ कारकत्व-

स्थानहानिप्रदो जीवः स्थानवृद्धिप्रदः शनिः ।
केन्द्रवाह्ये भवेज्जीवः केन्द्रमध्ये भवेच्छनिः ॥५७॥

अर्थः-यदि बृहस्पति केन्द्र बाह्य भयो भने मात्र स्थान हानि गराउँछ जसरी शनिश्चरले केन्द्रमा हुँदा स्थान हानि गृहक्लेश गराउँछ । शनि ग्रह पनि उपचय स्थानमा भए स्थानलाभ गराउँछ । गुरु अन्यत्र हुँदा पनि नोक्सान गराउँदैन बरु पापफल कम गराउँछ ।

सर्वार्थसिद्धियोग

केन्द्रत्रिकोणेषु शुभान्वितेषु
पापेषु केन्द्राष्टम वर्जितेषु ।
सर्वार्थसिद्धिं प्रवदेन्नराणां
विपर्ययस्थेषु विपर्ययः स्यात् ॥५८॥

अर्थः-जन्मलग्न या प्रश्नलग्नमा शुभ ग्रहहरू केन्द्र वा त्रिकोणमा हुन् र पाप ग्रहहरू केन्द्र र अष्टममा नभए सर्वार्थ सिद्धि जे सोधे पनि राम्रो हुन्छ । योभन्दा विपरीत भए सिद्धि पनि विपरीतै हुन्छ ।

लाभालाभ प्रश्न

त्रिपञ्चलाभास्तमयेषु सौम्या
लाभप्रदा नेष्टफलाश्च पापाः।
तुलाऽथ कन्या मिथुनं घटश्च
नृराशयस्तेषु शुभं वदन्ति ॥५९॥

अर्थः-प्रश्नकालदेखि तेस्रो, पञ्चम, एघार र सातौं स्थानमा शुभ ग्रहहरू छन् भने लाभ दिन्छन् । उक्त स्थानस्थित पापग्रहहरू भए इष्ट फल

दिंदैनन् । यदि प्रश्नलग्न द्विपदि राशि अर्थात् तुला, कन्या, मिथुन र कुम्भ राशि परे भने प्रश्न कर्तालाई अत्यन्त शुभ हुन्छ ।

योगान्तरबाट पनि लाभालाभ विचार

स्थानप्रदादशमसप्तमगाश्च सौम्या
मानार्थदाः स्वसुतलग्नगता भवन्ति ।
पापा व्ययाय सहिता न शुभ प्रदास्यु
लग्ने शशी न शुभदो दशमे शुभश्च ॥६०॥

अर्थः-प्रथम लग्नदेखि दशममा वा सातौंमा शुभग्रह होऊन् त स्थानलाभ भन्नाले घरघडेरी प्राप्ति किन्न सक्ने इत्यादि हुन्छ । त्यस्तै द्वितीय र पञ्चममा शुभ ग्रह भए मानद्रव्यको लाभ हुन्छ । व्यापारादिबाट धनफाइदा हुन्छ । पापग्रहहरू एकादश द्वादश मा छन् भने शुभ हुँदैन । लग्नमा चन्द्रमा शुभ हुँदैन दशममा शुभ हुन्छ ।

अन्य शुभाशुभ विचार

इन्दुं द्विसप्तदशमायरिपुत्रिसंस्थं
पश्यत् गुरूः शुभफलं प्रमदाकृतं स्यात् ।
लग्नत्रिधर्मसुतनैधनगाश्च पापा
कार्यार्थनाशभयदाः शुभदा शुभाश्च॥६१॥

अर्थः-प्रश्नलग्नमा २,७,१०,११, ६,३ यी स्थानहरूमा जो कुनैमा चन्द्रमा होस् र गुरुको पूर्ण दृष्टि परोस् त स्त्रीद्वारा स्थान अर्थ आदि लाभ हुन्छ । यदि १,३,९,५,८ यीनै स्थानमा पाप ग्रह छन् भने कार्य वा द्रव्यको नाश गराउँछ । अथवा अनेक भय पनि गराउँछ । यी स्थानहरूमा पनि शुभ ग्रह भए शुभै हुन्छ ।

॥ इति प्रश्नाध्याय ॥

अथ रत्नाध्याय

रत्नाध्यायको प्रयोजन

रत्न एक प्रकारको मनमोहक पदार्थ हो । जसले प्राचीनकालदेखि नै जनमानसमा मोहपास बनाउँदै आएको छ। रत्न नामैले मात्र पनि प्रियता दिएको छ । यद्यपि वस्तु तथ्यरूपले नजान्दा पनि रत्न भनेर नाम लिंदा अबोध बालक पनि खुसी हुन्छ त्यसकारण यो रत्न पक्कै जनहितकारक छ भन्ने कुरा सिद्ध हुन्छ ।

रत्न नामले प्रसिद्ध भए पनि बस्तुतः सम्पूर्ण जन समुदायमा प्रत्यक्ष हुन सकेको छैन । रत्नका विषयमा आज भोलि हजारौं चर्चा परिचर्चा हुँदै आएको छ । प्रत्येक शहर बजारमा पनि रत्न विक्रेताहरू देख्न पाइन्छ । प्रायः आजका युवायुवतीहरू पनि एक दुई पत्थरका औंठी माला लकेटजस्ता अलङ्कार लागाएरै हिंडेको देखिन्छ । तर तिनीहरूलाई सोद्धा भन्दछन् किन र केको लागि भन्ने विषयमा त थाह छैन अरूले लगाएको देखेर लगाएको भन्दछन् । एकाध कोही कोही भने मेरो अमुक राशि भएकोले रेडियो, टि.भि.मा मिलेको सूचनाका आधारमा लगाएको हो । कुनै भन्दछन् ज्योतिषीको परामर्शअनुसार लगाएको । हरेक मानिसको आ-आफ्नै दृष्टि रत्न लगाउन रहेको पाइन्छ। वास्तवमा रत्न के हो ? किन धारण गर्ने ? किन घरमा राख्ने ? भन्ने विषयमा भने आजको जनसमुदाय प्रायः अलमलिएको पाइन्छ । उक्त कुरालाई पूर्ण जानकारी गराई रत्नको विशेष उपयोग गर्न यो अध्याय आरम्भ गर्न लागेको हो ।

रत्नको परिचय

रत्न केलाई भन्दछन् ? यो एक सामान्य प्रश्न छ । यो सामान्य उत्तर दिए विना रत्नको उपयोगका विषयमा कुनै पनि कुरा अघि बढाउन सकिंदैन । यसकारण सबभन्दा पहिला यसको जानकारी आवश्यक छ ।

सर्व प्रथम रत्न भन्ने वित्तिकै रत्ननामक वस्तुतः पत्थर (ढुङ्गा) नै हो । तर सबै पत्थर रत्न होइनन् । पत्थर र रत्न फरक फरक छन् । यदि यै विशेष फरकलाई ज्ञान गरेर सामान्य ढुङ्गावाट अलक गर्न सके त रत्नको पारखी भै हालिन्छ । यदि यसप्रकार विशेष पत्थरमा पनि भिन्ना भिन्नै बस्तु तथ्यको बोध गर्न सके दैनिक जीवनमा उसको उपयोग कर्ता बन्न सकिन्छ । सही तरिकाले जाने बुझे विना रत्नको संप्रयोगले उल्टो असर पर्न सक्छ । त्यसकारण रत्नको उपयोग सही पारखीद्वारा जाँचबुझ र सोचविचार गरेर मात्र प्रयोगमा लिनु पर्छ ।

कुनै पत्थरहरू स्वकीय पदार्थको आफ्नै गुण चरित्र एवं विशेषताबाट यसप्रकार नाम र काममा प्रशस्त भएका छन् जसलाई हीरा, माणिक्य, वैदूर्य, नीलम, पुखराज (पुष्पराज) पन्ना इत्यादि रत्न नामले पुकारिन्छन् । हेर्दा आकर्षक र चमकदार देखिने अत्यन्त कडा पत्थर विशेषलाई नै सामान्यतः रत्न भन्ने गरेको पाइन्छ । यसप्रकार नामकरण गरिएका पत्थरहरू विभिन्नरूप रङ्ग आकृति र प्रकारका हुन्छन् । त्यस्ता रत्नहरू कसरी उत्पत्ति भए भन्ने विषयमा प्राचीन प्राचीनकालदेखि नै खोजी हुँदै आएको पाइन्छ । त्यस्ता विशेष पत्थररूप रत्नको व्यापारिक धार्मिक र सङ्कलन गर्ने आन्तरिक शोखले समेत महत्त्व बढ्दै गइरहेको कुरा प्राचीन पौराणिक प्रसंगहरूमा पाइन्छ । त्यस्तै ऐतिहासिक क्षेत्रमा पनि यसको विशेष महत्त्व रहेको पाइन्छ । अध्ययनको क्रममा आयुर्वेद तन्त्रशास्त्र इतिहास पुराण हरेक ग्रन्थमा रत्नको उपयोग र महत्त्व पाइन्छ । रत्न शोख र गरगहनामा पनि धेरै अगाडिदेखि आ-आफ्नो जातित्त्व झल्काउने किसिमले प्रयोग गर्दै आएको अर्को छुट्टै परिचय रहेको पनि पाइन्छ । गहनामा रत्नप्रयोग वा जडान गरेर लगाउने परम्परा पनि ज्यादै पुरानो छ भन्ने कुरा इतिहासविद्हरू बताउँछन् ।

ज्योतिषशास्त्रमा रत्नको प्रसंग ज्यादै पुरानो छ । आचार्य बराहमिहिरद्वारा संरचित 'बृहत्संहिता' नामक ग्रन्थमा विभिन्न रत्नहरूका विषयमा धेरै व्याख्या विश्लेषण भएको पाइन्छ । साथै भट्टोत्पल आदि व्याख्याताहरूले झन् विशेषता बढाएका छन् । बृहत्संहिताको पंक्ति यस प्रकार रहेको छ- 'रत्नेन शुभेन शुभं भवति नृपाणामनिष्टमशुभेन । यस्मादतः परीक्ष्य दैव रत्नाश्रित तज्जै ।' इत्यादि ।

शुभ रत्न धारणले शुभ फल र अशुभ रत्नधारण गर्नाले अशुभ फल दिने हुनाले रत्न जाँच गराएर मात्र लगाउनुपर्छ। बृहत्संहिता ८० अध्यायमा रत्नको उत्पत्ति र जाति विशेष उपयोगी रत्नका बारेमा पनि उल्लिखित भएको पाइन्छ। हिराका विभिन्न प्रकार र जाति विशेषका फलविधायक कुरा पनि स्पष्टरूपले व्याख्या गरेको हुँदा सबैलाई एकै किसिमको रत्नहरू उपयोगी वा अभीष्ट फलदायक हुँदैनन् भन्ने कुरा स्पष्ट भएको छ। त्यसैले एकै रत्नमा पनि विविधता हुन्छ, भने अनेक रत्नमा अनेकात्व अवश्य छ भन्ने कुरामा कुनै सन्देह छैन। बृहत्संहिता मुक्ता लक्षणाध्यायमा मोतिको उत्पत्ति, मूल्य र विशेषताबारे विस्तृत चर्चा (व्याख्या) गरेको छ। त्यस्तै मरकतमणि (पन्ना) पद्मरागमणि इत्यादिका बारेमा पनि छुट्टा-छुट्टै अध्यायमा विस्तृत चर्चा गरेको पाइन्छ। बृहत्संहितामा लगभग २०-२२ वटा रत्नहरूको व्याख्या विश्लेषण गरिएको छ। अन्य ज्योतिष ग्रन्थमा पनि रत्नहरूको विषयमा उल्लेख पाइन्छ। प्राचीन अनुभवमा आएको रत्न विज्ञानको चमत्कार पूर्वीय पद्दतिमा मात्रै सीमित थियो। वर्तमानमा भने पूर्वीय पाश्चात्य दुबै समाजमा उत्तिकै महत्त्वपूर्ण खोज सङ्कलन र सौखिनता बद्दै गएको पाइन्छ। पाश्चात्य समाजमा पनि ज्योतिर्विज्ञानको खोजी प्रशस्त छ। ज्योतिषी उपचार विधिमा रत्नचिकित्सा द्रुततर गतिमा बद्दै गएको रत्न विज्ञान विद्हरू बताउँछन्। हाम्रा हिन्दु समाजमा मात्र होइन रत्नको महत्त्व आज दक्षिणपूर्वी एशिया र युरोपमा समेत ग्रहको शुभाशुभ स्थितिका आधारमा ग्रहजन्य अनिष्ट घटाई शुभ फल प्राप्त गर्ने आकांक्षाले रत्न धारण गर्ने प्रचलन बद्दै गएको प्रत्यक्ष भइरहेको छ। उक्त स्थानमा पनि विभिन्न गहनामा रत्न जडान गर्ने प्रवृत्तिलाई समेत बढाएको छ।

भारतीय ग्रन्थहरूमा रत्नविज्ञानको महत्त्व प्रशस्त छ। रत्न चर्चा परिचर्चाको क्रममा भावप्रकाश नामक प्राचीन ग्रन्थ र शुक्र नीतिमा नवरत्नबारे विस्तारपूर्वक वर्णन गरेको पाइन्छ। नवरत्न भन्नाले माणिक्य, मोती, मुँगा, पन्ना, पुष्पराज, हिरा, नीलम, गोमेद र वैदुर्यमणिलाई बुझाउँछ। नेपाली बृहद् शब्दकोशमा पनि यी रत्नहरूको नाम र सामान्य व्याख्या पाइन्छ।

यी रत्नहरू सूर्यादि नवग्रहहरूसँग सम्बद्ध छन्। जुन गुण जुन रत्नमा पाइन्छ ती रत्नहरू ती-ती ग्रहसँगको उत्कृष्ट सम्बन्ध र आवश्यक भएमा मात्र उपयोगी हुन्छन्। शुभफल वृद्धि गराउने अवस्थामा मात्र सम्बन्धीत ग्रहका रत्नहरू धारण गर्नुपर्छ। अन्यथा प्रयोग गर्नुहुँदैन भन्ने शास्त्रीय

धारणा रहेको छ। रत्नहरूको वर्गीकरणको प्रसंगमा विष्णुधर्मोत्तर पुराणमा र अग्नि पुराणमा पनि ३६ वटा रत्नको परिचय पाइन्छ। रत्न उत्पत्तिका विषयमा पनि अनेक मतमतान्तरहरू पाइन्छन्।

कुनै एक मतमा बलनामक दैत्यको हड्डीका टुक्राबाट रत्नहरू बने भन्ने इतिहास वा प्रकथन पाइन्छ। जस्तै-

सम्भूतानि बालाद् दैत्याद्रत्नानि विविधानि च।
गतानि नानावर्णत्व मस्थिभ्यो भूमि संश्रयात्॥

अर्को मतमा दधीचि ऋषिको हड्डीबाट रत्नहरू बनेको प्रमाण पाइन्छ। जस्तै-'**रत्नानि बलाद् दैत्याद दधीचितोऽन्ये वदन्ति जातानि।**'

कोही स्वभावैले विचित्ररूप भूमिकै परिणाम हो भन्ने गर्छन्। '**केचिद्भुवः स्वभावाद वैचित्र्यं प्राहरुपलानाम्**'

प्राचीन प्रमाण यसप्रकार उदाहरण सहित भए पनि आज प्रत्यक्ष रत्नहरू कसरी प्राप्त छन् भन्ने विषयमा आजका विशेषज्ञहरू यसरी बताउँछन्। सबै रत्न खनिज मात्र छैनन् कतिपय जैविक रत्न पनि छन्। खनिज रत्नहरू उक्त शास्त्रीय प्रमाण अनुसार अनेकौं वर्ष सम्म पृथ्वीमा (माटोमा वा पानीमा) रहेर आफ्नो भौतिक गुण नै परिवर्तन भएर देखिएका छन्। कतिपय रत्न भने विशेष जीवजन्तुबाट प्राप्त छन्। मोती एवं मुगा जैविक रत्न हुन् भने तृणमणि र जेड् रत्न वानस्पतिक रत्न हुन्। खनिज रत्न पृथ्वी फोरेर खानि खनेर पाइन्छ भने जैविक जीवजन्तुबाट पाउन सकिन्छ। वानस्पतिक पाहाडका विशेष रूख वृक्ष लताबाट पाउन सकिन्छ।

शुद्ध प्रकृतिबाट उत्पन्न रत्न अत्यन्त शक्तिशाली हुन्छन् भन्ने कुरा आचार्य बराहमिहिरले आफ्नो ग्रन्थ वृहत्संहितामा उल्लेख गरेका छन्–

एतानि सर्वाणि महागुणानि
सुतार्थसौभाग्ययशस्कराणि।
रुक्शोकहन्तृणि च पार्थिवानां
मुक्ताफलानीप्सितकामदानि॥

-वृ.सं. ८०।३०

अत्यन्त दुर्लभ मणि (रत्न) हरू

समुद्र मन्थनबाट देवताहरूले पाएका दुर्लभ मणि (रत्न)हरू १४ किसिमका उल्लेख पौराणिक कथामा पाइन्छ।

१) चिन्तामणि जो ब्रह्माजीसँग छ र ब्रह्माजी सकल चराचर सृष्टि गर्न सक्ने क्षमता नै रत्न शक्ति पाएर भएको हो भन्ने कथा प्रशस्तै छन्।

२) कौस्तुभ मणि यो भगवान् नारायणले लिनु भएको छ जसले गर्दा लक्ष्मी गृहिणी भइन्।

३) रुद्रमणि यो सुनौलो वर्णको छ। यो शिवजीसँग छ।

४) स्यामन्तकमणि यसको कथा भागवतमा प्रसिद्ध छ। यो असाध्यै दुर्लभ र विचित्र रङ्गको हुन जसमा सूर्यका सातै रङ्ग निहित छन्। यसको महिमा पनि विशिष्ट छ।

५) पौराणिक कथा अनुसार विशेष दश प्रकारका मणिहरू नागलोक पातालमा छन्। जसका रङ्गहरू पनि दशै किसिमका छन् भन्ने भनाइ पौराणिक कथाका आधारमा मान्ने गरेको पाइन्छ।

माणिक्यादि नवरत्नहरूको विशेषता

माणिक

माणिक सूर्य सम्बन्धी एक विशेष रत्न हो। यसले सूर्यको सद्गुण वृद्धि गरी व्यक्तिको वहुपक्षीय प्रतिभा र मान सम्मान वृद्धि गर्छ। मानिसहरू विशिष्ट रत्न विद्हरूसँग परामर्श गरी यो सुन्दर ठोस खनिज तत्त्वलाई आफ्ना उक्त सद्गुण वृद्धि गर्न प्रयोग गर्छन्। कम्तिमा तीन क्यारेट माणिक सुनमा जडान गरेर आइतवारदेखि दाहिने हातको साहिंली औंलामा लगाउने गरिन्छ। यदि जन्मपत्रिकामा सूर्यग्रह त्रिक स्थानीय वा त्रिकस्थानाधीश र मारकेश भए उक्त रत्न अनिष्ट हुन्छ, साथै माणिकसँग नीलम गोमेद हीरा धारण गर्नुहुँदैन।

मोती

मोती चन्द्रमाको सद्गुण बढाउने शीतलता प्रदान गर्ने रत्न हो । यसलाई धारण गर्नाले चन्द्रमा सम्बन्धी न्यूनतालाई वृद्धि गर्छ । यदि चन्द्रमा अस्त वा नीच भई शत्रुक्षेत्री वा लग्नस्थ र केमद्रुम योगकारकजस्तो दोषकारक बनेको भए अशल मोती धारण गरी चन्द्रमाजन्य दोष शान्त गराउन सकिन्छ । यो रत्नले भाग्य वृद्धि सामाजिक सद्भाव र अनुहारमा विशेष प्रकाश कान्ती ल्याउने काम गर्छ । कम्तीमा ४ क्यारेट मोती चाँदीमा जडान गरी दाहिने हातको कान्छी औंलामा सोमवार वा पूर्णीमाको दिनदेखि धारण गर्ने गरेको पाइन्छ ।

मुगा

मङ्गल ग्रहको सद्गुणलाई बढाउने मानिसको पुरुषार्थ र नेतृत्व बढाउन रत्न हो । यसको प्रयोग गर्नाले मङ्गल खराब स्थानमा वा अर्थात् अस्त वा नीच स्थानमा भई कार्य कौशलता प्रति उदासीन छ भने त्यस्ता व्यक्तिको भाग्य वृद्धिका लागि सहायक हुन्छ । यो रत्न १५ वर्ष नपुगेका बालबालिकालाई लगाइदिनु राम्रो हुँदैन । जवान वयस्क व्यक्तिले मात्र लगाउनुपर्छ । यो अत्यन्त उत्तेजक रत्न हो । यसले रक्त सञ्चार सम्बन्धी रोग विकार पनि शान्त गर्छ । कम्तीमा ६ क्यारेट लगाउनुपर्छ । यो विशेष व्यक्तिको शारीरिक तौल अनुसार लगाए अझ राम्रो हुन्छ । ६० के.जी. भन्दा माथिको तौल भए क्यारेट बढाएर लगाउनु राम्रो हुन्छ । जस्तै ६५ के.जी. तौल भएकाका लागि ६।५० क्यारेट त्यस्तै ७० के.जी. ७.३ र ७५ के.जी. मा ८ क्यारेटसम्म प्रयोग गर्न सकिन्छ । मुगासँग हीरा र नीलम साथसाथै धारण गर्नु हुँदैन । यो रत्न मङ्गलवारदेखि धारण गरिन्छ ।

पन्ना

पन्ना बुधको सद्गुण वृद्धि गर्ने रत्न हो । यसले मानवको बौद्धिक क्षमता वृद्धिका साथै व्यापारिक योग्यता बढाउने काम गर्छ । यसको प्रयोगले बुध ग्रहजन्य सबै दोष निराकरण गरी तत्सम्बन्धी गुण वृद्धि गर्छ । यो रत्न कम्तिमा ४ क्यारेट लगाउनुपर्छ । यो रत्न बुधवारदेखि लगाउनाले राम्रो हुन्छ ।

पुखराज (पुष्पराज)

पुष्पराज बृहस्पतिको सद्गुण वृद्धि गरी बौद्धिक एवं प्राज्ञिक क्षमता र नेतृत्व बढाउने रत्न हो । यसको प्रयोग गर्नाले बृहस्पतिसम्बन्धी दोष र न्यूनता कम गर्छ । वृहस्पति अस्तवा नीच भई अथवा पापमध्य वा बाल वृद्धत्व निर्बल जस्ता दोषहरू उक्त रत्न धारण गर्नाले कमजोर हुँदै जान्छन् । साथै यस्तो भाग्यवृद्धि गराई कार्यकुशलता पनि गराउँछ । कम्तिमा ४ क्यारेट पुष्पराज सुनमा जडान गरी बिहीवारदेखि धारण गर्ने गरिन्छ । यसलाई नीलम र हीरासँग धारण गर्नु हुँदैन ।

हीरा

हीरा सर्वाधिक कठोर मूल्यवान रत्न हो । यो रत्नले शुक्रसम्बन्धी सद्गुण वृद्धि गरी बौद्धिक, सांगितिक, साहित्यिक शृङ्गारपरक क्षमता र ख्याति बढाउने काम गर्छ । यो सेतो गुलाबी आदि भएता पनि शुक्रको गुण वृद्धिका लागि सेतो नै बढी प्रयोग भएको पाइन्छ । यसको प्रयोग गर्नाले शुक्रको अस्त नीच पापी युत दृष्ट मध्यगत बालवृद्धत्व आदि दोष निराकरण गरी व्यक्तिमा आवश्यक तत्त्व ऊर्जा उपलब्ध वृद्धि गर्ने काम गर्छ । मानिसको भाग्य वृद्धिमा सहायक हुन्छ । १ देखि चार क्यारेट सम्म हीरा प्लाटिनम वा सुनमा जडान गरेर शुक्रवारदेखि धारण गरिन्छ यसलाई मोती, माणिक्य र पुष्पराजसँग साथै धारण गर्नु हुँदैन । हीरा ज्यादै मूल्यवान भएकोले साधारण व्यक्तिका लागि क्रय असंभव पनि छ तर हीराको अभाव पूर्ति गर्न सेतो पुष्पराजको प्रयोग गर्न सकिन्छ ।

नीलम

नीलम शनि ग्रहको गुण वृद्धि गरी शारीरिक क्षमता र नेतृत्व बढाउने रत्न हो । यसको धारणा गर्नाले शनि खराब स्थानमा वा अस्त नीच राशिमा भएको अवस्थामा हुनेहरू को लागि भाग्यवृद्धिमा सहायक रत्न हो । कम्तीमा चार क्यारेट नीलम पञ्चधातुमा वा फलाममा जडान गरेर शनिवारदेखि धारण गर्नु राम्रो हुन्छ । यसलाई मोती मुगा माणिक र पुष्पराजसँग धारण गर्नुहुँदैन ।

गोमेद

गोमेद राहुसम्बन्धी सद्‌गुण वृद्धिकारक रत्न हो । यसले धारण गर्ने व्यक्तिको शारीरिक मानसिक क्षमता एवं आध्यात्मिक क्षमता समेत वृद्धि गर्छ । यसका प्रयोगले राहु जनित दोष निराकरण गर्छ । खराब फललाई कालसर्प योग भए पनि गोमेद धारण गर्नाले राम्रो हुन्छ । भाग्य वृद्धि भई राजयोग समेत वृद्धि गर्छ । यसको प्रयोग कम्तीमा चार क्यारेट हुनुपर्छ । फलाममा जडान गरेर शनिवार लगाउनु शुभ हुन्छ ।

वैदुर्यमणि

वैदुर्यमणि केतुको गुण वृद्धि गरी शारीरिक, मानसिक क्षमता एवं आध्यात्मिक चिन्तन बढाउने रत्न हो यसको प्रयोगले केतुसम्बन्धी दोष निराकरण गरी भाग्य वृद्धिमा सहायक हुन्छ । करिब ६ क्यारेट उक्त रत्न फलाम वा पञ्चधातुमा जडेर शनिवारदेखि धारण गर्नु अथवा मङ्गलवार धारण गरे पनि हुन्छ ।

विभिन्न रत्नोपरत्न

धेरै जसो माथि उल्लिखित नवरत्नलाई रत्न र अन्य रत्नोपयोगी पत्थर आदिलाई उपरत्न भन्ने गरेको पाइन्छ। कतिपय अवस्थामा उल्लिखित नवरत्न पनि रत्नोपरत्न नामले व्यवहार भएको शास्त्रमा नै पाइन्छ । प्रायः माणिक्य, हीरा, पन्ना, मोती र नीलम पाँच रत्नलाई मात्र रत्नको स्थान र अरूलाई उपरत्न भन्ने गरेको पाइन्छ। कतै नवै रत्नलाई रत्न र अन्य तादृश गुण धर्मयुक्त पत्थरलाई उपरत्न भनिंदो रहेछ । यसरी अरू ७५ उपरत्न र ९ रत्न गरी ८४ रत्नोपरत्न संख्या पुराणादि शास्त्रमा पाइन्छ । यी ८४ चौरासीयौं रत्नोपरत्नमध्ये उल्लिखित पञ्च महारत्न अरू चार रत्न र वाँकी पचहत्तरौं उपरत्नका रूपमा पहिचान भएको छ ।

सामान्य रत्नोपरत्नको नाम

नवरत्नः १) माणिक्य २) मोती ३) पन्ना ४) हीरा ५) नीलम । उक्त पाँच महारत्न हुन् । ६) मुगा ७) पुष्पराज ८) गोमेद ९) वैदुर्यमणि (लहसुनिया) । यी सबै रत्न नामले प्रख्यात छन् ।

उक्त रत्नहरू कस्ता हुन्छन् भन्ने विषयमा सबैलिखितरूपमा त वर्णन गर्न सकिँदैन तथापि सामान्य परिचयकै क्रम भएकाले चिनाउने काम गरिन्छ ।

१) **माणिक्य** भन्नाले यसलाई अङ्ग्रेजीमा 'रूबी' नामले चिह्निन्छ । यो गुलाबी रङ्ग श्याम वर्णको हुन्छ । यसलाई सूर्यरत्न पनि भन्छन् । अरबीमा यसलाई लालबदरवशां भनिन्छ ।

२) **मोती**- मोतीलाई अङ्ग्रेजीमा 'पर्ल' भनिन्छ । यो विभिन्न जातको हुन्छ । यो जैविक रत्न हो । कीरा हात्ती आदिबाट यो उपलब्ध हुन्छ । यो प्रायः सेतो, कालो, आकाशी, पँहेलो, रातो हरेक रङ्गमा पाइन्छ । यो प्रायः चन्द्र रत्न हो भन्ने मान्यता छ ।

३) **मुगा**- यसलाई अङ्ग्रेजीमा 'कोरल' भन्दछन् । जो प्रायः सिन्दुरी रातो रङ्गको हुन्छ । यो रत्न पनि जैविक वानस्पतिक रत्न हो । यो ठूला समुद्रमा एक विशेष जराकोरूपमा पाइन्छ । यसलाई संस्कृतमा विद्रुम र फारसीमा मरजा भन्दछन् । यो मङ्गलको रत्नरूपले प्रख्यात छ ।

४) **पन्ना**- पन्नालाई अङ्ग्रेजीमा 'एमेरान्ड' भन्दछन् यो अनेक रङ्गमा पाइन्छ तथापि हरियो रङ्गको बढी खोज र पन्ना हरियो हुनुपर्छ भन्ने परमपरित मानसिकता जनसमुदायमा पाइन्छ । हरियोमा पन्ना नीमको पातजस्तो र सुगा रङ्गी पन्ना विशेष महत्त्व रहेको लौकिक व्यवहारमा पाइन्छ । यो रत्न निदाग पारदर्श हुन बढी आवश्यक छ ।

५) **पुष्पराज (पुखराज)**- पुष्पराजलाई अङ्ग्रेजीमा 'टोपाज' भन्दछन् । यो पहेंलो सेतो र नीलो पनि हुन्छ । भनाइ यस्तो छ फूलका जतिरङ्ग हुन्छन् त्यत्ति नै पुष्पराजको रङ्ग हुन्छन् । अमलतास नामक फूलको रङ्ग जस्तो पहेंलो रङ्गवाला पुष्पराज (पहेंलो रङ्गवाला) सर्वश्रेष्ठ र बृहस्पतिको गुणवर्धक मानिन्छ ।

६) **हीरा**- हीरालाई अङ्ग्रेजीमा 'डायमण्ड' भनिन्छ। यो पनि धेरै रङ्गमा पाइन्छ। जस्तै- सेतो पहेंलो गुलाबी नीलो, रातो, कालो आदि। यो रत्न नौ रत्नमा सर्वश्रेष्ठ र अत्यधिक महङ्गो मानिन्छ। यो विशेष शुक्र रत्न भएकाले प्रायः सेतो नै ग्रहदोष निवारणका लागि महत्त्व मानिन्छ।

७) **नीलम**- नीलमलाई अङ्ग्रेजीमा 'सैफायर' भन्दछन्। यो पनि धेरै रङ्गमा पाइन्छ। मयूरको घाँटीको रङ्गजस्तो, हल्का नीलो पहेंलो इत्यादि रङ्गमा पाइन्छ। तथापि मयूरको घाँटी जस्तै विशेष नीलो नीलम सर्वश्रेष्ठ मानिन्छ। यो अत्यन्त चम्किलो हुन्छ। पारदर्शी हुनु निदाग इत्यादि यसका गुण हुन यो शनि रत्नका नामले प्रसिद्ध छ।

८) **गोमेद**- गोमेदलाई अङ्ग्रेजीमा 'जिरकन वा जरकन' भन्दछन्। सामान्यतः यसको रङ्ग रातो धुवाँको समान हुन्छ। रक्त, श्याम, पीत, आभायुक्त कत्थई रङ्गको पनि गोमेद पाइन्छ र उत्तम पनि मानिन्छ। संस्कृतमा पनि यसलाई गोमेद नै भनिन्छ।

९) **वैदूर्यमणि** (लहसुनिया)- वैदूर्यमणि अन्य भाषामा लहसुनिया भन्दछन्। यो विरालोको आँखाजस्तो धूम्र सेतो वा कालो हुन्छ। यो अन्य रङ्गसँग पनि मिलेर बनेको पाइन्छ। यसरी रङ्ग मिश्रित हुँदा यसमा पहेंलोपन झल्कने त्यस्तै कालो नीलो मसिको आभा, सेतो आभा इत्यादि भएको पाइन्छ। यसमा धूम्र सफेद अथवा धूवाँजस्तो सेतो सर्वश्रेष्ठ मानिन्छ। संस्कृतमा यसलाई वैदूर्यमणि भनेको छ।

उपरत्न पनि अनेक रङ्ग रूपका छन्। यी पनि विशेष तरिकाले रत्नकै काम गर्दछन्। यी धेरै किसिमका छन् जम्माजम्मी ७५ प्रकारका उपरत्नहरूको नाम तथा तिनका रूप र धारण गर्दा विशेष लाभ दिन सक्ने र दुरूपयोग गर्दा रत्न जस्तै हानिकारक समेत भएका उपरत्नहरूको सामान्य नाम उल्लेख यहाँ पनि दिइएको छ-

१) क्राइसो वेरिल २) स्पाइनेल ३) पाइरोप ४) तुर्मली ५) एक्रो आइट ६) डेब्राइट ७) वर्डिलाइट ८) इनडिगोलाइट ९) स्कोर्ल १०) स्फटिक ११) पिल्लौर १२) धुनेला १३) कटेला १४) सुनेला १५) चन्द्रकान्ता १६) अहवा १७) अजूवा १८) अवरी १९) अमलीया २०) सुलेमानी २१) एमनी २२) उदाऊ २३) करौटी २४) कुदूत २५) काङ्सला २६) कुरड २७) कहरूवा २८) गोदन्ता २९) गौरी ३०) गदडी ३१) चुम्बक ३२) चित्ति ३३) झरना ३४) जहाधिया ३५) चकमक ३६) जवरजद ३७) जजेमानी

३८) तुरशाया ३९) तामडा ४०) टेढी ४१) तिलियर ४२) पित्तोनिया ४३) दरचन ४४) नीलस्फटिक ४५)कान्तला ४६) पारस ४७) पनधन ४८) दुरेनजफ ४९)पाते-जहर ५०)दाने फिरङ ५१) लाजवर्द ५२) एबांशी ५३) लालडी ५४) मुसा ५५) रात-रतुवा ५६) मरगज ५७) संगे-मरीयम ५८) मुबेजनग ५९) मारबल ६०) मकडी ६१) सोहनमख्खी ६२) लुथिया ६३) सीजरी ६४) लास ६५) सगीपा ६६) वसरी ६७) सिन्धरी ६८) संघे सितारा ६९) सिवार ७०) सिन्दुरीया ७१) सुरम्मा ७२) अकिक ७३) मेसुरमणि ७४) हेसो नाइट ७५) एन्ड्राइड ७६) टोपाजोलाइट ७७) युवरोवाइड ७८) कुञ्जाइट ७९) जेडाइट ८०) पाइराइट ८१) सूर्यकान्त ८२) फिरोजा ८३) आइडोक्रेज ८४) हेमिमार्फाइट ८५) हास्सआई ८६) मास अगेट ८७) परतदार पत्थर ८८) जेस्पर ८९) मूल्यवान ओपल ९०) फायर ओपल ९१) गीरा सोल इत्यादि उपररत्न समान छन् । यिनीहरूसहित अङ्ग्रेजीमा अनगिन्ती नामहरू उपरत्नका पाइन्छन् ।

उपर्युक्त उपरत्नहरू सबै न त आभूषणमा प्रयोग हुन्छ, न त ज्योतिषीय दृष्टिमा उपयोगमा आउँछन् तर पनि यिनको नाम काम सम्बन्धी चर्चा शास्त्रमा गरिएको छ। विना काममा त कसैले कुनै चिजको उल्लेख न गरिनु पर्ने भन्ने सन्दर्भमा यी उपरत्नहरू अनेक कार्याविधिका लागि उल्लिखित भएका हुन् । मानवीय सुखसमृद्धि भनेको केबल शरीर सजावटमात्र होइन ग्रह दृष्टि शरीरमा मात्र हुँदैन गाडी घर इत्यादि स्थानमा समेत ग्रह अनुकूल हुनुपर्छ ।

घर सजावट गर्दा कुन कुन उपरत्नका के-के चिज वा वस्तुहरू बनाइ कता कता राख्ने वा सजाउने भन्ने वास्तु विज्ञान दृष्टिअनुसार मूर्ति आदि सजावटका लागि यी उपरत्नहरूको सही उपयोग गर्नुपर्छ भन्ने उद्देश्यले उक्त नामहरू उल्लिखित गरिएको हो । यहाँ केवल नाम मात्र दिइएको छ, ग्रन्थविस्तार भयले गर्दा तीनको उपयोग र कार्यविधिको वर्णन गर्न सकिएको छैन । यसको विस्तृत जानकारीका लागि केवल रत्न विज्ञान ग्रन्थ जस्ता विशाल ग्रन्थहरू हेर्नु पर्छ । यो त केवल सूचनाका लागि मात्र हो यसको प्रयोजन ज्योतिषीय समस्या समाधानको परिपूरक मात्र हो ।

रत्न र ज्योतिषको सम्बन्ध

रत्न र ज्योतिषको परस्पर अनेक सम्बन्ध छन् । सम्बन्ध वस्तुतः दुवै तर्फ हुन्छ । जस्तै पिता पुत्रमा जन्य जनकता भाव सम्बन्ध छ त्यहाँ पितामा जनकताभाव र पुत्रमा जन्यभाव छ । त्यस्तै ज्योतिष र रत्नमा पनि सहकृत्य सहकारक सम्बन्ध छ त्यस्तै ग्रह र रत्नमा पनि परस्पर प्रकास्य प्रकाशक आदि सम्बन्ध छन् । यिनै सम्बन्धका कारण रत्न विज्ञान ज्योतिर्विज्ञानको ऐक्यता भएको हो । विशिष्ट सम्बन्ध धेरै छन् तथापि सामान्य सम्बन्ध चाहिँ रत्न र ज्योतिषको अङ्ग-अङ्गीभाव सम्बन्ध नै हो । रत्नविज्ञान विना ज्योतिर्विज्ञान पूरा हुन सक्दैन त्यस्तै त्यस्तै रत्नविज्ञान पनि ज्योतिषीय ज्ञान विना निष्फल हुन्छ त्यसैले ज्योतिषसँग यसको अभिन्नता छ ।

जसरी रत्न र ज्योतिष एक आपसमा पूरक छन् त्यस्तै तिनीहरूको प्रयोजन सार्थक भने मनुष्य हो । मनुष्य जव धरतीमा उत्पन्न हुन्छ त्यतिखेर नै उसलाई सौर्यऊर्जाको आवश्यक हुन्छ उसको संरक्षण सौर्यऊर्जाविना हुन सक्दैन । मनुष्यमात्र उक्त ऊर्जाको भागी होइन प्रत्येक जीवजन्तु पृथ्वी वा अन्तरिक्षमा उत्पन्न जीवहरू सौर्य ऊर्जाको अपेक्षामा जीवित हुन्छन् । जीवन परिवर्तन पनि उक्त ऊर्जाकै कारणले हुन्छ । अब यस्तो अवस्थामा भन्न सकिन्छ कि जीवन मरण दुवै सौर्य नै हो कसरी त्यो दुवै अवस्था सिद्ध हुन्छ भन्ने शंकामा भन्न सकिन्छ जब जीव जगतले आफूलाई आवश्यक तत्त्व उक्त ग्रह समूहबाट आवश्यक तत्त्व लिने र अनावश्यक तत्त्वलाई अवरोध गर्ने सामर्थ्य धारण गर्न सक्दैन त्यहाँ सम्म त्यो जीव वाँच्न सक्दैन भने उसको अन्य अनुकुल सिद्ध हुने त कुरै भएन । आवश्यक तत्त्व पूर्ति गर्न पार्थिव शरीरमा पृथ्वीमा रहेका जीवमा ग्रह ऊर्जाका योग्य गुणधारक तत्त्वहरू हुनुपर्छ ती सामान्य तत्त्वहरू छन वा छैनन् भन्ने ज्ञान ज्योतिषशास्त्रमाध्यमले जान्न सकिन्छ । जुन तत्त्वको अभावले मानव जीवन राम्रो प्रभावकारी बन्न सक्दैन त्यसलाई पुरा गर्न पार्थिव जैविक आदि रत्नहरूको सहायता लिनु पर्छ । आफ्नु अनुकूल व्यवहार भएन भने अवश्य कुनै तत्त्वको अभावमा यस्तो भएको छ भन्ने जानेर ज्योतिर्विदहरूसँग सल्लाह परामर्श लिएर योग्य र उपकारी रत्नको सहयोग लिनु पर्छ । यसैले मानिसहरूको भौतिक, मानसिक र आध्यात्मिक प्रगतिका साथै जीवन सार्थक बन्न सक्छ ।

प्रमुख नवरत्नहरूको तात्विक ज्ञान र प्रयोगः

अहिले सम्मको अध्ययनमा रत्न र उपरत्न सम्बन्धी सामान्य चर्चा गरियो । अब यस शीर्षकमा प्रमुख नवरत्नका बारेमा अध्ययन गरिन्छ । यहाँ मुख्य नवरत्नको रङ्गरूप गुणदोष साथै कस्ता अवस्थामा रत्न धारण गर्ने उसले कस्तो प्रभाव पार्छ र सक्कली रत्न कसरी चिन्ने भन्ने विषयमा वैज्ञानिक तथ्य समेत उल्लेख गरिन्छ ।

१. माणिक्य

माणिक्य अत्यन्त मूल्यवान रत्न हो यसलाई माणिक माणक संस्कृतमा त अनेक नाम छन् लोहित, पद्मराग, शोणरत्न आदि अङ्ग्रेजीमा रूबी इत्यादि नामले चिह्निन्छ ।

धेरैजसो माणिक्य तीन तरहका पत्थरबाट उत्पन्न हुन्छ । १.सौगन्धिक पत्थरबाट पाइने माणिक (रूबी) भ्रमर रङ्गको हुन्छ। २.कुरूबिन्द पत्थरबाट निस्कने सेतो र कालो मिश्रित मन्दकान्तिवाला अन्य धातुको रङ्गभन्दा विरुद्ध देखिन्छ । ३.स्फटिक पत्थरबाट निस्कने माणिक अनेक रङ्गको हुन्छ । साह्रै राम्रो प्रकाशवाला तथा अत्यन्त विशुद्ध हुन्छ । यो रातो कमलजस्तो सिन्दूरी रङ्गको हुन्छ । असली र निर्दोष माणिक्य हल्का नीलआभा भएको हुन्छ । उसबाट रक्तिम किरण निस्कन्छ ।

विज्ञानका दृष्टिकोणबाट माणिक्य एक खनिज पत्थर हो जसमा एल्मुनियम, अक्सीजन, लौह तथा क्रोमियम आदि तत्त्व पाइन्छ । यसको कठोरता (साह्रोपन) ९, अपेक्षित घनत्व ४.३ हुन्छ र रासायनिक रचना तत्त्व एल्मुनियम अक्साइड हो ।

माणिक्य प्राप्तस्थान- माणिक्य अति प्राचीन रत्न हो । संसारमा सबभन्दा राम्रो र शुद्ध माणिक्य बर्मा (म्यान्मार) मा पाइन्छ । बर्माभन्दा अतिरिक्त स्थान भने काबुल, लङ्का र भारतको गङ्गानदीका किनार, विद्याञ्चल एवं हिमाल पहाड क्षेत्रमा पनि पाइन्छ । कतै कास्मिर दक्षिणभारतमा पनि

पाइन्छ। बर्मामा सर्वश्रेष्ठ माणिक्य पाइएता पनि माणिक्य भण्डारको साह्रै निम्न स्थान हो त्यसैले त्यस्तो माणिक्य थोरै मात्रामा पाइन्छ।

कृत्रिम माणिक्य- कृत्रिम माणिक्य निर्माण आजभन्दा १००-१०२ वर्ष पहिले भएको हो। सन् १९०९ मा एल्मुनियम र अक्सिजनको संश्लेषित गरेर वैज्ञानिक पद्दतिबाट कृत्रिम माणिक्यको सिर्जना गरेको कुरा रत्नवेत्ताहरू बताउँछन्। यो प्राकृत माणिक्यको तुलनामा गुण र मूल्य दुबै अत्यन्त कम छ। यदि प्राकृत माणिक्य प्रति क्यारेट ५०० रू. भए कृत्रिम रूबी प्रतिक्यारेट १०रूपैया मात्र निर्धारित गरिएको छ। आजको बजार प्रायः कृत्रिम माणिक्यले भरपूर छ। यसको प्रकार केही गर्मीपन र ओजनमा सामान्य भारी पन मात्र छ।

शुद्धताको जाँच- कृत्रिम हो वा शुद्ध माणिक्य हो यसको परीक्षा निम्न चार तरिकाबाट पनि सामान्यतः गर्न सकिन्छ।

१) यदि असली माणिक्यलाई दिनमा विकसित कमलको कलिमा राख्ने वित्तिकै सरेर फक्रन्छ।
२) शुद्ध गाईको दूधमा राख्ने बित्तिकै गाइको दूध गुलाबी रङ्गको देखिन्छ।
३) चाँदीको थाल या प्लेटमा राखेर सूर्यको प्रकाशमा (घाममा) राख्नेबित्तिकै चाँदीको पात्र एकदम रङ्गीलो रातो हुन्छ।
४) यदि काँचको पात्रमा माणिक्य राख्दा उक्त पात्रबाट रक्तिम किरण बाहिर निस्केको देखिन्छ।

यिनै चार विधिबाट सक्कली र बनावटी माणिक्य सजिलै छुट्र्याउन सकिन्छ। दोष युक्त माणिक्य लगाउनाले अझ नराम्रो असर गराउँछ। विस्तृत जानकारीका लागि आचार्य धनञ्जय 'सन्यासी'द्वारा सम्पादित मनोज पब्लिकेशन दिल्लीबाट प्रकाशित रत्नविज्ञान र सम्पूर्ण रत्नविज्ञान नामक पुस्तक हेर्नुहोला।

उपरत्न लालडी- यदि महङ्गो भएका कारण असली माणिक्य (रूबी) किन्न नसकिने अवस्थामा उपरत्न लालडी लगाएपनि उत्तिकै प्रभावकारी हुन्छ। यो माणिक्यभन्दा धेरै सस्तो र हितसाधक पनि छ। यो पनि लगभग दश थरीको पाइन्छ। रङ्गमा अलि गाढा फिक्का आदि कारणले यो भिन्नजस्तो देखिन्छ। परन्तु गुणमा भिन्नता भने छैन।

आजको जमानामा त उपरत्न पनि सक्कली नहुन सक्छ। त्यसैले यो लालडीको पनि जाँच गरेर लिनु राम्रो हुन्छ। शुद्ध लालडी दिनको मध्यकालमा राम्रो घाम लागेका समयमा थोरै कपासमाथि राखिदिनु केही

समयपछि त्यो तातेर कपास जल्न थाल्छ, कपासबाट धूवाँ निस्कन्छ । यदि यस्तो भएन भने त्यो लालडी पनि नक्कली रहेछ भनी जान्नुपर्छ ।

लालडीको प्रभाव- लालडी शीघ्र प्रभाव पारिहाल्ने रत्न हो । यसलाई धारण गरेर मानिस आफ्नो दुःखदरिद्रताबाट दूर हुन सक्छ । सुख समृद्धि बढ्छ । धार्मिक आस्था हुनुका साथै भूत प्रेतादि पीडा देवी प्रकोप जस्ता अनिष्ट कारक तत्त्वबाट पनि मुक्ति पाउँछ । व्याधि समाप्त हुन्छ । पठनपाठनमा अभिरूची साथै कलात्मक ज्ञान सीप अभिवृद्धि हुन्छ ।

दुष्प्रभाव- यदि लालडी शुद्ध छैन भने हानिकारक पनि हुन्छ । त्यसकारण अत्यन्त सावधानीपूर्वक जाँचबुझ गरेर मात्र किन्ने वा लगाउने गर्नुपर्छ । दोषकारक तत्त्व भएका लालडीहरू भने स्वप्नमा पनि लगाउनुहुँदैन ।

लालडीका दोषहरु- ठाढा धर्षाहरू मसिना लकीर (धर्षा) काला काला टीका धब्बाहरू दुई रङ्गका जालवाला खाल्टो परेको बिन्दु भएका पारदर्शक नभएका लालडीहरू दोषी हुन् ।

माणिक्य धारण गर्नुपर्ने व्यक्ति- माणिक्य वास्तवमा सूर्य रत्न हो । सबैले जानेकै छ सूर्यकालपुरुषको आत्मा हो । यो पुरुष ग्रह तामाको जस्तो आभा रङ्गवाला देदिप्यमान तथा पूर्वदिशाको स्वामी मानिन्छ । यदि जन्मकुण्डलीमा सूर्यको स्थिति ठीक छैन भने माणिक्य लगाउनु उचित हुन्छ । जन्मकुण्डलीमा सूर्यका निम्नलिखित स्थितिमा पनि माणिक्य लगाएर फाइदा लिन सकिन्छ-

१) यदि लग्नमा सूर्य छ भने लग्नस्थ सूर्य सन्तानवाधक हुन्छ । अल्पसन्तती तथा स्त्रीका लागि पनि कष्टकारक नै मानिन्छ । यस प्रकारको व्यक्तिले माणिक्य धारण कहिल्यै पनि गर्नु हुँदैन ।

२) धनस्थान अर्थात् द्वितीय भावमा सूर्य भए धन प्राप्तिमा बाधक हुन्छ । यस्तो व्यक्तिलाई नोकरीमा पनि अनेक व्यवधानहरू आउँछन् । ससुरालीबाट पनि कष्टप्रद समस्या हुन सक्छ । आयश्रोत राम्रो बन्छ । कुलकुटुम्ब सहयोगी कार्यक्षेत्र पनि सजिलो हुँदै जान्छ ।

३) यदि तेस्रो भावमा सूर्य भए उसको भाइलाई कष्ट दिने हुन्छ । यस्तो मानिसले सूर्यलाई प्रशन्न पार्न माणिक्य लगाउनु उत्तम हुन्छ ।

४) चौथो सूर्य घर खेती वाहन आदि आजीविका श्रोतमा वाधा बनाउँछ यस्तो स्थितिमा पनि यदि सूर्य अष्टमेश द्वादशेश नभए माणिक्य लगाउन उत्तम हुन्छ ।

५) यदि सूर्य भाग्येश धनेश कर्मेश भएर छैटौं आठौंमा छ भने धेरै थोक पीडा बाधा बनाउँछ। यस्तो अवस्थामा पनि माणिक्य उपकारक हुन्छ।

६) यदि जन्मकालमा सूर्य जहाँ भए पनि आफ्ना नक्षत्रहरू (कृत्तिका उत्तर फाल्गुणी, उत्तरषाढा) पूर्ण दृष्टिमा भए माणिक्य धारणले अत्यन्त शुभ परिवर्तन ल्याउँछ चारै दिशा शुभ हुन्छन् भाग्योदय हुन्छ।

७) सप्तम भावको सूर्य स्वास्थ्यको लागि हानिकारक हुन्छ। अतः स्वस्थ हुन र व्यापार विदेशसम्बन्धी उन्नतीका लागि माणिक्यमा उत्तम छ यदि आठौं वा बाह्रौंको पति सूर्य छैन भने।

८) एकादश भावमा बसेको सूर्य सन्तान भावमा पीडा दिन्छ र अन्य लाभमा पनि व्यभिचार ल्याउने हुनाले तुरुन्त माणिक्य धारण गर्दा शुभ हुन्छ।

९) द्वादश भावमा बसेका सूर्य छ अष्टमेश पनि भए माणिक्य हानिकारक छ, आँखामा पनि वाधा ल्याउन सक्छ । यस्तो अवस्थामा माणिक्य दान मात्र गर्दा राम्रो हुन्छ लगाउनु त्यत्ति उत्तम छैन।

लग्नअनुसार माणिक्य धारण- १) लग्नका आधारमा माणिक्य लगाउँदा कन्या मकर र कुम्भ लग्न वाला व्यक्तिलाई सूर्य अशुभ कारक हुन्छ। त्यसकारण यदि सूर्य अनिष्ट भई दुःख पाएको भए सूर्य र पिङ्गलाको दशा अवधिसम्म मात्र माणिक्य धारण गर्दा राम्रो हुन्छ। अघि पछि भने सूर्यको व्रत पूजा, पाठ, गायत्री जप होम गरेर नै राम्रो हुन्छ। सूर्यको पूजा लगाई माणिक्य दान गर्दा पनि उत्तिकै शुभफल मिल्छ।

अन्य लग्नमा यदि सूर्य अष्टमेश, द्वादशेश छैन र पाप दृष्ट पाप मध्य भई प्रभाहीन छ बलाबलमा पनि दुषित छ शत्रुक्षेत्री भई शत्रु दृष्ट इत्यादि दोष युक्त सूर्य छ भने उक्त दोष निवारण गर्न र घरमा विभिन्न सुखशान्ति र समृद्धि ल्याउन माणिक्य धारण गर्नुपर्छ। सूर्य लग्नेश भई धन चतुर्थ षष्ट नवम र द्वादश भावमा भए माणिक्य धारणबाट भाग्योदय हुन्छ।

माणिक्य धारण विधि- माणिक्य कमसेकम ३ रत्तिसम्म धारण गर्नुपर्छ। ३ रत्तिभन्दा कम माणिक्य शक्तिप्रद हुनसक्दैन। ३ रत्तिभन्दा माथि आफ्नो शरीरको तौल अनुसार ५० के.जी. भए ४.५ रत्ति ६० मा ५ रत्ति ५.५ सम्म। यस्तै क्रमले ७।१०।११ रत्ति भने धारण गर्नु हुँदैन। शुद्ध माणिक्य रविवार सोमवार गुरुवार किनेर सुनमा यदि शुद्ध सुनमा लगाउनु नसके तामा मिश्रित सुनमा जडान गरेर आइतवार सम्भव भए शुक्लपक्ष लिनु नभए

आइतवार पारेर जन्मनक्षत्रदेखि ४, ८, १२ नक्षत्र नपारी अरू शुभ नक्षत्रमा शनिवार बेलुका गङ्गाजल वा पञ्चगव्यमा गायत्रीमन्त्रद्वारा अभिमन्त्रित गरी डुबाइ राख्ने । अभिमन्त्रित गर्दा तामाको भाँडोमा पञ्चगव्य हालेर कुश दुबोले अभिमन्त्रित गर्ने । आइतवारको दिन सूर्योदयभन्दा पहिल्यै स्नान सन्ध्या सकेर उक्त जडित औंठीमा धातु र रत्नका अधिष्ठातृदेवताको अथवा सूर्य ग्रहको रत्नमा प्राण प्रतिष्ठा गर्ने । प्राण प्रतिष्ठा गर्दा विनियोगपूर्व (प्राणप्रतिष्ठा पद्दतिअनुसार) प्राणप्रतिष्ठा गर्ने र पश्चात शुद्धजल, गङ्गाजल पञ्चामृत इत्यादिले स्नान गराई पञ्चोपचारले पूजा गर्ने । सूर्यका वैदिकमन्त्र अथवा तान्त्रिक मन्त्र जप गर्ने कम्तिमा ७००० जप देवी पूजा गर्न । अरू मन्त्र नजाने 'ॐ घृणिः सूर्याय नमः' यो मन्त्र ७००० जप गर्ने आदित्यहृदय सूर्यसूक्त आदि पाठ पनि गर्ने पश्चात् अभिशेष लिएर दाहिने हातको अनामिका (साहिंली औंलामा स्वस्तिवाचनपूर्वक धारण गर्ने । यो रत्न धारण गरेको तीन हप्ताबाट शुभारम्भ हुन्छ । कसैलाई चाँडै पनि शुभलक्षण देखा पर्न थाल्छन् । कम्तिमा ४ वर्षसम्म यसको सुप्रवाह चल्छ चार वर्षपछि पुनः नयाँ वा अवस्था हेरी पूजा प्राणप्रतिष्ठा गर्नुपर्छ ।

माणिक्यको विकल्प- माणिक्य एक मूल्यवान रत्न हो । यो सर्वसाधारण व्यक्ति क्रय (किन्न) सक्दैनन् । तर पनि ग्रहवाधा भने उनीहरूको हुन्छ तसर्थ उनीहरूका हितका लागि ऋषिमुनिहरूले धेरै चिन्तन गरी उपरत्नहरूको व्यवस्था गरेका छन् । त्यस्ता उपरत्नहरू यसप्रकार छन्- १) लालडी २) रातो रङ्गको तामडा (गरनेट) सूर्यकान्त मणि या रातो जर्कन र रातो अकीक इत्यादि हुन्छन् ।

रत्नहरू धारणोपयोगी मात्र हुँदैन यिनीहरू अनेक रोगोपचारका लागि पनि कुनै घोटेर कुनै पानीमा राखेर दुई तीन दिनमा पानी पिउने गरेर कुनै भष्म बनाएर हरेक रोगोपचार हुन्छ । विस्तृत जानकारीको लागि दिल्लीप्रेसबाट प्रकाशित सम्पूर्ण रत्नविज्ञान पढ्नुपर्ने छ ।

२. मोती

मोती चन्द्रमाको रत्न हो अर्थात् यसको स्वामी ग्रह चन्द्रमा हो । अतः यो रत्न धारण गर्नाले चन्द्रमा सम्बन्धी दोष नष्ट हुन्छ । विभिन्न भाषामा यसका विभिन्न नाम छन् । संस्कृतमा मुक्ता नेपालीमा मोती अङ्ग्रेजीमा पर्ल त्यस्तै संस्कृतमा अनेकौं नाम छन् । अरू भाषामा अरू भिन्नै नामले प्रसिद्ध छ ।

वैज्ञानिक दृष्टिअनुसार मोतीको रासायनिक तत्त्व कैल्सियम कार्बोनेट रहेको छ। यसको कठोरपन (साह्रोपन) ३.९ देखि ४.० सम्म छ। घनत्व २.६५-२.८९ सम्म पाइन्छ। मोतीभित्र रहने 'परत' पदार्थ लगभग समानान्तर नै हुन्छ। यो रत्न अपारदर्शक हुन्छ।

मोतीका प्रकार- मोती लगभग ८ प्रकारका प्रसिद्ध छन्। हुन त गुण संख्याका आधारमा धेरै प्रकारका भए पनिउत्पत्तिका आधारमा ८ प्रकारका मानिन्छन्। १) गजमुक्ता २) सर्पमुक्ता ३) मीनमुक्ता ४) वंशमुक्ता ५) आकाशमुक्ता(मेघमुक्ता) ६) शंखमुक्ता ७) शूकरमुक्ता ८) सीपिमुक्ता। उक्त ८ प्रकारका मुक्तामध्ये सर्वश्रेष्ठ गजमुक्ता मानिन्छ। निम्नस्तरमा क्रमशः मानिएको छ। सब भन्दा कम महत्त्व भएको सिपी मुक्ता हो। यो सिपीमुक्ता जापानमा धेरै पाइन्छ। सिपी मुक्ता सिपीबाट कृत्रिम तरिकाले निर्माण गर्ने गरेको पाइन्छ। त्यसैले सिपीमुक्ता कम महत्त्वको भएका हो। पूर्वकथित ७ प्रकारका मोती प्रायः उपलब्ध हुन गाह्रो छ। सिपीमुक्ता प्रायः विश्वका सबै समुद्रमा पाइन्छन्। शास्त्रका अनुसार स्वाती नक्षत्रमा परेको पानीको थोपा सिपीमा बस्यो भने सबै मोती बन्छ। यस कारण पनि सिपिमुक्ता सर्वत्र र प्रशस्त मात्रामा पाइएको हो। चन्द्रमा प्रभावयुक्त व्यक्तिले मोतीधारण गर्नु राम्रो हो। मोती स्थानअनुसारको भिन्नाभिन्नै रङ्गको हुन्छ। तर पनि प्रायः उस्तैरूपको मोती पनि उत्ति गुणको हुँदैन।

मोतीका इतिहास- मोतीको इतिहास धेरै पुरानो छ। सबभन्दा प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेदमा पनि मोतीको उल्लेख छ। अर्थात् आयुर्वेद इत्यादिमा मोती प्राचीन रत्नका रूपमा चिनिन्छ। प्राचीनकालमा पनि मोतीको धारण उक्त व्यक्तिको सम्मान आदर भएको कुरा प्रसिद्ध छ। भारतीय हीराभन्दा पछाडि मोतीकै महत्त्व भएको कुरा शास्त्रबाट बुझिन्छ।

मोती फारसको खाडीमा, श्रीलङ्का बंगाल अष्ट्रेलिया, भेनेजुएला र जापान आदि स्थानमा पाइन्छ। यो प्रशान्त महासागरमा पनि पाइन्छ। फारसखाडीमा पाइने मोती जसलाई मोहर नाम वाला शिपीबाट निकालिन्छ। यो सर्वोत्तम मानिन्छ। भेनेजुएलाको कालो जसमा हरियो, हरियो तरिकाको आभा पाइन्छ त्यो पनि महत्त्वपूर्ण र महङ्गो मोती हो।

कृत्रिम मोती- मोतीको कृत्रिम तरिकाले बनाएको पनि पाइन्छ। यस्तो प्रचलन धेरै पहिलेदेखि चल्दै आएको हो। जापानमा अष्ट्रेलिया आदि ठाउँमा धेरै कृत्रिम मोतीहरू बन्छन्। अङ्ग्रेजीमा कृत्रिम मोतीलाई 'इमिटेशन

पर्ल' भन्दछन् । नक्कली मोतीको कुरा शुक्रनीति र गरूडपुराणजस्ता पुराना ग्रन्थमा पनि आएको छ ।

मोतीको गुण– शास्त्रानुसार मोतीको गुण यसप्रकार पाइन्छ। सर्वश्रेष्ठ मोती ताराको जस्तै चम्किन्छ दीप्तिमान हुन्छ। यस्तो मोती अत्यन्त असल हो। जो गोलो हुन्छ पूरै चारैतिर गोलसुवृत्त हुन्छ। स्वच्छ अत्यन्त शुचित ठोस एवं चिप्लो हुन्छ। उसबाट छायाँ स्पष्ट उज्यालो हुन्छ। शुद्ध मोतीको कतै चोट धर्सा छिद्र हुँदैन ।

मोतीका पारखीहरू भन्छन् जुपाच गुण युक्त मोती असली मोती हो । १) निर्मल २) चिप्लोपन भएको चिल्लो ३) कोमल भन्नाले कतै नबिजाउने ४) सुडौल सबैतिर पुष्ट गोलो ५) एकदम कान्तिमान उज्यालो यस प्रकारको मोती शुद्ध मोती हो भनेर चिन्नु पर्छ ।

कुनै मोती कपालको रौं छिर्ने खालको छिद्र भएको हुन्छ । यो दोषपूर्ण मोती हो । शुद्ध मोती धारण गर्ने व्यक्तिको दुष्भावना, खराब विचार निक्लिएर जान्छ। मन स्वच्छ भई ज्ञानवर्धक कार्य गरौं गरौं लाग्ने हुन्छ । मोती ज्ञान, धन, विवेक र सद्‌बुद्धि प्रदान गर्ने रत्न हो । मोतीले शारीरिक मानसिक दुर्बल घटाई सुस्वास्थ्य कान्तिमान बनाउँछ ।

मोतीमा शुद्धताको जाँच– मोतीको शुद्धताको जाँच गर्न निम्नप्रकारको प्रक्रिया गर्नुपर्छ ।

१) गाईको मूत्र (गउँत) कुनै माटाको भाँडामा लिएर उसमा मोती डुबाउने र रातभर राख्ने बिहान हेर्दा मोतीमा कुनै टुटफुट देखियो भने मोती नक्कली रहेछ भन्ने स्पष्ट हुन्छ ।

२) कुनै काँचको भाँडो वा गिलाँसमा मोती राख्ने यदि उसबाट किरणहरू निस्किए वा देखिए भने शुद्ध मोती रहेछ ।

३) जमेको घीउमा मोतीको दाना राख्नु यदि घीउ पग्लियो भने मोती असल रहेछ भन्नुपर्छ ।

मोतीलाई धानको खस्रो भूसमा बेस्करी मल्नु यदि मोको चूर पालिसमा केही माडिने वा कोरिने अथवा कुनै न कुनै फरक पर्ने खस्रो पन आदि देखिने भयो भने पनि नक्कली मोती हो। असली रहेछ भने पहिलेको भन्दा बढी चमक र दीप्तिमान हुन्छ । जब परीक्षामा नराम्रो भन्ने लाग्छ र नक्कली हो भन्ने निश्चित भयो भने त्यस्तो मोती धारण गर्नु हुँदैन । नक्कली वा दोषी मोती लगाउनाले हरेक किमिको दुःखकष्ट अपमान

दारिद्र्य आदि क्लेशले घेर्छन् । बरु चन्द्रमाको जप पूजाव्रत इत्यादि गर्नु दोषी मोती कहिल्यै पनि नलगाउनु ।

मोती धारण गर्ने व्यक्ति र विधि- मोती चन्द्रमाको रत्न हो । जसको जन्मकुण्डलीमा क्षीण दुर्बल अस्त कर्तरी केमद्रुम आदि जस्ता योगादिबाट दुषित भएको छ खास स्वयं मारकेश छैन र षष्टाष्टम स्थित छैन भने मोती धारण गर्नु अत्यन्त लाभदायक हुनेछ ।

१) यदि जन्मकुण्डलीमा चन्द्रमा सूर्यका साथ छ अथवा सूर्यस्थ राशिदेखि चौथो राशिको वर वा पर भए यस्तो स्थितिमा चन्द्रमा क्षीण र अस्त पनि हुनसक्छ । त्यसकारण त्यस्तो व्यक्तिले निर्दोष मोती धारण गर्दा अत्यन्त शुभ लाभ हुन्छ ।

२) यदि चन्द्रमा केन्द्र वा त्रिकोणमा भए षष्ठाष्टमेश नभए मोती फाइदाजनक हुन्छ ।

३) यदि चन्द्रमा पञ्चमेश भए १२ भावमा सप्तमेश भएर दोस्रोमा नवमेश भएर चतुर्थ भावमा दशमेश भए र पञ्चम भावमा तथा एकादशमेश भएर षष्ठम भावमा यसप्रकार बसेको भए सकेसम्म छिटो गरेर मोती धारण गर्नु अन्यथा धेरे नोक्सान खप्नुपर्छ ।

४) यदि वृश्चिक राशिको भई चन्द्रमा छैटौंमा बसेको भए पनि मोती धारण गर्दा शुभ हुन्छ ।

५) वृश्चिक राशिमा चन्द्र हुँदा प्रायः मोती शुभफल दायक हुन्छ ।

६) यदि षष्ठाष्टम वा बाह्रौं चन्द्रमा भए पनि मोती धारण गर्नुपर्छ भन्ने मत कतै कतै भए पनि मेरो अनुभवमा भने उक्त स्थानस्थ चन्द्रमा हानिकारक भएकाले मोती धारण गर्दा चन्द्रमा अझ बलवान भई झनझन धेरै हानि गर्न सक्छ । किनभने बलवान शत्रु झगडा गर्न आउँदा हतियार दियो भने आफ्नै दुर्दशा गराउँछ । त्यसकारण त्यस्तो अवस्थामा स्तुति जप पाठ पूजाका साथै मोती दान गर्नु परमोपयोगी हुन्छ ।

७) यदि चन्द्रमा नीचस्थ या अस्तगत अथवा राहुका सँगै या ग्रहणदिनको जन्म छ भने मोती शुभफलदाता हुन्छ ।

लग्न राशि अनुसार मोती धारण- १) मेष लग्नको कुण्डलीमा चन्द्रमा चतुर्थेश हुन्छ लग्नेश र गृहेशको मित्रता भएकोले षष्ठाष्टस्थ चन्द्र नभए मोती धारण शुभ हुन्छ ।

२) वृषलग्नमा चन्द्रमा तृतीयेश हुन्छ । लग्नेशसँगको मित्रता नहुँदा

चन्द्रमाको रत्न निष्फल वा विपरीत हुन्छ भन्ने मतमा मोती नलगाउने भनाइ पाइन्छ। अतिरिक्त मतमा शुक्रले शत्रुवत मानेको हुँदा पुरुषार्था स्थानस्थित चन्द्रमाको प्राबल्यताले मोती शुभ फलदायक हुन्छ। यस्तो विवादस्थमा भने स्वकीय अनुभवअनुसार धार गर्ने गरे हुन्छ।

३) प्रायः रत्नहरू त्रिकस्थ ग्रहको र त्रिकस्थानेशको जस्तै चन्द्रमाको पनि षष्ठाष्टमस्थ छ र लग्नेशको शत्रु र अष्टमेश द्वादशेशको मित्र छ भने मोती धारण अशुभ हुन्छ। त्यस्तो व्यक्तिले पूर्णिमाको व्रत सोमवारको व्रत चन्द्र चन्द्रमाको सोमेश्वर शिवजीको पूजा जप आदि काम गर्ने मोती दान गर्ने गर्नाले शुभ हुन्छ। यदि चन्द्रमा अशुभ स्थानमा छ र साथै पीडा दिएको अनुभव चन्द्रमाकै दशामा भए चन्द्रमाको दशाका दिनसम्म मात्र मोती धारण गर्नु अन्यथा नं. ३ मा भनेजस्तो स्थितिमा मोती नलगाउने।

मोती धारण विधि- प्रायः कुनै पनि रत्न हीराबाहेक ३ रत्तीभन्दा कम लगाउँदा प्रभाव पटक्कै पर्दैन। त्यसैले चन्द्रमाको २ अङ्क शुभ भए पनि ४।६ अथवा ११ रत्तिको मोती चाँदीमा जडान गरी शुक्लपक्षको सोमवार वा रोहिणी नक्षत्र पारी धारण कर्ताको ४।८।१२ नक्षत्र छलि रिक्ता तिथि नभएका दिन माणिक्य धारणमा भनेकै विधिले प्राण प्रतिष्ठा गरेर ११००० वार चन्द्रमाको वैदिक वा तान्त्रिक मन्त्र जपेर अथवा ॐ सों सोमाय नमः यो मन्त्र ११००० जपेर पूर्णिमाको दिन भए साँझमा अन्यथा प्रातः शुभबेलामा दाहिने हातको कान्छी औंलामा धारण गर्नु शुभ हुन्छ। यदि मोतीको माला भए पनि औंठी नै शुभ हुन्छ। मोती ७ र ८ रत्तिको नलगाउनु राम्रो हुन्छ।

मोतीका विकल्प- मोती लगाउन नसक्दा मोतीको बदलामा चन्द्रकान्तमणि अथवा सेतो पुष्पराजलाई लिन सकिन्छ। मोती अथवा उसको विकल्पवाल रत्नका साथ हीरा,पन्ना, गोमेद, वैदूर्य(लहसुनिया)मणि कहिल्यैपनि धारण गर्नु हुँदैन बरु शुभ मुहूर्त र साइत पारेर खिर्राको जरो चाँदीमा शीलप्याक गरी प्राणप्रतिष्ठा पूरा गरी धारण गर्दा धेरै लाभदायक हुन्छ।

मोतीले धेरै किसिमका रोगोपचार पनि गरिन्छ। रोगोपचारको विस्तार अन्य रत्न विज्ञान जस्ता ग्रन्थहरूमा हेर्नुपर्छ।

३. मूँगा-

मूँगा मङ्गल ग्रहको रत्न हो अर्थात् यो रत्नको स्वामी मङ्गल हो। यो हीरा मोती माणिकजस्तो खानि वा अन्य जीवबाट पाइँदैन। यो समुद्रमा

पाइन्छ। यो समुद्रको धेरै गहिराइमा वर्षौंदेखि जमेर बसेको एक किसिमको जरोको जस्तो आकृतिमा पाइन्छ । यसको नाम संस्कृतमा प्रवाल विद्रुम आदि अनेक छन् । त्यस्तै अन्य भाषामा भिन्नै नाम छन् अङ्ग्रेजीमा कोरल भनिन्छ । यो मुख्यतः चार रङ्गमा पाइन्छ । रातोसिन्दूरी रातो हिंगजस्तो र गेरूवा ।

प्राचीन ज्योतिषशास्त्रका अनुसार मूँगा एक किसिमको वानस्पतिक पदार्थ हो। देख्दा यसकोरूप कुनै लहराको जस्तो देखिन्छ। त्यसैले यसलाई लतामणि पनि भन्छन् । तर आजका वैज्ञानिक रत्नविदहरूका अनुसार मूँगा पोलिपाई किसिमको आइसि नोबाइल्स नामक सामुद्रिकजन्तुको उपज हो। यो जन्तु मूँगाको त्यस्तो वृक्ष बन्छ जसको न त मसिना हाँगा वा पालुवा हुन्छ न त पात केवल हाँगा हाल्दै दायाँवायाँ बढ्दै जान्छ। यसका लागि त्यो समुद्रमा छ सात सय फीट गहिरो चट्टानमा त्यसको तल्लो भागमा एक छुट्टै प्रकारको लालसको पदार्थको उपयोग गर्दै पलाउँदै जान्छ। यो वृक्ष यसको आधार हुन्छ।

मूँगाको आपेक्षिक घनत्व लगभग २.६५ तथा कठोरपन ३.५ देखि ४.० सम्म हुन्छ। यसमा घुमाउरोपन धेरै हुन्छ। दोहोरो वर्तन धेरै हुन्छ । कालो मूँगाको वर्तनाव केही कमी हुन्छ । यदि कालो रङ्गको मूँगामा हाइड्रोक्लोरिक अम्ल हाल्यो भने फिंज उठ्दैन कालो रङ्गको मूँगामा तताएको तार राखेपनि कुनै फरक पर्दैन अन्य मूँगामा भने तताएको तार आदि राख्यो भने कपाल डढेजस्तो गनाउँछ।

मूँगाको इतिहास– इतिहासमा मूँगा धेरै पुरानो रत्न हो जसको व्याख्या विवेचना धेरै पुराना ग्रन्थहरूमा आउछ। वृहत्संहिताको अनुसार मूँगाको जन्म असुरराज बलीको अङ्गबाट भएको हो। भारतमा प्राचीनकालदेखि नै मूँगा प्रचलन प्रभावकारी हुँदै आएको इतिहासविदहरू बताउँछन्। पछि पछि फ्रान्सीसियोहरूले र अङ्ग्रेजहरूले कृत्रिम बनाउन थाले। आधुनिक समयमा धेरै कृत्रिम मूँगाहरू धेरै जसो मुलुकमा कम्पनी नै खोलेका छन्। राम्रो असली मूँगा भूमध्य सागरको तटवर्ती क्षेत्रमा, अल्जीरिया, इरानको खाडीमा तथा हिन्दमहासागरमा इत्यादि सामुद्रिक क्षेत्रमा पाइन्छ।

मूँगाको गुण– मूँगको मुख्य चार गुण हुन्छन् जो निम्नलिखित छन्- १) चम्किलो हुनु २) कोणदार ३) वस्तुस्थितिभन्दा गहकिलो हुनु ४) चिप्लो चिल्लो हुनु।

असली मूँगा जाँच्ने विधि- दूधमा मूँगा हाल्यो भने दूधको रङ्ग रातो रङ्ग भएजस्तो देखिन्छ । रगतमा राख्यो भने चारैतिर रगत बाक्लो भएर टाँसिन्छ। यदि मध्यघाममा कपास वा कागजमाथि राख्यो भने कागज डढ्न थाल्छ। यस प्रकारको मूँगा असली हुन्छ। असली मूँगा भए पनि दोषी हुन सक्छ। दोष भन्नाले टुटेफुटेको हुनु छेदयुक्त हुनु आदि दोषी मानिन्छन् । दोषयुक्त मूँगा अरू रत्न जस्तै कष्टदायी हुन्छन् । त्यसैले दोषयुक्त मूँगा किन्नु लगाउनु हुँदैन ।

मूँगाको उपरत्न मूँगा किन्न नसक्दा उपरत्न भए पनि धारण गर्दा राम्रो हुन्छ । मूँगाको उपरत्न विद्रुमणि वा सँगमूगी धारण गरे पनि हुन्छ । यी उपरत्न पनि चिप्लो ओजनमा केही हल्का छिद्रवाला यस्तै हुन्छन् । अरू रङ्गको छिट्टा हुनु यसका स्वाभाविक गुण हो। यदि गर्भपतन भई दुःख भोग्नुपरेको भए यसको भस्म गर्भवतीको पेटमा लेप बनाएर लगाइदिए गर्भ सुरक्षित हुन्छ ।

मूँगा धारण गर्ने व्यक्ति र विधि- यदि मङ्गल ग्रह जन्मकुण्डलीमा केन्द्रस्थ अस्त नीच र पराजीत भएको भएमा मूँगा शुभदायक हुन्छ । यदि बालकलाई सुखारोग, पेटरोग, घाँटी आदिको समस्या छ र उसको कुण्डलीमा उपर्युक्त जस्तै मङ्गल भए २, ३ र ४ रत्तिसम्मको मूँगा शुभदिनमा धारण गराइदिनाले रोग निवारण हुन्छ ।

यदि मङ्गल, राहु या शनिका साथ बसेको भए जहाँ भए पनि मूगा धारण गर्ने। अनयथा ४, ८,१२ मा मङ्गल भए र ८,१२ को स्वामी भई लग्न वा छैटौंमा अथवा द्वितीय पञ्चम मा भए लग्नेशको शत्रु र अष्टमेशको मित्र भए मूँगा लगाउनु राम्रो हुँदैन। यस्तो अवस्थामा गणेश वा हनुमानको पाठपूजा जप गर्ने मङ्गलवारको व्रत गर्ने मूँगा दान गर्ने ।

राशि वा लग्नअनुसार पनि माथि उल्लेख गरेअनुसार नै गर्नुपर्छ । यदि अनिष्ट कारक मङ्गल छ भने मूँगा धारण राम्रो हुँदैन। यदि आफ्नो बल कमी भई शुभ हुन नसकेका ग्रहका लागि मात्र रत्नद्वारा सबल बनाई उचित अवस्थामा ल्याउने यदि अनुचित अवस्थामा बसेको ग्रहलाई भने मन्त्र पाठ स्तुतिद्वारा खुसी गराउने। यो क्रम सबै ग्रहमा प्रयोग हुन्छ ।

प्रयोग विधि- मूँगालाई यथासंभव सुनमा जडेर दाहिने हातको साहिंली औंलामा पूर्वोक्त विधिद्वारा प्राणप्रतिष्ठा गरेर मङ्गलवार सूर्योदयभन्दा एक घण्टा पछाडि धारण गरे पनि हुन्छ। मूँगा सकेसम्म ६ रत्ति भन्दा कम

नलगाउने औंठी पूजा गरेर १०,००० जप गर्ने । वैदिक मन्त्र जप्न नसके '३ॐ अं अगारकाय नमः' शुक्लपक्षको मङ्गलवार लगाउने ।

मूँगाको विकल्पमा- यदि मूँगा किन्न नसके मूगाको बदलामा सँगमूगी, तामडा, लालजेस्पर, कहरूवा (अम्बर) र विद्रुम मणि आदि धारण गर्न सकिन्छ ।

मूँगा भस्मद्वारा धेरै रोग निवारण हुन्छ । त्यसका विषयमा रत्न विज्ञान हेर्नु राम्रो हुन्छ ।

४. पन्ना

पन्ना बुध ग्रहको रत्न हो अर्थात् पन्नाको स्वामी बुध ग्रह हो । पन्ना एक यस्तो रत्न हो जुन कि अत्यन्त शुद्धता पाउनै सकिदैन । यदि यो शुद्ध पन्ना पाइन्छ भने त्यो हीराभन्दा पनि महङ्गो हुन्छ । शुद्ध पन्नाका विषयमा त प्रसिद्ध रत्नविशेषज्ञ प्लिनी नामक वैज्ञानिक विद्वान्ले लेखेका छन् । पन्नाको आभा (गुडप्रकाश) सूर्यको प्रकाशले पनि प्रवाहित गर्दैन र छायाँमा पनि प्रभा त्यत्तिकै हुन्छ । मैनवत्तिमा पनि उत्तिकै कान्तीमान रहन्छ । यदि आँखा अन्य वस्तु वा विषयाबट थकित भएको छ भने पनि जब पन्ना दर्शन गर्दा पुन ताजकिपन बढ्दछ । जसरी थकित व्यक्ति त पूर्ण निद्राबाट जागेपछि उत्तिकै ताजा भएर काम गर्न सक्छ त्यत्तिकै पन्ना हेरेपश्चात् शरीरमा ताजापन वृद्धि हुन्छ । यो असलीपन्नाको पहिचान हो । यो अत्यन्त कोमल(कतै नबिजाउने) रत्न हो । विभिन्न भाषामा पन्नाका अनेकौं नाम छन् । संस्कृतमा मरकत आदि नामले चिन्छ त्यस्तै अन्य भाषामा अन्य नाम छन् । अङ्ग्रेजीमा एमेराण्ड नामले चिनिन्छ । यो रत्न लगभग चार हजार वर्षपूर्वदेखि लोकप्रिय बन्दै आएको कुरा रत्न इतिहासविदहरू बताउँछन् । वैज्ञानिक दृष्टिकोणबाट पन्ना ग्रेनाइट, पेग्मेटाइट र चूनाको पत्थरको मिश्रणबाट बनेका भन्दछन् । यसको कठोरपन (साढोपन) ७.७५ र आपेक्षिक घनत्व २.६९-२.८० सम्म र वर्तनांक १.५७ देखि १.५८ अपकिरण ०.४ रहेको मानेका छन् । यो रत्न पारदर्शक या पार भासक हुन्छ । यो द्विवनित (दुईरूपको) हरियो र नीलो हुन्छ (नीलहरिरूप हुन्छ) । वर्तमान अवस्थामा सबभन्दा राम्रो श्रेष्ठ पन्ना कोलम्बियाको खानीबाट निकालिएको मानिन्छ । द्वितीय श्रेणीको पन्ना रूसको यूराल पर्वतबाट निकालिएको र ब्राजिलको पनि हो । यी ठाउँभन्दा भिन्न देशबाट

पनि पन्ना प्राप्त छन् । भारत, इटाली, अष्ट्रेलिया, अफ्रिका आदि देशबाट पनि पन्ना निकालिन्छ तर ती सबै सामान्यरूपका हुन्छन् ।

पन्नाको इतिहास पुरानै छ तर पनि यो युगमा भने ४-५ हजार वर्षअगाडि देखिमात्र व्यवहारमा आएको कुरा स्पष्ट छ । अनेक देशदेशान्तरमा यससको खानी रहेको छ । भारतमा यो रत्न मुख्य दक्षिण महानदी, हिमालय, सोमनदी र गिरनारमा पाइन्छ । पन्ना मुख्यतः पाँच रङ्गको हुन्छ १) पानी रङ्गको २) हल्का सेडुलको फूलजस्तो ३) सिरिसको फूलजस्तो ४) मयूर पङ्खजस्तो र ५) सुगाको पङ्खजस्तो हुन्छ ।

पन्नाको गुण- पन्नाको मुख्यतः ६ गुण हुन्छन् । १) चिप्लो चिल्लो २) पारदर्शक ३) घनदार, सघन, गहकिलोपन ४) चारैतिर किरण छरिने खाल्को देखिने ५) यो स्निग्ध लचकिलो पाराको ६) सूर्यजस्तै स्वतः प्रभावान, उद्दीप, कान्तिमान ।

आयुर्वेद प्रकाशनामक ग्रन्थका अनुसार शुद्ध पन्ना पानीजस्तै स्वच्छ पारदर्शक भारीपन आवादार लोचदार मृदु बहुरङ्गी गुणले युक्त हुन्छ । यस्तो पन्ना अति उत्तम मानिन्छ ।

पन्नाको शुद्धताको परीक्षण- पन्नाको शुद्धताको परीक्षा निम्नलिखित विधिअनुसार गर्न सकिन्छ ।

१) यदि पन्नालाई पानी भरेका गिलाँसमा हालिदिनु, त्यसबाट हरि यो रश्मि निस्कन्छ । यदि निस्किएन भने पन्ना राम्रो छैन ।

२) यदि सक्कली पन्नालाई सेतो कपडामा राखेर थोरै अग्लो ठाउँमा झुण्ड्याउनु वा राख्नु एकैछिन पछि त्यो कपडा हरियो रङ्गको देखियो भने शुद्ध पन्ना हो भनेर जान्नुपर्छ ।

३) यो औसतमा भन्दा केही हलुको जस्तो लाग्नु ।

उपर्युक्त गुण नभएका पन्नाले आफ्नो साध्यसिद्ध गर्न सक्दैनन् । यसप्रकार परीक्षा गरेर पनि पन्ना दोषयुक्त हुन सक्छन् । दोष भन्नाले चर्केको खाल्टा परेको धेरै दाग धब्बा भएको, रक्तविन्दु देखिने कतै महजस्तो झल्कने पहेंलो विन्दु भएको पातला रेखा भएको यस्ता पन्ना दोषी हुन दोषी रत्न धारण गर्नु राम्रो हुँदैन ।

पन्नाको उपरत्न- यदि शुद्ध पन्ना पाउन सकिन अथवा किन्न पनि सकिएन भने निर्दोष उपरत्न धारण गर्दा पनि हुन्छ । पन्नाको उपरत्न सँगपन्ना, मरगज, पीतपन्नी यिनीहरूमा निर्दोष भए धारण गर्न योग्य हुन्छ ।

हरियो जर्कन हरियो हकिक यो पनि पाएमा राम्रो हुन्छ ।

पन्ना धारण गर्ने व्यक्ति र विधि- पन्ना रत्न प्रायः सबैका लागि उत्तम फलदायक छ । तर पनि कतै कतै भने हानिकारक पनि हुन्छ । यदि कर्कट लग्न छ र चन्द्रमा पञ्चम स्थाना छ भने पन्ना हानिकारक र पागलपनको वृद्धिकारक धनपुत्रादिमा बाधा ल्याउने हुन्छ ।

यदि बुध ग्रह मारकेश अष्टमेशसँगै भए पनि पन्ना लाभदायक हुँदैन । यदि पापग्रह अष्टमस्थ ग्रहको मित्र भई पूर्णदृष्टि अष्टममा दिने होस् र साथै बुध ग्रह बसेको भए पन्ना धारण गर्नु दुर्घटनालाई निम्ता दिनु हो ।

अन्य अवस्थामा पन्ना सबैलाई शुभकार मानिन्छ । यदि पन्ना धारण गर्न अयोग्य र माथि बताएअनुसार बुध अनुकूल नभए वैष्णवीदेवीको पूजा बुधवारको व्रत एकादशीको व्रत इत्यादि मन्त्र जप हवनबाट पनि शुभ हुन्छ । पन्ना धारण गर्न नहुनेले दान गर्दा पनि उत्तिकै फल प्राप्ति हुन्छ ।

पन्ना धारण गर्दा बुधवार सुन वा पहेंलो धातुमा जडान गरी पूर्ववत प्राणप्रतिष्ठा गरेर ३ रत्ति भन्दा बढी पन्ना सूर्योदयभन्दा दुईघण्टापछि धारण गर्नु राम्रो हुन्छ । बुधको मन्त्र 'ॐबुं बुधाय नमः' ९००० जप गर्नुपर्छ । पन्ना दाहिने हातको कान्छी औंलामा धारण गर्नुपर्छ ।

५. पुष्पराज (पुखराज)

पुष्पराज एक महत्त्वपूर्ण रत्न हो । यसलाई गुरुरत्न पनि भन्दछन् अर्थात् यो रत्नको स्वामी ग्रह बृहस्पति हो । हीरा र माणिक्यभन्दा कम्ती कठोरता भएको रत्न पुखराज हो । चिप्लो मुलायम नरम हुनु रत्नको स्वाभाविक गुण हो । यसका विभिन्न भाषामा विभिन्न नाम छन् । अङ्ग्रेजीमा टोपाज र संस्कृतमा पीतस्फटिक आदि नामले प्रसिद्ध छ । पुष्पराज मुख्यतः पाँच प्रकार अथवा पाँच रङ्गको हुन्छ । १) वेसारजस्तो २) केसर (सिंहकेशर) जस्तो ३) निवुवा कागतीको पाकेको बोक्राजस्तो ४) सुनजस्तो ५) सेतोपहेंलो मिलेको जस्तो । श्वेतपीतमा कतै श्वेत भाग बढी र कतै पीत भाग बढी भएका पनि हुन्छ ।

प्राचीन शास्त्रअनुसार सुन्दर र श्रेष्ठ पुष्पराज पहेंलो कान्तिवाला, हातमा लिंदा वजनदार भएजस्तो लाग्ने, दाग धब्बा नभएको पारदर्शी चिल्लो चिप्लो कतै नबिभ्फाउन छिद्ररहित पहेंलो कनेरको फूलजस्तो चम्पाफूलजस्तो चमकदार र दीप्तिमान हुन्छ । यो क्षयरोग नाशक, यशकीर्ति

सुखवैभव आनन्ददायक र आयुवृद्धि गर्ने गुण शक्तियुक्त भएको रत्न हो। पुष्पराज धेरै रङ्गमा पाइए पनि वस्तुतः पुष्पराज रङ्गहीन नै हुन्छ। पुष्पराजलाइ अनेक जाँच गरिन्छ। पानीजस्तो स्वच्छ पनि हुन्छ। आजभोलि पहेंलो शिखर सराव (रक्सी) जस्तो आभावाला धेरै चल्तीमा रहेका छ। कहींकतै सामान्यपहेंलो सामान्य थोरै हरियो पनि पुष्पराज पाइन्छ परन्तु रातो र गुलाबी भने पाउन दुर्लभ छ। हुन त सबै रङ्गमा पुष्पराज पाइन्छ भन्ने शास्त्र प्रमाण छ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोणबाट यो रत्न एल्मुनियमको फलूओ सिलिकेट हुन्छ। फ्लोरीन तत्त्वबाट बनेको पुष्पराज धेरै राम्रो गन्तीमा आउँदैन। पुष्पराजमा फ्लोरीनको मात्रा १५.५ लगभगमा र साह्रै अल्पमात्रामा जलतत्त्व पाइन्छ। यसको भित्री भागमा अत्यन्त सूक्ष्म तरल पदार्थ अथवा ग्यासीय पदार्थ अथवा कार्बन डाइअक्साइड तथा केही अन्य अशुद्धि वा अनपहिचान पदार्थ पाइएको छ। प्राकृतिक पुष्पराजको रव त्रिकोणाकार तथा मीनारी सीरावाल हुन्छ।यसको कठोर (साह्रो)पन ८.० आपेक्षिक घनत्व ६.५३ वर्तनांक १.६१ देखि १.६२ सम्म दोहोरोवर्तन ०.००८ तथा अपकिरण ०.०१४ हुन्छ। पुष्पराजको द्विवर्णीता तीक्ष्ण हुँदैन। यसलाई रगड्दा (घोट्दा) विजुली उत्पन्न हुन्छ। यसको आभा काँचजस्तै हुन्छ।

पुष्पराजको इतिहास– पुष्पराजको इतिहास अति प्राचीनकालको छ। बराहमिहिरले पनि यसको चर्चा गरेका छन्। पुष्पराज, जापान, म्याक्सीको, तस्मानीया, कोलेरिडो न्यू इग्लैण्ड र श्रीलङ्कामा पाइन्छ। यहाँ पाइने पुष्पराज राम्रा सक्कली नै पाइन्छ। पुष्पराज र माणिक्य भन्नै उस्तै हुन्छ। त्यस्तो पुष्पराज राम्रो मानिन्छ। भारतमा मुख्यतः पुष्पराज उडीसामा, बंगालमा ब्रह्मपुत्रको आसपास हिमालय एवं विन्ध्याचल पर्वतमा यस्तै अन्य क्षेत्रमा पनि पुष्पराज पाइन्छ।

पुष्पराजको विशेष गुण– १) चिप्लो र चिल्लो हुनु २) चमकरदार कान्तिवाला ३) पानीजस्तो ४) लगभग पारदर्शी।

पुष्पराजको परीक्षा– १) यदि पुष्पराजलाई दूधमा २४ घण्टा सम्म राख्दा यसको चमकमा क्षीणता आएन भने शुद्ध पुष्पराज हो।

२) यदि सेतो कपडामा पुष्पराज राखेर घाममा हेर्ने। त्यसरी हेर्दापहेंलो किरण आएन भने पुष्पराज नक्कली हुन्छ। त्यसकारण कपडामा पहेंलो किरणहरू देखिनुपर्छ।

३) यदि विषालु जन्तु वा कीराले टोक्यो भने तुरुन्त पुष्पराज लगाइदिंदा अर्थात् कीराले टोकेको ठाउँमा पुष्पराज दल्दा विषादि शान्ति हुन्छ ।

अरू रत्न जस्तै दोषी पुष्पराज पनि धारण गर्नु वा दान गर्नुहुँदैन । अरू रत्नमा भनेजस्तै दागधब्बा आदि पुष्पराजका पनि दोष हुन्छन् । त्यस्ता रत्नहरू कुनै पनि राम्रा हुँदैनन् ।

पुष्पराजको उपरत्न- धीया, केशरी, सोनल, कैरू सोनेला यी उपरत्न पुष्पराजका अभावमा धारण गर्न हुन्छ । साथै पुष्पराजको विकल्पमा महेंलो मोती पहेंलो जर्कन उपरत्न पुष्पराज धारण विधि अनुसार धारण गर्दा हुन्छ ।

पुष्पराज धारण गर्ने व्यक्ति र विधि- रत्न धारण गर्ने विषयमा प्रायः सबै ग्रहको उस्तै परामर्श दिने हो । यदि रत्न स्वामी ग्रह मारकेश र ६।८।१२ भावेशसँग सम्बन्ध छैन र रत्नस्वामीग्रह आफू पनि ८।१२ मा छैन साथै लग्नेशको शत्रु र अष्टमेशको मित्र छैन भने सम्बन्धीत रत्न धारण गर्नु हुन्छ ।

विशेष यदि उक्त स्थितिको न भई उचित स्थानमा पनि नीच अस्त पाप युक्त पाप दृष्ट र निर्बल छ भने ग्रह सम्बन्धी रत्न धारण गर्नुपर्छ । यस्तो अवस्थामा रत्न धारण गर्नाले अति नै उत्तम लाभदायक शुभ मङ्गलै मङ्गल हुन्छ । यदि रत्न धारण गर्न नहुने अवस्थामा सम्बन्धित ग्रहको विशेष पूजापाठ जप होम र सम्बन्धीत रत्न दान गर्दा मत्रै फाइदा हुन्छ ।

पुष्पराजको प्रयोग- पुष्पराज सुनको औंठीमा जडान गरी लगभग तीन रत्ति भन्दा बढी होस् शरीरको तौल अनुसार ४।५।६।८।९।१२ रत्ति सम्मको पुखराज विहीवार माथि बनाएअनुसार उपासन प्राण प्रतिष्ठा सहित गरी ॐ बृं बृहस्पतये नमः यो मन्त्र १९००० जप गरेर कुलदेवताको पूजा पनि गर्नु । सकेसम्म शुक्लपक्षको विहिवार सूर्यास्तभन्दा एक घण्टा अगाडि दाहिने हातको तर्जनी (चोरी) औंलामा धारण गर्ने गायत्री जपमन्त्र गर्ने गुरुमन्त्र जप गर्ने ।

६. हीरा

हीरा अत्यन्त मूल्यवान रत्न हो जसको स्वामी ग्रह शुक्र हो । यो एक दुर्लभ रत्न पनि हो । ज्योतिष तथा रत्नसम्बन्धी अति प्राचीन ग्रन्थमा हीराको बारेमा धेरै व्याख्या वर्णन गरेको पाइन्छ । वास्तवमा हीरा के हो ? कस्तो हुन्छ ? कहाँ मिल्छ ? यसको गुण र दोष के के हुन् ? यसको

उपयोग कुन कुन अवस्था स्थिति वा क्षेत्रमा गर्नुपर्छ वा गरिन्छ ? भन्ने इत्यादि प्रश्नको उत्तररूप यहाँ प्रस्तुत गरिन्छ।

भारतवर्षमा र वोर्नियामा प्राचीनकालदेखि नै हीरा चिनिसकेको थियो र यसको प्रयोग पनि गर्ने गर्थे। उनीहरू हरहालतमा हीरा राम्रो मूल्यवान रत्न हो भनेर व्यवहार गर्थे। आजभोलि त यो विश्वमा प्रचार भइसकेको छ चल्ती पनि धेरै बढेको छ। हीराको पनि अरू रत्नजस्तै धेरै नाम छन्। संस्कृतमा हीरा वज्र वज्रमणि इन्द्रमणि इत्यादि अनेक नाम छन् भने अङ्ग्रेजीमा डायमण्ड नामले चिनिएको छ। हीरालाई सबैले रत्नराज भन्ने पनि गर्छन्। किनभने यो आफ्नै गुणरूप र उपयोगका कारण सर्वश्रेष्ठ नै छ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण अनुसार हीरा सबैभन्दा कठोर चिज हो। यसको कठोरता (साह्रोपन) १०.० रहेको छ। यसलाई अरू कुनै चिजले कोर्न र घोट्न सक्दैन। सबै धातु र पत्थरमा यो नै कठोर भएकोले यसबाट सबै काटिन्छन्। यो अरूद्वारा काटिंदैन। यसको आपेक्षिक घनत्व ३.४ र वर्तनाङ्क २.४१७ देखि २.४१९ सम्म हुन्छ। वर्तनाङ्क पनि अरू पदार्थमा भन्दा धेरै हुन्छ। यसप्रकार यसका भित्र प्रवेश गर्ने प्रकाश सबै परावर्तन भएर बाहिरिने गर्छ। त्यसकारण यो रत्नहरूमा सबैभन्दा प्रकाशमान हुन्छ। पूर्ण परार्वतन हुनाले अरू रत्नभन्दा चम्किलो दीप्तिमान हुन्छ। यसको चमकलाई हीरकद्युति भन्ने गर्छन्। हीरा कटिङ राम्रो मिलाएर गरेको भए त्यहाँबाट इन्द्रधनुषजस्तो आभा देखिन्छ। त्यस्तो झिलमिलाहट द्युति हुन्छ।

प्राचीनकालदेखि नै हीराका विषयमा ज्ञान गर्ने इच्छा मानव हृदयमा जाग्रित भइरहेको थियो। हीरा आखिर के हो ? हीराको उत्पत्ति हुनुमा के रहस्य छ ? इत्यादि बारेमा ज्ञान प्राप्त गर्न हामी सबैलाई पनि उत्सुकता रहेको छ। वस्तुतः लगभग २०० करोड वर्ष पहिले पृथ्वीभित्र २०० कि.मी. भन्दा बढी गहिराइमा जब अत्यधिक दबाब र तापमान बढ्दै गयो, त्यसै ताप र दबाबको कारणले गर्दा रासायनिक पदार्थले कोइलाको रूप लिँदै आफ्नो स्वरूप परिवर्तन गर्दै गयो। यो परिवर्तनको क्रममा अत्यन्त घनत्व र प्रकाशत्व धारण गर्दै हीराको रूपमा तयार हुन पुग्यो। हीरा वास्तवमा स्वयं क्रिष्टलीयरूपमा कोइलामा कार्बन नै हो। यदि कुनै जमिनमा कालो क्रिष्टल धेरै मात्रामा पाइन्छ भने त्यस्तो जमिनको भित्र हीरा पाइने सम्भावना हुन्छ।

यदि कार्बन या क्रिष्टलको परिवर्तन हीरा हो भने यिनीहरूको गुण यत्रो आकाशजमिनको फरक कसरी भयो ? एकतत्त्व कालो कोइला नरम हुन्छ अर्को तत्त्व प्रकाशमान अत्यन्त कडा होस् कसरी हुन्छ भन्ने विषयमा वैज्ञानिक परीक्षणद्वारा सिद्ध भएको कुरा विशेष रत्नविज्ञान र सम्पूर्ण रत्नविज्ञान आदि ग्रन्थमा सप्रमाण उल्लेख पाइन्छ । यहाँ ग्रन्थ विस्तार भयको कारणले सूचना मात्र गरेको हो ।

हीरा रत्नले प्राचीनकालदेखि नै सबैलाई आफूतिर आकर्षित गऱ्यो । चाहे त्यो राजा महाराजा होस् चाहे त्यो गरिब किन नहोस् जससँग हीरा छ त्यसप्रति मानिसहरू मोहित हुन्थे । मोहित व्यक्तिहरू उसलाई मान सम्मान र उसलाई खुशि पार्न आफ्नो जीवन अर्पन्छन् ।

वैज्ञानिक न्यूटन, आइन्स्टाइन, रामन आदिले पनि यही कुरा प्रमाणित गरेका छन् । भारतीय वैज्ञानिक चन्द्रशेखर वैंकट रामन इत्यादिले हीराका बारेमा आफ्नो एक 'संस्मरण' नामक ग्रन्थमा लेखेका छन्-'हीरा एक महत्त्वपूर्ण पदार्थ हो, जसका विषयमा जान्न मात्रै पनि मानिसको विशेष इच्छा हुन्छ ।'

हीराको इतिहास- प्राचीनकालमा नै भारतमा हीरा चिनिसकेका थिए किनभने हाम्रो प्राचीन ग्रन्थमा हीराको व्याख्या वर्णन धेरै भएको पाइन्छ । त्यसकारण यो जानकारी भएको छ कि उस समयका मानिसहरू न केवल आभूषणका लागिमात्र प्रयोग गर्थे अपितु रोगनिधानका लागि पनि हीराको खोज हुन्थ्यो । ग्रहशान्ति गृहक्लेशका लागि पनि हीरा महत्त्वपूर्ण वस्तु हो ।

प्राचीन भारतमा हीराको खानी मुख्य दक्षिण भारतमा थियो । मद्रासको पिनेर नदीदेखि लिएर बुंदेल खयडको सुन, खान नदीसम्म हीरा पाइने गर्थ्यो । गोलकुण्डा हीराको प्राप्तिस्थान विख्यात थियो । वर्तमान अवस्थामा मद्रास, मध्य प्रदेश, उडीसा तथा गुजरात इत्यादि ठाउँमा हीरा खानी छन् र प्रतिवर्ष दुई हजारदेखि चारहजार क्रेटसम्म हीरा निकाल्ने गर्छन् ।

भारतकै तरह बोर्नियाँमा पनि प्राचीनकालदेखि नै हीरा निकाल्ने गर्थे । सन् १७२५ मा ब्राजीलमा पनि हीरा खानी चालु भयो । तर पुर्तगाली शासनपछि यो उद्योग बन्द भयो । दक्षिण अफ्रिकामा पनि हीरा खानी छन् । सन् १८६७ मा यहाँ खानी सुरू गरेका हुन् । वर्तमानमा धेरै हीरा दक्षिण अफ्रिकाबाटै प्राप्त हुन्छ । प्राचीन ग्रन्थमा हीरा आठ रङ्गको हुन्छ भनेको पाइन्छ ।

१) अत्यन्त सेतो २) कमलासन ३) वनसपती जस्तै हरियो ४) गँदेको फूलजस्तो ५) नीलकण्ठको घाँटीजस्तो नीलो रङ्गको हुन्छ।६) श्यामल ७) तेलीया (तोरीतेल जस्तो) ८) पीतहरा (पहेंलो र हरियो मिश्रित हुन्छ)। हुन त हीराको वर्गीकरण धेरै तरहले गरेको पाइन्छ तर पनि आफ्नै सुविधाको लागि हीरालाई दुई भागमा राखेर विश्लेषण गर्दा स्पष्ट हुन्छ। १) रत्नीय हीरा २) औद्योगिक हीरा।

रत्नीय हीरा- रत्नीय हीरा यो पठनपाठन र हामीले जान्न खोजेको हीरा भएकाले यसैलाई केन्द्रबिन्दुमा लिएको छ। भारतमा प्राचीन ग्रन्थका अनुसार रत्नीय हीरा तीन प्रकारका छन्-नरहीरा, नारीहीरा र नपुंसक हीरा।

नरहीरा- नरहीरा अत्यन्त चमकदार यसबाट इन्द्रधनुको जस्तै किरण प्रस्फूटित हुन्छ। यसलाई पानीमा हाले पछि पनि पानीबाट रोशनीको चमक बाहिर आउँछ। यसमा षड्कोणाकृति देखिन्छ। नरहीराको रङ्ग श्वेत हुन्छ। यसमा न रेखा हुन्छ, न विन्दु नरहीरा सबैका लागि उत्तम र शुभ मानिन्छ।

नारी हीरा- नारी हीरा आयतकार, चेप्टो अथवा गोलो खालको हुन्छ। यसमा साना साना विन्दु र रेखा देखिन्छन्।

नपुंसक हीरा- नपुंसक हीरा गोलो हुन्छ यसमा कोण र पीनको किनारा देखिंदैन। यो नर र नारी हीराभन्दा भारीपनको हुन्छ।

हीराको वर्ण- प्राचीन ग्रन्थअनुसार हीराको चारवर्णमा विभाजन पाइन्छ। १) ब्राह्मण हीरा २) क्षेत्रीय हीरा ३) वैश्य हीरा ४) शूद्र हीरा। यसको विस्तृत व्याख्या सम्पूर्ण रत्न विज्ञानमा छ।

हीराको दोष- दोषयुक्त रत्नधारण गर्न नहुने कुरा पूर्वपाठ बाटै सिद्ध भइसकेको छ। अब यहाँ दोषयुक्त हीराको सूचना गरिन्छ। १) पीतमुखी हीरा दोषी हुन्छ (जसको मुख पहेंलो हुन्छ), वंशनाशक हुन्छ। २) रक्तमुखी धन वैभव नाशक हुन्छ। ३) श्यामजीवि जो श्याम रङ्गको छ अथवा जसको जिब्रोजस्तो कालो रेखा देखिन्छ त्यो यसले बल स्वास्थ्य कमजोर गराउँछ। ४) धुमिल (धमिलोपन) पशुधन नाशक। ५) खाल्टोवाला अनेक रोगकारक हुन्छ। ६) सुन्न (चमक रहीत) धननाशक। ७) कागको पाइलो तुल्य, अनिष्टकारक ८) क्रस रेखा वैरभाव बढाउने हुन्छ। ९) काटिएको जस्तो धारवाला चोर भय हुन्छ। १०) अर्कै रङ्गको विन्दु हुनु यो पनि अशुभ नै मानिन्छ।

हीराको गुण- १) चमकदार दीप्तमान २) चिल्लो चिप्लो कतै नबिजाउने ३) चारैतिर किरण फ्याँक्ने ४) अँध्यारोमा पनि जुनकीरीजस्तै

मधूरो प्रकाश देखिने ।

हीराको विशेषता- हीरामा खास विशेषताहरू हुन्छन् । १) यो धारण गर्दा भूत प्रेतको डर हुँदैन । २) युद्धमा विजय शत्रुवशीकरण गर्ने शक्ति मिल्छ । ३) धन ऐश्वर्य वंश वृद्धि ४) स्थायित्वपन बढ्छ । कामक्रीडामा पूर्णशक्ति आउँछ । अन्य विषादिको वा विष प्रद जन्तुको भय पनि हुँदैन । बल बुद्धि स्वस्थ हुन्छ ।

शुद्ध हीराको जाँच- हीराको जाँच यसप्रकार गर्न सकिन्छ-

१) उम्लिंदै गरेको दूध झिकेर उसमा हीरा हालिदिनु त्यत्ति नै खेर दूध शीतल ठण्डा हुन्छ । त्यस्तै न भए हीरा नक्कली छ ।

२) यदि तातो घिउमा हाल्यो भने घीउ जम्न थाल्छ ।

३) हीरालाई घाममा राख्दा इन्द्रेनीको किरण निक्लन्छ ।

४) यदि तोतेबोली बल्ल बल्ल बोल्न लागेको बच्चाको मुखमा राखिदियो भने बच्चा स्पष्ट बोल्न थाल्छ ।

कृत्रिम हीरा- आजकाल बजारमा प्रशस्त मात्रामा पाइने हीरा नक्कली कृत्रिम हीरा हो । बजारवालाहरू यस्तै सस्तो हीरालाई असली भन्ने गर्छन् । प्राचीनकालदेखि नै कृत्रिम हीरा बनाउने गरेको पाइन्छ । अमेरिका इंगल्याण्डजस्ता ठाउँमा कृत्रिम हीरा बन्ने गर्छ । कृत्रिम हीरा चार प्रकारको हुन्छ । १) संश्लिष्ट २) पुनर्निर्मित ३) अनुकृत ४) श्लिक । यसमा पनि संश्लिष्ट हीरा बनाउँदा महङ्गो पर्ने भएकाले बनाउँदैनन् । अरू प्रकारका भने बन्ने गरेको पाइन्छ । सन् १९५५ मा अमेरिकी कम्पनी 'जनरल इलैक्ट्रिक'ले नक्कली हीरा निर्माण गरेको थियो । उसले ग्रेफाइटको कण मिलाएर हीरा निर्माण गरेको थियो । यो हीरालाई औद्योगिक हीरा भन्ने गरिन्छ । औद्योगिक हीरा रत्नीया कार्यमा उपयोग गरिंदैन ।

हीरा धारण गर्ने व्यक्ति र विधि- १) हीरा विषनाशक रत्न भएकाले जङ्गलमा घुम्ने फिर्ने र विषधर जनावरसँगका क्रियाकौतुक गर्ने मानिसहरूले अवश्य हीरा धारण गर्नुपर्छ ।

२) भूतप्रेत द्वारा दुःखकष्ट भएका व्यक्तिहरूले हीरा धारण गर्नुपर्छ ।

३) यदि घरमा पतिपत्नीबीच झगडा भइरहन्छ भने दुबै दम्पतीले नै हीरा धारण गर्नुपर्छ ।

४) यदि शुक्र शुभ भावको स्वामी भएर ६।८ मा बसेको भए हीरा धारण गर्दा राम्रा हुन्छ ।

५) कुनै प्रेमी वशीकरण गर्नुपरेमा शुक्रको मन्त्र जप र हीरा धारण गर्दा अभिलाषा पूरा हुन्छ ।

६) शुक्रको दशा अन्तर दशा र शुक्रका शत्रुग्रहको शुक्रका महादशामा अन्तरदशा चलेका समयमा त्यो समयावधिसम्म हीरा धारण गर्नु राम्रो हुन्छ ।

७) बलवीर्य र कामेच्छा सबल गराइराख्न हीरा धारण गर्नुपर्छ ।

८) शुक्र अस्त, पाप दृष्ट नीचस्थ वा अन्य कुनै कारणले बलहीन छ भने हीरा धारण गर्नुपर्छ । अन्यथा शुक्र मारकेश छ लग्नेशको शत्रु अष्टमेशको मित्र छ र स्वयं अष्टमस्थानमा छ अथवा नीच शत्रुगृही पापयुक्त वृष तुला र मीन राशि छोडी अरू कुनै राशिमा भई १२ मा बसेको भए यस्तो व्यक्तिले हीरा नलगाउनु राम्रो हुन्छ । रोग उपचारका लागि पनि हीरा लिन सकिन्छ। यसको लागि सर्वरत्न आयुर्वेद नामक पुस्तकबाट जान्न सकिन्छ।

७. नीलम

नीलम एक बहूमूल्य र शीघ्र प्रभाव पारिहाल्ने रत्न हो । यसका स्वामी ग्रह शनिश्चर हो । माणिक्यजस्तै यो पनि कुरन्दम् समूहको रत्न हो। यो समूहको रत्नको रातोलाई माणिक्य अरू खालकोलाई नीलम भन्ने गरेको पाइन्छ। भनिन्छ श्वेतनीलम्, हरितनीलम्, वैगनीनीलम् इत्यादि। खासै भन्दा आकाशी रङ्गको चम्किलो गहिरो नीला, मखमली नीलो आदि रङ्गको नीलमलाई भने नीलम भन्ने गरेको पाइन्छ। अरू रत्न जस्तै अनेकौं भाषामा अनेकौं नामले यो रत्न प्रसिद्ध छ । संस्कृतमा नीलमणि, इन्द्रनीलमणि र तृषाग्राही आदि नाम छन् भने अङ्ग्रेजीमा सैफियर नामले चिनिएको छ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोणमा नीलमका कठोरतापन ८.० छ । यसको आपेक्षित घनत्व ४०.३ र वर्तनाङ्क १.७६ र द्विहावर्तन ०.००८ हुन्छ। यो द्विवर्णित गुणवाला हुन्छ। अति स्पष्ट, विना सूक्ष्म दर्शकको पनि दृश्य, भंगुर तथा हीराको अपेक्षा कम अपकिरणन वाला हुन्छ । यसकारण नीलमको चमक अर्थात् उज्ज्वल पनि हीरा भन्दा कम हुन्छ। यसै आधारमा श्वेत नीलम र हीराको फरक व्याख्यान भएको हो ।

इतिहासमा नीलम– नीलम पनि इतिहासमा धेरै पुरानो समयमा चर्चित भइसकेको रत्न हो । धार्मिक ग्रन्थअनुसार दैत्यराज बलिको आँखाबाट नीलम बनेको हो । भारतीय रत्न ग्रन्थमा नीलम दुई प्रकारको बताएको

छ। प्रथम जलनीलम र द्वितीय ईन्द्रनीलम। लघुनीलमका भित्र सफेदीपन हुनु लाई जलनीलम र श्याम आभायुक्त नीलिमा प्रस्फुटित गर्नेवाला निलम इन्द्रनीलम भनिन्छ। वास्तवमा यो अति कडा नीलोमा रातो मिश्रित भएर वैजनी रङ्गको हुन्छ।

सर्वश्रेष्ठ नलिम भारतको कश्मीर राज्यमा पाइन्छ। नीलमको खानी वहाँको जान्सकर पहाडमा १४९४० फीट उचाइमा सुमजाम नामक गाउँका नजिक रहेको छ। रत्नविशेषज्ञका धारणा छ कि राम्रो अति प्रसिद्ध श्रेष्ठ नीलम भारतको खानिबाटै पाइन्छ। सन् १८८७ मा रीवा राज्यमा पनि राम्रा नीलम पाइएको थियो। भारतका अतिरिक्त अमेरिका, अफ्रिका, म्यानमार तथा श्रीलङ्कामा पनि नीलम पाइन्छ।

नीलमको प्रभाव– सबै रत्नमा मात्र नीलम नै यसप्रकारको रत्न हो, जो हेर्दाहेर्दै आफ्नो असर देखाइदिन्छ। यसकारण नीलम धारण गर्दा अति नै सावधानी हुनुपर्छ। यदि नीलम धारण गरेपछि निम्नलिखित घटनाहरू अथवा सूचनारूप कुनै सङ्केत भयो भने नीलम तुरुन्त झिकेर राख्नुपर्छ।

१) यदि नीलम लगाउँदा आँखामा पीडा बढ्दै गयो भने। अथवा मुखाकृतिमा असजिलोपन भए।

२) यदि नीलम लगाएपछि डर लाग्दो अवस्थामा पुगियो अथवा नराम्रो स्वप्न देखियो भने

३) यदि कुनै नराम्रो देख्न सुन्नमा आयो आफैंलाई वेमज्जा लाग्यो इत्यादि अवस्थाले कुनै न कुनै असन्तुलित भयो भने नीलम नलगाउने जबर्जस्ती लगाएमा ठूलै नोक्सान हुन्छ।

नीलमको गुण– १) नीलमको रङ्ग नीलो नै राम्रो हुन्छ। अझ मयुरको पङ्खजस्तो श्रेष्ठ मानिन्छ।

२) वैजनी आदिबाट पनि नीलो रश्मि देखिने राम्रो हुन्छ। यदि नील रश्मि देखिने छैन भने वैजनी राम्रो हुँदैन।

३) यो पारदर्शी साफसुन्दर हुन्छ।

४) चम्किलो चिप्लो चिल्लो हुनपर्छ।

५) यसको पानी सुन्दर श्रेष्ठ देखिन्छ। यो सुडौल हुन्छ।

नीलम शुद्धताको जाँच–

नीलमको विभिन्न तरिकाबाट जाँच गरिन्छ।

१) यदि मसिनो पराल वा छलिको कणमा राखिदिंदा त्यस्ता कणहरू टाँसिन्छ ।

२) यो घाममा प्रखर चम्किलो हुन्छ

३) पानीको गिलाँसमा राख्दा पानी नीलो वा नील किरण देखिन्छ ।

४) दूधमा नीलम राख्दा दूध नीलो हुन्छ ।

नीलमको पत्थर शुद्ध भए पनि अरू त्रुटी हुन सक्छन् । त्यस्ता त्रुटी भनेको दूधिया रङ्गको हुनु, नीलोमा सेता धर्सा देखिनु, चीरा परेजस्तो हुनु वा चर्कनु, स्पष्ट दुई रङ्गको हुनु, राता वा सेता पहेंला छिट्टा देखिनु, कालो धब्बा हुनु, चमक नहुनु जालजस्तो किरमिर हुनु, कोत्रेको खाल्ला पारेको हुनु । यी सबै दोष हुन् र दोषयुक्त रत्न कुनै पनि धारण गर्नुहुँदैन ।

नीलमको उपरत्न- नीलम धारण गर्न नसक्दा यसको उपरत्न धारण गरे पनि हुन्छ । उपरत्नहरू यसप्रकार छन् । नीलमका खास उपरत्न दुइवटा मात्रै छन्, लीलिया र जमुनीया ।

लीलिया- यो नीलो रङ्गको हुन्छ । हल्का रक्तिम (रातो रातोजस्तो देखिने) हुन्छ । यसको पनि चमक राम्रै हुन्छ । लीलिया गङ्गा तटतिर पाइन्छ ।

जमुनिया- यसको रङ्ग जामुनको दानाजस्तो हुन्छ । यो भन्दा फरक गुलाबीजस्तो जस्तो मात्रै हुन्छ । सेतो मिश्रित सेतो खालको नील वैगुनजस्तो हुन्छ । यो जमुना र हिमाली क्षेत्रमा पाइन्छ ।

नीलमका विकल्प- नीलम र उपरत्न समेतका अभावमा नीलो जर्कन, कटेला (एमेयिस्ट) या लाजावर्त (लेपीजलाजुकी) नील तमडा (ब्लू गारनेट) नीलो स्पाइनल (तुरमली) आदि धारण गर्दा पनि हुन्छ । यसको अभावमा विच्छु बुट्टि धारण गरे पनि हुन्छ ।

नीलम धारण गर्ने व्यक्ति र विधि- सबै ग्रहका रत्न धारणमा व्यक्ति र विधि प्रायः एकै हुन्छ । शनि ग्रहको क्षेत्र मकर र कुम्भ हो भने उच्च राशि तुला र नीच राशि मेष हो । यदि शनि ग्रह उच्च र स्वक्षेत्री भई लग्नमा बसेको भए नीलम धारण शुभ हुन्छ । अन्यथा शनि केन्द्रमा छ र आठ बाह्रको स्वामी भई अन्य अनिष्ट कारक बनेको भए नीलम राम्रो हुँदैन । योभन्दा विलक्षण भई नीच अस्थ लग्नेश सँगको शत्रुता नभई शुभक्षेत्र ३,६,११ मा भए भाग्येश र पञ्चमेशसँगको सम्बन्ध र धनस्थानमा पूर्ण दृष्टि भएको भए नीलम धराण गर्नु राम्रो हुन्छ । यदि अनिष्ट स्थानमा शनि भई

साढे सात अढैया चलेको भए अथवा लग्नेशको मूल दशामा शनि शत्रु भई अन्तर भए वा शनिको मूलदशा चलेको भए पन नीलम धारण गर्नु भन्दा दान गर्नु र शनिको पूजा जप हवन इत्यादि गर्नु लाभदायक हुन्छ।

नीलम धारण गर्दा शनिवारको दिनमा नीलम पञ्चधातुमा जडान गरी दाहिने हातको माझी औंलामा शनि होरा समयमा धारण गर्नु नीलम कमसे कम ४ रत्ति भन्दा बढी नै राम्रो हुन्छ। शनिको जप मन्त्र 'ॐ शं शनैश्चराय नमः' यो मन्त्र २३००० जप्ने देवीको पूजा, दुर्गा सप्तसति पाठ र महामृत्युञ्जय यथा सम्भव जप, पाठ, हवन, मार्जन, तर्पण र ब्राह्मण भोजन समेत गर्ने।

नीलमद्वारा विभिन्न रोगोपचार पनि हुन्छ। (हेर्नुस् पूर्वोक्त सम्पूर्ण रत्न विज्ञान ग्रन्थ।)

८. गोमेद

गोमेद राहुको रत्न हो। विभिन्न भाषामा अरू जस्तै यसका पनि नाम छन्। संस्कृतमा मेमेदक र पित्रस्फटिक नामले जानिन्छ भने अङ्ग्रेजीमा जरकन भनिन्छ। यसको रङ्ग पहेंलो गाइको गउँतजस्तो हुन्छ। यो खास श्यामल मिश्रित महजस्तो हुन्छ। यो धेरै जसो सिन्धुनदीको किनार र म्यानमार, चीन अरब आदि देशमा पाइन्छ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोणबाट यो पत्थर ७.५ कठोरपन हुन्छ। आपेक्षिक घनत्व ४.६५ देखि ४.७१ सम्म हुन्छ। यो पारदर्शक पनि हुन्छ अपारदर्शक पनि हुन्छ। यसको वर्तनाङ्क १.९३ देखि १.८८ सम्म हुन्छ। दोहोरो आवर्तन ०.०६८ तथा ०.०४७ सम्म हुन्छ। यो वास्तवमा जर्कवनियमको सिलिकेट लवण हो जुन हरियो सुनौलो पहेंलो आदि हुन्छ। यसको गहिरो रङ्ग आभा आकर्षक हुन्छ।

गोमेदको इतिहास–आचार्य वराहमिहिका अनुसार दैत्यराज बलीको वीर्यबाट गोमेदको जन्म भयो भन्ने उल्लेख गरिएको छ। अनय कथामा बलीको मेद मज्जाबाट बनेको प्राचीन रत्न मानिन्छ। यो श्रीलङ्का, अष्ट्रेलिया, थाइलैण्ड, भारत, दक्षिण अफ्रिका आदि देशमा पाइन्छ।

गोमेदको गुण– शुद्ध र श्रेष्ठ गोमेद चमकदार स्वच्छ स्निग्ध उज्ज्वल हुन्छ। हेर्दा यो उल्लु (लाटोकोसेरो) को आँखाजस्तो हुन्छ।

शुद्धताको जाँच– गोमेद सेतो छ भने साँच्चै हीरा सम्झन सक्छन्। किनभने यसको वर्तनाङ्क र अपकिरणन धेरै हुन्छ। आपेक्षिक घनत्व पनि

यसको राम्रै हुन्छ।

१) यदि शुद्ध गोमेद गाइको गउँतमा २४ घण्टा राख्यो भने गउँतको रङ्ग बदलिदिन्छ।

२) सक्कली गोमेद काठको चिरेको धूलोमा बेसरी मलेर हेऱ्यो भने चम्किलो हुन्छ। नक्कली भए चमक हराउँछ।

दोषयुक्त गोमेद पनि धारण गर्नुहुँदैन- १) जुन गोमेदेको चमक छैन। २) जसको रङ्ग रातो छ। ३) जुन सुख्खाजस्तो छ। ४) धेरै रङ्ग मिसावट। ५) अर्कै रङ्गको छिटा धब्बा। ६) जालोवाला छ भने पनि चर्केको खाल्टा परेको पनि राम्रो हुँदैन।

गोमेदको उपरत्न- तुरसा र साफी हुन तुरसा सामान्य पहेंलो हुन्छ। सफा चमकरदार पनि हुन्छ। कतै श्यामल हरियो पाराको पनि हुन्छ। साफी माटो मिलेको अथवा मटैला रङ्गको हुन्छ। यो पनि चिल्लो चिप्लो कम प्रभावशाली हुन्छ।

गोमेद धारण गर्ने व्यक्ति र विधि- यो पनि शनिग्रहजस्तै अवस्थामा धारण गर्नुहुन्छ। राहुको अनिष्टता ४।८।१२ हो। यहाँ राहु भए र अन्य स्थानमा शनि ग्रहसँग सम्बन्धीत भई शनि ८।१२ मा भए गोमेद धारण गर्नुहुँदैन। अन्यथा गोमेद शुभ हुन्छ।

गोमेदको विकल्पमा- गोमेद एक सबैभन्दा सस्तो रत्न हो। यसको उपरत्न वा विकल्प खोज्नु मूर्खता मात्रै हो। तसर्थ गोमेद राम्रै र सक्कली लगाए हुन्छ। यो बढीमा आजको मूल्यअनुसार २०-३० रूपैया क्रेटमा पाइन्छ।

९. वैदूर्यमणि (लहसुनिया)

वैदूर्यमणि (लहसुनिया) यो केतुको रत्न हो अर्थात् यसको स्वामी ग्रह केतु हो। यसलाई संस्कृतमा वैदूर्य, विदुररत्न आदि नाम छन् भने अङ्ग्रेजीमा 'कैटस आइ' भन्दछन्। यसमा सेता धार पाइन्छ। लगभग त्यस्ता धार दुइ वा तीन हुन्छन्। जुन लहसुनियामा दुई धार हुन्छ त्यो उत्तम मानिन्छ। यो सेतो कालो पहेंलो सुकेको पातजस्तो र हरियो हुन्छ। जस्तो भए पनि यसमा सेतो धार भने हुनैपर्छ। यो कतै धूवाँको धारजस्तो हुन्छ। यो विन्द्याचल हिमाल र महानदी क्षेत्रमा धेरै पाइन्छ।

लहसुनियामा वैज्ञानिक दृष्टि- यसको पनि चीरकालदेखि नै जानबुझ

भएको हो । यसको कठोरपन ८.५० आपेक्षिक घनत्व ३.७८ देखि ३.८८ सम्म अपवर्तनाङ्क १.७५५ दोहोरो वर्तनाङ्क ०।०।१० तथा अपकिरणन ०.०१५ हुन्छ। यो रासायनिक संयोजनको दृष्टिकोणबाट यो वैरिलियमको एल्युमिनेट हो । विडालाक्षी माइमोफेन या हेम वैदूर्य लहसुनियाको तीन किसिममध्ये एक हो। यो अँध्यारोमा विरालाको आँखा चम्केजस्तो टुलुक्क देखिन्छ। यसमा रेशमजस्तो चमक अथवा हरियो रङ्गको चमक हुन्छ।

लहसुनियाको इतिहास- यो प्राचीनकालदेखि नै परिचित रत्न हो । यसको अत्यन्त विलक्षण गुण छ जसले गर्दा परापूर्वकालदेखि आकर्षण बढेको छ। विडालाक्षी आँखा र यसबाट निस्कने दुधिया सेतो नीलो आदि किरण हल्लाउँदा हल्लेजस्तो हुन्छ। यो भारत चीन आदि देशमा पाइन्छ।

भारतीय प्राचीन ग्रन्थमा लहसुनियाको उत्तमताको चर्चा गरिएको छ। यसको तीन भेद बताएको छ। १) जो बाँसको पातजस्तो कान्ति छ। २) जसको सन्ध्याकालिक छायाँ छ ।३) बिरालाको आँखाजस्तो कान्ति छ यी उत्तम वैदूर्य हुन्।

वैदूर्यको गुण- यसका पाँच गुण विशष्टि छन्। १) राम्रो घाट भएको। २) वजनदार ३) चमकदार ४) चिल्लो चिप्लो ५) जनै लगाएजस्तो घाट भएको।

वैदूर्यको जाँच- १) यदि शुद्ध वैदूर्यमणि कुनै हड्डीमा राखेदेखि २४ घण्टामा पूरै हड्डी छेडेर वारपार प्वाल बनाइदिन्छ।

२) यदि यसलाई अँध्यारोमा राख्यो भने किरण निक्लन्छ स्पष्टै देखिन्छ।

३) यदि सेतो कोरा कपडामा माड्दा अत्यधिक चम्कन्छ।

वैदूर्य पनि त्रुटिपूर्ण रहेछ भने हानिकारक हुन्छ। यस खालको वैदूर्य त्रुटिपूर्ण हुन्छ।

१) धार नभएको २) महको रङ्गजस्तै छिट्टा भएको ३) चारभन्दा बढी धार भएको ४) राता छिट्टा भएको ५) छरिएको धार ६) खण्डित ७) चमकहीन ८) जालजस्तो देखिने ९) चर्केको १०) खाल्डाखुल्डी भएको इत्यादि दोषयुक्त वैदूर्य हो। यो सबैमा हानिकारक हुन्छ। यसको विकल्पमा टाइगर आई प्रयोग गर्न सकिन्छ। उपरत्न भने यसप्रकार छन्-

(१) संगी (२) गोदन्त आदि।

वैदूर्य धारण गर्ने व्यक्ति र विधि- यो रत्नको धारक लगभग राहु र शनिको धारक जस्तै हुनुपर्छ। यसमा राहु र शनि अनुकूल हुँदा र विशेष

स्त्रीसंज्ञक राशिमा केतु भए वैदूर्य धारण गर्नु फलदायक हुन्छ। यदि पाँचौं केतु भई ८।११।३ मा शनि भए वैदूर्यप्राण पुत्रमा सङ्कष्ट ल्याउने हुन्छ। यस्तो अवस्थामा लहसुनिया धारण नगर्नु केतुको पाठपूजा जपहोम गरेर वैदूर्य दान गर्नु राम्रो हुन्छ।

वैदूर्य प्रयोग विधि- यसको प्रयोग पनि अरू जस्तै पूजा, मन्त्र, जप प्राणप्रतिष्ठा गरेरै धारण गर्नुपर्छ। यो शनि वा मङ्गलबाट चाँदी वा पञ्च धातुमा जडान गरी अर्धरात्र मध्याह्न वा शनि मङ्गलको होरामा ३ रत्ति भन्दा बढी वैदूर्य दाहिने हातको कान्छी वा मध्यमा औंलामा धरण गर्ने। केतुको मन्त्र 'ॐकें केतवे नमः'

वैदूर्यमणि विभिन्न रोगका लागि औषधिकोरूपमा लिन सकिन्छ। यसको विस्तार सर्वरत्न विज्ञान नामक ग्रन्थबाट स्पष्ट हुन्छ।

रत्नधारण अनुकूल र प्रतिकूल विचार

प्रायः सबै मानिसलाई यस्तो धारणा भइसकेको छ। यदि रत्न धारण गऱ्यो भने आफ्नो भनेजस्तो सबैराम्रो हुन्छ। सबैतिर लाभैलाभ सौभाग्य वृद्धि इत्यादि सोचेका हुन्छन्। परन्तु त्यसै साधारण हिसाबमा रेडियो टेलिभिजनबाट प्रचार प्रसार सुनेर आफैं जान्ने बनेर धारण गरेको रत्नले अत्यन्तै हानि पुऱ्याउँछ। त्यसकारण विशिष्ट ज्योतिषशास्त्रको अधयन भएका ज्योतिषीसँग परामर्श लिएर मात्र रत्न धारण गर्नुपर्छ। आज ज्योतिषीहरू पनि कम्ती छैनन् हरेक गल्ली या चोकमा विशिष्ट दर्जाको बोर्ड बनाएर भेषभूषा अलंकारसहित कम्प्युटर साथै राखेका परन्तु सम्बन्धीत ज्ञानमा भने ० नं. वाला हुन्छन्। यदि यस्ताको साथ भाग्यले ल्याइ पुऱ्याए भने यहाँभन्दा ठूलो दुर्घटना अर्को केही हुँदैन। त्यसैले धेरै परीक्षण गरेर जानेर बुझेर अलि दिन संगत गरेर उसका फलादेशहरू परीक्षण गरेर सधैं एकनास स्थिर कार्य उसको छ कि छैन एक दिन भनेकै कुरा जस्तो अर्को दिन पनि भन्न सक्छ वा सक्दैन विचार गरेर मात्र विश्वास गर्नुपर्छ।

अर्को कुरा रत्न दुर्लभ र मूल्यवान भएका कारण जनसामान्यको उपयोगभन्दा बाहिर भयो धनाढ्य सम्पन्न व्यक्तिहरू मात्रै रत्न धारण गर्नसक्ने भए, यस्तो धारणा पनि गलत सावित भएको छ। यस्तो मात्रै आवश्यक हो इन कि सबै रत्न सबैका लागि अनुकूल हुन्छ। धनीका लागि सस्तो रत्न पनि आवश्यक पर्छ गरीबको लागि महङ्गो भए उपरत्न आदि मन्त्र जपादिबाट पनि

पूरा हुन्छ। रत्नधारणबाट शोभा प्राप्त हुन्छ तर आन्तरिक लाभ नहुन सक्छ। लाभप्रद तब मात्र हुन्छ जहाँ विशिष्ट ज्योतिषीय मान्यतावाला रत्न धारण हुन्छ। यो भन्दा पछि रश्मि सिद्धान्त र समय विज्ञानको पालो आउँछ। पर्यवरण पनि रत्न धराणको समय अनुकूल प्रतिकूल परिस्थितिको जनक हुन्छ। ज्योतिषशास्त्र पर्यवरणको दर्पण हो। यही दर्पणद्वारा खगोलीय भौगोलिक स्थितिको आभास प्राप्त गर्न सकिन्छ। त्यस विज्ञानलाई सामाञ्जस्य गरेर ज्योतिर्विद् परामर्श दिन्छन् कि कुन समयमा कुन रत्न धारण गर्ने हो, किनकि यहाँ अन्तरिक्षबाट प्रसारित किरण ग्रहीय प्रभाव तथा पर्यावरणीय प्रतिक्रियाको अनुकूल सिद्ध भएको छ कि छैन। यदि त्यसप्रकार हुन सकेको भए भाग्योदय भयो। यदि त्यस्तो भएको छैन भने अनुकूल सामाञ्जस्यलाई पर्खेर तादृश समय सम्म पर्खाउने गर्छन्। यदि यसप्रकार भएन भने आशंका हुन्छ कि कतै रत्नधारण क्लेश वर्धक पो हुन जान्छ कि ?

रत्नधारण गर्नु पूर्व ध्यान दिनुपर्ने कुराहरू

यदि रत्नका पुस्तक पढेपछि र रत्नको महिमा सुनेपछि जोसुकैलाई पनि रत्नधारण गर्ने इच्छा तीव्र हुन्छ। हुनु स्वाभाविकै हो किनभने भाग्य वृद्धिकारक चिज कसलाई चाहिंदैन र ? तर असली रत्न किन्न नसकिने अवस्थामा बजारमा जाँदा बजारवाला अरे यो हुन्छ यो हुन्छ इत्यादि सस्ता महंगा इत्यादि भनेर बुद्धि भ्रमित गर्न थाल्छन्। बल्ल बोलेर ज्योतिषीले यस्तो भनेको थियो भन्दा किताब देखाएर यही हो अमुक तमुक इत्यादि भन्दा, हो रहेछ क्यारे भनेर दुषित रत्न किन्न पुग्छौं। भोलि जाँच बुझ गर्दा दोषी रहेछ भन्दा पनि अनेक लफडा गराइदिन्छन्। यस्तो अवस्थामा हतार गरेर रत्न किन्नुहुँदैन।

ज्योतिषीय परामर्शअनुसार किनेको रत्न पनि प्राणप्रतिष्ठा जप आदि नगरी धारण गर्नु पनि अनिष्ट निम्त्याउनु हो। निर्दोष देखिए पनि कृत्रिम रत्न हानिकारक हुन्छ। त्यस्तै कसैसँग जबर्जस्ती गरेर चित्त दुःखाएर ल्याए पनि हानि गर्छ। अत्यन्त पापी पातकीहरूका हातको दानबाट प्राप्त रत्न पनि हानिकारक नै हुन्छ। दुर्भाग्यग्रस्त व्यक्तिबाट प्राप्त भएको रत्नले उसको दौर्भाग्यदोष बोकेर आएको हुन्छ। त्यसकारण त्यस्ता रत्नदेखि सावधान हुनुपर्छ।

॥ इति रत्नाध्याय ॥

अथ स्वरशकुनाध्याय

प्रश्नसमयमा स्वर विचार

स्वर भन्नाले सामान्यतः नाडीलाई बुझाउँछ । नाडी हाम्रो शरीरमा नाडी विज्ञानका अनुसार ७२ करोड हुन्छन् । तिनको अध्ययन गर्न साधारण जीवले सक्दैन । ७२ हजारमा अन्तर्हित गर्दै यही क्रमले सामान्य नाडी विज्ञानले ७२ नाडीको विशेष अभ्यास अवश्यै गर्नुपर्छ भनेको छ । त्यसमा पनि ३० विशेष नाडी छन् । ती पनि दश नाडीमा अन्तर्हित गरी नाडी विज्ञान सारसंक्षेपमा मात्र भए पनि पृच्छकका सन्देह समाधान गर्नेतिर गएको छ ।

उक्त दशनाडी पनि मुख्य तीन नाडीमा समाहित भई शुभाशुभ र मिश्र प्रश्नकाल र वस्तुको ज्ञान गराउन सफल भएको छ ।

हाम्रो नाशिकाको दायाँ भागबाट प्रसारित वायुलाई दायाँ र (पिङ्गला) स्वर र वायाँबाट प्रसारित वायुलाई वायाँ (इडा) स्वर र मध्यमार्गस्थ वायुलाई (अथवा दुबै छिद्रबाट आउने वायु) मध्यस्थ सुषुम्ना स्वर भन्ने गरेको छ ।

स्वर परीक्षण गर्दा सर्वप्रथम प्रातः सूर्योदय हुनुभन्दा पहिले विचार गर्नुपर्छ । स्वरमा इडा, पिङ्गला, सुषुम्ना कुन स्वर चलिरहेको छ र पृथ्व्यादि तत्त्वहरू मध्ये कुन तत्त्वको उदय भएको छ । यसैका आधारमा शुभाशुभ ज्ञान गर्नुपर्छ । प्रश्नकालमा तात्कालिक स्वर र प्रातः कालिक संचारित तत्त्वसहित स्वरको सामाञ्जयलाई विचार गर्नुपर्छ । त्यसपछि मात्र शुभाशुभ उत्तर दिनुपर्छ ।

बार अनुसार शुभाशुभ स्वरज्ञान

यदि प्रश्नकालमा सोमवार, बुधवार, गुरुवार र शुक्रवार छ र इडा (बायाँ) स्वर चलिरहेको भए पृच्छकद्वारा सोधेको प्रश्नको फल शुभ हुन्छ । यदि त्यतिखेर शुभबारमा दायाँ पिङ्गला स्वर चलेको भए कार्य सिद्धि हुँदैन विघ्न पर्छ । मध्य स्वर चलेको भए काममा हानि रोगभय अवस्था या आकाश तेज तत्त्वको उदय देखियो भने त ठूलै सङ्कष्ट वा मरण समेत हुन्छ ।

स्वरको विशेष फल

यदि सबै शुभ र पापग्रहका बारको स्वर अनुकूल (शुभ ग्रहका बारमा बायाँ (इडा) र पापग्रहका बारमा दायाँ (पिंगला) स्वर चलेको छ भने स्वस्थता धनलाभ मीठो भोजन र अभीष्ट कार्यमा संलग्न हुन सकिन्छ अन्यथा सब विपरीत हुन्छ।

वारका अनुसार स्वरको फल

यदि रविवार प्रतिकूल स्वरमा प्रश्न गरे भने कार्य असिद्धि त छँदैछ तर पृच्छकको शरीर वेदनाको समस्या पनि हुन्छ। त्यस्तै सोमवार विपरीत स्वर भए कलहको सम्भावना मङ्गलवारमा भए कुनै अभीष्टको वियोग वा टाढाको यात्रा। बुधवार प्रतिकूल स्वरमा राज्य प्रशासनद्वारा दुःख प्राप्ति शुक्रवार कार्यमा हानि शनिवारमा भए खेतिपातीमा नोक्सान साँधसधियारसँग विवाद हुन्छ।

पृथ्व्यादि तत्त्वको उदय ज्ञान

आफ्नो नाशिकाबाट सञ्चारित स्वरको गति सधैं सधैं विचार गरिरहनुपर्छ। यो प्रश्वास घनत्व कतिलामो सम्म गएर पछि फिंजारिन्छ त्यो एक दम सूक्ष्म विचार गर्नुपर्छ। यदि यो घनत्व प्रश्नकालमा लगभग १६ अम्बल लामो भयो भने पृथ्वी तत्त्वको उदय भएको छ भनेर जान्नुपर्छ। त्यस्तै १२ अम्बल लामो भए जलतत्त्वको उदय छ। त्यस्तै ८ अम्बलले अग्नि तत्त्व ६ अङ्गुलले वायु र आकाश ३ अङ्गुल लामो भएमा हुन्छ।

यदि कुनै पनि प्रश्न स्वर अनुकूल वार अनुसार छ र पृथ्वी, जल र तेज तत्त्वको उदय छ भने निश्चित शुभ हुन्छ। चारै दिशा उसको लागि खुल्ला छ सर्व विजयी हुन्छ। यदि वारानुसार स्वर छ तर वायु र आकाश तत्त्वको उदय भएको छ भने विवाद खर्च हानि गराउँछ। यदि वार अनुसार पनि स्वर विपरीत चलेको छ र आकाश, वायुतत्त्वको उदय छ भने पृच्छकको ठूलो नोक्सान वा मृत्यु हुन्छ।

स्वरबाट रोग ज्ञान

यदि कसैले सोध्यो अमुक व्यक्ति बिरामी छ के हुन्छ ? यस्तो प्रश्नमा सोध्नेवाला पूर्ण (श्वासप्रवाहतिर) स्वरतर्फ छ र स्वर अनुकूल छ र पृथ्वी जलवायु तत्त्वको पनि उदय छ भने रोगी तुरुन्तै निको हुन्छ। केही पनि गर्नै पर्दैन। यदि पृच्छक पूर्ण स्वरतिर छ र स्वर विपरीत छ अनि पृथ्वी जल वायु तत्त्व चलेको भए उपचार पश्चात राम्रो हुन्छ। यदि पृच्छक रिक्त स्वरपट्टि छ र स्वर विपरीत छ पृथ्व्यादि तत्त्व ठीक छ भने धेरै दिन बाँच्छ तर रोग भने निको हुँदैन। यदि सबै विपरीत छ भने तुरुन्तै मर्छ। यदि प्रश्न कर्ता पछाडि छ र सुषुम्न स्वर चलेको भए जुनसुकै तत्त्व उदय भए पनि अनिष्ट कारक हुन्छ।

पृच्छकको अवस्था स्थिति र स्वर अनुसार फलज्ञान

यदि प्रश्नकर्ता अगाडि वा उच्चास्थानमा छ शुक्लपक्ष शुभ वार छ र उसले जेसुकै प्रश्न गरेको छ स्वर चन्द्रस्वर (वायाँ) इडा स्वर चलेको छ भने सबै प्रश्नका फल शुभ छन्। लक्ष्मी वृद्धिकार र भाग्य बढ्छ। त्यसको ठीक विपरीत भएको भए अनेक दुःख कष्ट सन्ताप दिनेवाला जान्नुपर्छ।

यदि कृष्णपक्ष छ पाप वार छ सोध्नेवाला पछाडि वा दायाँतर्फ छ, गहिरो होचोठाउँमा छ र स्वर पनि सूर्य (दायाँ) पिङ्गला चलेको छ भने पनि सबै प्रश्नका उत्तर शुभ छन् यसको विपरीत भए विपरीत नै फल जान्नुपर्छ।

स्वरबाट जयपराजय ज्ञान

चन्द्रस्वर (वायाँ, इडा स्वर) चलेको बेलामा घरबाट प्रस्थान गरेर सूर्य स्वर चलेको बेलामा कार्यानुसार क्षेत्रमा (युद्ध भए युद्ध क्षेत्रमा खेल भए खेल क्षेत्रमा मुद्दा आदि भए अदालत आदि ठाउँमा) पुगेर रिक्त स्वर पट्टी शत्रु वा विपक्षीलाई पारेर कार्यारम्भ गऱ्यो भने अवश्य नै जीत हुन्छ यसमा सन्देह नै छैन।

यदि सूर्य (पिङ्गला, दायाँ) स्वरमा घरबाट निस्केर चन्द्र स्वरमा संग्रह क्षेत्रमा पुगी शत्रुलाई पूर्ण स्वर तिर पारी कार्यारम्भ गरेमा शुरवीर भए पनि मारिन्छ।

दक्षिण स्वर शुभता

विवादमा, जुवामा, युद्धमा, स्नान, भोज, मैथुन, व्यापार र भयमूलक साहसिलो कार्यमा दक्षिण स्वर शुभ हुन्छ र आफ्नो प्रतियोगीलाई खालि स्वर पट्टि पार्नुपर्छ ।

यात्रा, दान, एवं विवाह वस्त्र अलंकार धारण गर्दा चन्द्र वायाँ स्वर शुभ हुन्छ । गृह प्रवेशमा पनि चन्द्र स्वर राम्रो हुन्छ ।

स्वरबाट सन्तान विचार

गर्भिणीको प्रश्नकालमा दायाँ स्वर चलेको भए पुत्र र वायाँ चलेकोमा पुत्री सुषुम्ना चलेको भए नपुंसक हुन्छ ।

यदि गर्भिणी स्वयंले मेरो गर्भमा के छ भनी सोधे प्रश्न समयमा यदि गर्भवती पूर्ण स्वरपट्टि भए पुत्र र रिक्त स्वर पट्टि भए कन्या आम्ने साम्ने अथवा सुषुम्नाको समय भए जुम्ल्याहा वा मृत नपुंसक इत्यादि भन्नुपर्छ ।

प्रश्नकर्ताको चेष्टाअनुसार फलादेश

यदि प्रश्नकर्ता वक्षस्थलमा छोएर प्रश्न गर्छ भने तुरुन्त कार्य सिद्ध हुन्छ । इच्छित वस्तुको प्राप्ति हुन्छ । आफ्नो इष्टदेवलाई सम्झेर काम गर्नु भन्ने । यदि मांगलिक वस्तु (नरिवल कुमकुम, फूल, सुपारी जलपात्र भरिएको, पुस्तक आदि) छोएर सोध्यो भने छिट्टै कार्यसिद्धि हुन्छ भन्नुपर्छ । किन्तु अमङ्गल वस्तु छोएर सोध्यो भने विपरीत फल बताउनु । यदि नाइटो, नाक, मुख, कपाल, दारी आदि रौं नङ, दाँत, गुप्ताङ्ग, पीठ, स्तन (दूधको थुन) घाँटी, पेट, हातको साहिंली औंला, शरीरका छ छिद्र (नाक, कान, आँखा), करतल (हत्केला), पादतल (पैताला) र पर्व (जोर्नीहरू) लाई छुँदै प्रश्न गरेमा प्रश्न अनिष्टकारी फल दिनेवाला छ शुभ छैन भन्नुपर्छ ।

यात्रादि कार्यमा शुभ शकुन

विप्राऽश्वेभफलान्नदुग्धदधिगोसिद्धार्थपद्माम्बरं
वेश्यावाद्यमयूरचाषनकुला बद्धैकपश्वामिषम् ।
सद्वाक्यं कुसुमेक्षुपूर्णकलशच्छत्राणि मृत्कन्यका
रत्नोष्णीषसितोक्षमद्यससुतस्त्रीदीप्तवैश्वानराः॥१॥
आदर्शञ्जनधौतवस्त्ररजका मीनाज्यसिंहासनं
शावं रोदनवर्जितं ध्वजमधुच्छत्रास्त्रगोरोचनम् ।
भारद्वाजनृयानवेदनिनदा माङ्गल्यगीताङ्कुशा
दृष्टाः सत्फलदाः प्रयाणसमये रिक्तो घटः स्वानुगः ॥२॥

अर्थः-यात्राको समयमा दुई वा दुईभन्दा बढी ब्राह्मण, घोडा, हात्ती (नमात्तिएको) फल, दूध, दही, गाई सर्यों कमल स्वच्छ वस्त्र वेश्या, बाजा, मयूर, न्याउली, परेवा बाँधेको पशु एउटामात्र (गोरू रातो) मासु,'यात्रामा कार्य सिद्धि वा मङ्गल होस्' भन्ने वाक्य कुसुम फूल उखु पूर्ण कलश (भरी घडा) छाता मुछेर गोलो बनाएको माटो (माटाको पिंड) कन्या कुमारी माणिक्यादि रत्न पगरी (टाउकोमा बाँध्ने वस्र) नबाँधेको सेतो गोरू, मदिरा, सपुत्रवतीस्त्री बलेको आगो, ऐना, गाजल आदि शृङ्गारका सामान धोएका कपडासहित धोबी माछा घीउ सिंहासन, रोदन वर्जित मूर्दा, झण्डा मह, छाता धनु आदि हतियार खड्ग आदि गोरोचन भारद्वाज नामको चरो पाल्की वेदध्वनी मांगल्य गीत अङ्कुश इत्यादि मंगलदायक वस्तुहरू धेरै वा थोरै भए पनि यात्रा वा अन्य कुनै कार्य विशेषमा देखिए भने अत्यन्त शुभ हुन्छ । यदि रिक्तघट (रित्तो गाग्रो) यात्रा कर्ताका पछाडिबाट आउँदै भए शुभ हुन्छ । यदि आम्ने साम्ने पऱ्यो भने अर्थात् आफू जान लागेको दिशाबाट रित्तो घडा आउन लागेको भए अशुभ हुन्छ । यो भएमा त्रिप्राणायाम गरेर मङ्गल बचन बोल्दै हिंड्नु शुभ हुन्छ ।

अशुभ सूचक शकुन

वन्ध्याचर्मतुषास्थिसर्पलवणाङ्गारेन्धनक्लीवविट्
तैलोन्मत्तवसौषधारिजटिलप्रवाट्तृणव्याधिताः ।
नग्नाभ्यक्तविमुक्तकेशपतित्त्वयाङ्गक्षुधार्ता असृक्
स्त्रीपुष्पं सरठः स्वगेहदहनं मार्जारयुद्धं क्षुतम् ॥३॥
काषायी गुडतक्रपङ्कविधवाकुब्जाः कुटुम्बे कलि-
र्वस्त्रादेः स्खलनं लुलायसमरं कृष्णानि धान्यानि च ।
कार्पासं वमनं च गर्दभरवो दक्षेऽतिरुङ् गर्भिणी
मुण्डार्द्राम्बरदुर्वचोऽन्धबधिरोदक्या न दृष्टाः शुभाः ॥४॥

अर्थः- यात्रामा अशुभ सूचक शकुनहरू यसप्रकार छन्-गर्भ हुने सम्भावना नभएकी स्त्री (वन्ध्या), घोडा आदिको छाला धानको भुस, हड्डी सर्प नून अङ्गार दाउरा नपुंसक विष्टा तेल वौलाहा वोसो औषधि शत्रु जटाधारी फकिर सन्न्यासी तृण पराल आदि रोगी केटाकेटी दश वर्षभन्दा बढी उमेर भएको नग्न व्यक्ति उवटनलाएर न्वाउन ठिक्क परेको व्यक्ति केश फुकाएको पुरुष वा स्त्री पतित व्यक्ति अङ्गहीन व्यक्ति भोकले पिडित भएको व्यक्ति, रगत रजस्वला स्त्री छेपारो आफ्नै वा अरूकै भए पनि घर दाह बिरालाको लडाईं छींक (हाच्छ्युँ) गेरुवस्त्रधारी (जोगी) सखर मोही हिलो विधवा स्त्री कुब्जो परिवारको कलह, आफ्नै हातबाट वस्त्र छत्रादि खस्नु, भैंसी जुधेको, कालो धान आदि अन्न (मास आदि) कपास, वमन गरेको आफ्नो दाहिने पट्टि गदा हुनु वा रोक्नु अत्यन्त क्रोध हुनु गर्भिणी स्त्री कपाल खौरेर टोपी आदि शिर वस्त्र नलगाएको मान्छे नुहाएर चिसा लुगा भएको मान्छे अथवा त्यसै भिजेर चिसा कपडा भएको मान्छे आफ्नै वा अन्य कसैको मुखबाट दुर्वचन निस्कनु अन्धो व्यक्ति बहिरो व्यक्ति इत्यादि पदार्थहरू यात्राको समयमा वा अरू कुनै माङ्गलिक कार्यमा कुनै पनि काम थाल्दा उक्त प्रकारको अशुभ शकुन एक वा एकभन्दा बढी देखिएमा अशुभ फलदायक हुन्छ ।

यस्तो अशुभ शकुन देखेपछि यात्रा वा अन्य कुनै कार्यारम्भ गर्नु छ भने प्रथम पटक वा तीनवार प्राणायाम गरेर मङ्गल वचन (मङ्गलं भगवान् विष्णुः....) आदि भनेर इष्टदेवको नाम सम्झदै दिक्देवतालाई नमस्कार गरेर यात्रा वा कार्यारम्भ गर्नु शुभ हुन्छ। यस्तै पुनः अशुभ शकुन देखिएमा पुनः नौ पटक प्राणायाम गरेर उसै गरी मङ्गल वचन इष्टदेव सम्झदै कार्यारम्भ गर्नु, फेरि पनि तृतीय पटक पनि अपशकुन देखियो भने यात्रा वा कुनै पनि कार्य नगर्नु। यदि यो हुँदाहुँदै पनि बलपूर्वक कार्यारम्भ गरेमा ठूलो अनिष्ट हुन्छ वा आफ्नो मृत्युसमेत हुन्छ।

॥ इति स्वरशकुनाध्याय ॥

तिथिका स्वामीको नाम

तिथिशा वह्निकौ गौरी गणेशोऽहिर्गुहो रविः ।
शिवोदुर्गान्तकोविश्वेर्हरिः कामः शिवः शशीः॥१॥

अर्थः-प्रतिपदादेखि दुबै पक्षका तिथिका स्वामीहरू यसप्रकार छन् । प्रतिपदाका अग्नि द्वितीयाका ब्रह्मा तृतीयाका गौरी चौथीका गणेश, पञ्चमीका नाग, षष्ठीका कार्तिकेय(कुमार)सप्तमीका सूर्य, अष्टमीका शिव, नवमीका दुर्गा, दशमीका यमराज, एकादशीका विश्वेदेव, द्वादशीका हरि, त्रयोदशीका कामदेव, चतुर्दशीका शंकर पूर्णिमा र आमावास्यका चन्द्रमा इत्यादि तिथिका स्वामी हुन् ।

तिथिका नन्दादि नाम र शुभाशुभ ज्ञान

नन्दा च भद्रा च जया च रिक्ता
पूर्णेति तिथ्योऽशुभमध्यशस्ताः ।
सितेऽसिते शस्तसमाधमाः स्युः
सितज्ञभौमार्कि गुरौ च सिद्धा ॥२॥

अर्थः- कृष्ण एवं शुक्ल दुवै पक्षमा पन्ध्र पन्ध्र दिनमा आउने तिथिहरू क्रमशः प्रतिपदा, षष्ठी र एकादशी (१।६।११) यी तिथिहरूको नाम नन्दा त्यस्तै द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी (२।७।१२) यिनको नाम भद्रा तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी (३।८।१३) यिनीहरूको नाम जया त्यसै गरी, चौथी, नवमी र चतुर्दशी यिनीहरूको नाम रिक्ता र पञ्चमी दशमी र पूर्णिमा आमावास्य (५।१०।१५।३०) यिनीहरूको नाम पूर्णा भनेर जान्नुपर्छ र यिनको जस्तो

नाम हो त्यस्तै अर्थ वा फल भनेर जान्नुपर्छ । जस्तै नन्दाले कार्य पश्चात् आनन्द दिने भद्राले कृतकार्यको भद्र हुने वा सम्मान पाइने जया यी तिथिमा गरिने कार्य सिद्ध हुने आफ्नो जय हुने, रिक्तामा रित्तो होइने पूर्णमा देवकार्य पितृकार्य आदि पूर्ण भई अन्यकृत कार्यबाट पनि पूर्ण सन्तोष प्राप्त हुने इत्यादि श्लोकको अर्थ र फल समन्वय गर्नुपर्छ ।

समस्त कार्यमा निसिद्ध वारतिथि र नक्षत्रको योग

वर्जयेत्सर्वकार्येषु हस्तार्कं पञ्चमी तिथौ
भौमाश्विनीं च सप्तायां षष्ठ्यां चन्द्रैन्दवं तथा ।।३।।
बुधानुराधामष्टम्यां दशम्यां भृगुरेवतीम्
नवम्यां गुरुपुष्यं चैकादश्यां शनिरोहिणीम् ।।४।।

अर्थः- यदि कुनै शुभ कार्य गर्दा रविवार पञ्चमी र हस्ता नक्षत्र मङ्गलवार सप्तमी अश्विनी सोमवार षष्ठी र मृगशिरा बुधवार अष्टमी र अनुराधा शुक्रवार दशमी रेवती गुरुवार नवमी पुष्य शनिवार एकादशी र रोहिणी । यस्तो योग तिथि वार नक्षत्रको भएमा शुभकार्यमा त्याज्य मानिन्छ । यद्यपि गुरु पुष्य योग राम्रो हो ता पनि नवमीको सम्मेलनाले दुषित मानिन्छ ।

भौमाश्विनी आदियोग कहिले निसिद्ध मान्ने ?

गृहप्रवेशे यात्रायां विवाहे च यथाक्रमम् ।
भौमाश्विनीं शनौब्रह्म गुरौपुष्यं विवर्जयत् ।।५।।

अर्थः-वार, नक्षत्रको मात्रै योग भए पनि यी श्लोक कथित मङ्गलवार अश्विनी शनिवार रोहिणी वृहस्पतिवार पुष्य अरू कार्यमा शुभ भए पनि गृहप्रवेशमा भौमाश्विनी यात्रामा शनि रोहिणी र विवाहमा गुरु पुष्य अत्यन्त त्याज्य छन् ।

वर्ज्य पञ्चाङ्ग दोष ज्ञान

जन्मर्क्षमासतिथयो व्यतिपातभद्रा-

वैधृत्यमापितृदिनानि तिथिक्षयर्द्धिः ।

न्यूनाधिमासकुलिकाप्रहरार्धपाता-

विष्कम्भवज्रघटिका त्रयमेव वर्ज्यम् ॥६॥

अर्थः-जन्मनक्षत्र जन्ममहिना जन्मतिथि, व्यतिपात, भद्रा, वैधृतियोग, औंसी, श्राद्धका दिन (मातापिताका श्राद्ध) तिथिक्षय एवं वृद्धि, क्षयमास, अधिकमास, कुलिक योग, अर्धप्रहर र पात योग यिनीहरू शुभकार्यमा त्याज्य छन् तर पनि विष्कम्भ र वज्र यी योगको भने आरम्भ तीनघडी मात्र त्याज्य छन् ।

सर्वदोषनाशक रवियोग

सूर्यभाद्वेदगोतर्कदिग्विश्वनखसम्मिते

चन्द्रर्क्षे रवियोगाः स्युर्दोषसंघविनाशकाः ॥७॥

अर्थः- सूर्य जुन नक्षत्रमा छ त्यो नक्षत्रदेखि चन्द्रमाको नक्षत्र सम्म अर्थात् कार्य गर्ने दिनको नक्षत्रसम्म गन्दा यदि ४, ९, ६, १०, १३, २० यो संख्या आयो भने रवि योग हुन्छ सम्पूर्ण दोषको समूह नाश गर्दछ शुभकार्य गरे हुन्छ ।

जस्तै अश्विनी नक्षत्रमा सूर्य छ र कार्य गर्ने दिनको नक्षत्र आर्द्रा छ भने अश्विनीबाट गन्दा आर्द्राको संख्या छ भयो अब रवियोग पर्‍यो कार्य गर्नु शुभ हुन्छ ।

गुरूशुक्र अस्त भएमा गर्न नहुने कर्महरूको ज्ञान

वापीकूपतडागयज्ञगमनं क्षौरं प्रतिष्ठा व्रतं
विद्यामन्दिरकर्णवेदनमहादानं गुरोःसेवनम् ।
तीर्थस्नानविवाहकाम्यहवनं मन्त्रोपदेशं शुभे
दूरेणैव जिजीविषु परिहरेदस्ते गुरौ भार्गवे ॥९॥

अर्थः-यदि गुरु शुक्र दुबै अस्त छन् भने कुवा, पोखरी, इनार आदि पानीका सम्बन्धी, परोपकारक कार्य, यज्ञ, गमनं, तीर्थादि यात्राहरू, क्षौर कर्म (प्रथमवार क्षौरकर्म) देवमूर्ति आदिको प्राणप्रतिष्ठा, विशेषव्रत, विद्यारम्भ, देवमन्दिर गमन, कर्णवेदन (कान छेड्ने कर्म), विशेष दान (भिक्षा बाहेक) प्रथमबार गुरुसेवा, तीर्थादिमा स्नान, विवाह, काम्य हवन (नित्यकर्म सम्बन्धी हवनलाई छोडेर गरिने अन्य हवन) मन्त्र, दीक्षादान शुभसमयमा साइत हेरेर गरिने कार्यहरू विशेष आफ्नो आयुपर्यन्त रोग शोकरहित भएर बाँच्न चाहने मनुष्य उक्त कार्यहरू यो बेला नगरोस् ।

गुरूशुक्रको बालत्व र वृद्धत्व दोष निर्णय

शुक्रोगुरूः प्राक् परतश्चबालो
विन्ध्ये दशावन्तिषु सप्तरात्रम् ।
हूणेषु वङ्गेषु च षट् च पञ्च
शेषेषु देशे त्रिदिने वदन्ति ॥१०॥

अर्थः-गुरु शुक्रको बालत्व र वृद्धत्वमा पनि अस्त अवस्थामा जति शुभ कार्य गर्नु हुँदैन भनी निषेध गरिएको थियो त्यत्ति नै कार्य यहाँ पनि हुँदैन। अब त्यसो भए उक्त बालत्व र वृद्धत्व कति दिन हुन्छ यस्तो प्रश्नमा धेरै थरी मतमतान्तरहरू छन् ।जसले गर्दा निर्णय सिधै गर्न सकिएको छैन । उपर्युक्त श्लोकका आधारमा निर्णय गर्न सकिन्छ कि यदि देशकाल र परिस्थिति अनुसार कार्याकार्यको निर्णय गर्नुपर्छ ।

शुक्र गुरुको पूर्वोदित भई प्राप्त बालत्व भए सात दिन बालत्व र पश्चिममा अस्त भई वृद्धत्व पाएका भए पनि सातै दिन वृद्धत्व प्राप्ति हो। यसको विपरीत (पश्चिमोदित र पूर्वास्त) यस्तो परेमा पन्ध्र/पन्ध्र दिन बालत्व वृद्धत्व दोष हुन्छ भन्ने मत पनि प्रशस्त छन् तथापि यहाँ मुहूर्तमार्तण्डको अनुसार देशविशेषले धेरै दिन र अल्प दिनादि ग्राह्य निषेध गरेको कुरास्पष्ट छ।

यदि गुरु शुक्रको बाल्यत्व र वृद्धत्व विन्ध्याचल वरिपरिको भूभागमा भए दश दश दिन लिनुपर्छ। त्यस्तै अवन्ती नजिक भए सात रात लिनुपर्छ, हुण र वङ्गाल (कलकत्ता) मा भए एघारौं दिन र अरू देशमा भने तीन/तीन दिन मात्र उक्त दोष माने हुन्छ। यहाँ अन्य देश भन्ने अर्थामा हामीले नेपाललाई पनि ३ दिन मात्र बाल्यत्व र वृद्धत्व निषेध माने हुन्छ। यसमा एकैमत हुनुपर्छ।

भद्रा (विष्टि) निवास ज्ञान

कुम्भकर्कद्वये मर्त्ये स्वर्गेऽब्जेऽजात् त्रयेऽलिगे।
स्त्रीधनुर्जूकनक्रेऽधो भद्रा तत्रैव तत्फलम् ॥

अर्थः-यदि चन्द्रमा कर्कट, सिंह, कुम्भ र मीनमा छन् भने त्यतिखेर भद्राको निवास मनुष्य लोक (पृथ्वी) मा हुन्छ। त्यस्तै मेष, वृष, मिथुन र वृश्चिक राशिमा चन्द्रमा हुँदा भद्रा स्वर्गमा हुन्छ। त्यसैगरीकन्या, धनु, तुला र मकरमा चन्द्रमा हुँदा पातालमा भद्रा बसेको हुन्छ। जहाँ भद्रा बसेको छ त्यहीं मात्र अनिष्ट हुन्छ अन्यथा भद्रा भएका ठाउँमा मात्र भद्रारिष्ट हुन्छ।

शुक्ल पक्षको अष्टमी (८) पूर्णिमा (१५) र कृष्ण पक्षको सप्तमी र चतुर्दशी यति दिन आएको भद्रा दिनमा प्रभाव हुन्छ र त्यस्तै शुक्ल पक्षको चौथी (४), एकादशी (११) र कृष्णपक्षको तृतीया दशमी तिथिमा आएको भद्रा रात्रिमा प्रभाव पार्ने हुन्छ।

भद्राको त्याज्य ग्राह्य अवस्था

विष्टि तु सर्वथा त्याज्या क्रमेणैव गता तु या ।
अक्रमेणागताभद्रा सर्वकार्येषु शोभना ॥

अर्थः-यदि **'जन्मर्क्षमासतिथयोव्यतिपात भद्रा'** भद्रा वैधृति इत्यादि भनेर भद्रा भएका दिन शुभकार्य गर्न नहुने र साथै बालक जन्म आदि पनि भद्रादिमा भए अशुभ फल दिने हुन्छ । बालक जन्म भएमा भद्रा शान्ति गरिदिने र अन्य कार्य गर्ने दिन भद्रा भए त्यस्ता दिनमा कार्य नै नगर्ने भन्ने मत शास्त्रको प्रामाणिक, सैद्धान्तिक मत हो । यस्तो हुँदाहुँदै पनि मुहूर्त चिन्तामणि पियूष धारा आदि ग्रन्थमा भद्राको विशेष अवस्था र फलादिको सङ्केत गरेका छन् ।

क्रमपूर्वक आएको अर्थात् रात्रिपश्चात् दिनमा आउने भद्रा क्रमपूर्वक आएको मान्नुपर्छ । त्यस्तै दिनपश्चात् रात्रिमा आएको भद्रा पनि क्रमैले आएको हुन्छ । यसरी आएको भद्रा सबै कार्यमा त्याज्य अर्थात् यस्तो भद्रामा शुभ मात्र कार्य गर्नुहुँदैन भन्नेजान्नुपर्छ । अक्रमले आएको भद्रा भनेको चाहिं रात्रिपछि रात्रिमा नै र दिनपछि दिनमा नै आउने भद्रा क्रम छाडेका मानिन्छन् । त्यस्तो भद्रा यहाँ कुनै पनि कार्य छोड्नुपर्दैन । कार्य गरे हुन्छ ।

अर्थात् ८।१५।२२।२९ यी तिथिमा दिनको भद्रा जान्नुपर्छ ।
४।११।१८।२५ यी तिथिमा रातको भद्रा जान्नुपर्छ ।

दग्धातिथि

पुष र चैतको द्वितीया ज्येष्ठ र फाल्गुनको चौथी वैशाख र श्रावणको षष्ठी आषाढ र आश्विनको अष्टमी भाद्र र मंसीरको दशमी कार्तिक र माघको द्वादशी यी तिथिहरू दग्धा नामका हुन् । यिनमा कुनै पनि शुभकार्य गर्नुहुँदैन ।

शान्तिक (ग्रहशान्ति आदि) पौष्टिक कर्म गर्ने मुहूर्त

क्षिप्रध्रुवान्त्यचरमैत्रमघासु शस्तं
स्यात्शान्तिकं च सह मङ्गलपौष्टिकाभ्याम् ।
खेऽर्के विधौ सुखगते तनुगे गुरौ नो
मौढ्यादिदुष्टसमये शुभदं निमित्ते ॥

अर्थः-पुष्टि कामनाका निमित्त गरिने माङ्गलिक कार्यहरू जस्तै विनायक शान्ति, मूलशान्ति, गण्डान्त, त्रिकप्रसवजननदोष, ग्रहणजनन दोष, एकनक्षत्रजनन आदि दोष शान्ति गर्नुपर्दा निम्नलिखित मुहूर्तमा गर्दा शान्तिक तथा पौष्टिकर्म सिद्ध हुन्छ । जस्तै क्षिप्र संज्ञक, ध्रुव संज्ञक, चरसंज्ञक, रेवती, अनुराधा र मघा नक्षत्रमा त्यस्तै कार्य लग्नदेखि सूर्य दशममा चन्द्रमा चतुर्थ स्थानमा बृहस्पति लग्नमा पारी उक्त प्रकारका शान्तिक्यादि कार्य शुभ हुन्छ । तर गुरु र शुक्र बाल्य वृद्ध र अस्त छन् भने उक्त समयमा शान्तिक पौष्टिक कर्म गर्नुहुँदैन । यदि कुनै निमित्त विशेष छ भने जस्तै उल्कापात भयो त्यस समयमा गुरु, शुक्र बाल्यवृद्ध अस्त छन् भने पनि उल्कापात त्यतिखेर भएकोले त्यसै बेला शान्ति गर्नुपर्छ । यहाँ दोष लाग्दैन त्यस्तै जन्मोत्सव आदि पनि जन्मतिथि निमित्त भएकाले उक्त दोष हुँदैन । अन्य अवस्थामा भने दोष समय छलेर नै शुभ कर्म गर्नुपर्छ । (रोगादि निमित्त भए पनि शुभ हुन्छ) ।

होमाहुतिमा ग्रहमुख विचार

सूर्यभात्त्रित्रिभे चान्द्रे सूर्यविच्छुक्रपङ्गवः ।
चन्द्रारेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खले ॥

अर्थः-यज्ञ आदिमा हवन अथवा आहुति दिँदा प्रथम आहुति शुभ ग्रहमा परोस् अर्थात् शुभ ग्रह त्यो हवनको वितरक भयो भने सबै कार्य शुभ हुन्छ । पाप ग्रह भयो भने हानि गर्छ । त्यसैले ग्रहमुख विचार गरेर होमाहुति

दिनु भन्ने शास्त्रप्रमाण रहेको छ। उक्त ग्रहमुख यसप्रकार विचार गर्नुपर्छ।

तात्कालिक स्पष्ट सूर्य कुन नक्षत्रमा छ त्यो नक्षत्रदेखि कार्य गरिने दिनको नक्षत्रसम्म गन्नुपर्छ। यहाँ सूर्य नक्षत्रदेखि तीन नक्षत्रसम्म सूर्य ग्रहको मुख पर्दछ। त्यस्तै तीपछिका तीन नक्षत्र अर्थात् छैटौं नक्षत्रसम्म बुध ग्रहको मुख पर्दछ। यसै क्रमले सातदेखि नौसम्म शुक्रको दशदेखि बाह्रसम्म शनिको तेह्रदेखि पन्ध्रसम्म चन्द्रमाको सोह्रदेखि अठारसम्म मङ्गलको उन्नाइसदेखि एक्काइससम्म वृहस्पतिको बाइसदेखि चौबिससम्म राहुको पच्चीसदेखि सत्ताइसम्म केतुको मुख हुन्छ र शुभ ग्रहका मुखमा परेको होम वा आहुति शुभदायक हुन्छ भने अशुभ ग्रहका मुखमा परेका आहुति अशुभ फलदायक हुन्छ। उक्त कुरा तालिकाबाट स्पष्ट देखाइन्छ।

ग्रहमुखचक्र रविभात्

ग्रह	सू	बु	शु	शं	चं	मं	बृ	रा	के
न.	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७
फ.	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

अग्निवास र शुभाशुभ विचार

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता
शेषेगुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः ।
सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे
प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ॥

अर्थः-होम गर्ने दिन अग्नि, पृथ्वीमा भएमा मात्र शुभ फल दिन्छन्। यदि स्वर्गमा या पातालमा अग्निवास छ भने कर्ताको प्राण सम्पत्ति वा अभीष्ट वस्तुको नाश गर्दछन्। त्यसकारण अग्निको वास जुराएर मात्र हवनादि काम गर्नुपर्छ। अग्निवास विचार गर्दा यसरी गर्नुपर्छ जस्तै-

शुक्लपक्षको प्रतिपदादेखि औंसीसम्म तिथिको संख्या १ देखि ३० सम्म मानिन्छ जस्तै प्रतिपदा १ भयो भने चतुर्दशी २९ औंसी ३० यो प्रकारले गन्ने। त्यसै गरी वारको संख्या पनि रविवारदेखि शनिवारसम्म

सात मान्ने, अब बार र तिथिको संख्या जाड्ने र त्यमा १ मिलाउने र चारले भाग गर्ने यदि एक शेष रह्यो भने अग्नि स्वर्गमा छन् भनेर जान्नुपर्छ । त्यस्तै दुई शेष रहेमा पातालमा छन् ० र ३ शेष रहेमा पृथ्वीमा छन् भनेर जान्नुपर्छ । पृथ्वीमा भएका बेलामा मात्र होम गर्नु राम्रो हुन्छ । अन्यथा कर्तालाई ठूलो हानि गराउँछन् (नहिं यज्ञ समोरिपुः)

उदाहरण- जस्तै शुक्लपक्षको पञ्चमीका दिन बिहीवार परेको छ भने पञ्चमीको ५+विहीवार पनि पाँचौं संख्या भएकाले ५ जोड्दा १० भयो । अब १ जोड्दा ११ भयो । चारले भाग गर्दा ११÷४=३ शेष रह्यो । माथिका भनाइ अनुसार अग्नि भूमिमा भएकाले शुभ हुने भयो । यसप्रकार अरू पनि विचार गर्नुपर्छ ।

शिववास विचार

तिथिञ्च द्विगुणीकृत्य पञ्चभिश्च समन्वितम् ।
सप्तभिश्च हरेत् भागं शिववास समुद्दिशेत् ॥
एके कैलासवासं स्यात् द्वितीये गौरीसन्निधौ ।
तृतीये वृषभारुढः सभायाञ्च चतुर्थके ॥
पञ्चमे भोजने चैव षष्ठे क्रीडा प्रकीर्तिता ।
श्मशाने सप्तमे चैव शिववासं समुद्दिशेत् ॥
कैलासे लभेत सौख्यं गौर्याञ्च सुखसम्प्रदः ।
वृषभे च श्रियः प्राप्तिः सभासन्तापकारिणी ॥
भोजने भोजनप्राप्तिः क्रीडायां कलहो भवेत् ।
श्मशाने मरणंश्चैव शिववासफलं स्मृतम् ॥

अर्थः-शुक्लपक्षको प्रतिपदादेख आमावास्य सम्मका तिथिसंख्यालाई दुईले गुनेर पाँच अङ्क जोड्नु र सातले भाग दिनु । शेष अङ्कले शिवजीको वास र फल बताउँछ । एक शेष रहेमा कैलाशमा शिववास छ शुभ फल दिन्छन् । दुई शेषमा गौरीसँग छन् यहाँ पनि शुभ सुख फल दिन्छन् । त्यस्तै ३ शेष रहेमा वृषभमाथि छन् यो पनि शुभ श्रीपाप्ति गराउँछन् । चार शेष भएमा सभामा छन् यसको फल कर्तालाई सन्ताप बढाउँछन् । पाँच शेष रहेमा शिव भोजनमा छन् र कर्तालाई पनि भोज

(सान्सारिक भोग) दिन्छन् । छ शेष रहेमा क्रिडामा छन् यसको फल कर्ताको सन्तान हानि गराउँछन् । शून्य शेष रहेमा शिवजी श्मशानमा बसेका हुन्छन् । यस्तो बेलामा शिवजीको रूद्री पूजा गरेमा फल मृत्यु दिन्छन् ।

शुभकार्यमा दोष परिहार विचार

केन्द्रेकोणे जीवआये रवौ वा
लग्ने चन्द्रे वापि वर्गोत्तमे वा ।
सर्वे दोषा नाशमायान्ति चन्द्रे
लाभे तद्वद् दुर्मुहूर्तांशदोषाः ॥

अर्थः-केन्द्र वा कोणमा बृहस्पति छन् वा एकादशमा सूर्य अथवा लग्नमा (चन्द्रदेखि होस् या लग्नदेखि होस्) वर्गोत्तम (कन्यालग्नमा कन्या नवांशक, चन्द्र कन्या राशिस्थ भए कन्याकै नवांशमा चन्द्रमा भए वर्गोत्तम हुन्छ) । केन्द्र भन्नाले सप्तम भावलाई छोडेर भन्ने कुरा स्वतः बुझ्नुपर्छ । यदि उक्त स्थितिमा ग्रहहरू छन् भने सम्पूर्ण दोष नाशक हुन्छन् । निर्धक्क भएर शुभ कार्य गरे हुन्छ ।

काव्ये गुरौ वा सौम्ये वा यदा केन्द्रत्रिकोणगे ।
नाशयान्त्यखिलादोषाः पापानीव हरिस्मृतेः ॥

अर्थः-शुक्र, बृहस्पति र बुध ग्रह यदि सप्तम भाव छोडी केन्द्र वा त्रिकोणमा छन् भने अखिल दोषनाशक हुन्छन् । जसरी भगवान् हरिलाई सम्झँदा पाप नाशिन्छन् । (इत्यादि दोषनाशक प्रमाणहरू धेरै छन्, तर सबै को मत भने शुभ ग्रह केन्द्र वा त्रिकोणमा हुनु पाप ग्रह उपचय स्थानमा भएमा मात्र दोषनाशक हुन्छ भन्ने उक्त प्रमाणहरूको तात्पर्य हो ।)

त्रिकोणे केन्द्रे वा मदनरहिते दोषशतकं
हरेत् सौम्यः शुक्रो द्विगुणमपि लक्षं सुरगुरूः ।
भवेदाये केन्द्रेऽङ्गप उत लवेशो यदि तदा
समूहं दोषाणां दहन इति तूलं शमयति ॥

अर्थः-दोष समूह एक विशेष परिहार यसप्रकार गरेको छ । यदि

मदन (सप्तमभाव) लाई छोडेर केन्द्र त्रिकोणमा बुध भएमा सय प्रकारका दोष परिहार हुन्छ। त्यस्तै शुक्र भए द्विगुण दुईशतक (दुई सय), बृहस्पति भए एक लाख दोष समूहको नाश गरिदिन्छन्। तात्पर्य यो छ कि सप्तम भाव छोडेर अन्य केन्द्र त्रिकोणमा भएको वृहस्पति शुभकारक हुन्छ। यदि अन्य योग भने जस्तो नहुँदा उक्त प्रकारको वृहस्पति भएमा मांगलिक शुभ कार्य गर्नु हुन्छ।

विवाहमा आपत् कालिन भई लग्नाभाव भएमा

नास्यामृक्षं न तिथिकरणं नैवलग्नस्य चिन्ता
नो वा वारो न च लवविधिर्नो मुहूर्तस्य चर्चा।
नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्रदोषो
गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्वकार्येषु शस्ता॥

अर्थः-यदि वरकन्याको विवाह अवस्था बिति नै सक्न लागेको छ र शुभलग्नाभाव भएमा गोधूली कालमा गर्न सकिन्छ। (गोधूली काल भनेको मंसिर, पुस, माघ र फाल्गुन यी महिनामा प्रभाहीन भएका सूर्यबिम्ब देखिएसम्मको साँझको समय हो। त्यस्तै चैत, वैशाख, ज्येष्ठ र आषाढमा सूर्यबिम्ब आधा देखिने अर्थात् अर्धास्त सूर्यबिम्ब भएको बेला त्यसै गरी श्रावण, भाद्र, आश्विन र कार्तिक यी महिनामा सूर्यबिम्बको पूरै अस्त भएपछि मात्र गोधूलीकाल हुन्छ।)

यदि लग्नाभाव भयो विवाहकाल टर्न लागेमा ब्राह्मणले पनि उक्त गोधूली कालमा विवाह गर्नहुन्छ। क्षत्रिले गन्धर्व (स्वयंवर मात्र) विवाह गर्ने भए र शूद्रले गरिने विवाह पनि उक्त गोधूलीकाल शुभ हुन्छ। अन्य अवस्थामा ब्राह्मण, क्षत्रिले विहित लग्नमा नै गर्नुपर्छ। अन्यथा विवाह दुषित हुन्छ। यथा-

घटीलग्नं यदा नास्ति तदा गोधूलीकं शुभम्।
शूद्रादीनां बुधाः प्राहुर्न द्विजानां कदाचन॥

यस प्रकार गोधूली काल प्राप्त भएता पनि निम्न लिखित पाँच दोषहरू त्यज्य छन्। यथा-

कुलिकं क्रान्तिसाम्यञ्च मूर्तौ षष्ठाष्टमः शशी ।
पञ्चगोधूलिके त्याज्या अन्यदोषाः शुभावहाः ॥

यस प्रकार सामान्य अवस्थामा दोष र दोष परिहार गर्नु आवश्यक मानिन्छ। अर्थ श्लोकबाटै स्पष्ट छ।

ग्रहपीडित अवस्थामा व्यक्तिलाई शान्तिकादि उपाय

सर्वप्रथम कुनै पनि व्यक्तिको ठीक जन्म सयमअनुसार जन्मपत्रिका बनेको छ कि छैन त्यो विचार गर्ने। यदि अल्पज्ञद्वारा बनाएको जन्मपत्रिका भए आफूले नै सच्याएर जन्मलग्न, वर्षलग्न र गोचर समेतको विचार गर्ने। पश्चात् मुन्था योगिनी दशाको पनि विचार गर्ने। संभावना भए केन्द्रादि लग्नादि क्रमले दशावर्ष ल्याउने। उक्त प्रकारले दशा गणना गर्न नसके विंशोत्तरीय र त्रिभागीय दशामूलमा अन्तर्दशाको विचार गर्ने। माथि दशा प्रकारणमा बताएझैं अरिष्टकारक दशाको उदय हुन लागेको भए व्यक्तिलाई अनेक प्रकारको कष्ट दुःख दरिद्रताले ग्रसित गर्दछ। उक्त प्रकारको दुःखकष्ट रोगव्याधी हुने सम्भावना भए पनि पीडित भइरहेको भए पनि ग्रहशान्तिका विधिअनुसार ग्रहशान्ति गर्ने। 'रोगानशेषानपहंसि तुष्टा....' वा 'सर्वावाधाप्रशमनं.....' इत्यादि मन्त्रले सम्पुटित दुर्गा सप्तशतीपाठ गर्ने। उक्त काम विधिपूर्वक गरेर विशष (पीडित) ग्रहको मन्त्र जप गर्ने। यदि पीडित व्यक्ति ब्राह्मण भए वैदिकमन्त्रको प्रयोग गर्ने। यदि ब्राह्मण भए पनि संस्कारविहीन नित्य नैमित्य कर्महरू नगर्ने केबल जात्या ब्राह्मण रहेछ भने उसलाई केवल तान्त्रीक मन्त्र जप गरे हुन्छ वैदिक मन्त्र जपिरहनुपर्दैन। किनभने ऊ कर्म र संस्कारविहीन भएकाले शूद्र भइसकेको छ। अन्य जातिको व्यक्तिलाई ग्रहका तान्त्रिक मन्त्र जप गरी पीडित व्यक्तिको शान्तिका निमित्त नामोच्चारण सहित सङ्कल्पगरेर ग्रहहरूलाई तर्पण गर्ने पुनः पीडित व्यक्तिलाई ग्रहमन्त्रद्वारा अभिमन्त्रित जलले मार्जन गर्ने। अनि ब्राह्मण भोजन गर्ने। उक्त कर्म गर्दा नियमको खुब ध्यान राख्नु पर्छ, अन्यथा कार्यमा बाधक तत्त्वले कर्ता र कारक दुबैलाई हानि गर्छ। त्यसकारण कर्ताकारक पदार्थ सबै विचार गरेर गर्नुपर्छ। उक्त ग्रह पूजा जप हवन तर्पण मार्जन र ब्राह्मण भोजन गर्दा सम्बन्धीत ग्रहका निश्चित मन्त्र, निश्चित संख्यामा जप गर्नुपर्छ। जपको दशांश हवन, हवनको दशांश तर्पण,

तर्पणको दशांश मार्जन, मार्जनको दशांश ब्राह्मण भोजन । यसप्रकार विधि भएकाले त्यसै अनुसार गर्नुपर्छ ।

उक्त प्रकारको ग्रहयज्ञ गरिसकेपछि पछिल्लो दिन विहान निम्न लिखित ग्रहहरूका औषधिहरू ग्रहमन्त्रले र तामाको भाँडोमा जल हाली नौ ग्रहका मन्त्रले एक एक गरी अभिमन्त्रित गर्दै पुनः सबै औषधिहरू मिलाएर पुनः ग्रहमन्त्रले नै मन्त्रिने । यसप्रकार मन्त्रद्वारा मन्त्रिएको जलले नौचोटी अभिशेष गरेर अनि पूरै शरीर भिज्ने गरी नुहाउने । यो क्रम कम्तीमा तीन दिनसम्म गर्ने । यसो गर्नाले जति धेरै कष्ट भएको रहेछ भने पनि तुरुन्तै शान्ति हुन्छ । यो साक्षात् अनुभव भएको कुरा हो । (तीनदिन भन्नाले केवल स्नानको लागि मात्र हो । अरू विधि त एकै दिन गरेकाले पूर्ण हुन्छ ।) यसप्रकारको शान्तिगर्न प्रायः जन्मदिन (तिथि) पारेर गर्नु विशेष राम्रो हुन्छ । जन्मदिन छुटिसकेको र त्यो दिन सम्म पर्खन नसकिने अवस्थामा भने रुद्रि अग्नि ग्रहमुख र पीडित व्यक्तिको लग्न राशिबाट आठबाह्र नक्षत्र राशि र लग्न नपारी गर्नुपर्छ । रत्न आदि धारण गराउनु छ भने पनि यसै (शान्ति गरेकै) दिन विधिपूर्वक प्राण प्रतिष्ठा गराई शुभ समयमा धारण गर्नुपर्छ । उल्लिखित स्नानपदार्थहरू यसप्रकारका छन्-

ग्रहहरूको स्नानौषधीका नाम र दानीय पदार्थका नाम

लाजाकुष्ठंबलाप्रियङ्गुघनसिद्धार्थैर्निशादारुभिः
पुङ्खालोध्रयुतैर्जलैर्निगदितं स्नानं ग्रहोत्थाघहृत्
धेनुः कम्बरुणो वृषश्च कनकं पीताम्बरं घोटकः ।
श्वेतो गौरसिता महासिरज इत्येता रवेर्दक्षिणा ॥

अर्थः-ग्रहपीडा शान्त्यर्थ्य स्नान गर्ने औषधिहरू यसप्रकार छन् । लाजा (लज्जावती वा लाजावर्त), कुट नामक लताविशेष, बलुभ्फार, मोथे, सर्स्यूं, कालो हलेदो वा बेसार, देवदारू, लोद्रा र कागनु वा दहिगुँहेलो । यी औषधिहरू क्रमैले सूर्यको मन्त्रले लाजा मन्त्रिने, चन्द्रमाकोले कुट, मङ्गलकोले बलु, बुधमन्त्रले कागनु वा दहीगुँहेलो, बृहस्पतिका मन्त्रले मोथे, शुक्रका मन्त्रले सर्स्यौं, शनिका मन्त्रले कालो हलेदो, राहुका मन्त्रले देवदारू,

केतुका मन्त्रले लोद्रा अभिमन्त्रित गरी ग्रहपीडितलाई स्नान गराउने ।

त्यस्तै ग्रहका दानीय वस्तु पनि दान गर्न लगाउने ती वस्तु यसप्रकार छन् । सूर्यको शान्तिका लागि गाई दान, चन्द्रमाको लागि शंख, मङ्गलको लागि रातो गोरू, बुधको सुन, बृहस्पतिको पहेंलो कपडा, शुक्रको सेतो घोडा, शनिको कालो गाई, राहुको तरवार, केतुको बाख्रो (बोको) उक्त विधिद्वारा जप वा अनुष्ठान गराइदिने मन्त्र जप गर्ने ब्राह्मणलाई दान गरेर दिने ।

ग्रहदोष शान्ति गर्दा पीडित व्यक्तिले गर्ने कृत्य

संहिता प्रदीपमा यसप्रकार बताइएको छ । सूर्य शन्तिका निम्ति आइतवार ताम्बुल (पानमसला) दान गर्ने । चन्द्रमा शान्तिका निम्ति श्रीखण्ड दान गर्ने । मङ्गलपीडित व्यक्तिले मङ्गलवार भोजन दान गर्ने । त्यस्तै बुध पीडितले बुधवार फूल दान गर्ने । बृहस्पतिबाट पीडा भएमा नित्य ब्रह्मा विष्णुको नमस्कार गर्न विशेष विहिवार ॐ ब्रह्मणे नमः । ॐ विष्णवे नमः भनेर एक हजार बार नमस्कार गर्ने । शुक्रशान्ति गर्दा राम्रो कपडा शुक्रवार दान गर्ने । शनि पीडित व्यक्तिले शनिवार प्रातः सधैं तोरीको तेल जिउमा घसेर नुहाउने । राहु तथा केतु पीडित व्यक्तिले नित्य शुद्ध आचारवान ब्राह्मणलाई नमस्कार गर्ने ।

सूर्यादिनवग्रहहरूका वैदिक तथा तान्त्रिक जपमन्त्र

सूर्यादि ग्रह अरिष्ट भएमा निम्नलिखित मन्त्रहरू विधिपूर्वक जप गर्नाले शान्ति हुन्छ ।

सूर्यको वैदिक जपमन्त्र–

ॐ आकृष्णेनरजसाव्वर्त्तमानोनिवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ।
हिरण्ययेनसवितारथेनादेवो याति भुवनानिपश्यन् ।

तान्त्रिक मन्त्र– ॐ घृणिः सूर्याय नमः ।
जप संख्या ७००० । सूर्य प्रसन्नार्थं शिवपूजा रुद्राभिषेक गर्नु ।

सूर्य प्रीतिकारक स्तोत्र-

अस्य श्रीआदित्यस्तोत्रस्य आङ्गिरस ऋषिः । त्रिष्टुप छन्दः ।
सूर्यो देवता । सूर्यप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः ।
नवग्रहाणां सर्वेषां सूर्यादीनां पृथक् पृथक् ।
पीडा च दुःसहा राजन् जायते सततं नृणाम् ॥१॥
पीडानाशाय राजेन्द्र नामानि शृणु भास्वतः ।
सूर्यादीनां च सर्वेषां पीडा नश्यति शृण्वतः ॥२॥
आदित्यः सविता सूर्यः पूषाऽर्कः शीघ्रगो रविः ।
भगस्त्वष्टाऽर्यमा हंसो हेलिस्तेजोनिर्धिहरिः ॥३॥
दिननाथो दिनकरः सप्तसप्तिः प्रभाकरः ।
विभावसुर्वेदकर्ता वेदाङ्गो वेदवाहनः ॥४॥
हरिदश्वः कालवक्त्रः कर्मसाक्षी जगत्पतिः ।
पद्मिनीबोधको भानुर्भास्करः करूणाकरः ॥५॥
द्वादशात्मा विश्वकर्मा लोहिताङ्गस्तमोनुदः ।
जगन्नाथोऽरविन्दाक्षः कालात्मा कश्यपात्मजः ॥६॥
भूताश्रयो ग्रहपतिः सर्वलोक नमस्कृतः ।
जपाकुसुमसंकाशो भास्वानदितिनन्दनः ॥७॥
ध्वान्तेभसिंहः सर्वात्मा लोकनेत्रो विकर्तनः ।
मार्तण्डो मिहिरः सूरस्तपनो लोकतापनः ॥८॥
जगत्कर्ता जगत्साक्षी शनैश्चरपिता जयः ।
सहस्ररश्मिस्तरर्णिभगवान् भक्तवत्सलः ॥९॥
विवस्वानादिदेवश्च देवदेवो दिवाकरः ।
धन्वन्तरिर्व्याधिहर्ता दद्रुकुष्ठविनाशकः ॥१०॥
चराचरात्मा मैत्रेयोऽमितो विष्णुर्विकर्तनः ।
लोकशोकापहर्ता च कमलाकर आत्मभूः ॥११॥
नारायणो महादेवो रूद्रः पुरुष ईश्वरः ।
जीवात्मा परमात्मा च सूक्ष्मात्मा सर्वतोमुखः ॥१२॥
इन्द्रोऽनलो यमश्चैव नैत्रृतो बरुणोऽनिलः ।
श्रीद ईशान ईन्दुश्च भौमः सौम्यो गुरुः कविः ॥१३॥
शौरिर्विधुन्तुदः केतुः कालः कालात्मको विभुः ।
सर्वदेवमयो देवः कृष्णः कामप्रदायकः ॥१४॥

य एतैर्नामभिर्मर्त्यो भक्त्या स्तौति दिवाकरम् ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वरोगविवर्जितः ॥१५॥
पुत्रवान् धनवान् श्रीमान् जायते स न संशयः ।
रविवारे पठेद्यस्तु नामान्येतानि भास्वतः ॥१६॥
पीडाशान्तिर्भवेत्तस्य ग्रहाणां च विशेषतः ।
सद्यः सुखमवाप्नोति चायुर्दीर्घं च नीरूजम् ॥१७॥

इति श्रीभविष्यपुराणे आदित्यस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

सूर्यकवचम्-

अस्य श्रीसूर्यकवचस्तोत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता सूर्यप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

श्रीसूर्य उवाच-

सांव सांव महाबाहो शृणु मे कवचं शुभम् ।
त्रैलोक्यमंगलं नाम कवचं परमाद्भुतम् ॥१॥
यज्ज्ञात्वा मन्त्रवित्सम्यक् फलं प्राप्नोति निश्चितम् ।
यद्धृत्वा च महादेवो गुणानामधिपोऽभवत् ॥२॥
पठनाद्धारणाद्विष्णुः सर्वेषां पालकः सदा ।
एवमिन्द्रादयः सर्वे सर्वैश्वर्यमवाप्नुवन् ॥३॥
कवचस्य ऋषिर्ब्रह्मा छन्दोऽनुष्टुपबुदाहृतः ।
श्रीसूर्यो देवता चात्र सर्वदेवनमस्कृतः ॥४॥
यशआरोग्यमोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ।
प्रणवो मे शिरः पातु घृणिर्मे पातु भालकम् ॥५॥
सूर्योऽव्यान्नयनद्वंद्वमादित्यः कर्णयुग्मकम् ।
अष्टाक्षरो महामन्त्रः सर्वाभीष्टफलप्रदः ॥६॥
ह्रीं बीजं मे मुखं पातु हृदयं भुवनेश्वरी ।
चन्द्रविंवं विंशदाद्यं पातु मे गुह्यदेशकम् ॥७॥
अक्षरोऽसौ महामंत्रः सर्वतन्त्रेषु गोपितः ।
शिवो वह्निसमायुक्तो वामाक्षीविन्दुभूषितः ॥८॥
एकाक्षरो महामन्त्रः श्रीसूर्यस्य प्रकीर्तितः ।
गुह्याद्गुह्यतरो मन्त्रो वाञ्छाचिन्तामणिः स्मृतः ॥९॥

शीर्षादिपादपर्यन्त सदा पातु मनूत्तमः ।
इति ते कथितं दिव्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ॥१०॥
श्रीप्रदं कान्तिदं नित्यं धनारोग्यविवर्धनम् ।
कुष्ठादिरोगशमनं महाव्याधिविनाशनम् ॥११॥
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यमरोगी बलवान् भवेत् ।
तत्पुनः किमिहोक्तेन यद्यन्मनसि वर्तते ॥१२॥
तत्तसर्व भवेत्तस्य कवचस्य च धारणात् ।
भूतप्रेतपिशाचाश्च यक्षगंधर्वराक्षसाः ॥१३॥
ब्रह्मराक्षस वेताला न द्रष्टुमपि ते क्षमाः ।
दूरादेव पलायन्ते तस्य संकीर्तनादपि ॥१४॥
भूर्जपत्रे समालिख्य रोचनागरूकुंकुमैः ।
रविवारे च संक्रान्त्य सप्तम्यां च विशेषतः ।
धारयेत्साधकश्रेष्ठः श्रीसूर्यस्य प्रियो भवेत् ॥१५॥
त्रिलोहमध्यगं कृत्वा धारयेद्दक्षिणे करे ।
शिखायामथवा कण्ठे सोऽपि सूर्यो न संशयः ॥१६॥
इति ते कथितं सांव त्रैलोक्यमङ्गलाभिधम् ।
कवचं दुर्लभं लोके तव स्नेहात्प्रकाशितम् ॥१७॥
अज्ञात्वा कवचं दिव्य यो जपेत्सूर्यमन्त्रकम् ।
सिद्धिर्न जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि ॥१८॥

इति श्रीब्रह्मयामले त्रैलोक्यमङ्गलं नाम सूर्यकवचं सम्पूर्णम् ॥

चन्द्रमाको वैदिक तथा तान्त्रिक जप मन्त्र

इमन्देवाऽअसपत्क्न ६ सुवद्ध्वम्महतेक्षत्रायमहते
ज्यैष्ठ्यामहतेजानराज्याऽयेन्द्रस्येन्द्रियाय ।
इममुष्यपुत्रममुष्यैपुत्रमस्यैविशऽएषवोमीराजासोमोस्माकम्ब्राह्मणाना ७ राजा ।

तान्त्रिक मन्त्र- ॐ सौं सोमाय नमः ।

जपसंख्याः दुवैथरी मन्त्रको ११००० । र विशेष देवीको पूजा दुर्गासप्तशती पाठ ।

चन्द्र प्रीतिकारक स्तोत्र-

चन्द्रस्य शृणु नामानि शुभदानि महीपते ।
यानि श्रुत्वा नरो दुःखान्मुच्यते नात्र संशयः ॥१॥
सुधाकरश्च सोमश्च ग्लौरब्जेः कुमुद प्रियः ।
लोकप्रियः शुभ्रभानुश्चन्द्रमा रोहिणीपतिः ॥२॥
शशी हिमकरो राजा द्विजराजो निशाकरः ।
आत्रेय इन्दुः शीतांशुरोषधीशः कलानिधिः ॥३॥
जैवातृको रमाभ्राता क्षीरोदार्णवसंभवः ।
नक्षत्रनायकः शंभुशिरश्चूडामणिर्विभुः ॥४॥
तापहर्ता नभोदीपो नामान्येतानि यः पठेत् ।
प्रत्यहं भक्तिसंयुक्तस्तस्य पीडा विनश्यति ॥५॥
तद्दिने च पठेद्यस्तु लभेत्सर्व समीहितम् ।
ग्रहादीनां च सर्वेषां भवेच्चन्द्रबलं सदा ॥६॥

चन्द्रकवचम्

समं चतुर्भुजं वन्दे केयूरमुकुटोज्ज्वलम् ।
वासुदेवस्य नयनं शंकरस्य च भूषणम् ॥१॥
एवं ध्यात्वा जपेन्नित्यं शशिनः कवचं शुभम् ।
शशी पातु शिरोदेशं भालं पातु कलानिधिः ॥२॥
चक्षुषी चन्द्रमाः पातु श्रुती पातु निशापतिः ।
प्राणं क्षपाकरः पातु मुखं कुमुदबांधवः ॥३॥
पातु कण्ठं च मे सोमः स्कन्धौ जैवातृकस्तथा ।
करौ सुधाकरः पातु वक्षः पातु निशाकरः ॥४॥
हृदयं पातु मे चन्द्रो नाभिं शंकरभूषणः ।
मध्यं पातु सुरश्रेष्ठः कटिं पातु सुधाकरः ॥५॥
ऊरू तारापतिः पातु मृगांको जानुनी सदा ।
अब्धिजः पातु मे जंघे पातु पादौ बिधुः सदा ॥६॥
सर्वाण्यन्यानि चांगानि पातु चन्द्रोऽखिलं वपुः ।
एतद्धि कवचं दिव्यं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ।
यः पठेच्छृणुयाद्वापि सर्वत्र विजयी भवेत् ॥७॥
इति श्री ब्रह्मयामल चन्द्र कवचं सम्पूर्णम् ॥

मङ्गलको वैदिक मन्त्र

ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवः ककुत्पत्तिः पृथिव्याऽअयम् । अपा ᳪ रेता ᳪ सिजिन्वति ।

तान्त्रिक मन्त्र– ॐ अं अङ्गारकाय नमः ।
जपसंख्या १०,०००। र विशेष गणेश पूजा, हनुमान पूजा ।

मङ्गल प्रीतिकारक स्तोत्र–
अङ्गारकः शक्तिधरो लोहिताङ्गो धरासुतः ।
कुमारो मङ्गलो भौमो महाकायो धनप्रदः ॥१॥
ऋणहर्ता दृष्टिकर्ता रोगकृद्रोगनाशनः ।
विद्युत्प्रभो व्रणकरः कामदो धनहृत् कुजः ॥२॥
सामगानप्रियो रक्तवस्त्रो रक्तायतेक्षणः ।
लोहितो रक्तवर्णश्च सर्वकर्मावबोधकः ॥३॥
रक्तमाल्यधरो हेमकुण्डली ग्रहनायकः ।
नामान्येतानि भौमस्य यः पठेत्सततं नरः ॥४॥
ऋणं तस्य च दौर्भाग्यं दरिद्र्यं च विनश्यति ।
धनं प्राप्नोति विपुलं स्त्रियं चैव मनोरमाम् ॥५॥
वंशोद्द्योतकरं पुत्रं लभते नात्र संशयः ।
योऽर्चयेदह्नि भौमस्य मङ्गलं बहुपुष्पकैः ॥६॥
सर्वा नश्यन्ति पीडाश्च तस्य ग्रहकृता ध्रुवम् ॥७॥

मङ्गलकवचम्
रक्तांबरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्भुजो मेषगमो गदाभृत् ।
धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदा मम स्याद्वरदः प्रशांतः ॥१॥
अङ्गारकः शिरो रक्षेन्मुखं वै धरणीसुतः ।
श्रवौ रक्तांबरः पातु नेत्रे मे रक्तलोचनः ॥२॥
नासां शक्तिधरः पातु मुखं मे रक्तलोचनः ।
भुजौ मे रक्तमाली च हस्तौ शक्तिधरस्तथा ॥३॥

वक्षः पातु वरांगश्च हृदयं पातु लोहितः ।
कटिं मे ग्रहराजश्च मुखं चैव धरासुतः ॥४॥
जानुजंघे कुजः पातु पादौ भक्तप्रियः सदा ।
सर्वाण्यन्यानि चाङ्गानि रक्षेन्मे मेषवाहनः ॥५॥
य इदं कवचं दिव्यं सर्वशत्रुनिवारणम् ।
भूतप्रेतपिशाचानां नाशनं सर्वसिद्धिदम् ॥६॥
सर्वरोगहरं चैव सर्वसंपत्प्रदं शुभम्
भुक्तिमुक्तिप्रदं नृणां सर्वसौभाग्यवर्धनम् ।
रोगवंधविमोक्षं च सत्यमेतन्न संशयः ॥७॥

इति श्रीमार्कंडेयपुराणे मङ्गलकवचं सम्पूर्णम् ॥

बुधको वैदिक जप मन्त्र

ॐउद्बुध्यस्वाग्नेप्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्तेस ँ सृजेथामयञ्च अस्मिन्त्सधत्स्थेऽअद्ध्युत्तरशिमन्विश्वेदेवायजमानश्चसीदत ।

तान्त्रिक मन्त्र- ॐ बुं बुधाय नमः ।

जपसंख्या ८००० । विशेष विष्णु पूजा सत्यनारायणको पूजा भागवत पाठ ।

बुध प्रीतिकारक स्तोत्र-

बुधो बुद्धिमतां श्रेष्ठो बुद्धिदाता धनप्रदः ।
प्रियङ्गुकलिकाश्यामः कञ्जनेत्रो मनोहरः ॥१॥
ग्रहोपमो रौहिणेयो नक्षत्रेशो दयाकरः ।
विरुद्धकार्यहन्ता च सौम्यो वुद्धिविवर्धनः ॥२॥
चन्द्रात्मजो विष्णुरूपी ज्ञानी ज्ञो ज्ञानिनायकः ।
ग्रहपीडाहरो दारपुत्रधान्यपशुप्रदः ॥३॥
लोकप्रियः सौम्यमूर्तिर्गुणदो गुणिवत्सलः ।
पञ्चविंशतिनामानि बुधस्यैतानि यः पठेत् ॥४॥
स्मृत्वा बुधं सदा तस्य पीडाः सर्वा विनश्यति ।
तद्दिने वा पठेद्यस्तु लभते स मनोंगतम् ॥५॥

इति श्रीपद्मपुराणे बुधपञ्चविंशतिनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

बुधकवचम्

बुधस्तु पुस्तकधरः कुंकुमस्य समद्युतिः ।
पीताम्बरधरः पातु पीतमाल्यानुलेपनः ॥१॥
कटिं च पातु मे सौम्यः शिरोदेशं बुधस्तथा ।
नेत्रे ज्ञानमयः पातु श्रोत्रे पातु निशाप्रियः ॥२॥
घ्राणं गन्धप्रियः पातु जिह्वां विद्याप्रदो मम ।
कण्ठं पातु विधोः पुत्रो भुजा पुस्तकभूषणः ॥३॥
वक्षः पातु वरांगश्च हृदयं रोहिणीसुतः ।
नाभिं पातु सुराराध्यो मध्यं पातु खगेश्वरः ॥४॥
जानुनी रौहिणेयश्च पातु जंघेऽखिलप्रदः ।
पादौ मे बोधनः पातु पातु सौम्योऽखिलं वपुः ॥५॥
एतद्धि कवचं दिव्यं सर्वपापप्रणाशनम् ।
सर्वरोगप्रशमनं सर्वदुःखनिवारणम् ॥६॥
आयुरारोग्यधनदं पुत्रपौत्रप्रवर्धनम् ।
यः पठेच्छृणुयाद्वापि सर्वत्र विजयी भवेत् ॥७॥

इति श्रीब्रह्मवैवर्तकपुराणे बुधकवचं सम्पूर्णम् ॥

गुरूको वैदिक जपमन्त्र

ॐबृहस्पतेऽअतियदर्योऽअर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजाततदस्मासुद्रविणन्धेहिचित्रम् । उपयामगृहितोसिवृहस्पतयेत्वैषतेयोनिर्बृहस्पतयेत्वा ।

तान्त्रिक मन्त्र- ॐ बृं बृहस्पतये नमः ।

जपसंख्या १९०००। विशेष कुलदेवताको पूजा, ब्राह्मण पूजा ।

बृहस्पति प्रीतिकारक स्तोत्र-

गुरुर्बृहस्पतिर्जीवः सुराचार्यो विदांवरः ।
वागीशो धिषणो दीर्घश्मश्रुः पीताम्बरो युवा ॥१॥
सुधादृष्टिर्ग्रहाधीशो ग्रहपीडापहारकः ।
दयाकरः सौम्यमूर्तिः सुरार्च्यः कुङ्कुमद्युतिः ॥२॥
लोकपूज्यो लोकगुरुर्नीतिज्ञो नीतिकारकः ।
तारापतिश्चाङ्गिरसो वेदवैद्यपितामहः ॥३॥
भक्त्या बृहस्पतिं स्मृत्वा नामान्येतानि यः पठेत् ।
अरोगी बलवान् श्रीमान् पुत्रवान् स भवेन्नरः ॥४॥
जीवेद्वर्षशतं मर्त्यः पापं नश्यति नश्यति ।
यः पूजयेद्गुरुदिने पीतगन्धाक्षताम्बरैः ॥५॥
पुष्पदीपोपहारैश्च पूजयित्वा बृहस्पतिम् ।
ब्राह्मणान्भोजयित्वा च पीडाशान्तिर्भवेद्गुरोः ॥६॥

इति श्रीस्कन्दपुराणे बृहस्पतिस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

बृहस्पतिकवचम्-

अभीष्टफलदं देवं सर्वज्ञं सुरपूजितम् ।
अक्षमालाधरं शान्तं प्रणमामि बृहस्पतिम् ॥१॥
बृहस्पतिः शिरः पातु ललाटं पातु मे गुरुः ।
कर्णौ सुरगुरुः पातु नेत्रे मेऽभीष्टदायकः ॥२॥
जिह्वां पातु सुराचार्यो नासां मे वेदपारगः ।
मुखं मे पातु सर्वज्ञो कण्ठं मे देवतागुरुः ॥३॥
भुजावांगिरसः पातु करौ पातु शुभप्रदः ।
स्तनौ मे पातु वागीश कुक्षिं मे शुभलक्षणः ॥४॥
नाभिं देवगुरुः पातु मध्यं पातु सुखप्रदः ।
कटिं पातु जगद्वन्द्य ऊरू मे पातु वाक्पतिः ॥५॥
जानुजंघे सुराचार्यो पादौ विश्वात्मकस्तथा ।
अन्यानि यानि चाङ्गानि रक्षेन्मे सर्वतो गुरुः ॥६॥
इत्येतत्कवचं दिव्यं त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः ।
सर्वान्कामानवाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत् ॥७॥

इति श्रीब्रह्मयामलोक्तं बृहस्पतिकवचं सम्पूर्णम् ।

शुक्रको वैदिक जपमन्त्र

ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसम्ब्रह्मणाव्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः । ऋतेनसत्यमिन्द्रियंविपान ꣳ शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु ।

तान्त्रिकमन्त्र- ॐशुं शुक्राय नमः ।

जपसंख्या ११००० । जप विशेष इन्द्राणी पूजा इन्द्राक्षी स्तोत्र पाठ गर्नुपर्छ ।

शुक्रप्रीतिकारक स्तोत्र-

नमस्ते भार्गवश्रेष्ठ दैत्यदानवपूजितः ।
वृष्टिरोधप्रकर्त्रे च वृष्टिकर्त्रे नमो नमः ॥१॥
देवयानीपितस्तुभ्यं वेदवेदांगपारगः ।
परेण तपसा शुद्धः शंकरो लोकसुन्दरः ॥२॥
प्राप्तो विद्यां जीवनाख्यां तस्मै शुक्रात्मने नमः ।
नमस्तस्मै भगवते भृगुपुत्राय वेधसे ॥३॥
तारामण्डलमध्यस्थ स्वभासा भासिताम्बरः ।
यस्योदये जगत्सर्वं मङ्गलार्हं भवेदिह ॥४॥
अस्तं याते ह्यरिष्टं स्यात्तस्मै मङ्गलरूपिणे ।
त्रिपुरावासिनो दैत्यान् शिवबाणप्रपीडितान् ॥५॥
विद्ययाऽजीवयच्छुक्रो नमस्ते भृगुनन्दनः ।
ययातिगुरवे तुभ्यं नमस्ते कविनन्दन ॥६॥
बलिराज्यप्रदो जीवस्तस्मै जीवात्मने नमः ।
भार्गवाय नमस्तुभ्यं पूर्वगीर्वाणवन्दित ॥७॥
जीवपुत्राय यो विद्यां प्रादात्तस्मै नमो नमः ।
नमः शुक्राय काव्याय भृगुपुत्राय धीमहि ॥८॥
नमः कारणरूपाय नमस्ते कारणात्मने ।
स्तवराजमिमं पुण्यं भार्गवस्य महात्मनः ॥९॥
यः पठेच्छृणुयाद्वापि लभते वांछितं फलम् ।

पुत्रकामो लभेत्पुत्रान् श्रीकामो लभते श्रियम् ॥१०॥
राज्यकामो लभेद्राज्यं स्त्रीकामः स्त्रीयमुत्तमाम् ।
भृगुवारे प्रयत्नेन पठितव्यं समाहितैः ॥११॥
अन्यवारे तु होरायां पूजयेद्भृगुनन्दनम् ।
रोगार्तो मुच्यते रोगाद् भयार्तो मुच्यते भयात् ॥१२॥
यद्यत्प्रार्थयते जन्तुस्तत्तत्प्राप्नोति सर्वदा ।
प्रातः काले प्रकर्तव्य भृगुपूजा प्रयत्नतः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः प्राप्नुयाच्छिवसन्निधिम् ॥१३॥

इति श्रीब्रह्मयामले शुक्रस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

शुक्रकवचम्

मृणालकुन्देन्दुपयोजसुप्रभं पीताम्बरं प्रस्सृतमक्षमालिनम् ।
समस्तशास्त्रार्थनिधिं महान्तं ध्यायेत्कविं वांछितमर्थसिद्धये ॥१॥
ॐ शिरो मे भार्गवः पातु भालं पातु ग्रहाधिपः ।
नेत्रे दैत्य गुरुः पातु श्रोत्रे मे चन्दनद्युतिः ॥२॥
पातु मे नासिकां काव्यो वदनं दैत्यवन्दितः ।
जिह्वा मे चोशनाः पातु कण्ठं श्रीकण्ठभक्तिमान् ॥३॥
भुजौ तेजोनिधिः पातु कुक्षिं पातु मनोव्रजः ।
नाभिं भृगुसुतः पातु मध्यं पातु महीप्रियः ॥४॥
कटिं मे पातु विश्वात्मा ऊरू मे सुरपूजितः ।
जानू जाड्याहरः पातु जङ्घे ज्ञानवतां वरः ॥५॥
गुल्फौ गुणनिधिः पातु पातु पादौ वराम्बरः ।
सर्वाण्यंगानि मे पातु स्वर्णमालापरिष्कृतः ॥६॥
य इदं कवचं दिव्यं पठति श्रद्धयान्वितः ।
न तस्य जायते पीडा भार्गवस्य प्रसादतः ॥७॥

इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे शुक्रकवचं सम्पूर्णम् ॥

शनिको वैदिक जपमन्त्र

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये । शंयोरभिस्रवन्तुनः ।

तान्त्रिक मन्त्र- ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

जपसंख्या २३०००। विशेष देवीपूजा, दुर्गासप्तशती संपुटित पाठ अथवा शतचण्डि देवीभागवत पाठ इत्यादि ।

शनिप्रीतिकारक स्तोत्र-

कोणोऽन्तको रौद्रयमोऽथ बभ्रुः कृष्णः शनिः पिङ्गलमन्दसौरिः ।
नित्यां स्मृतो यो हरते च पीडां तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥१॥
सुरासुराः किं पुरुषोरगेन्द्रा गन्धर्वविद्याधरपन्नगाश्च ।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥२॥
नरा नरेन्द्राः पशवो मृगेन्द्रा धन्याश्च ये कीटपतङ्गभृगाः ।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन नमः श्रीरविनन्दनाय ॥३॥
देशाश्च दुर्गाणि वनानि यत्र सेनानिवेशाः पुरपत्तानि ।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन नमः श्रीरविनन्दनाय ॥४॥
तिलैर्यवैर्माषगुडान्नदानैर्लोहेन नीलाम्बर दानतो वा ।
प्रीणाति मन्त्रैर्निजवासरे च नमः श्रीरविनन्दनाय ॥५॥
प्रयागकूले यमुनातटे च सरस्वतीपुण्यजले गुहायाम् ।
यो योगिनां ध्यानगतोऽपि सूक्ष्मस्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥६॥
अन्यप्रदेशात्स्वगृहं प्रविष्टस्तदीयवारे स नरः सुखी स्यात् ।
गृहाद्गतो यो न पुनः प्रयति तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥७॥
स्रष्टा स्वयंभूर्भुवनत्रयस्य त्राता हरीशो हरते पिनाकी ।
एकस्त्रिधा ऋग्यजुःसाममूर्तिस्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥८॥
शन्यष्टकं यः प्रयतः प्रभाते नित्यं सुपुत्रैः पशुबान्धवैश्च ।
पठेत्तु सौख्यं भुवि भोगयुक्तः प्राप्नोति निर्बाणपदं तदन्ते ॥९॥
कोणस्थः पिङ्गलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः ।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः ॥१०॥
एतानि दश नामानि प्रातरूत्थाय यः पठेत् ।
शनैश्चर कृता पीडा न कदाचिद्भविष्यति ॥११॥

इति ब्रह्माण्डपुराणे श्रीशनैश्चरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

शनैश्चरकवचम्

नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्,
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रसन्नः सदा मम स्याद्वरदः प्रशान्तः ॥१॥

ब्रह्मोवाच–

श्रृणुध्वमृषयः सर्वे शनिपीडाहरं महत् ।
कवचं शनिराजस्य सौरेरिदमनुत्तमम् ॥२॥
कवचं देवतावासं वज्रपंजरसंज्ञकम् ।
शनैश्चरप्रीतिकरं सर्वसौभाग्य दायकम् ॥३॥
ॐ श्रीशनैश्चरः पातु भालं मे सूर्यनन्दनः ।
नेत्रे छायात्मजः पातु पातु कर्णौ यमानुजः ॥४॥
नासां वैवस्वतः पातु मुखं मे भास्करः सदा ।
स्निग्धकण्ठश्च मे कण्ठं भुजौ पातु महाभुजः ॥५॥
स्कन्धौ पातु शनिश्चैव करौ पातु शुभप्रदः ।
वक्षः पातु यमभ्राता कुक्षिं पात्वसितस्तथा ॥६॥
नाभिं ग्रहपतिः पातु मन्दः पातु कटिं तथा ।
ऊरू ममांतकः पातु यमो जानुयुगं तथा ॥७॥
पादौ मन्द गतिः पातु सर्वाङ्गं पातु पिप्पलः ।
अङ्गोपाङ्गानि सर्वाणि रक्षेन्मे सूर्यनन्दनः ॥८॥
इत्येतत्कवचं दिव्यं पठेत्सूर्यसुतस्य यः ।
न तस्य जायते पीडा प्रीतो भवति सूर्यजः ॥९॥
व्ययजन्मद्वितीयस्थो मृत्युस्थानगतोऽपि वा ।
कलत्रस्थो गतो वापि सुप्रीतस्तु सदा शनिः ॥१०॥
अष्टमस्थे सूर्यसुते व्यये जन्मद्वितीयगे ।
कवचं पठतो नित्यं न पीडा जायते क्वचित् ॥११॥
इत्येतत्कवचं दिव्यं सौरेर्यन्निर्मितं पुरा ।
द्वादशाष्टमजन्मस्थदोषान्नाशयते सदाः ।
जन्मलग्नस्थितान्दोषान्सर्वान्नाशयते प्रभुः ॥१२॥

इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे ब्रह्मनारदसंवादे शनैश्चरकवचं सम्पूर्णम् ॥

राहुको वैदिक जपमन्त्र

ॐकयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधः सखा । कयाशचिष्ठयावृता ।

तान्त्रिक मन्त्र- ॐ रां राहवे नमः ।

जपसंख्या १८०००। विशेष भैरवपूजा, वटुक भैरव स्तोत्रपाठ, नागपूजा, मनसा देवी स्तोत्र पाठ नागसूक्तद्वारा रूद्राभिषेक तेह्र आवृत्ति पाठ गरेर गर्ने ।

राहुप्रीतिकारक स्तोत्र-

राहुर्दानवमन्त्री च सिंहिकाचित्तनन्दनः ।
अर्धकायः सदाक्रोधी चन्द्रादित्यविमर्दनः ॥१॥
रौद्रो रूद्रप्रियो दैत्यः स्वर्भानुर्भानुभीतिदः ।
ग्रहराजः सुधापायी राकातिथ्यभिलाषुकः ॥२॥
कालदृष्टिः कालरूपः श्रीकण्ठहृदयाश्रयः ।
विधुंतुदः सैहिकेयो घोररूपो महाबलः ॥३॥
ग्रहपीडाकरो दंष्टी रक्तनेत्रो महोदरः ।
पञ्चविंशति नामानि स्मृत्वा राहुं सदा नरः ॥४॥
यः पठेन्महती पीडा तस्य नश्यति केवलम् ।
विरोग्यं पुत्रमतुलां श्रियं धान्यं पशूंस्ताथ ॥५॥
ददाति राहुस्तस्मै यः पठते स्तोत्रमुत्तमम् ।
सततं पठते यस्तु जीवद्वर्षशतं नरः ॥६॥

इति श्रीस्कन्दपुराणे राहुस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

राहुकवचम्

प्रणमामि सदा राहुं शूर्पाकारं किरिटिनम् ।
सैहिकेयं करालास्यं लोकानामभयप्रदम् ॥१॥
नीलांबरः शिरः पातु ललाटं लोकवंदितः ।
चक्षुषी पातु मे राहुः श्रोत्रे त्वर्धशरीरवान् ॥२॥
नासिकां मे धूम्रवर्णः शूलापाणिर्मुखं मम ।

जिह्वां मे सिंहिकासूनः कण्ठं मे कण्ठिनांघ्रिकः ॥३॥
भुजङ्गेशो भुजौ पातु नीलमाल्याम्बरः करौ ।
पातु वक्षः स्थलं मन्त्री पातु कुक्षिं विधुंतुदः ॥४॥
कटिं मे विकटः पातु उरू मे सुरपूजितः ।
स्वर्भानुर्जानुनी पातु जङ्घे मे पातु जाड्यहा ॥५॥
गुल्फौ ग्रहपतिः पातु पादौ मे भीषणाकृतिः ।
सर्वाण्यङ्गानि मे पातु नीलश्चन्दनभूषणः ॥६॥
राहोरिदं कवचमृद्धिदवस्तुदं यो भक्त्या पठत्यनुदिनं जियतः शुचिः सन् ।
प्राप्नोति कीर्तिमतुलां श्रियमृद्धिमायुरारोग्यमात्मविजयं च हि तत्प्रसादात् ॥७॥

इति श्रीमहाभारते धृतराष्ट्रसंजयसंवादे दोणपर्वणि राहुकवचं सम्पूर्णम् ।

केतुको वैदिक जपमन्त्र

ॐ केतुङ्कृण्वन्नकेतवेपेशोमर्याऽअपेशसे समुषद्भिरजायथाः ।

तान्त्रिक मन्त्र- ॐ कें केतवे नमः ।
जपसंख्या ७०००। विशेष भैरव पूजा दुर्गासप्तशती पाठ ।

केतुप्रीतिकारक स्तोत्र-
केतुः कालः कलयिता धूम्रकेतुर्विवर्णकः ।
लोककेतुर्महाकेतुः सर्वकेतुर्भयप्रदः ॥१॥
रौद्रो रुद्रप्रियो रुद्रः क्रूरकर्मः सुगन्धधृक् ।
पलाशधूमसंकाशश्चित्रयज्ञोपवीतधृक् ॥२॥
तारागणविमर्दी च जैमिनेयो ग्रहाधिपः ।
पञ्चविंशति नामानि केतोर्यः सततं पठेत् ॥३॥
तस्य नश्यन्ति बाधाश्च सर्वाः केतुप्रसादतः ।
धनधान्यपशूनां च भवेद्वृद्धिर्न संशयः ॥४॥

केतुकवचम्

केतुं करालवदनं चित्रवर्णं किरीटिनम् ।
प्रणमामि सदा केतुं ध्वजाकारं ग्रहेश्वरम् ॥१॥
चित्रवर्णः शिरः पातु भालं धूम्रसमद्युतिः ।
पातु नेत्रे पिङ्गलाक्षः श्रुती मे रक्तलोचनः ॥२॥
घ्राणं पातु सुवर्णाभश्चिबुकं सिंहिकासुतः ।
पातु कण्ठं च मे केतुः स्कन्धौ पातु ग्रहाधिपः ॥३॥
हस्तौ पातु नरश्रेष्ठः कुक्षिं पातु महाग्रहः ।
सिंहासनः कटिं पातु मध्यं पातु महासुरः ॥४॥
ऊरू पातु महाशीर्षो जानुनी मेऽतिकोपनः ।
पातु पादौ च मे क्रूरः सर्वाङ्गम् नरपिङ्गलः ॥५॥
य इदं कवचं दिव्यं सर्वरोगविनाशनम् ।
सर्वशत्रुविनाशं च धारणाद्विजयी भवेत् ॥६॥
इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे केतुकवचं सम्पूर्णम् ॥

अष्टयोगिनीका तान्त्रिक जपमन्त्र तथा स्तोत्र

मङ्गला मन्त्र- ॐ ह्रीं मङ्गले मङ्गलायै स्वाहा ।
११०००। जपसंख्या मङ्गला स्तोत्र पाठ गर्नुपर्छ ।

पिङ्गला मन्त्र- ॐग्लौं पिङ्गले वैरिकारिणि प्रसीद फट् स्वाहा ।
जपसंख्या ७०००। पिङ्गलास्तोत्र पाठ ।

धान्या मन्त्र- ॐ श्रीं धनदे धान्यै स्वाहा ।

जपसंख्या १९०००। धान्यका स्तोत्र पाठ गर्नाले सिद्ध हुन्छ। अथवा वगलामुखी स्तोत्र पाठ गर्ने ।

भ्रामरी मन्त्र- ॐ भ्रामरी जगतामधीश्वरी भ्रामरी क्लीं स्वाहा ।
जपसंख्या १०००। भ्रामरी स्तोत्र पाठ गर्नुपर्छ ।

भद्रिका मन्त्र- ॐ भद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय स्वाहा ।
जपसंख्या ८०००। भद्रिका स्तोत्र पाठ गर्नुपर्छ ।

उल्कामन्त्र- ॐउल्के मम रोगं नाशय जृम्भय स्वाहा ।
जपसख्या २३०००। उल्का स्तोत्र पाठ गर्नुपर्छ ।

सिद्धामन्त्र- ॐ ह्रीं सिद्धे मे सर्वमानसं साधय स्वाहा ।
जपसंख्या ११००० । सिद्धास्तोत्र इन्द्राक्षी स्तोत्र पाठ गर्ने विशेष इन्द्राणि देवीको पूजा गर्ने ।

संकटा मन्त्र- ॐ ह्रीं संकटे मम रोगं नाशय स्वाहा ।
जपसंख्या १८०००। संकटास्तोत्र पाठ भैरवी पूजा ।

विकटा मन्त्र- ॐ नमो भगवती विकटे वीरपालिके प्रसीद प्रसीद ।
जपसंख्या ७०००। विकटा स्तोत्र पाठ विशेष ब्राह्मण भोजन गर्ने ।

मुन्था जपमन्त्र- ॐ ह्रीं नमो भगवती मुन्थे कष्टं मथ मथ कार्यं साधय साधय स्वाहा ।

मुन्था र योगिनी शान्तिका लागि निम्नलिखित वस्तु दान गर्नुपर्छ । घिउ ,मह, चिनी, तामाको भाँडो, पहेंलो कपडा र सुन । आफ्ना इष्टदेवताको पूजा र मुन्था स्तोत्र पाठ गर्ने ।

॥ इति मुहूर्त/शान्तिकाध्याय ॥

लेखक परिचय

नाम : लक्ष्मण खतिवडा

शैक्षिक योग्यता : • अद्वैत वेदान्लाचार्य (Master of Philosophy)

• ज्योतिष शास्त्री

• बी.ए./बी.एड. (नेपाली)

स्थायी ठेगाना : सिन्धुपाल्चोक, भोटेचौर वडा नं. ७

अस्थायी ठेगाना : काठमाडौं, जोरपाटी वडा नं. ७

सम्पर्क नं. : ९८४९१०८५१४, ०१-४९१०९१९

कृतिहरू:

१. वेदस्तुति (सान्वय नेपाली पद्य तथा गद्यानुवाद)

२. जया खण्डकाव्यको आलङ्कारिक समीक्षा (अ.प्र.)

३. कविता सङ्ग्रह (अ.प्र.)

४. निवन्ध सङ्ग्रह (अ.प्र.)

ISBN 978-9-9378593-0-1